

वर्षेय छल कारण आपसी मतभेद शत्रुक प्रवेशपथ उन्मुक्त क सकैत छल। धर्म वर्तमानो काल धरि एहन तत्व मानल जाइए जकरा नाम पर जातीय-एकता ओ संगठन सहस्रतर होइत छैक आ बाहरी आक्रमण सं देश के रक्षा लेल ई संगठन आवश्यक छलैक—तैं हेतुनै हुनका भक्ति रसक गीत लिखय पढ़लनि।

कविपति विद्यापति महान सम्राजशास्त्री, ओ दार्शनिक छलाह; महान राजनीतिज्ञ साधि-विभ्रष्टिक युगग्रष्टा आ स्रष्टा आ तैं महान कवि छलाह। ओना बेर पढ़ने ओ तत्समाखियो पढ़ने छथि रानिध बातालय कोदीक दरवार तक पहुँचल छथि—परञ्च सम होइतहु ओ मूलतः कवि छलाह आ लेखनीए हुनक इशियार छल। एकर जाइ ठाम जेहन प्रयोग अपेक्षित हुनकलनि—तहिना प्रयोग केलनि। मैथिलीएक नहि समस्त आधुनिक भारतीय भाषाक पहिल कवि छलाह। हुनक पश्चात् ओ हुनकें सं प्रभावित भय विभिन्न भाषाक कवि लोकनि अपन-अपन भाषा से काव्य रचना आरम्भ कएलनि। ब्रजभाषा से सर, अवधी से तुलसीदास आ राजस्थानी से मीरासन प्रतिभाक पथ निर्देशक सरपिहूँ विद्यापतिए मेलाह।

कविपति विद्यापति केँ वीर कवि, भक्त कवि, श्रृंगारिक कवि आदि आख्या देल जाइछ आ सरपिहूँ अपन रचनाक आधार पर से ओ छलाहो किन्तु ओ मात्र वीरकवि वा भक्तकवि वा श्रृंगारिक कवि नहि अपितु एके संग सम्य छलाह के विद्यापतिए सन प्रतिभा सं संभव छल। परञ्च सभ रहितहुँ सूक्ष्म ओ महान प्रगतिशील कवि छलाह लोक कवि छलाह जे मात्र लोकमानस मे रचनाएटा नहि केलनि अपितु लोकक वात लिखलनि। सर्वसाधारणक ब्यथा—कथा, ओकर इच्छा-आकांक्षा केँ ओ अपन रचनाक आधार बनओलनि। एकदिस सामाजिक दुस्वर्तनक सबीब चित्रण कए जं लोकक ब्यान एहि दिस आकृष्ट कएलनि त संगहि दोसर दिस एहि सं मुक्तिक निमित्त दिसा संकेत सेहो कएलनि। 'केहन केलहुँ भोला गरिबक दिन, एकटा जे कोटा छलनि बेटा छलनि तीन' एवं 'नित उठि गीरा दिव सं मनाविय, करु ने कटा दस खेत' मे जं पहिल गरीबीक चित्रण अह त दोसर भ्रमक-महत्वाक परिचालक। एहिना 'पिया मोर वालक हम तरणी' मे सामाजिक कुरीति अन मेल विवाह पर तिलगर व्यय कएल गेलए। अपन घड़ीसम विशेषताक कारणे कविपतिक गीत सम ओतेक लोकप्रिय मेल जे एतेक दिन बीतलाक पश्चातो अपन लोक-प्रियता केँ मात्र अक्षुण नहि रखने अह, अधिष्ठ तार मे पूर्ण वृद्धि करा मे पूर्णरूपेण सकल रहलए। सात-सात सए वर्ष धरि लोककट मे अविकल प्रवाहित होइवला काव्य विश्वसाहित्य मे भरिस्क एकर अतिरिक्त आन नहि भेटि सकैछ। ओतवे नहि अपन मूल रूपहि मे मिथिलाक सीमा अतिक्रमण करैत बंगाल, असम, उड़ीसा, नेपाल धरि एकर पूर्ण प्रचार-प्रसार भेलैक आ सम ठामक लोक एकरा अपन मानलनि। ई कविपतिक लेखनीक जादू छल जे पदावलीक

परम्परा सम्पूर्ण पूर्वी उत्तरी भारत मे चलि पड़ब जकर अन्तीम कड़ीक रूप मे रवीन्द्र नाथ ठाकुर विरचित भावुकिरे पदावली थिक। ई हिन के मधुर गीतक प्रभाव छल जे मैथिली सं अनिमित्त होइतहुँ परवर्त कवि लोकनि मैथिली मे काव्य रचनाक प्रयास केलनि आ मूलरूप सं भिन्न होएवाक कारणे से ब्रजबुलीक नामे पदावली साहित्यक विशेष भाषाक रूप मे परिचित पओलक।

कविपति विद्यापतिक गीतक नायक कृष्ण आ उगना अलौकिक नहि लौकिक छथि—लोकप्रतिनिधि छथि। राधाकृष्णक प्रेमलीलाक आधार मानवीय थिक जाइ मे सत्य शिव आ सुन्दरक सन्निवेश अह। विद्यापति निर्बिवाद सौन्दर्यापाशक छलाह कारण सुन्दरताए सत्य थिक आ सत्ये शिव थिक। तहिना विद्यापतिक उगना 'धाधारण चाकर थिक, सेवक थिक आ सेवा धर्म मानवक सबसँ देव धर्म थिक—इस्वीय थिक—तैं उगना केँ विद्यापति महादेव बना देत छथि। एकरा उदाहरतावदी बा वास्तवतावदी भनहि जे कुनू दृष्टिकोणक नामे अविहित कएल जाय परञ्च ई थिक कविपतिक दृष्टि हुनक अपन मौलिक दृष्टि। ओना धार्मिक दृष्टिकोण रखनिहार समा-लोचकाण उगना केँ देवाधिदेव महादेव मानैछ जे विद्यापतिक भक्तिभाव सं प्रभावित भइ हुनक साक्ष्य लेल चाकर बनि आएल छल। जं एहूँ दृष्टिए देखल जाए त भारतीय साधक श्रेणी मे विद्यापतिक स्थान सयसँ उपर अह। रामकृष्ण परमहंस केँ कालीक दर्शन मात्र मेले छलनि त ओ अवतारी मानल जाइत छथि, ताइराम महादेव जनिक चाकर होथि तनिकर कये की ? ओ सरपिहूँ अतुलनीय छथि। किंवदन्ती अह जे देहावसान काल मे स्वयं गंगा चारि कोस भुआ केँ अपन प्रिय संतान केँ कोरा मे उठा लेलनि। विश्वसाहित्य मे विद्यापतिक जोरौ—से जे कुनू क्षेत्र मे भरिस्के प्राप्त होएत।

कविपतिक रचना एकदिस सं हुनका सर्वसाधारण सं राजदरबारधरि आदर समान देलकनि त दोसर दिस पंडित धर्म द्वारा उपालभ - उवहास सेहो। नव कविशेखर अभिनव जयदेव, कर्किकोकिळ कविपति आदि उपाधि सं जे हिनका विभूषित कएल जाइछ ताह मे सत्यतः कविपतिएटा एहन अह जे हिनक प्रतिभाक सही मूल्यांकनक आधार पर देले गेल अछि हिनक परवर्ती कवि गोवीन्द दास द्वारा। कर्किकोकिळ त हिनक उपहास मात्र लेल तत्कालीन पंडित द्वारा कहल जाइन आ तहिना अभिनव जयदेव हिनक प्रतिमो केँ छोटे क अंकनाक षडयंत्र थिक। ई निर्विवाद जे गीत गोविन्दक रचनाकार जयदेवक परम्परा केँ आनू बढ़वैत एवं सही आ शशक्त धरातल देत ई राधाकृष्णक गीत लिखलनि परञ्च ई ओतवे धरि सीमित नहि रहलाह। पहिनहि कहि चुकल छी जे हिनक प्रतिभा बहुमुखी छल आ ई नितन्देह जयदेव सं बहुत आनू बढ़ि चुकल छथि। राजदरबार मे रहितहुँ ई दरवारी नहि बनि एकलाह सदा लोक कवि रहलाह। ई दरवार सं प्रभावित नहि भेलह अपितु दरवार हिनका सं प्रभावित नहि भेल।

विद्युदिन पूर्व मैथिली साहित्य मे एहन चर्चा उठल छल जे साहित्य महिलक पीठ पर नहि बा सकैछ। परंच विद्यापतिक साहित्य महीलक पीठ पर खेत-खलिहान मे, गोसा-उनिक सीरा तय, घर आहूँन मे सर्वक-स्मान रूपेँ व्याप्त देखल बा लकैछ। जत-भाषा मे जनमक बात लिखवक झगले पंडित लोक उबहासक उत्तर स्वरूप कवि-पति कहने छलाह—

बाट चन्द किशोर्द भाषा

हुनु नहि छगह दुखन हाता

ओ परमेसर हर सिर सोहर

ई गिन्चह नाजर मन मोहक

देसिल कयना सब जन मिष्टा

तइसन जाम्पओ अवहट्टा

५

मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्या

मिथिला राजमन, संकटमोचन धाम, दरभंगा द्वारा आयोजित निम्न पः—मध्यमा विशारद अभियन्त्रा विशारद आयुवेद विशारद तन्त्र विशारद विज्ञान विशारद कला विशारद इषि विशारद पशुविज्ञान विशारद पाक वि विशारद शिक्षा विशारद विधि विशारद पत्रकारिता विशारद पुस्तकालय विज्ञान किः कौटिल्य विशारद-विकलांग शिक्षा विशारद अपराध विज्ञान विशारद (मात्र आ सेवाधी) राज्य विशारद चिकित्सा विशारद शास्त्री प्रतिष्ठा शिक्षा शास्त्री अभिन शास्त्री विधि शास्त्री वाणिज्य शास्त्री प्रतिष्ठा मुद्रण प्रकाशन सम्पादन कला शा मात्र शास्त्री विज्ञान शास्त्री कौटिल्य शास्त्री अराध विज्ञान शास्त्री (मात्र आ सेवाधी हेतु) विज्ञान शास्त्री प्रतिष्ठा पुस्तकालय विज्ञान शास्त्री कर्मकण्ड शास्त्री ि लोक शिक्षा शास्त्री वेद शास्त्री क्रीडा शास्त्री तन्त्र शास्त्री यद विज्ञान शास्त्री इ शास्त्री आयुवेद शास्त्री योग विज्ञान शास्त्री प्राणी विज्ञान शास्त्री कर्मकण्ड शास्त्री इ शास्त्री आचार्य शिक्षाचार्य विधानाचार्य अभियन्त्राचार्य प्रशासनाचार्य महालेखा साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य दर्शनाचार्य ग्रंथाचार्य कौटिल्याचार्य व्योमिकाचार्य विज्ञाचार्य वेदाचार्य तन्त्राचार्य प्राणाचार्य आयुर्वेदाचार्य योगाचार्य वीराचार्य धर्मा आगमाचार्य निगमाचार्य संगीताचार्य विद्यानिधि विद्यासागर आयुवेद रत्न प्राणरत्न दि भास्कर विद्यालोक वाणिज्य रत्न पत्रकार रत्न समाज रत्न देशरत्न मिथिला रत्न मैथिली विधि रत्न शिक्षारत्न वेदरत्न विद्या वारिधि विद्यावाचस्पति महामहोपाध्याय तंत्रिक चि सा रत्न मौजिक चिकित्सा रत्न यांत्रिक चिकित्सा रत्न चिकित्सा विज्ञान रत्न प्राणी विश रत्न प्राकृतिक चिकित्सा रत्न यूनानी चिकित्सा रत्न कनौषिक चिकित्सा विज्ञान रत्न चिकित्सा रत्न यौगिक चिकित्सा विज्ञान रत्न परीक्षा मे सम्मिलित हेवाक हेतु रक्षा अमुमति शुल्क क संग आवेदन पत्र परीक्षा सवाज्ज क नाम सं प्रस्तुत कएल जाय।

डा० दिनराज शाण्डिलय

कुलपति

डा० हरिनारायण डा

कुल सचिव

सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैथिली विश्व विद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय संकटमोचनधाम दरभंगा सं शैक्षणिक संस्था सम्बन्धन परीक्षा केन्द्र स्थापना अथवा मायता चाहैत छथि ओ कुप चारि सौ टाका नरीक्षण शुल्क संग अपन विकरणी अक्लिभ प्रस्तुत करथि।

डा० ओमप्रकाश शाण्डिलय, कुलपति

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड, संकटमोचनधाम, दरभंगा द्वारा आर० एम० पी० ए० पी०, आर० एम० एम० तथा आर० एम० ए० क प्रमाण पत्र अमुमव एवं मौखि परीक्षाक आधार पर प्राप्ति करवाक लेल ३५-टाका मे नियमावली एवं प्रपत्र प्र कएल जा सकैछ।

डा० जयनारायण शास्त्री, सचिव

(विज्ञापन)

दू गोठ कविता

(गत अक्टूबर में कलकत्ता में मैथिलीक एक पत्रिका टूटि रहल छल आ दोसर पत्रिकाक अन्त देवाक नेवार आ ओरिआओन भऽ रहल छल । अक्टूबरक चारिम घंटाह से एही मत्तःस्थिति में लिखल दू गोठ कविता)

(१)

इसरा लोकनि भालाक
भाखा नहि रहऽ दऽ काहोना खुरचनि बनौने छी
एहि खुरचनि के अहाँ पूबसं विचैत छी
इम ओकरा पच्छिमसं विचैत छी
पचीस बरस एहि खुरचनि पर बहस करैत
इसरा लोकनि अपन-अपन जोड़ बहार कयने
इहनि रहल छी
बढरा लोक मन्दिरमे स्थापित करैत अछि
तकरा हमरा लोकनि बन्झोक नोक पर टक्के
पिस्त छी
एहि बैराक मुस्तुक लोक
बुट्टीक घारी में चलैत अछि
ई बुट्टीक धारी अनुरागित तँ एहने अछि
जे दिन-राति चिन्नीक बोरा तकैत अछि
मत्येक बुट्टीक धारी
चिन्नीये दिस बलैत अछि

(२)

इसरा लोकनि भाखा के कहियो नाओ बना देल छी
एहि नाओकेँ खेबबा छेल सभ क्यो तैयार होइत छी
नाओ खाबत गाड़ी पर रहैत अछि,
इसरा लोकनि बसात में कठआरि सुमबैत छी
नाओकेँ खलम पानि में घऽ दिओक
तँ बेसी काल खुब तमाशा होइत अछि
लोक कठआरि के पानि में
बलबबाक बढला में
ओकरा दहोदिस चलबैत अछि
नाओ में आगो आइछ, ने पाछा
ओ ठामहि ठाम
चकभाइर देवऽ लगैत अछि
पारक कछेर पर ठाढ़ कलेको लोक
बैर-बैर पक्के तमाशा देखैत अछि
ई नाओ कहियो कोनो मोहनिमे नहि
सुखल बाल पर दुवल अछि
मत्येक बैर चुट्टी सभ
चिन्नीक बोरा में मुइल अछि

—जीवकान्त

मैथिली पोथी/पत्र कोनू आ मद
नेपाल सं प्रकाशित मैथिली दू मासिक

अर्चना

संपादक :—राम भरोस कापड़ि भ्रमर

सारस्वती-खदन, जनकपुरधाम, नेपाल

स्वास्थ्य सं प्रकाशित मैथिली + हिन्दी दू मासिक मासिक

मिथिला दोप

सम्पादक : बन्धन बिहारी

१४६, छलितपुर कीडानी, ग्वालियर-४७४००६

मृत्यु अभिमन्युक

(जीवकान्तक निमित्त—हुनक दुनू कविताक संदर्भ में)

शत्रु निमित्त
सात-सात टा चक्रव्यूह तोड़ि
अचराजेय अभिमन्यु
जखन आपस अवैछ
त
आख्यान छेल आइल
इबार-इबार खजनाक हाथ
ओकरा आबद क छैत छैक
आ तैखन
पदैत छैक ओकरा पीठ पर
सवधानक
एक नहि अनैको झूरा—
ओ आर्तनाद त नहि करैछ
अनहि केँ तैकैवटा अछि
आ खसि पड़ेछ—
ओना
महाभारतक ओ कथा
सुन्दरे नहि
आकर्षको बबसे छैक
जे
सातम द्वार भेदनकला सं अनिभिन्न
शत्रु सं घेरल
असार अभिमन्यु
मृत्यु केँ प्राप्त भेल छल
आ खरिबहु
अभिमन्युक मृत्यु
परीणाम होइत छैक ।

—राम लोचन ठाकुर

मिथिलांचलक विकास

मिथिलांचलक प्रायः पचहत्तर बी सदी आबादी केँ नीक जेका भोजनो प्राप्त नहि होइत छैन्हि । प्रति वर्गमील आबादीक लेखा-जोखा सं शत होइत अछि जे संसारक कोनो भाग सं आबादीक दशाव ऐहि क्षेत्र में बेसी अछि । कारण यह भ सकैत अछि जे मिथिलांचलक सामाजिक वातावरण बदलि रहल अछि । अनुशासन छुप्त भ गेल अछि । भाई-भ्राताक स्थान पर मामूलीयता आओर धोखा-धारीक वाजार गर्म अछि । आध्यात्मिक शानक लोप भए रहल अछि । शत्रु सेहो रंज बुझा जाईत छथि । आम, धान, मक्का आदि कतहु मेल आ-कतहु नहि होइत अछि । वेद सं सोचल कार्यक्रम यथा मुण्डन उपनायन, विवाह, श्राध, दश-कर्म आब एक परियायील रूप में मनावल अ रहल अछि । समालोक लोक केँ एक दोसर केँ शकक दृष्टि सं देखैत छथि विश्वास नामक चीज समाप्त भए रहल अछि । पाहुन केँ रात्रि विश्राम हेतु आग्रह कल लोक छोड़ि रहल छथि । एहि प्रकार समाजक जे एक श्रृंखला छल दुटि रहल अछि । मुरा ई सभ क्रियेक, कोन लाभक प्रयोजन सं ? एकेटा उत्तर अछि जे आध्यात्मिकताक तिलजलि दए मौलिक वादी

विचार धारा में सकल समाज नहि रहल अछि । टाका कोनो सुख-सुविधा प्राप्त करवाक साधन मध्यकक्ष मुदा साध्य कलनो नहि छल, नहि होएत । सर्वत्र टाका कमव-वाक होइ लागल अछि । जीवन स्तर, रहन सहन, शिक्षा-दीक्षा, खान-पान, आमाद-प्रमोद, हास्य-विनोद, संगीत-नृत्य, कला-कौशल, साहित्य, आध्यात्म आदि मज्जुगी रूप धारण कए लेने अछि । विवेक, त्याग, स्नेह, सहिष्णुता, अनुशासन, परोपकार, संत संगम, शुद्ध भोजन आदि केँ पैघ सं पैघ व्यक्ति देखा देली में अपन संस्कृति केँ नष्ट क रहल छथि । किछु लोक अपन फनी आ पारिवारिक सदस्य सं अंग्रेजी किम्बा शुद्ध हिन्दी में बजैत छथि । मैथिली बजवा सं बगराहत छथि ।

शीर्षक पुरान अछि मुदा अवसर आवि चुकल अछि जे मिथिलांचलक विकास कार्य गतिशील बनावल जाए । एहि लेल परमावश्यक अछि जे ग्राम, प्रखंड, अवर, प्रमंडल आओर राज्य स्तर पर विचार गोष्ठीक आयोजन हो आ गोष्ठी द्वारा पारित प्रस्ताव केँ सरकारक समक्ष राखल जाय । गोष्ठी द्वारा एक एक प्रस्ताव पारित करव आवश्यक अछि ।

हमरा समक सब पंच समस्या अछि मैथिलीक स्थान अछि अछुएली में सुरक्षित करायब, अराधनप्रति कर्मचारीक नियुक्ति परीक्षा में मैथिली के लेखक विषयक रूप में राखब, राजकाज मैथिली भाषा में सेहो तकर प्रयत्न करब, प्राथमिक शिक्षा के लोक-प्रिय बनयवाब लेख पोथीक प्रकाशन आ चित्रणक दुविधा प्राप्त करब, मिथिला मेडिकल, इस्कोला, कारीगरी आदिक विकास लेख योजना बनायब आर्थिक कार्यन्वित करब, जनमानस के अपन अधिकारक ज्ञान करवाब लेख प्रचार-प्रसार करब आदि सम्मिलित अछि । प्रश्न उठैत अछि जे ई सब कार्य होएत कोना ? देह सए वर्ष सं पीडित एवं उपेक्षित मिथिलाक उद्धार करवाक साधन की भए सकैछ ?

प्रश्न गंभीर अछि । सबसं पहिने आवश्यकता अछि जे चेतना समिति के आर्थिक रूप स्वावलम्बी बनाब जाए । सरकारी अहदान पर वीनिहार संस्थाक अपेक्षा से संस्था अपन साधन पर निर्भर करैत अछि वो अधिक विकासशील रहल अछि तकर सही इतिहास अछि । मिथिला-संस्कृत दुर्भाग्य अछि जे औद्योगिक विकास, लघु उद्योग विकास एखन प्रारम्भ होयब बाकी अछि । कोनो वर्ष बाढ़ि सं सर्व साधारण अक्रान्त होइत छथि—तं कहियो सुखाइक भोग्य स्थितिक सामान करए पड़ैत छन्हि । वस्तुतः दाम नित्य-प्रति बढ़ि रहल अछि । खेतक उपजा बारी मुख्यतः भगवानक अक्षुभ्यता पर निर्भर करैत अछि । आर्थिक विपन्नताक भयभक्तता सं मिथिला-चल करि-मरि रहल अछि मुदा देखनिहार के । लोकक प्रतिनिधि जखन पटना निवास करब शुरू करैत छथि तं गामक लोक के विस्मय जाइत छथि । छाल-पीयर रोशनी सं काममायाल शहर, रंग-बिरंगा वस्त्र सुन्दर-सुन्दर भवन, तिनैना आदि सखा ककरो आश्चर्य करै छैत अछि । पटनाक मायानगरी में सम मायावी स जाइत छथि ।

त ई सब देखि कि हाथ-पर-हाथ चढ़, सांस रोकि समाजक मालिक अस्तित्वक विनाश देखैत रहबाक चाही किन्ना स्मृत भए मिथिलाचलक प्राचीन गौरव, परम्परा, साहित्य, हस्त-कला, पारित्य, सामाजिक स्थिति, संस्कृतिक रक्षा करवाक संकल्प लए पुनः समाज के समुन्नत करबाक प्रयास करी ? ई दू गंभीर समस्या अछि । समाजक लेख चेतना समिति अपनक लेख आ सहयोगक आकांक्षी अछि । जति धर्म आ अस्वास्थ्य संकलनता सं पृथक सौहार्द आ तौमनस्वक भावना सं एक बढ भए समस्त मैथिली भाषीक समुन्नयन आ मिथिलाचलक सर्वांगीण विकास में सहयोगी बनी तकर आमंत्रण दैत अछि ।

निवेदन अछि जे 'चेतना' शब्द के स्वरितार्थ कयल जाय ।

—श्री राजेन्द्र झा

सचिव, चेतना समिति, पटना
(भाषा शिक्षाओ विचार लेखक निजी छनि तं ओकरा यथावत राखल गेल अछि—सं०)

लाल बुभुक्षक नाम

(मारफत देसिल बयना)

श्रीमान् लाल बुभुक्षक बी—महाराज,
अब मैथिली आवाज अज ।

राज्य दुखल । बड़ समाचार ई जे एक तऽ अहाँ चिट्ठी लिखैत छी विश्व आ ऊपर सं ओकरा पत्र पत्रिका में प्रकाशित करवा कऽ नौक लोक के देखार करैत छी से ओ वाचू ई आदति छोट । अहाँ त कलकत्ता वाली कल छी आ भोगऽ पढ़ैत छनि मिथिलावासी के । कहाँदिन अहाँ पत्रिका में बिहारक घड़ीआला जनाय अपन साथ मिथिलीक अदबोद-चरखोइ लिखि देने रहियेक से बेचारे चीप सोहैव के ओल जकाँ कलकत्ता कऽ ल्यालनि आ तकर प्रति-क्रिया स्वरूप ओ चरे-चर भुक्षुकी लऽ क मैथिली पढ़निहार, बजनिहार आ लिख-निहार के गंगालाम करवाक लेख तकरे फिरत छथि । अहाँ पूछब से कोना आ प्रमाण माँगब तं लखलखली, हम अहाँ के सम्पूर्ण वृत्तान्त संक्षेप में सुना दैत छी । अहाँ त छीहि लालबुभुक्षक, एकर सखार, मायार्य ओ विशेषार्थ लगाबै ।

घटना छोटछीन रहैक मुदा मथवाह । मैथिल ई जे दिलीक संसद में जखन बजट अधिवेशन प्रारंभ भेलक तं मजल में कीड़ा सम सुगुणाय लागल—नाना तहक विचार तरंगक उत्तार-चढ़ाव प्रारंभ भऽ गेल आ लागल जे हो ने हो-एहि खेप मैथिली के संवैधानिक मान्यता भेटि कऽ रहैक कारण । मिथिलाक संपूर्ण आ मैथिली-भाषी (सकरी लोक) क आराध्य श्री जगन्नाथ बाबू अम्मा मुइ सं केकठौ बाजल रहथि जे मैथिली के संवैधानिक मान्यता देवाक लेख विहार सरकार, केन्द्रसरकार के एकटा जोर-दोर—असरदार चिट्ठी लिखलक अछि तं 'मावाधिकारक कारणे अपना के नहि संभारि सकलहुँ आर विदा लेलहुँ मिथिलाचल मे अमन सेशल आइडियाक प्रचार-प्रसार करऽ । ओना मोन मे एकजोट पंच स्वायं सेहो रहए जे यात्राक अवधि मे भोजनादि निःशुल्क प्राप्त हएत, लोकसम्पर्क हएत; अपन आइडिया के भविष्यवाणीक रूप दए प्रचार करब आर जे माताजीक कृपा सं मैथिली के संवैधानिक मान्यता भेटि गेलक तं 'अगिला एलेक्शन धरि देखल जायतेक मने लॉगटर्म मोक्षम रहए सुदा ओ वाचू कि कहुँ—नाम हमर विस्वाचक टगी करवाक अधिकार हमरा मुदा मुदा गेलहुँ हल स्वयं-आ सेहो मुने मुदा संतोष एतवे अछि जे नाम बाँचि गेल । संयोग एहन भेलक जे एकटा गाम मे हमरा सं एक जिज्ञासु व्यक्ति खबड़ा गेलह । परिचय-पातक पश्चात जखन हम हुनका अपन भविष्यवाणी सुना हुनकर विचार पृथक्छनि तं ओ तीनहाथ छड़पि उठलह आ चिचिया-चिचिया कऽ नारा लगाबऽ लगलह—'अपूर्व आइडिया'... 'ओरि-जनल आइडिया'... 'विश्ववचक जिद्द'... 'देखि-देखि-देखि'... 'सपूर्ण गाम ओहि विशालक दरवजा पर जना भऽ गेलक आ नारा पर नारा पढ़ए लगलक । जिज्ञासुजन हमर पीठ थपथपा कऽ बललह—'माइ एहि गाम मे

पुरुष सम मैथिली नहि बजैत अछि तं की... मैथिलीक एकोनोट पत्रिका एहि गाम मे नहि अबैत छैक तं की... कोतक पोथी छोड़ि कोनो घर मे मैथिलीक आन पोथी नहि भेटि सकैछ तं की... अहाँक आइडिया मुदा अपूर्व अछि... एहि खेप मैथिलीकेँ सरकारी मान्यता भेटिकऽ रहैत... 'बूभुक्षे मान्यता भेटि गेलक... आब किछु करियेक किछु खर्च-बर्च मैथिलीक नाम पर दियेक किछु टाका... भऽ जाइक एकजोट छोट-छीन पाटी ।' से लालबुभुक्षक जी चक्कर मे पड़ि गेलहुँ । घड़ी ओहिगाम मे बढकी लागि गेल । कोनो धरानी राति कटलहुँ आ अन्ह-रोखे चिताहल नदिया जकाँ पड़लहुँ मुदा बाहरे काम । कहथी छेने जे 'जयवह नेपालकपाड़ संगे जयतह'... तकरे पड़ि भेल । ओहि गामक सिमाना मे टपते रही कि घड़ा गेलहुँ । एकजोट सज्जन पुरत हमर बाट छेकि उलहन देवऽ लगलह—'आहि-रेवा, ई कि ओ ? एना किण्क भागल बा रहल छी ? चाइ पीचि लिख तखन जायब चाइ पीचि ओ सज्जन जखन व्यवस्थित भेलह तं खुका पाटीक रेफरेंस दैत हमरा अपन बजनामृत सं वृत्त कऽ ल्यालह—'ओ, अहाँ ई कोन फेर मे पड़ल छी ? मौका भेटल अछि तऽ ओकर लाम उठाइ ई कि मैथिली-मैथिली येंपिया रहल छी ? जयप्रकाश बाबूक आन्दोलनमे जगज तं तोड़बनाई हैय अहाँ । आब जं हमर विचार मानी तऽ टीक सेहो करवा लिअ आ प्रारंभ कऽ दिअ अलिख बे-प-त-ह हम एम० एल० ए० तं नहि सुदा जं अहाँ सम भाषा प्रेमी केँ हम एम. एल. सी. नहि बनलहुँ तं हमरा नामे कुनार पोस्सिब । आइपरि हमर एकोटा आग्रह नहि टाङलनि अछि मिथिली... ओ हमर साक्षते...'

हम ओहि सज्जनक मुइ निहारऽ लगलहुँ । चाहक प्यालीकेँ टेबुल पर राखि हम जयवाक साहस झुटौलहुँ—'प्रियवर । हमर अभिप्राय से नहि छल । हम एम. एल. ए. एम. पी. वाला बात तं ओहिना वाचि देने रही । अलख मे हमर कदवाक तात्पर्य छल जे एहि बेर मैथिली केँ संविधानक अष्टम अनुसूची मे स्थान भेटि जयवाक चाही मुदा भऽ सकैछ जे विचरि मे कोनो विषय उपस्थित भऽबाय तं हमरा समकेँ साक्षात् रह-चाक चाही... हमर बात केँ किञ्चहि मे लोकिकऽ, ओ समज राजनीतिज्ञ जकाँ भाषण देवऽ लगलह—'ओ वाचू, हम सम किण्क साक्षात् हएब ? मैथिली-कथली सं हमरा समकेँ कोन लाभ ? साक्षात् होयतह मैथिली एकदमीबालक... चेतना समिति वाला सम... साक्षात् होयतह साहित्य अकादमीक प्रतिनिधि... सरकारी विज्ञापन प्रकाशित करऽ वाला साहित्यकार लोकनि जिनका समक लेख सरकार 'कौरा' क व्यवस्था करैत छनि... अनेर हमर सम किण्क माथ-कपार पीढ़... हमरा समकेँ किछु कवेक हएत तं

उड़क हेतु करव आ कि ई मौनी समक भाषाक लेख ? देखुगऽ हमर बेटा भातिजकेँ पटापट उड़ लिखैत-ढूँत अछि । ओ बाबू, चाहक, कैचा दिओक आर अपन रास्ता धर एहेन ने हो कि छौंड़ा समकेँ पता लगि जाइय आर अहाँ मुफ्त मे...'' हम अक्कका कऽ पूछलनि—'से कि ओ ?' अहाँ केँ नहि पता अछि ? सरकारी आदमी सम मैथिलीक ओकालत कइनिहार सम केँ पकाइ पकाइ कऽ पटना-कऽ जा रहल छैक... गंगालाल उद्घाटन अवसर पर ओकरा समकेँ गंगालाल करवाक मोक्षम छैक । हम अवाक रहि गेलहुँ ।

ओ सज्जन पुरुष भगनाकऽ हललह आ हमरा संबला दैत पुनः 'जयवह—'गंगा-लाम सं हमर तात्पर्य गंगालाल सं छल । बहौदत आब मैथिलीक किछु पत्रिका लम सेहो मिसजी के देखार करय पर लागल छनि तं ओ कइ गरम भऽ गेलह अछि... छुट्टा सदृजकाँ करवाक प्रवृत्ति छनि तं इहिकारी दुमला पर भइकि उठैत छथि । हुनका थोका भेलनि जे गंगालाल उद्घाटनक अवसर पर अपन बरेक लोक सम ने इन्दि-राजीक समक्ष होइछा करए, तं मिथिली-चलक प्रत्येक कोन सं एहन संदेशासद व्यक्ति समकेँ सरकारी आशय पकाइ कऽ पटना पारल करवाक अभियान चलल छैक... अहाँ चुपे-चाप निकलि जाउ... कोनो डर नहि... ई, जहक कैचा दऽ देवेक ।' बाजि ओ लोटा पकाइ पोखड़ि दित विदा भऽ गेलह । हमरा अपन समटा आइडिया निरर्थक बुझाय लागल—अधुना पक्षा कऽ उठलहुँ जे आब अपन गामक बाट घरी मुदा होनी केँ के टारि सकैछ ? जागत हम भोही भग्या लऽ उठी-उठी, पौच-धात गोट नव-युगक ओहि दोकान पर अपलक वा अवि-तहि दौरा सजिस्ट्रेट जकाँ जवाब तलब करय लागल । हम लाख प्रयास कयलहुँ मुदा नहि मानलक 'राज्य द्रोही... सी. एम. द्रोही... पी. एम. द्रोही आदि विशेषण सं भूषित कऽ, माल-जाल जकाँ हाकि कऽ हुसि देलक सरकारी दूक मे आर अपन कमीशन प्राप्त कऽ ओ सम नाचि-नाचि कऽ फिलिमी गीतक कीर्तन करए लागल—

'मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है, मेरे अंगने में...' से लालबुभुक्षकजी, अपन फजीहतक वर्णन की करूँ जं सगो-पांग वर्णन करू तं एकोनोट छोट-छीन उप-न्यासे तैयार भऽ नायत । संक्षेप मे इहए बुझूँ हमरे लग केकटा विवाक्यपट्टया मैथिल सम मिथिलाक कोण-कोण सं बमना ओलखल रहथि... समक मुइ सं मिसरजी जिन्दबाद... माताजी जिन्दबादक नारा लगवाउलेक आर फेर पुनः हमसम कोन धरानी महात्मागोधी सेतुक उद्घाटन उत्सव मे सम्मिलित भेलहुँ... सी. एमक संग राजनीतिज्ञ आर भाषा समस्या पर कोन तर्क-वितर्क भेल आ हम सम गंगालाल करैत करैत कोना केँ वाचि गेलहुँ—ओहि विषय अला सं एक गोट विशेष स्पष्ट बना कऽ 'देखिलक्यना'क सभासक केँ पठा रहल छिअनि मुदा सम्प्रति एक गोट मर्मक बात लिख रहल छी—लालबुभुक्षकजी, मिथिली-चल मे ओतिक चक्कर कयलहुँ—मिथिला

अप ५५५ ५५५

अजगुत-अनरोटल

महाराष्ट्रक भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्रीमान अंग्रेले साहेबक बाद सभसँ विवादास्पद मुख्यमंत्री छथि बिहारक स्वयंयू. जनसेवक डा० श्री जगन्नाथ मिश्र। ओना त हिनका में बड़-बड़ गुण अछि—को बड़ छोट कहैत अपराध—पाउच सभसँ पैघ गुण—जेना कि पक्कार लोकनि कहैत छथि—छनि, फूसि बजवा में प्रवीणता। मिथिला में एगो बड़ प्रचलित फक्का छेक—लादय, पादय ओ ओघाय, सत्य न बाजय जौं मरि जाय। लोकक कहव छेक जे जे उपरोक्त तीन श्रेणीक लोक समहि सत्य बाजियो बाय, किन्तु आखुक राजनेता आ खास के कांग्रेस (इ) क नेता किन्हूँ तय नहि बाजि सकैत छथि। आ जे एकाध गोटे भूल सँ एक-आध सत्य बाजियो लेथि तयो स्नामान्धन्य डा० साहेब त सत्य नहि जेठा बाजि सकैत छथि। जेना कि सुनवा में अबैछ, मुख्यमंत्रीक शपथ लेबा सं पहिने डा० साहेब दू गोटा महत्वपूर्ण शपथ से हो लेने छलाह। पहिल त मिथिला, मैथिल-मैथिलीक विनाशक आ दोसर सत्य नहि बजवाक। पहिल शपथक निवाह ई नीक नकाँ करैत आयल छथि—से त समेके शते छनि परन्तु दोसरोक निवाह में ई पाछू नहि छथि तकर टटके उदाहरण थिक—मधुबनी में अपन दलक भवनक उद्घाटनक समय हिनका द्वारा देल गेल भाषण। एहिठाम ई कहलनि जे हिनक सरकार मैथिलीक संवैधानिक मान्यता लेल 'कृत संकल्प' अछि तथा मैथिली अकादमी के एहि वर्ष चारि लाख सरकारी अनुदान भेटलक-ए। पहिलक संदर्भ में जेना कि ई अपने बजैत छथि एगो व्यस्ततात चिह्नी प्रधान मंत्री के लिखने छथिन.....जहाँ धरि दोसरक बात अछि मिथिला मिहिरक सम्पादकीय सं स्पष्ट पता चलेछ जे मात्र पचहत्तर हजार टाकाक अनुदान अकादमी के देल गेल छे। ओना ई दिग जात गेल जे जगन्नाथ मिश्र धरि कोटि लोकक भाषाक उत्थानक नाम पर चलल अकादमी के (ओना काजक लेल ई अकादमी हिनके स्वजनक पोषण करैछ) जे अनुदान देत आबि रहल छथि तार अनुपात में भोजपुरी अकादमी, एको प्रतिशत लोकक भाषा नहि रहैत हिन्दी अकादमी आ हुनके अनुसार 'दश प्रतिशत लोकक भाषा' उहूँ अकादमी के कतेक अनुदान देत छथिन से नहि बजैत छथि। से जे हो, किन्तु हमरा लोकनिक सुझाव जे 'नोबेल पुरस्कार कमिटी' मानय त ओकरा फूसि बजनिहारक लेल सेहो पुरस्कारक घोषणा करक चाहिएक आ एकर पहिल पुरस्कार डा० श्री बिहोरक मुख्य मंत्री जी जगन्नाथ मिश्र साहेब के देबाक चाहिएक।

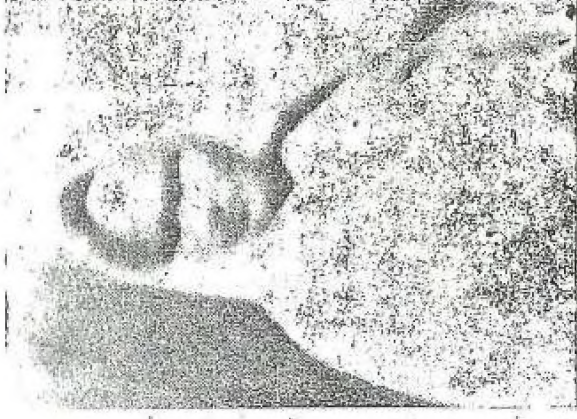
नवम्बर-दिल्ली, १३ मइ १९८१ केन्द्रीय सरकार-एक खेप फेर परिछा देलक जे संविधानक आठम अनुच्छेद में आर. बेसी भाषा के शामिल नहि कएल जायत। ओना परितोषक लेल, ओ कहलकए जे राय सरकार सम-अपन-अपन राज्यक ओहूँ भाषा सब के, जे संविधान सं चाहल अइ

विकासक लेल छविधा सुयोग देक - से उचित।

प्रश्न उठल छलक मैथिली, नेपाली, डोगरी आ मनिपुरी भाषाक संवैधानिक मान्यताक। नेपालीक लेल प० बंगालक सरकार विधान सभा सं एहि संदर्भ में प्रस्ताव पास कए केन्द्र सं बहुत पहिने अनुरोध जना चुकल अइ तथा नेपाली भाषा अंचल में सरकारी समस्त काजक माध्यम भाषाक रूप में एकरा मान्यता ओ ब्यावहारिक रूप र चुकल अइ। मनिपुरीक लेल सेहो ओकर सरकार केने छेक। पाछू अइ डोगरी आ सब सं पाछू मैथिली। मैथिली मात्र बिहार सरकार द्वारा, अवेबलितेता नहि अइ, अपितु पृणित पद्धत्यक शिकार भेल अइ। ओना जनता के आबो अबसे बुझक चाहिएक जे जगन्नाथ मिश्रक डोगरी शाली भाषण में भेल सत्यता छेक आ हुनक नोर सरियहुँ धरिपाली नोर सं बेसी नहि।

आखुक युग में राजकीय मान्यता

—शिवत वक्ता



सारदा देवी

पुत्री : स्व० प० गणेश भा

कोकन

पत्नी : स्व० सुरति ठाकुर

बाबूपाली

मैथिलीक युवा साहित्यकार एवं मैथिली मुक्ति मोर्चा कलकत्ताक संयोजक श्री राम लोचन ठाकुरक पुजनीया मां श्रीमती सारदा देवीक आत्मस्थिक देहावतान लगभग साठि वर्षक अवस्था में अपन गाम बाबूपाली में विगत २ अप्रील १९८२ के भय गेलनि। ई कुछ वर्ष सं गैस्त्रिक व्याधि ग्रस्त छलीह। ई लिखिया-पढ़िया, गीत-नाट में पूर्ण पटु ब्यवहार कुशल ओ धर्मपरायण महिला छलीह। स्व० सारदा देवी अपना पाछा एक मात्र पुत्र, पुत्रवधु, तीन पौत्र ओ दू पौत्री के छोड़ि गेल छथि।

'देसिल वयना' चन्दाक दर :-

१ प्रति	५० पइसा
१ वर्षक	५ टाका
५ वर्षक	२० टाका

पाइ पठेबाक पता :-

श्री जनार्दन झा,
१७६६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सं :-

'देसिल वयना' में अपन विज्ञापन दय काम उठाउ। कम खर्च में सुन्दर दंग सं अधिक प्रचार एक मात्र साधन।

सम्पर्क कर
विज्ञापन व्यवस्थापक
अखण्डिय प्रकाशन,

देसिल वयना

पाठकीय परिवारक (संविधान) सदस्य

३८. श्री रामचन्द्र झा, उपानगर, कलकत्ता
३९. प्रबोध झा
४०. कमल नारायण कर्ण
४१. सुशान्त मिश्र, उषा फन,
४२. सत्यनारायण झा
४३. कान्ति बिहारी मिश्र
४४. सुरेन्द्र नाथ झा, रंगकल,
४५. खुशीलाल झा, बड़वाजार,
४६. राम नारायण मिश्र, उषा फन,
४७. अर्जुन लाल करण, कलकत्ता
४८. ललन मिश्र, नदारी, दक्षिण
४९. विश्वम्भर मिश्र
५०. कुमारी ज्योति झा, कलकत्ता
५१. बालाधर झा, डाकवेर

मिथिलाक लेल मिश्र

भेटल, मैथिल भेटलाह मुदा मैथिलीक दर्शन कतहु नहि भेल ॥ मैथिलीक जिज्ञासा पर सर्वत्र एकटा उत्तर भेटल—'मेरे अपने में तुम्हारा क्या काम है??'

पत्र सुरक्षाक मुद्दे जकां अनेरे बहल जा रहल अछि तँ आव पत्र के समाप्त करैत अपने सं कलकत्ता प्रार्थना कऽ रहल छी-जे छालबुभकारजी, अहाँ केँ जे नौन हो से लिखू—जं चाही तँ एडवान्स में अपन मृत्यु गीत पर्यन्त लिख सकैत छी मुदा भाइने—जगन्नाथबाबूक विरोध में किछु नहि लिखी ओ मैथिल थिकाह, हुनकर मातृभाषा मैथिली छनि मने ओ खोटी 'अप्यन लोक छथि तँ अप्यन लोक केँ देलार करव उचित नहि। शेष कुशल।

बहीक

—विश्व वंचित

मिथिलावासिक माड

१. मिथिला राज्यक निर्माण हो।
२. मैथिली केँ अस्तित्व मिलब संविधानक आठम अनुच्छेद में स्थान हो।
३. समस्त सरकारी। अर्थ सरकारी प्रति-योगितामूलक परीक्षा में मैथिलीक स्थान हो।
४. मिथिला में निम्नतम सं उच्चतम स्तर धरि शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो।
५. मिथिलाक प्रथम राजभाषा मैथिली हो।
६. मिथिला में सरकारी कल-कारखानाक स्थापना ओ विकास हो।
७. मिथिलाक कृषिक अवस्था में सुधार हो आ एहि निमित्त सैदी-दाही सं मुक्तिक व्यवस्था हो तथा यातायातक सुव्यवस्था हो।

—रामाधार मिश्र
बाते—मैथिली सुखियोर्चा,
कलकत्ता

सभा-समिति

● कलकत्ता, १८-४-८२। पूर्व घोषणाक अनुसार मैथिली-मुक्ति मोर्चाक बेसार स्थानीय उपानगर विद्यालय में भेल। मोर्चाक संयोजक श्री रामलोकान ठाकुरक पूजनीया माताक देहांतान २-४-८२ केँ म जेबाक कारणे ओ अनुपस्थित छलाह। उपस्थित सदस्यगण एहि आक्रामिक एवं असामयिक निधन पर एक शोक प्रस्ताव पारित कएलनि तथा दिवंगत आत्माक चिर शान्तिक हेतु ओ शोक संतप्त परिवार केँ शाहस आ धैर्य प्रदान करवाक हेतु माँ मैथिली सं दू मिनेट मौन प्रार्थना कएल गेल।

सभाक अग्रिम कार्यवाही - स्थगित राखल गेल।

(द्वारा—जनार्दन झा, संघ-संयोजक)

● वनस्यामपुर (दड़िमंगा), ११-३-८२। दड़िमंगा स्थित साहित्यिक संस्था कौशिकीक जलाश्रय में पहिल खेप एहि अवसर में कवि सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सौख्य संयोजक भेल। कार्यक्रमक शुभारंभ श्री उदयकाता मिश्र एवं तुलसी चन्द झा द्वारा श्री वैद्यनाथ विमल रचित भगवती वन्दना 'पूजा कोना करी हे भवानी' सं भेल जाइ ने तबला वादन क रहल छलाह श्री हुज्ज मोहन झा।

उद्घाटनकर्ता प्रसिद्ध लेखक प्रो० डा० नित्यानन्द झा अपन उद्घाटन भाषण में ग्रामीण जनता सं अपन भाषाओं साहित्यक प्रति सतत जागरूक रहि मैथिलीक उत्थान लेल अभियानक आहवान केलनि प्रो० डा० इशानन्द झाक अध्यक्षता में एगो मन्व्य कवि सम्मेलन भेल जाइ ने सर्वश्री हुज्ज मोहन झा, जय प्रकाश चौधरी ज्ञानक, प्रो० देवकान्त मिश्र, प्रो० विमल नारायण ठाकुर, वैद्यनाथ विमल आदि भाग लेलनि। कार्यक्रम आरंभवाचि धरि चलत रहल। सांस्कृतिक कार्यक्रमक मुख्य आकर्षण छलाह किशोर गायक श्री अरविन्द कुमार झा केदार चन्द्र मिश्र कुमार कांत ठाकुर ओ अर्पण कुमार झाक गीत सेहो मनोरम छल। संचालनक रहल छलाह कौशिकीक संयोजक श्री वैद्यनाथ विमल।

कौशिकीक अध्यक्ष श्री रमानन्द रेणु अपन संदेश में कहलनि जे जाधुरि गामक माटि नहि जागत ताधरि कोनो कानि नहि म सकत। एहि लेल ग्रामीण लोक-जीवन स सम्बद्ध म क भाषा ओ साहित्यक उत्थान लेल अभियान करी। ग्रामीण-जनता दिस सं सर्व श्री केदार नाथ मिश्र, देवेन्द्र नाथ झा, देवकांत झा अपन-अपन उद्गार व्यक्त केलनि। 'अन्त में स्वागत समिति दिस सं श्री शिवकुमार मिश्र धन्यवाद श्रापन केलनि।

(द्वारा—वैद्यनाथ विमल)

* कलकत्ता-१-५-८२। मिथिला सांस्कृतिक परिषदक द्वारा कबीरचर चन्द्रा भा (कबीरचर जोड़ि देनाइ हम आवश्यक बुनैत छी ले०) जनकती स्थानीय श्री सनातन धर्म विद्यालय में मनाओल गेल जकर अध्यक्षता केलनि परिषदक आयोजन हेतु नियुक्त स्थायी अध्यक्ष डा० श्री मुनीश्वर झा।

अवगोदय प्रकाशन, ३३५, डा० देवदर रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेख श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पब्लिशर आर्ट प्रिन्टर्स ३२ वी बन्दाना बंगाल स्ट्रीट

प्रधान वक्ता छलाह डा० अशोक झा प्रधान अतिथिक रूप में मंचपर ल गेल गेलाह श्री मिथिलेन्द्र जी।

कार्यक्रमक आरंभ मिथिलक जातीय गीत 'जय-जय भरवि' सं भेल जकर गायिका छलीह कुमारी हेमा। हेमा अपन गायन क्षमता सं कनेकालक लेल लोक केँ अपन गामधर ल जेबा में सफल रहल। ओ आरो कएकटा गीत गायोछक। ओकरा ने पूर्ण प्रतिभा छैक ओ जे अभ्यास करय त नीक गायिका बनि सकैछ।

कार्यक्रम पूर्ण अव्यवस्थित छल एकटा गीत आ एकटा भाषण आ बीच में अध्यक्ष-जीय अनुशासन। समस्त अवलोक्य श्रोत सं ई भेल जे कबीरचरक छवि उपलब्ध होइतहु मंचपर नहि छल आयोजक लोकनि भरिसक एकर खेगता नहि बुझलनि खम सं महत्वपूर्ण भाषण छल प्रधान वक्ता सहैबक। ओ कबीरचरक खूब प्रशंसा केलनि कारण से केनाह आवश्यक छलनि—भनहि हुनक रचना पढ़ल नहि छलनि, जे अपनहि गलतह परञ्च मैथिलीक आधुनिक कविता जे विश्वक कुनू भाषाक कविता सं पाछू नहि अछि तकर धोर निन्दा केलनि। ओ प्र० वक्ता छलाह ते हुनक पौना केँ ई अधिकार भवसे छलनि जे छड़पि केँ मंचपर चढ़ि जायि आ अखौ बूढ़। हाथ उठाउ। फटाक—पढ़ि लेयि—दस बर्ष धरि डा० लोदाक ओह ठाम हाट-अजार केलक पचाव पी एच० डी० क उपाधि पदोनिहार डा० अशर्मा झा अपन पौत्रक पदोओल पत्नी केँ दोहरवत आहुक कविताक निरर्थकताक नात कहलनि। डा० झा केँ बुझक चाहियनि जे हाट-बाजार सं मिथिलीपर तोकरी कोन पुज्याइत ला पहुँचोते पी एच० डी० भवसे भेटि गेलनि परञ्च कविता बुझवाक बोध एना नहि भेटैत छैक। तहिना जे प्रधान वक्ताक एहि आरोप सं अध्यक्ष महोदय अपन सह-मति प्रकट केलनि त अचरज की? हुनको हेतु विगरीक अर्थ चाकरीपटा छनि जकर आ आधुनिक साहित्यक संदर्भ हुनक ज्ञानक परिचय की इएह सहमति प्रमाणित नहि करैछ?

एहि अवसर पर श्री बाबू सहैब चौधरी अवसे कबीरचरक प्रति अस्सी श्रद्धाञ्जलि मैथिलीक रसा, विकासक नात कहलनि जे आयोजनक उपलब्धि मानल जा सकैछ।

खेदक संग लिखए पड़ि रहल-ए जे ई आयोजनी संस्था-सम आइधरि आयोजनक महत्ता नहि बुझि सकल-ए। कुनू विभूतिक जनकती वा स्मृति दिवस मना केँ हमरा लोकनि हुनक नहि अपितु अपन, अपन देस समाजक उपकार करै छी। विभूतिक स्मृति दिवस एही लेल आवश्यक जे हुनक व्यक्तित्व-कृतित्व सं शिक्षा लय हमरा लोकनि अपन देस-भाषा-संस्कृतिक विकास लेल शपथ ली आ काज करी। तेँ आवश्यक छैक जे मात्र विद्यापति आ कबीरचर चन्द्रा झा के स्मृतिपेठा नहि—ग्रीयलन महोदयक स्मृति पर्व, ज्योतिरिश्वर स्मृति पर्व, महा-कवि डाक आ लाल दास स्मृति पर्व मनाओल जाय। आवश्यक छैक महाकवी लोरिक, सल्लेस दीनामद्री आ रायचण

पाकक स्मृति दिवस मनाओल जाय। मिथिलक एकान्ती इतिहासक पुनरावृत्ति आत्मघाती प्रयास थिक—एहि सं निवृत्ति भेलहि मिथिलक कल्याण छैक।

मात्र अखबार में नाम छपेवा लेल आ अनहा में कनहा राजा कतवाक लोभे एहि तरहे कुनू विभूतिक नाम पर मजाक उड़ो-नाइ सरिगहु निन्दनीय ओ लज्यास्पद थिक। (द्वारा—अप्रदत्त)

चिट्ठी-पुरजी

'वैखिल्य वचना' क प्रति भेटल। जे 'वैखिल्य वचना' सब जन मित्रा' कहल गेल छै तेँ हमरो मीठ लागल, कही, तं पुनरु-क्रिये हयत। ओना, ई कहल जाय कि पत्रिका बड़ जोरार आ तेवर-चला अछि, तं कोनो अतिशयोक्ति नहि। 'लोकन कविराय' केर कमाल तं देखबे जाग अछि।

—आरसी प्रसाद चिह्न, पटना पत्र दीर्घायु हो, एकर भव्य प्रचार प्रसार हो। मैथिली पत्र पत्रिका में एखन देखिल वचना जे मात्र जन्मे ग्रहण केलक अछि, तबन एहि में रोचकता, कौतुहलता और विशिष्टताक स्पष्ट छाप अछि। प्रया-सक हेतु साधुवाद।

—श्री देव झा, हिन्द-मोटर

सम्पादकी 'भील नहि अधिकार चाही' देखि मन गद-गद भए गेल। हमरा लोकनि

बालगीव

सामा, आव बुझैछी।

मामा, अहाछी कोकटिया से आव बुझैछी।

अहां कतेक सहा-छी से मामा बुझैछी।

मामा आव बुझैछी।

इसकूल में साद खैब, बेर बेर कहै छथि।

अहांकैर चमकब, सुकून केँ मानै छथि।

सुकून भेने तिपता, अहां काम बुझै छी।

मामा आव बुझैछी।

जं अपनैला लल मामा, हमरा को देव यो।

कोना चानीक कटोरीसे, दुधमात लेव यो।

पतेक ताम मामा देखि, हमझीह छुबै छी।

मामा आव बुझैछी।

मुदा दादीकेँ सुशिकल छै, कातेकेँ दूमायब।

अहां बिता तेँ हेतै बढ-जटीन गायब।

अहां अनकैला कर्मक मोक भवै छी।

मामा आव बुझैछी।

मामा अहाछी कोकटिया से आव बुझैछी।

राम भरोस कापड़ि भ्रमर'

कह लोचन कविराय

दूरक डोल सोहावन कहबो छैक पुरान किन्तु मात्र कहबोए नहि सुनियो रहलहु' कान सुनियो रहलहु' कान आसि सं देखि रहल छी मैथिलीक दुर्दशा हाल मिथिलाक कहव को कह लोचन कविराय बिकेक पहन नवनूरक निशिवत पतनक मूल प्रगति बात त दूरक-

प्रज्ञासरोज

वर्ष-२ अङ्क-६

जून, १९८२

मूल्य-पचास पाइ

सम्पादकीय

सरकारी पुरस्कार आ मैथिलीक साहित्यकार

कुनू छोट सं छोट आ पैघ सं पैघ आन्दोलन मे साहित्यकारक भूमिका प्रधान रहल-ए। साहित्यकार कानि द्रष्टा होइत छथि। ई पुरान परती-परांत के तोड़ि आन्दोलनक नव माटि तैयार करैत छथि आ पुनः आन्दोलनक बीजारोपण करैत छथि। परज्व एहीठाम हिनक काज शेष नहि होइछ। ई अपन रोपल आन्दोलनक बीज के माटि सं चहार भय विशाल वृक्षक रूप लेबाक, ओकरा फुलेबा-फइबाक समुचित परिवेशक स्रजन करैत छथि, आततायीक हाथ सं ओकर रक्षा लेल स्वयं त सतत संघर्ष रहित छथि, समाजक छोक केँ सेहो ओकर उपयोगिताक मान करा ओकर रक्षा लेल स्वयं सजबैत छथि। शेष मे कहल कि ओ गजब फल देत छैक त ई स्वयं खटि जाइत छथि। तँ साहित्यकारक ई गरिमा अइ। ई प्रातः स्मरणीय होइत छथि, अटुकरणीय होइत आ अमरता केँ प्राप्त करैत छथि।

कहल जाइछ जे जे काज तत्कालि सं संभव नहि होइत छैक से साहित्यकार अपन कलम सं खजनि क खेत छथि। तँ एक दित जं विशाल मानवताक इष्टि हिनका फलम दित—दिशा निर्देशक लेल, हागल रहैछ त-दोसर दिस मानवताक शत्रु शोषक-शालकक सेहो। पहिल वर्गक हृदय मे जतय आदरक भावना रहैत छैक त दोसर वर्गक हृदय मे आतंकक। तँ पहिल वर्ग जतय हिनक सहायक होइत रहल-ए त दोसर विरोधी। परंच साहित्यकार जनवल्क सहयोगी समल विरोध केँ भुँडूँ छित करैत अपन छल्य पय पर अवि-राम चलेत रहैत छथि।

एहि दृष्टि जे आखुन मैथिली साहित्यकार दिस तकैत छी घृणा सं मन भिनकि जाइछ, छाजै माथा नत भ जाइछ। किछु अपवाद केँ छोड़ि प्रायः सभ केँ कम अपन असली चरित्र छोड़ि स्वान प्रवृत्तिक परिचय द रहल छथि। इहए काण अइ जे एतौ-दितक पश्चातो मिथिला-मैथिली अपन न्यायोचित अधिकार सं वंचित रहल-ए। मैथिली आन्दोलन जातीय आन्दोलनक रूप मे नहि रूपान्वित भ सकल-ए।

मानव जीवन मे भाषाक की महत्व छैक से आब लिखबाक लागता नहि। वर्तमान मे कर्नाटक प्रदेश मे चल रहल आन्दोलन जकर मुख्य माद छैक 'कन्नड़' के विभाषा फर्मुलान्तर्गत प्रथम आवश्यक भाषा स्तेबाक—एटका उदाहरण थिक जे केना पब सं पैघ 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार विजेता साहित्यकार एकर नेतृत्व क रहल छथि। ओतवे नहि समल बुद्धिबीनी कलाकार लोकनि एहि मे पूर्ण सक्रिय छथि। परज्व मैथिली आन्दोलन मे साहित्यकारक सहयोगिताक गप्य त फराक जाओ—विरोधे भेटैत रहल-ए। कुनू-कुनू नवसिद्धि आति प्रातिशील गीतकार त भूखक प्रथमता देखेवा लेल भाषा आन्दोलन केँ घृणित राजनीतिक संग बोहवो सं बाज नहि आयल। पता ने हुनका कहल भूल लगत छनि खेनाइ भाषा मे संगैत छथि अथवा घेट डेकावप लगैत छथि। ओना सत्य ई अइ जे इहो गप प्रकाश करै लेल गीतकार महोदय केँ भाषाएक सहारा लेनय पड़निहै। जे एक शब्द मे कही त मैथिली आन्दोलन मे सभ सं बाजक ई लोककार तमक कटुदर रहल-ए।

एतब होइतहु जे हेतु किछु साहित्यकार लेखन खसहर आ तँ हुनका सभ अइ कबवा लेल मैथिली विरोधी बिहार सरकार नेता कमलाध मिश्र नामा तखन बतबैत रहैत रहल। एही पडयंत्रक फलस्वरूप किछु साहित्यकार केँ पुरस्कार देवाक योजना बनल। समाचार-सूत्रक अनुसार श्री नागाजून (यात्री नहि), आरती प्रसाद विर श्रीकन्त ठाकुर विद्यालकार जयनाथ मिश्र आदिक नाम एहि योजनातर्गत अइ। जहाँधरि विद्यालकार आ जयनाथ मिश्रक बात अइ—इहो लोकनि जे साहित्यकार छथि से एही समाचार सं ज्ञात भेल। ओना ई लोक अइसे जनेए जे जयनाथ मिश्र डा० जगन्नाथ मिश्रक ससुर छथिन आ विद्यालकार सदा सं मैथिली विरोधी आ हिन्दीक प्रवल पक्षधर रहल। सभसंघ मे पैघ आ मैथिली विरोधी से पैघ हेवाक कारणे ई लोकनि अबसे सरकारी पुरस्कारक योग्यता रखैत छथि।

जहाँधरि महाकवि नागाजूनक प्रथम अइ 'इमरजेंसीक' समय मे ओ 'सरकारी चारा' गायक संग अस्वीकार केने छथि आ तँ जे एहि खेय स्वीकार कलाइ ताइ मे पूर्ण संदेह। 'कविवर आरती प्रसाद सिंह केँ हिन्दी साहित्यकारक रूप मे पांच सैंक मासिक बृत्ति कइदत भेटिण रहल छनि। परज्व एहि बेर एकठहुरी दस हजारक 'तारा' ओ स्वीकारैत छथि

संविधान विनु मैथिलीक ओ
मानचित्र विनु मिथिला धान
छाहि जारि सुइह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

* मैथिली *

मैथिली—मानै मैथिली भाषा हिमा-ल्य स गंगा तक आ बंगाल स गंडक तक परलर विशाल सुजना-सुफला शल्य श्यामला मिथिला देशक भाषा, तीन कोटि मैथिलक मातृभाषा।

ओना ई सर्वमान्य अइ जे भाषा कुनू खास ब्यक्ति वा वर्गक नाज होइ छइ, परंच मिथिला मे एहन आमक प्रचार कइल गेलख आ एखनो कइल जा रहल जे मैथिली कुनू विदेशी वर्गक भाषा थिक, आ थोड़-बहुत अवोध लोक एहि प्रचारक शिकार भेलख। तँ एहि आम केँ दूर करैक लागता छैक, हमरा जनतबै।

भाषा पर गप करैकाल सर्वप्रथम भाषा थिक की ताइसर विचार क लेब आवश्यक। भाषा के विचारक वाहन कइल गेलख। मनुस्ल सामाजिक प्राणी थिक। ओ मात्र समाज मे रहिते नथि अइ बलन समाजक अन्यान्य सदस्यक संग अपन विचारक आदान-प्रदान करैए, एक दोसरक सुल सुलक खोज खबरि रखैए, ओकर अइमानी होइए आ ई सभ होइ छइ भाषाक माध्यमे। सुल-दुलक अनुभव पशुओं के होइ छइ परंच भाषाक अभाव मे ओ प्रकट नथि क सकैए जे मनुस्ल बड़-सजता स क छइ। किन्तु भाषा मात्र एतबै नथि, असल मे विचारक वास्तव रूप थिक। नाबर्स भाषा के immediate reality of thought कहलनिहै। भाषाक बिना विचारक अस्तित्व ने रहैए। एहि स इहो पता चलैए जे मनुस्लक सामाजिक आ विवेकीशील प्राणी हैब भाषाक अंगसक कारण भेल। मनुस्ल के अपन मनक बात दोसर के कइवाक तथा दोसरक बात जनवाक आन्तरिक इच्छाए कहिओ भाषा के जन्म देलकै हैत। दोसर जे भाषा एहि रूपे जन्म लेलक हैत वा जार भाषा के जन्म देल गेल हैत से निश्चित रूपे समाजक सभ सदस्यक लेल एकैटा छल हैत, अन्यथा उद्येशक पूर्ति संभव नथि छल। तेतर, भाषा मनुस्लक लेल बनाओल गेल था एना कही जे भाषाक

विकाशक मूल थिक संघर्ष। मानव

सभ्यताक आदिकाल स आइ तक देग-देग पर मनुस्ल के संघर्ष कर' पड़ैछ आ पड़ि रहल छैक ई संघर्ष जिनगीक विभिन्न क्षेत्र मे। विभिन्न रूप मे होइत रहलैए आ भाषा एहि मे सहायक सिद्ध भेलैए। पहिले कहि आयल छी जे कुनू विकास एकक प्रयासे संभव नथि। स्वभावतः संघर्ष सेहो सामूहिक रूप मे भेलैए। सामूहिक अनुसार 'भाषा' कते बेचारिक आदान-प्रदानक माध्यम थिक, तते संघर्षक आ सामाजिक विकाशक साधन सेहो।

आब ज विचार करी जे भाषा संघर्षक आ विकाशक साधन केना थिक त केर शिक्षाक चर्च करब आवश्यक। शिक्षा भेल (शेषांग पृष्ठ छः पर)

वा नहि से त संविदे खूद। ओना लकरी हुनि दुस्मनसुख एक ललितक अइबा अइ एतौ अतीत उदाहरण खूद केने छथि आ जतौ कर' लक अइबाएत नै केने छथि। सब केँ नन्दिन हुनि हिन्दी ललितक (।) ललितक ही केने लक सं सब व एल छथि। हुनका मे अखर ए बे कबल कलक हलौ खे लकल कल खल-ए ककर सुदि त साहित्यकार लोकनि केँ पाछल जाइत।

जहाँधरि बिहार सरकारक मन छैक ओ अपन सदस्यो कलक केँ भंगवा लेल हजारी घड़पन करबै भारत, मैथिली आन्दोलन के अवकाल कए मैथिलीक विनाशक हेतु साहित्यकार केँ कीनबाक प्रयास करबै करत परज्व कि साहित्यकार सभ एते नीच, एहन दयाक पात्र बनवा लेल तैयार अइ? कि विवेकक लेसमात्रो ओकरा लोकनि मे शेष नहि छैक?

ज सरकार दुकड़ी पेकैए त निश्चित ओकर विशेष उद्देश-छैक, ओ प्रतिदान चाहैए आ ई प्रतिदान एक मैथिलीक साहित्यकार सं मिथिला-मैथिली विरोधी सरकार की चाहैए से ककरो सं तुकाएल नहि। इतिहास साक्षी अइ जे मां-बाप भनहि अपन नेना केँ बेचि लेने हो—कुनू वेडा अपन मां के हाट नहि चढ़ौलक-ए। देखावाही मैथिलीक साहित्यकार लोकनि की करैत छथि परज्व जनता के, साधारण मिथिलावासी केँ सचेत रहनाइ परमावश्यक। जगन्नाथक दृष्टि सनिक दृष्टि थिक आ ते मिथिला-मैथिली पर लागि चुकल-ए—से हमरा लोकनि केँ नहि बिगलबाक चाही।

● जय मैथिली

उषा आ जयाक श्रमिक

बिजुली पंखा आ खिलार मशीनक लेल उषा आ जया नहि मात्र देश विदेशों में बिख्यात अइ। एकर ख्यातिक कारण छैक जे पंखा आ मशीन उषा कोटिक होइत छैक जे निर्विवाद दक्ष श्रमिकक परी-श्रमक फल थिक। एहि श्रमिक मे लगभग तीन सए मिथिलाक श्रमिक अइ।

एहि दुनू कारखाना मे जे कि एके मासिक अइ, श्रमिक वर्ग के तीन श्रेणी मे विभजित कएल गेल अइ—(१) अरक्ष, अर्द्ध दक्ष, दक्ष। मैथिल श्रमिक प्रथम दू श्रेणी मे छथि। ओना इहो अजरजेक गप जे चाकरीक सम्पूर्ण जीवन मे लोक दक्ष किएक ने भ प्रवेछे। दून एहन ब्यवस्था छैक जे दक्षक श्रेणी से बहुलावा श्रमिक के पराके राखि अवसर दय देछ ? से जे हो, पउव वास्तविकता एए छैक।

एहि दुनू कारखाना मे कार्यरत श्रमिक औसतन ६००) से टाका सहित पचेत छथि। कइयक प्रवृत्ति नहि जे अन्याय छोट छीन कल कारखाना मे काज केनिहार स हिन्का लोकनिक आर्थिक स्थिति नीक छनि। कम्पनी द्वारा सख्तर मे औजालक सुविधा, नेना समक शिक्षा लेल विद्यालयक सुविधा प्रदान कएल गेल-छनि। पउव ई नहि बिसरबाक थिक जे ई महिना पैसाक लेल श्रमिक समुदाय के पर्याप्त संवर्ध करय पड़ल छनि। एहनो समय भेलैए जखन कि ६ मास बर्ष दिन धरि कम्पनी हड़ताल रखलैए आ बहुता के गोमक शरापानन होमय पड़लनिहैं। ओतबे नहि, जे पाइ पाइ हिनका लोकनि के आइ भेट रहल छनि आराम मे सेत नहिने भेटैत छलनि। कहिया कारखाना खुजल छल, मात्र पैतालिब टाका महिना पर श्रमिक वर्ग काज करैत छलह। अनाक तानना से विवादित छैक तहू पर काज करै छल काज भेट छल। ओना इहो गप सत्य जे मिथिलाक श्रमिक के संख्या आइ एहि दुनू कारखाना मे अइ, ताइ से बहुत बेसी पहिने छल। कालक्रमे लोक अवकाश प्राप्त करय अपन देकनोस दुरैत गेल आ नव लोकक बहाली भ नहि पओलक, फलतः एकर संख्या दिनानुदिना कमिते जा रहल-ए।

जहिला एहि कम्पनीक नाम देश-विदेश मे छैक, तहिना एहि मे कार्यरत श्रमिकक नाम मैथिली जगत मे। एहि मे एक ठाम मात्र अधिक संख्यक मैथिल श्रमिक छथि सेइत नहि, अपितु एहिछाक श्रमिक अन्धकाल बेटी सकय छथि। हिन्का लोकनि मे पूर्ण जातीय बेतना त छनिहै, संगहि मैथिली आर्योखन मे प्रबल

सहयोग रहलनिहैं। कलकत्ताक अधिकारी मैथिली सेवी संस्थाक पृष्ठपोषक एहि दुनू कम्पनीक श्रमिक वर्ग रहल-ए आ एहुखन छथि। जखन कुनू आन्दोलनक चर्चा होइछ, आर्थिक सहयोग लेल लोकक नजर एहि ठामक श्रमिक लोकनि दिह दौहि जाइत छनि। किन्तु वं मात्र आर्थिक सहयोग धरि सीमित रही त से निश्चिते एकमात्र होइत। मैथिली रंग मंचक रुपरचित आ कुशल कलाकार गौतम भास्ती, कनादन झा, कमल नारायण कर्ण, सदानन्द झा, काळी कान्त ठाकुर आदि धरि कम्पनीक श्रमिक छथि। गौतम भारती भोजपुरी भाषी होइतहु मैथिली मंचपर बतेक बेर आ जाइ दक्षताक संग उपस्थित भेल छथि तर्का कुनू निस्पक्ष इतिहासकार कहियो ने बिसरि सकैछ। डॉ० प्रेमशंकर सिंह सन महामान मंचक इतिहास लेखक जं नहि हो त निश्चिते भारतीयक नाम स्वर्णाशर मे लिखल जायत। कनादन झा मात्र कलाकार नहि निष्कर्षक नाटक लेखक सेहो छथि। हिन्क आइ दु गोठ नाटक लिखल पड़ल छनि, मंचो मेहनतिहैं पउव प्रकाशित नहि भ सकल-ए। मुकिमोर्चाक संयोजकक बर-योगी तथा 'देखिल बयना' क सम्पादक सेहो एए छथि। तहिना कमल नारायण कर्ण मात्र कलाकार नहि, कर्णको नाटकक निर्देशक रहि चुकल छथि। एही कम्पनीक रामाशार मिश्र मुकिमोर्चाक बरिष्ठ सदस्य तथा 'देखिल बयना' क पांच मे स एक-पाठनर छथि।

एहि कम्पनीक मैथिल श्रमिकक आर एगो विशेषता ई छनि जे ई लोकनि विभिन्न राजनैतिक दल से सम्बद्ध रहितहुँ मैथिली मिथिलाक नाम पर एकजुट छथि। ते कजे व (४) क सक्रिय कार्यकर्ता होथि जा भारतीय लोककदी लेखक आने हुनू दलक पटनाक प्रदर्शन मे एकजुट भैर सभ पहुँचल छलह, जेना आन काज मे रहैत छथि।

एहि कम्पनीक श्रमिक लोकनि एगो संस्थाक निर्माण से हो केने छथि—जे मित्रसंघक नाम जानल जाइछ। ई संस्था कुनू मैथिल श्रमिक जखन अवसर प्राप्त करैत छथि त तिनका प्रीति भोजक संग मिथिलाक परम्परासुधार विचार करैत अइ। एहि संस्थाक माध्यमे प्रवास मे रहिली प्रजाक मानसिक कष्ट से बहुत हद धरि मुक्ति तथा अपन भूमि, माया, संस्कृति व सत्य झुल्ल रहकक दुख हिन्का लोकनि के प्राप्त छनि।

—दुर्जतबा जती

विज्ञापन दाता लोकनि से—

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाइ। कम खर्च मे सुन्दर दंग स अधिक प्रचार, एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू

विज्ञापन व्यवस्थापक
अखणोदय प्रकाशन,

महाकवि गोविन्द दास

मिथिला-विभूति महाकवि गोविन्द दासक जन्म मधुबनी जिलाक छोहरा ग्राम मे कविपति विद्यापतिक देशवासनक स्थापना से कोविपति विद्यापतिक भेट छल। हिन्क पिताक नाम इन्द्रदास झा छलनि। हिन्क छोट भाइ रामदास झा सेहो विराट पंडित ओ नाट्यकार छलह, चिनक लिखल 'अनन्द विजय नाटिका' उपलब्ध अइ।

कविपति विद्यापतिक पश्चात् विद्यापतिक (परावर्ती) परम्परा मे सभ से पेश आ सशक्त कवि निर्विवाद रूपे गोविन्द दास के छथि आन नहि छथि। हिन्क लिखल पदक संख्या हजारक लगभग अइ। अपेक्षित शोध-लोजक अभाव मे हिन्क अन्यान्य रचनाक पता आइधरि नहि बाँछि सकल-ए।

हिन्क पैर मुखतः राधा-कृष्ण विषयक रहितहुँ कविपति विद्यापतिए कर्क शिव-शक्ति तथा अन्यान्य देवी-देवता से सेहो सम्बन्धित अइ। भक्ति-गुह्यार सौन्दर्यक त्रिवेणी ई अपन काव्यक माध्यमे बहने छथि। अपन पदक सम्बन्ध ई हलै हल ठाम लिखै छथि—रत्न-ऐक्य अथवा विद्यापतिर रचित पद गोविन्द दास।

विभिन्न पोथी तथा हिनक रचनाक आधार पर प्रमाणित होइए जे ई मात्र कविपति नहि विराट पंडित, बकिच कर्ण मर्मज्ञ, महान दार्शनिक तथा समाज विज्ञानी छलह। एए सर्वप्रथम विद्यापति के 'कविपति' कहि सम्मानित अइ—

कविपति विद्यापति मतिमाने।

छल गीत समचीत चोराख

गोविन्द गौर-सर-रत्न-जने।

महाकविक महानटक पछिल्लक एही लोक लेख पद थिक जह मे ओ अपन के मतियर अइत छथि, जे सुल सम्य रहितहुँ ओ पद तत्ता करय चाँहि, जेना कि जन्म (जैन) जन बल चाँहि हो।

जेना कि पंडितहैं करि अखल जी महाकवि गोविन्द दासक सम्बन्ध मे रहलनो धरि हमरा लोकनि के पूर्ण जानकारी नहि अइ कारण अपेक्षित शोध-लोज नहि भेलए। हमर लोकनिक लेल एहि संक्षेप छात्रक बात आन कि भ सकैछ, जे आइ धरि हिन्क समस्त पदक संकलनो नहि प्रकाशित भ सकल-ए। १९३२ मे मधुरानाथ-दीक्षित महाशय 'गोविन्द गीतावली' नामे किछु पद प्रकाशित अखल केकनि पउव 'मैथिली केरेकर' से अपरिचित होखक कारने एकर अपे नहि बुनि ओकरा कवि अर्थात् केकनि के पश्चात् गोविन्द दास ई संकलन करि कविप्रति अंकी लेखक लोकनि के खंडन-मंडन करय मे लड़ रहलन सेकनि। १९३२ मे लं रमानाथ झा 'शृंगार भजन' नामे किछु पद प्रकाशित केकनि पउव इहो शिवा छथि संवध भ गेलह। परिश्रम करय ने त पद संग्रह क सकलह आने गोविन्द दास के मैथिल हेवाक अकाव्य तर्क प्रस्तुत क सकलह। मात्र पंजीक सहारा लय किता जे।

उपर लिखल गेल अइ) हुनका मैथिल बना देखनि।

मैथिल जातिक ई विरोधता रहलक-ए जे ओ अपन विभूति के, अपन वस्तु के नहि चीन्हैए। जहिना इदुमान जी के केओ मन पाहि देनि—आ बुप साधि रहैत बढवाना ? त हुनका अपन बलक भान होनि, तहिना हमरो लोकनि के जखन केओ देखा देए, परिचय करा देए—तखने अपन विभूति के चीन्हैत छी। कविपति विद्यापतिक सम्बन्ध सेह भेट अइ, महा-कवि गोविन्द दासक सम्बन्ध मे तहिना भेट अइ। गोविन्द दास जे मैथिल छलह—ई बात सर्वप्रथम प्रकारा मे अनेखनि नगेन्द्र नाथ गुप्त महाशय। १९३१ साल मे 'मासिक वसुमती' पत्रिकाक कार्तिक संख्या, १९३५ साल मे साहित्य-परिषद् पत्रिकाक ३५ म भाग मे १९३६ सालक जेट-अपट्ट मासक प्रवासी मे १९३० ई० इछार मसक Modern Review मे एहि सम्बन्ध मे हुनक सम्बन्ध प्रकाशित भेट। एकर पछते १९३२ लेल मे लिखी मे बे कविपति-हो-न सम्बन्ध भेट जह मे लेखक एकर विरोध मे सटीक चित्र एवं चित्रण से किछि पठओकेनि। हुनक बहाना छनि जे गोविन्द दास 'मैथिल नहि, बंगाली छलह। आ एही ज्ञान से महकनि ई बंगाली लेखक प्रबल करय होमल रहैत छै। जेको केनन आ खेला आ मैथिल केनन निरुपजन रहि गेल। जह-कवि गोविन्द दास न गोविन्द कहलैए की लेख।

विद्यापति दासकहैं उन सँविन्दस क पदक सम्बन्ध लेख आ किछु लेखक-प्रबलन किन किनो खुदरा कालेव हल भेट अइ। एहि मे किन सभ अपन सुन्दरी तथा सम्बन्ध केकनि विद्वान कवि स लोचन करै छथि। पउव जहानी कवि प्रमाणित करै छथि। पउव जाइताम ओ रमानाथ मर्क तथा दीक्षित महाशयक तर्क के बड़ सहजताक संग काटि देत छथि ताइताम हुनक अपन तथा श्रुता-ओल तर्क से हो ताही सहजताक संग काटल जा सकैछ। उदाहरण स्वरूप सुकुमार सैन महाशय महाकविक पंक्ति—रसिक-शिरो-भणि मगरा-नगरी—

छीक सुनव कि नगरक चर्च करैत बौट छथि जे ई ने कि देखक जहिने होल त किन अनेक। व सुकुमार कर्ण कयन तम त कि अनादि होल जे अना-कवि केकन जह—आ त ओ मैथिल नहि छलह ! पोथी मे अपन बलक लेखक जे विद्यापति से एका-कृष्णक जीव गीत रचकनि से निम्नतावी स्वीकार नहि करय चाँहि छथि। त कि इकर मने लेख जे विद्यापति सेहो मैथिल नहि छलह ? पउव इहक विषय जे सुकुमार बाबू र सुदुत पय विद्वान सनीति बाबू सेहो विद्या- (शेषदा पृष्ठ पांच पर)

कविता

भाषात्मक पंक्ता सं सम्बद्ध

तीनटा मुक्तक

(१)

नहि हो केओ मुक्तिम, हिन्दू
नहि हिन्दू हो मुसलमान
“दाशमी” ई अनिवार्य आइ अछि
हो दुनु पहिने इतसान

(२)

सम तँ “आदम” केर ओलाह
अथवा “मनु” केर अछि सन्तान
माय-माय मे केहन भगड़ा
केहन ई चटिया ईमान

(३)

सम मानऽ ई महौ के माता
“आदम” केर अछि जन्म स्थान
एतऽ “शीश” केर अछि मजार आ
धर्म-सखिल गङ्गा सुधान

—फजलुर रहमान हाशमी

‘ले मशाल सभ कलुष जरा दे’

जग - जग मैथिल संथाळी, भोजपुर - संतान
सभ मूल छै छोट रहल छौ, धरक साज-समान ।

सभक माय दुक-टुक तकै छौ, अबला बनि छौ ठाढ़ि
निर्लज बनि सभ जीवि रहल छै फुसिये करै अराढ़ि
आबो नहि चेतवै तऽ जेतौ रहल सहल सम्मान ॥

कनहा-कुबड़ा बहिरा-बोका, मिछि के तोड़ौ माल
तोहर दुल्लखा भूल्ले सूतौ, तोहर हाल बेहाल
अपन घर मे तोहरे भाषाकेर भेलौ अपमान ॥

तोहर आँखि छौ जाली मढ़रु, देखै नहि निज भेष,
तोहरे घर सँ तोहरे सम्पत्ति पठवौ देश-विदेश
दिन पर दिन कंगाल बनै छै, ककरो नहि छौ मान ॥

माइ-माइ मे लड़ा-मिड़ाइ हथिओने छौ कुखी,
तौ प्रमादवश फूटि रहल छै, रहि-रहि दै छौ घुड़की
एकर ओकर पोठ ठोकै छौ, मूल नै छौ जान ॥

ठोढ़ि पारिकऽ माय कनै छौ, तैयो नहि छौ लाज
जे सभ बनटा खिवा रहल छौ, तकरो करै छै काज
अपन पर कुहरि सँ काटै, बनल छै नादान ॥

पूरब मे बिगुल बजै छौ, दही नगाड़ा चोट
ताळ टोकि मैदान ठाढ़ हो, छोड़ तोट आ भोट
चटै चटै, आबो तऽ चेतै, कर मे धरै कमान ॥

अपना हक छे सभ लईप, पखतो धरि छै चुप,
सुई फुडौने सभ बैसल छै, देख अन्हरिया घुप
छे मशाल सब कलुष जरा दे, तखने देतौ बिहान ॥

—अर्जुनलाल करण

दू गोटे लघु कथा

गिरगिट

मशालक ठाढ़ाही दुपहरिया मे अपन-
आ अपन गर्मवती स्त्रीक आहारक जोगार

कए जलन श्रीमान गिरगिट अपन डेरा
घुरलाह त देखत छथि जे पत्नी घोषना
लठकओने बैसल छथिन । बेर-बेर एकर
कारण पुछला उत्तर पत्नीक मथोन गंग नहि
मेलनि त ओ खिसिया के बजलाह—एहिना
घोषना पुलओने रहब त लोक कि अपरा-
जानी जनए जे अहाँक मनक बात बूझि
लेत ।

पत्नी ओहिना विधुआएल मनमनेलीह—
लोक बुझिए क की करत ? जं सरिपहुं
लोक के हुमर कबोटक चित्ता छइ त सत
करओ ।

—एक सत्त, दोसर सत्त, तेसर सत्त,

अहाँक बड़ जे नहि कइ ते अही कुँइ
नर्क मे पहुँच । आबो त बाबू ? गिरगिट
अलग समन क देखनि ।

पत्नी खसल करत स्वलयिन—चल
हमरा लोकनि अरखन छइ देश तँ जकि
बली ।

गिरगिट छगुन्ता मे पड़ि गेलाह ।
“आखिर कुन एहन बात भेलक जे हमरा
लोकनि के अपन जन्मभूमि छोड़ि चलि
जेबाक चाही ?”

पत्नीक पाड़ा गर्म भ गेलनि । “कनियो
जं शानक छूति रहैत त ई पृथ्व नहि पहुँत ।
आखिर कुन जाति बहुत अपन परिचय
रहैत छैक, विशेषता रहैत छैक । जं तह
मे वंचत त लोक केँ लोने मरि नहि जा
हेतक ?”

—अहाँक कदवाक अर्थ हमरा नहि
बुझे मे आयल । हमरा लोकनि अपन रंग
बदलाक लेल विख्यात छी । परिवेशक

डा० जगन्नाथ मिश्र उर्फ

थैलीनाथ मिश्र प्रकरण

बिहार भारतक सभ सं धनी प्रदेश
थिक जाइताम भारतक उपलब्ध ‘कच्चा
मालक’ वालि स प्रतिशत पाओल जाइत
छैक । पाठव एते होइतहुँ एहि ठामक
जनता सभ तँ गरीब आ अशिक्षित अइ,
केन्द्र द्वारा अक्वेलित अइ । एकर एक
मात्र कारण छैक जे एहि ठामक नेता वड-
मान होइत ‘आयल-ए’ जे केन्द्रक चमचा-
मिरी कए अपन सिंहासन केँ सुरक्षित रख-
नाइ आ तकरा वलें अपन स्वजन पोषण
केनाइ ठा केँ अपन धर्म बना लेत अइ ।
एहि तरहक नेता मे शीर्षस्थ छनि बिहारक
वर्तमान मुख्यमंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र—
जे थैलीनाथ मिश्रक नामे ख्याति प्राप्त क
रहल छथि । डा० मिश्र मे बड़-बड़ गुण
अइ—कोबड़ छोट कइत अपराध । एक
दिस जं ई मिथिला मैथिली चिरोभीक रूप
मे ख्यात छथि त दोसर दिस वर्णवादी,
समप्रदायवादी राजनीति करवाक लेल ।
परञ्च हिनक चर्चक सभ सं प्रधान कारण
रहल-ए हिनक स्वजन पोषण नीति आ

अनुसार रंग बदलाक पटुता हमरा लोकनि
मे जन्मजात होइए....

—मुदा वाहु मे हम सभ पाछू पड़ि
गेलहुं....पत्नी चीचे सं लोक लेखथिन ।

—अहाँ कि नेता लोकनिक बात क
रहल छी ? गिरगिटक प्रश्न भेल ।

—त आर कर ? आइ—कलिक
नेता लोकनिक करावरी करवाक दक्षता कि
हमरा लोकनि मे रहि गेलए ?

गिरगिट के वड़ जोर सं हंसी लागि
गेलनि । ओ ठहाका देत बजलाह—तँ ने
कहैत छैक स्त्रीराणक बुद्धि । हमरा लोकनि
केँ त एहि मे प्रवृत्ता होवाक चाही ।
कहूनीय छैक जे दस टके नहि नितराइ,
दस समाइ नितराइ ।

भारत रत्न

भारतक पर पड़ल-पड़ल भीष पिता-
मह सोचि रहल छलाह जे अन्यायी कौरवक
संग दय ओ नीक नहि केलनि । आगामी
इतिहास हुनका कहियो क्षमा नहि करत ।
अन्त मे ओ फेर हथियार उठेबाक आ
पाठव दिस सं लड़बाक घोषणा केलनि ।
ई गप्प बखन हुँयौवनक कान तक गेल त
पहिने त ओ वकड़ाएल किछु पश्चात्
राष्ट्रनीक संग परामर्श कए दोसर दिन इस्ति-
नापुर मे बिराट सम्राट आयोजन केलक ।
एहि सभा मे ओ भीष पितामह केँ एगो
पेघ प्रस्तावित पत्रक संग ‘भारत रत्न’क उपाधि
सं अलंकृत केलक । कहल जाइछ जे तकर
वाद जे भीष पितामह मओन बत धारण
केलनि ते जा बीलाह मुँह नहि खोललनि ।
● अप्रदूत

थैली (सलामी) लेवाक बात । अंग्रेजीक
बहुप्रचलित पत्र ‘ऑर्गेनाइजर’ जे कि
दिल्ली सं प्रकाशित होइए, तकर २-८ मई
१९८२ क अंक मे मुख पृष्ठ पर ‘द क्राइ-
मल ऑफ मिश्रा’ शीर्षक सं हिनक विमर्श
घोटाळाक मंडाकोर कइल गेलइ जकर
संक्षिप्त तार निचा देल जा रहल-इ ।

१) बिहारक सिरीट व्यवसायी ५ पाइ प्रति
छिड़र दाम चढ़ेबाक माँह बहुतो दिन सं
करत आबि रहल छल जकरा गफूर मंत्री-
मंडल आ बनता सरकार सोफे अस्वीकार
क देने रहैक । परञ्च डा० मिश्र एकरा
एक रुपया पाँच पाइ प्रति छिड़र यानी कि
७५ पाइ प्रति छिड़र सं १८० प्रति दाम
करवा देलथिन । मात्र एकटा व्यवसायी
केँ ६० लाखक स्टाक छलक जे एहि वडो-
सरी सं एक कोटि नफा कमाएल । एहि
पुनीत काजक लेल कहाँद मिश्रा साहेब केँ
एक कोटिक धैली प्राप्त भेलनि ।

२) साल बीज—१९८० मे बिहार
राज्य फौरेल डेमोक्रेटिक कमिशन मात्र

५०% (४०,००० मेट्रिक टन) साल बीज ३ विहारीक हाथें आ बाँकी ३% कमी-शन द विहारीक हाथें बेचबाक निर्णय लेने छल परञ्च बा० मिश्रक प्रभाव एकेटा व्यवसायीक हाथें (१९७५) प्रति टन भाव स बेचि देल गेल जखन कि मध्यप्रदेश मे एकर भाव २२५) छलक। एहिठाम स्मरण रखबाक थिक जे विहारक साल बीज सर्वोत्तम होइत अइ। सरकार केँ एहि सँ ७३२ कोटिक घाटा भेलक जखन कि मिश्रा सोहेव केँ कएक कोटिक आमद।

३) कोइला—कोइला मात्र लाइसेंस दला व्यवसायीक हाथें बेचल जाइत छल परञ्च मिश्रा सोहेव नियम परिवर्तन कए किछु ठीकेदारक हाथें बेचबा देलथिन—जकरा सँ व्यवसायी कीनत आ तकरा बाद उपभोक्ता धरि जायत। एहि तरहेँ बीचक लोकक उपस्थिति सँ कोइलाक दाम प्रति क्वीटल २५ टाका बढ़ि गेलक। किछु 'काळाबाजारी' जखन एफ० आइ० आर० मे फल आ मिश्रा सोहेव ओकरा मौलिक आदेश सँ छोड़ेबा मे असफल रहलह त लिखित आदेश धरि द देलथिन। बनारसक एगो गामी बदमास पकड़ल गेल छल त हिनक पैरवी सँ ओ लिखीगोरी अस्पताल मे भरती कराओल गेल, फेर बनास अ ओइ दाम सँ ओ फिराई भ गेल। ओकरा संग सँ बहुतरास कागज पत्र भेटल छलक। कहाँत ओ एखनो दिखी-पटना सीनातानि केँ घूमि रहल-ए आ पकड़निहार एस० पी० (सी० आइ० डी०) क बदली भ गेलक।

४) शराब—जनता असल मे नशाबन्दी लागू सेल छलक। मिश्रा सरकार एकरा तोड़ि एक्साइज विभागक नियम के उलंघन करैत 'लीडर दीप ओकेशन' बन्द कए एतने ठीकेदार केँ ठीका देलक कहाँत दुटा मद्य व्यवसाइ त खुलेआम बजए जे मिश्रा केँ मुख्यमंत्री बनेबा लेल ओ दुनू मिलि एक कोटि टाका खर्च केने आइ।

५) कुसियार—१९८० मे मिश्रा सोहेव घोषणा केलनि जे कुसियार उपचौनिहार केँ २२) प्रति क्विंटल दाम देल जेतक। १३ फरवरी १९८१ केँ एकरा ६ मास लेल भगित क देल गेलक। एहिठाम मन रखबाक थिक जे ६ मास कुतियारक पूरा 'रीजन' भ जाइछ। कहल जाइछ जे चिनी मिलक मालिक सभ दिखीक किसान सम्मेलन लेल ५० लाख मिश्रा सोहेव केँ येली भेंट केने रहनि—जकरा लोकनिक सखाह पर उपरोक्त स्थगन आदेश नकार भेल छल।

६) बाढ़ि नियंत्रण—१९८१-८२ मे बाढ़ि नियंत्रण नाम पर ८० कोटि खर्च भेलक जकर अधिकांश तकली बीछ पर सुगताम कइल गेल। १९७३ मे जखन मिश्रा सोहेव विचार मंत्री लखल तखन एके काज दू गोटा ठीकेदार के देल गेल रहैक Estimate committee of Bihar क अनुसार Associated Engineering corporation जे कि मिश्रा सोहेवक भाइ कमल नारायण मिश्रक छियनि तकरा 'विचिल बर्क' लेल (१,५७,५०० स्वनायर फीट) ६१,८३८) देल गेलक जखन कि दू गो आन ठीकेदार केँ २,१४,५०० स्वना-यर फीटक लेल मात्र १३,३६८) देल गेलक।

* घोटाला शिरोमणि विहारक मुख्य मंत्री डा० जगन्नाथ (थेलीनाथ) मिश्र केँ पदचिन्म बंगालक चुनाव अधियान मे देखि लोक केँ छगुता लागव स्वाभाविक के। स्वाभाविक एहि दुआरे जे जगन्नाथ बाबू पर दर्जनों घोटालाक आरोप छनि, सुप्रीम कोर्ट धरि केस हुनका पर पहुँचि गेल अइ आ एहि तरहक बदनाम-धन्य व्यक्ति उप-स्थिति अथवा भाषण सँ लोक मे कोप्रे स प्रति आकर्षण बढ़तक त एहि सँ पछ अज-गुत आर की भ सकैछ। परञ्च लोक—साधारण लोक सोभनतिया होइए, ओ हुनू विषयक तह तक नहि जाइए नहि जाय चाहैए। परञ्च जे दू-चार प्रतिशत लोक सभ विषय के खाइवा छोड़कए देखैक अग्याली अइ—से एकरो तहिना देखलक आ त ओकरा सँ भितरिया बात मुकाबल रहबै केना कतेक? ह, ओकरा लोकनि केँ अनटोटल अबसे लगलक।

समिति क अनुसार से सँ बेसी irregularities मिश्रा विभाग मे भेलनि।

७) व्यवस्था—१५,०००) तनला करवा क लेल मिश्रा सोहेव प्रति इ'जिनियर १००) टाका मङ्गे छलथिन। प्रत्येक बदली पर फराके तलानी छलक। स्वयं Engineers Association से हो एहि तब्य केँ स्वी-कार केलकए।

८) कर्पूरी ठाकुरक मुख्य मंत्रीकाल मे ६०० Assst. Engineer केँ पद पर इ'जिनियर ग्राहल कएल गेल छल, १९७८ क बैकार इ'जिनियरक आन्दोलनक फलस्वरूप। दू बरल बाद मिश्रा सोहेव लोक सेवा आयोग द्वारा विज्ञप्ति देलथिन जे उपरोक्त सभ अभियंता केँ फेर सँ आवेदन करय पड़तनि। शुरू भेल फेर आन्दोलन। आन्दोलनकारी अभियंता लोकनि जखन मुख्यमंत्री सँ भेंट करे चाहलनि त मिश्रा सोहेव अपन Personal Assst. केँ पठा देलथिन जे अभियंता लोकनि केँ २५ लाख 'थेली मुख्य मंत्री केँ भेंट करे लेल कहलथिन। थेली मिश्रा सोहेव केँ भेंटि गेलनि आ लोक सेवा आयोगक विवृति खटाइ मे पड़ि गेल।

९) मिश्रा सोहेव केँ कइ सेहना छलनि जे हुनक बेटी केँ बी० ए० (Eco. Hons) मे फस्ट क्लास फस्ट भेटनि। एहि लेल ओ पटना वि० विद्यालय मे मोडरेटस वाली करवओलनि। परञ्च कपार संग नहि देखलनि। मॉडरेटिंग बोर्डक अध्यक्ष डा० केदारनाथ प्रसाद प्रतिवाद स्वरूप इस्तीफा दय देलथिन आ छात्र आन्दोलन भइकल। बहुता छात्र राजति मे पढ़ल आ अन्ततः हुनका बेटी केँ दोसर स्थान प्राप्त भेलनि। ओना शिक्षक लोकनिक अन्दोज हुनक बेटी दोसरो श्रेणी पचाक योग्यता नहि रखैछ।

१०) आ तब सँ प्रधान अइ पटना आबन को-ऑपरेटिव बैंकक घोटाला बाइ मे ३५ लाख गवन करबाक आरोप मिश्रा सोहेव पर छनि। एकर मामिला सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचि गेल अइ—देखा चोरी की होइए।

साम्प्रदायिक राजनीति करवा मे अपात्राथ बाबू शीर्षस्थ छथि। गत ११ मई केँ रांचीक रोमन कैथलिक चर्च पहुँचि विशासक साक्ष ठेठुनिया देखाक घटना टटके उदाहरण अइ। परञ्च हुनक कलकत्ता आगमन निश्चिते रोमन कैथलिक सम्प्रदाय केँ प्रभावित करवाक उद्येश सँ नहि भेल छल। ओना साम्प्रदायिक लक्ष्यभावनाक जेहन दुसर आ सुदृढ़ प्रमूपा बंगालक रहलए—तेहन मरिक्के आगमन हेतक। ई निर्विवाद जे एहि लक्ष्यभावना के नष्ट करवा मे राज-नैतिक दलक भूमिका प्रधान रहलक-ए आ ताहु मे अगिल्ह दल-ए काप्रे व। परञ्च एहिठाम ओकर गोटी आइएर उजाड़ि रहलक। तेजे होउक, मुदा चक्रवाडि रचनाहर सब किछक इति मानि लेत?

केन्द्रीय उर्जा मंत्री श्रीमान् ए० वी० ए० गनी खान चौधरी महाशय एहने लोक से सँ छथि, स्वभावतः हुनका जगलथ बाबू सन कुख्यात लोकक प्रयोजन पड़लनि। एहि दुआरे जे कलकत्ता मे विहारी आ उत्तर प्रदेशक बहुत रास मुसलमान अइ। भाषा केँ धर्म-सम्प्रदायक संग जोड़ि 'दस प्रतिशत मुसलमान क भाषा उर्दू' केँ विहारक दोसर राजभाषा बना अतिशयित-अव्यवस्थित धर्मान्ध लोकक बीच तलत जनप्रियता कागजाथ बाबू अबसे हासिल केने छथि आ तकरे काज मे लगावय चाह-लनि चौधरी मोघाय। स्वभावतः जगलथ बाबू केँ चीछि-बीछि केँ ओही अंचल मे ल जाएल गेल जाइ ठाम तथा कथित उर्दू भाषीक संख्या बेसी छैक। जगलथ बाबू सेहो उर्दू मे (!) भाषण कैलनि। किन्तु चौधरी मोघायक कपड़े ग्राहल छथि—तयो चाल नाल चित।

कलकत्ताक मैथिलीभाषीक लेल अज-गुत क एहू सँ पंच कारण भेलक दोसरे। मैथिली आन्दोलनक 'स्वतन्त्रतय ब्योहूइ सेनानी' श्री बाबू सोहेव चौधरी केँ हलनि ने पुरलनि दू गोटा चोटैइ एकाउटेड, छसना भन सागर आ आधर चारि गोटा युवक केँ ल क दौड़लह दमदम हवाई अड्डा-पर मावा पहिरा एहलह जगलथ बाबू केँ पता ने ओ केना वितरि गेबा जे ई उण्डर व्यक्ति छथि जे मैथिलीक विनाश लेल उर्दू केँ दोसर राजभाषा बनओलनि आ भाई-भाइ मे भाड़ा वसओलनि। ई उण्डर व्यक्ति छथि जनिक लठैत ६ दिसम्बर १९८० केँ पटनाक राजपथ पर मैथिली सेनानी केँ फात-कपार भाड़ि देलक बाइ मे श्री चौधरी सेहो रहथि भनहि चोट नहि लगल होनि ओतबे नहि जगलथ बाबू आ-मोहनकारी मिथिला लूत लोकनि केँ आर० एल० एल० कहि बदनाम करे त सेहो बाब नहि एलद। श्री बाबू सोहेव चौधरी स्वयं आइएरि जगलथ बाबू केँ मिथिला-मैथिली बिरोधी कहि मसलन-आलोचना करैत आदि रहल छलह जे बात ओ राताराती केना वितरि गेबाइ!

ओना लोक जतय-ततय बजैत सुनल जाइछ जे चौधरी बी बूढ़ भेने दूरि गेबाइ।

भसिया जाइत छथि। किछु लोकक कहय छैक जे सुन्दरपुर वाली प० देवनारायण झा। चौधरी बी सँ मैथिली आन्दोलन मे पाबू रहितौ अपना गाम मे मुख्यमंत्रीक चुनाओन करवा हिनक शिष्यात्र बनि गेल-छथि आ निकट भविष्य मे विधान-परिषदक सदस्यता लाभ करे बला छथि। तँ चौधरी जी हुनका 'आँवर टेक' करवा लेल ई चाछि चकलाह-ए। ई त भविष्ये कहत जे गोटी प रहिने किनकर लाल होइत छथि परञ्च मैथिली केँ दाव पर चढ़ओनाइ लोक केँ अतरोहात अहंसे लगैत छइ। क्योहूइ बानि भनहि बेसी किछु लोक नहि बाजओ-दुर छथि नहि कएत पाउव बतेबति त कहिसे छथि ई नहि उचित विचार।

* हुनू समलोचक गणतंत्र केँ मुले दूटा, मुलेक लेल मुलेक सरकार कहने छथि। हमरा विस्वास अइ जे ओ आइ जीवित रहितथि आ भारतीय गणतंत्रक चेहरा देखितथि त निश्चित अपन धियारी मे एमेन्ड मेन्ट क ओकरा एना कहितथि मुलेक सरकार मुले द्वारा ४९०क लेल। विषयक महान गणतंत्र भारतक विभिन्न प्रदेश मे परिचम बंगाल सभ तरहेँ आगू मानल जाइए। एहीठामक केनिंग अंचलक एगो मतदात्री गत १६ मई केँ प्रजाइडिंग अपन लग बा केँ पुछैत छथिन—साइकिड कोपाइ बाबू? अरुच्य त होइत अमर प्रति प्रश्न केटाथिन—साइकिड। साइकिड की हूँ? माहिबा—केन आमार छेले जे बोल्लो साइकिड छाप दिते?

एही केन्द्र पर एगो दोसर बुद्धा मोहर आ मतपत्र ल क जखन सट्टा तँ घेरल घर मे पहुँचलौह त ओ विसरि गेलौह जे छाप हुनू चेहरे पर लोकाक छथि। अपन बेटा केँ शोर पारलनि शंकर। ओ शंकर!! अधिकारी बीच ने दलल देखितथिन—कोके डाकछैन? माहिबा केनो? आमार छेले शंकर केँ कोथाय जे छाप दिते बल्लो दुइबा गेठाम.....

ई त मात्र नमूना छिक। पता ने एहन कतेको मतदाता एहि देसे मे छथि बनिक्का लोकनिह मत पर बीटि बल्लति-निधि खालन करैत छथि।

*** परिचमी देशक कतेको पत्रिका मे भरिपेजक विज्ञापन छपलए—हुनक अवतार भ गेल। हुनक नव नाम छनि-मैसिये स्वामी। एहि मे आगा कहल गेलह जे ओ एखन गुप्त छथि आ मात्र हुनक किछु शिष्य ई बात जनिए। परञ्च दू मासक भीतरे ओ अपन परिवय प्रकाशित करताइ आ टेलीविजन सँ विस्सक समस्त लोकक संग-जकर जे भाषा छैक ताही भाषा मे गप-रुप करताइ।

एहि तन्त्र मे विशेष जनश्रुतिक लेल कतेको पता देल गेलह बाहरर समकें स्थापित करे लेल कहल गेलह। एहि मे सँ एक अइ दीनार मेत, ५६, बार्टमाउथ पार्क रोड, लन्दन।

कहूनी हुनू बेचाय छैक जे बीच त की की ने देखब।

—उचित वज्रा

महाकवि गोविन्द दास

पति के मैथिल मानि चुकल छथि आ अख त भरिलक हुनू बंगाली विद्वान के मोह नहि रहि गेल छनि। खुमार बाबूक दोसर तर्क छनि के १६५४-५७ मे नरक बसल सजनीकान्त दासक एगो पोथी मे बहुते पद मेटलक जाइ से त पांच टा पद कही मुश्किल नहि छैक। गोविन्द दास जे १७म शताब्दी मे मिथिला मे बँटि के कहिता रचलिन त एहि पोथी मे हुनक पद रहनाइ असंभव। हुनक इहो तर्क निराधार छनि कारण पहिने त सजनीकान्त दासक नवमलक वर्ष संदिग्ध छैक आ दोसर गोविन्द दास जे १६५० धरि विख्यात कवि नहि भू गेल छलाह सकरे कि प्रमाण? सतरहम शताब्दीक अर्थ १६६६ किछहु ने भ सकल, विद्यापतिक पद बंगाल मे तबे प्रचलित आ प्रिय छैक के मैथिलीक नव सं नव कविक गीत के पदावली-परम्पराक छल-चक्रा बंगाल धरि पहुँचवा मे कनिबो समय नहि छगत छैक—एहि मे अचरक की?

दोसर तर्क देल गेल अर के गोविन्द दास श्री वल्लभ नामक हुनू बंगाली कविक चर्च अपन कविता मे बने छथि, तहिना केने छथि श्री वल्लभ कविकचर्च। श्री वल्लभक नाम ५१ टा पद पदव्यवहार मे पाओल पाओल जाइत तथा श्री दल्लभक नाम २५ टा पद। जे छैत गोविन्द दास एहि हुनू बंगाली कविक उल्लेख अपन गीत मे केहनि त ओ बंगाली छलाह। जं नामो-लेख नामो तं केओ हुनू जातिक हो, तेयो गोविन्द दास बंगाली नहि भ क मैथिलीक भ सकैत छथि कारण ओ पूर्ण निष्ठा आ सम्मानक संग विद्यापतिक स्मरण केने छथि।

एवम् प्रकार अनेको तर्क उपस्थित कएल गेल-ए। हुनका हुनू बंगालक राज-दरबार सं जोड़ल गेलए परउच हमरा लोकनि जनैत छी जे मिथिलाक विद्वान समस्त 'भारत' मे पसरल रहलाहए आ विभिन्न राजाबाजे मे सम्मानित पद पर आसीन होइत आयि रहलाहए। एगो तर्क इहो देल गेल-ए जे जं ओ मिथिलाक रहितथि त कि हुनक एको गो पोथी मिथिला मे सुरक्षित नहि रहैत? मिथिला मे जे हुनक पोथी सुरक्षित नहि अर से विदु पूर्ण खोजक कहले केना जा सकैत? दोसर विद्यापतिको नाम त नीक पोथी त मिथिला सं बहरे पाओल गेल-ए। ब्यालि भक्ति तरंगिनी' बंगलादेश मे प्राप्त भेलक। तें कि विद्यापति मैथिल नहि छलाह?

हिन्तका लोकनिक अन्तिम तर्क छनि किछु शब्द केँ ल के जे वर्तमान मिथिला मे प्रचलित नहि अर। जं एकरे आधार मानि लेल जाइ त फेर विद्यापतिक जेव कएय पड़ैत। 'लखय' शब्द तथा 'पारय' प्रचलित नहि छैक तें कि विद्यापति केँ सेहो मैथिल नहि मानल जायत? जं शब्द केँ आधार मानल जाय त निश्चित तकर प्रतिपात बहर केँ ल जेबाक चाही आ एहि तर्क मैथिली वा बंगला भाषा जकर वेशो प्रतिपात शब्द गोविन्द दासक पद मे हो तकर महाकवि पर अधिकार दे देल जाइक त निश्चित हमरा लोकनि केँ आपत्ति नहि

हैत। ओना एहिठाम ई कहब आवश्यक जे पोथी बंगाली विद्वान द्वारा प्रकाशित हेबाक कारणे ओकर शब्द मे पूर्ण परिवर्तन क देल गेल छैक, तथापि वर्तमानक जे रूप छैक से किन्तहु बंगला नहि मैथिलीक बेसी लग छैक। प्रस्तुत अर उदाहरण स्वल्प एगो पद :—

रति रत-अवरा अलख अति पूर्णित
शतलि निभत-निकुञ्ज।
मधु-लोभे भ्रमर भ्रमरिण भंकर त
विकशित फल-फूल पुञ्जे।
विनोदिनी पाषव-कोर।
तमाले बेढल जनु कनेक लताबिलि
हुहु रूप अति उजोर।
मुजे-मुजे छन्द चन्द करि सुन्दरि
रति-रसे अलसि हुहु तनु दर-दर
रति-रसे अलसि हुहु तनु दर-दर
सुवासित वारि भारि भरि राखल
मन्दिर निकट पद-तले शतलि
अनुचरि गोविन्द दास ॥

एहि गीत मे 'हुमाय' एगो शब्द अर जे वर्तमान मैथिली मे प्रचलित नहि। जं मात्र एकरा आधार पर एहि गीत केँ बंगला मानल जाय त 'कोर' शब्द बंगला मे नहि छैक (कोल छैक) 'भरि'क बदला 'भती' करे राखा होइ छैक, दर-दर नहि छैक, हुहु नहि छैक, उजोर नहि छैक (आलो होइ छैक) करिक बदला 'करे' होइ छैक एवम् प्रकारे जं सम तर्क मानियो लेख जाय जे महाकवि गोविन्द दासक जन्म बंगाल मे भेल छलनि, भरि जीवन बंगाले मे रहलाह एकर शब्द मे जे ओ बंगाली छलाह तेयो इ त किन्तहु प्रमाणित नहि भ सकैछ जे बंगलाक कवि छलाह। गोविन्द दास जं कवि छलाह त निर्विवाद ओ मैथिलीक कवि छलाह, विद्यापतिक उत्तरीचकारी छलाह। ओना स्वयं मधुमदार महादेय सेहो मैथिल गोविन्द दासक अखिल केँ स्वीकारिते छथि तथा हुनक नामे निछाउखत दू गोटा पद शेष मे प्रकाशित कएनहि छथि।

महाकवि गोविन्द दास मैथिलीक कवि छलाह तकर प्रबल आधार इहो अर जे मात्र मैथिलीए साहित्यक तेहन विशिष्ट परम्परा छलक, मैथिलीए साहित्य ओतेक विकशित छल जाइ मे पार लोकनि सं ल क कवि दोहराचार्य ग्योतिरीस्वर ठाकुर महाकवि डाक, कविपति विद्यापति सन युगपुरुष भ भेल छलाह। बंगला साहित्यक एहन कुन परम्परा नहि छलक आ तें इहात् पहिले-पहिल एहन महाकविक प्रादुर्भाव असंभव बुझना जाइछ।

निष्कर्षतः महाकवि गोविन्द दास जे मैथिलीक कवि छलाह ताह मे सन्देह नहि तथापि बंगाली विद्वान लोकनि पूर्वाग्रह मुक्त भ जं हितक सम्बन्ध शोध-खोज करितथि त प्रसंसीय होइत नै कि निराधार 'अपन' कहि प्रचारित क देनाइ। ओनहुना साहित्यक रसिकक लेल सम्पूर्ण विश्वक साहित्य अपने होइत छैक तें विश्वक समस्त साहित्यकार केँ अपन बुझाइ उदात्त भावनाक परिचायक यिक मुदा पूर्वाग्रह मे परि मात्र अपनहि टा बुझाइ संकीर्णताक परिचायक।

—मुजतबा अली

लाल बुभुकर चिठी

श्रीमान सम्पादक जी !
बय मैथिली।

आगरा हाल सुरति ई जे देसकोस मे कलाक अभाव त बुझ केँ अकालेक स्थिति छैक। सम ठाम लोक त्राहि-त्राहि क रहल-ए। परउच केना कि कहबी छैक ने जे प्रेत चाहय अशौच, से कहै छी तहिना 'काला-बाजारी' सम दिन-दुला राति-चौगुला चीज-बस्तुक दाम बढ़ा मालोमाल मेल जा रहल-ए। जेना सम चीज मे आगि लागल होइक।

सम्पादक जी अहां त जनिते छी जे लाल बुभुकर के अपना सं बेसी अनेके चिन्ता रहैत छनि। माथ दुलाह छई ककरो आ बेबन रहै छथि लाल बुभुकर। ओना हमरा बुझाए जे अपनो लाल बुभुकरक एहि पुरान रोगक शिकार भेल छी। ने त हम पुछै छी जे जं विधान सम्बन्ध महामहोपाध्याय पंडित प्रवर श्री राधानन्दन झा ई बाबिए देखिन जे 'बुज्जिका' अहाइ हजार बलक पुरान भाषा थिक त एहि मे महाभारत केना अशुद्ध भ भेलक? जं राधाबाबू हमरा सं पहिने समक केने रहितथि त हम आर विख्याक केँ बुझा दितथि जे 'मैथिली बोली' एकरा सं प्रभावित नहि भेल अर—असल मे एही सं बहार भेल अर। श्रीमान अपना ओह ठाम त बड़ प्रचलित कहबी छैक जे 'बाप रहै पेट मे आ पुत गेल गया'।

इ त कहैत जे छली, रामजीक प्रताप सं आ मुखगंगाक आशीर्वाद सं, ओ मंच रहैक बुज्जिकाक बादपर हिन्तका बजाओल गेल रहनि, तखन अपने इ आराध केना कंदल जे ओ बुज्जिका छोड़ि आन भाषाक स्तवन पाठ करताह? कहबीयो छैक जे जे दिए पाकल आम सह ने होथि ईल भा। मिथिला मे पूर्वापर सं भाट लोकनि होइत आएल छथि, जे भरि सूप केँ कहै, भरि चोरी धान देखिते जमानक सातो पीडीक गुणगान नाभिपुण्ड सं जोर लगा केँ करैत छथि। तें जं राधाबाबू ओहि परम्परा केँ उजागर केलनि त वेजारे की? कम स कम राधाबाबू ओहि श्रेणीक नहि छथि जे सेतह कती आ पड़इ फटा ककरो दुवारिक। ओना अनेक एहि कथन सं हम भरि छितनी सहमत छी जे राधाबाबू मैथिल छथि, मिथिलावलक प्रतिनिधि छथि। परउच तहिना इहो सत्य थिक जे ओ मैथिल जनताक बल पर नहि 'नोट अथवा सौट'क बल पर विजयी होइत आयल छथि। दोसर इहो गौलशाली परम्परा त मिथिलावल के प्रतिनिधिक छनि जे दिल्ली पटना जाइते मिथिला-मैथिलीक विनाशक षडयन्त्र रचै लगैत छथि। डा० जगन्नाथ मिश्र त एकर जीविते प्रमाण छथि। तें ज राधाबाबू एहि परम्पराक निवाह केहन त अनुचित की? हम त ओहि दिनक प्रतीक्षा बड़ व्यग्रताक संग क रहल छी जे राधाबाबूक पत्र भक्त 'मैथिलीक वयोवृद्ध सेनानी श्रीमान बाबूशहरे चौधरी' जेना दमदम हवाइ अड़इ पर जा जगन्नाथ बाबू केँ माला पहिरा एलधिन तहिना हिन्तको पहिरा अओथिन। पता नै मैथिलीक कानि दूत बुन्दपुर वाली पंडित श्री देवाराखण

भा एखन धरि किएक चुप छथि? उदू केँ बिहारक दोसर राजमायाक घोषणा होइते ओ अपन दुआरि पर जगन्नाथ बाबूक बुझा ओन दहीक मटकुरी ल केँ केने छलाह से राधाबाबू केँ से पता नै किएक पतनुकाने नेने छथि?

दोसर बात ई जे राजनीति मे एखन हंसि बजबाक प्रतियोगिता लागल छैक। अपने केँ त बुझले हैत जे विश्व विख्यात फुसिमाह हेबाक कारणे जगन्नाथ बाबू हिन्दराजीक प्रिय पत्र बनल छथि आ तें मुख्यमन्त्रीक सिद्धान्तसद छथि। राधाबाबू सेहो राजनीति करैत छथि आ तें नहि दिखी त पटना के प्रधान सिद्धान्त येबाक लिखा त हेबै करतनि। तें जं ओ एहि प्रतियोगिता मे फनलाहए त बेजाय की? हमरा लोकनि केँ त 'तहेदिले' सं आशीर्वाद करक चाही जे यथाशक्ति राधाबाबूक खिला पूर होइत आ इहो 'बुज्जिका' केँ बिहारकें दोसर राजमाया घोषित करथि।

हं, आर एगो बात। अपनेक बुज्जिका मे प्रकाशित अपन प्रिय वस्तु विश्व वंचक पत्र अपना नामे देखल। छगुना लागल जे विश्ववंचक जी सन पाकल व्यक्ति एते जल्दी केना 'बुज्जिका' भय गेलाह आ दोआर फेर पर दुल गेलाह। हमर एगो चिटिया लिखने छथि—हजारों साल तक नरगिसु अपनी डेनुरी पे रोती है। कहीं मुश्किल से होता है, चमन मे दीवार पड़ा ॥ से कहबाक आशय मे तात्पर्यक मतलब ई जे विश्ववंचक जी केँ एते जल्दी नहि घबरेबाक चाहियनि। जं ओ हमर सलाह मानियि तें किछु दिनक हेतु लाल बुभुकरक आवादा पर नौटोटा बाहि उतरथु आ घेयतनाक अन्धारा कसु। प्रमाण पत्र मेटलक बाद किछु दिनक हेतु वंचक कुल भूषण डा० जगन्नाथ मिश्रक पाठशाला मे शिक्षा लैथु आ तहखन व्यावहारिक क्षेत्र मे उतरथु। अन्यथा खाली विश्ववंचक नाम राखि लेने काज चलनिहारे नहि, एहिना समठाम ठकाइत रहताह। हुनका त भरिलक इहो पता नहि हैतनि जे मिथिलावलक गली गली मे जगन्नाथ मिश्रक पटु शिष्य सम पुरि रहल-ए आ अवसर पविते केहनो दिग्गज केँ चारू नाल चिते क सकैए। जहां धरि ओ हमरा सलाह देलन्हि, से हुनका बुझल चाहियनि जे जं जगन्नाथ मिश्र कुन अखादाक खलीफा छथि त लालबुभुकर सेहो कुन अखादाक एतबे किएक, घेयतनाक अन्धारा ओहो हमरे मरवादा पर केने छथि आ एहि तर्क हमर पटिया मेलहा तें गुद कती चटिया सं डेराय? दोसर बात, डर त जगन्नाथ बाबू केँ हेबाक चाहियनि जे कहीं कुली ने छिना जाइत आ ओ विशाल बका वीचे मे लटकल रहथि। लाल बुभुकर केँ कथीक डर? ने भारतक नकशा पर मिथिला छनि आ ने संविधान मे मैथिली—जे छीनेतनि। कहबाक माने मतलब ई जे जखन घरायीयो लोक हथि आइए नेने छनि त एतनि कि चोरक डर भगवो चुकओओपी नहि? से सम्राट्कजी अपने कने ज्ञानभक्त जोग दक हमर प्रिय बन्धु केँ बुझा दियनि से अप्रह। पत्रोत्तर नहि देबाक प्रबल आकांक्षी श्रीमान लाल बुभुकर बुभुकर माननाही

रामनिशान

वर्ग-२ अंक-१०-११ जुलाई अगस्त, १९८२ मूल्य-पचास पाइ

सम्पादकीय

वाजव्य थिक अपराध

३१ जुलाई १९८२ स्वातंत्र्योत्तर विहारक इतिहास मे एगो अविस्मरणीय तिथिक रूप मे अंकित होएत। कहबी छैक जे कुहुत्तिये नाम कि कुहुत्तिये नाम। से बिहारक वर्तमान सरकार, बक नेता मल्लिक अर्जुन झा ० अगलाय निरुद्ध छि। नन्हि कुट्टू कुहुत्तिये नहि क सकल हो। परज एकर कुहुत्तिये से दूरी कायेंछ काय त निरिक्त कालीय संविधान त मोट पोषा देयर म सकल। एहि ने इन नेव आ इन छोट लेहो निर्माण केनह सहच तकिरहु नहि होएत। धर्म-सम्प्रदायक संग भाषा के जोड़ि मुजबमानक भाषा उठू कहि तकरा बिहारक दोसर राजभाषा बनओनाइ एहने एक कुहुत्ति छल बा कही धुनित अपराध छल, जकरा एखनो कम से कम मिथिलाक बनमानस बिसरि नहि सकलए। एमहर ३१ जुलाई के एगो प्रवर्धन भेल विधान सभा मे मात्र ५ मिनटक आ नव विधेयक पास भेल सरकारक ओलोचना केनाइ देबनीय अपराध। माने प्रेसक स्वाधीनता के गारदनि दवा देल गेल। ओ प्रेस जकरा गणतंत्रक प्रहरी कहल जाइछ। आ जखन प्रहरीए नहि रहत तखन गणतंत्रक स्थितिक अनुमान सहजहि कएल जा सकल।

ओना त भारतीय प्रेसक चरित्र आ विशेष के स्वाधीनताक प्रवचात, बड़ उज्जल नहि रहलकए। ई उएह प्रेस थिक जे राजकुमारक लघुवीक रंगक वर्णन करत नहि अघाइत रहलए आ महारानी साहिबाक मुआक रंग-पाड़िक वर्णन मे पैजक-पैज रंगि देत रहलए-परज एकर विपरीत, भनहि तकर संख्या नाग्ये किष्क मे होइक, किहु प्रेस अवस्थे अइ जे राष्ट्र आ लोक के सर्वोपरि मानैत रहलए आ जखन कखनो ओकरा पर प्रहार भेलक, ओकर विरुद्ध काब भेलकए त ओ सजग प्रहरीक रूप मे 'जगले रहब' दाहि देत रहलए। आ निर्विवाद एहने प्रेसक मुहपर ताळा लगैवाक प्रयास थिक विहार-सरकार प्रेसविधेयक-जे 'काळा कानून' क रूप मे चर्चत म रहलए।

कहबी छैक जे कनाह के कानहा कहने ओकरा लगत छैक। परज ई मान कहबी नहि कटु सत्य अइ। त जे जगन्नाथ मिश्र मगवती पर १०८ छापर के चढ़ा आ ओकर रक्त मे खान केलेनि-कुतू ताथिकक सुभाव पर आ से प्रेसबला छापि देलक त हुनका लगनाइ स्वाभाविक। स्वाभाविक छैक जे हुनक सुपुत्री के फस्ट क्लास फ्लट मेंटो ने केलेनि आ त ई लेल ओ जते चक्रवालि चळ्ळनि सभ प्रेसबला प्रकाशित क जन-जन तक पहुँचा देखके-त प्रेस पर खिस्मिनाइ। ई उएह प्रेसबलाक काज थिक जे हुनक छोट सं छोट किदांनी के देखाव क देख। (विशेष विवरणक लेल देखू-देसिब बनना-जून, १९८२-४०-जगन्नाथ मिश्र उर्फ थैलीनाथ मिश्र प्रकाश) त भरिषक जगन्नाथ बाबू सोचने होथि महाराष्ट्रक भूतपूर्व मुख्य मंत्री अटुलक शिबनि त उबरवाक हेतु प्रेसक नुर बन केनाइ छहि दोल उगम नहि।

अने बिहार ई कला तक नहि बलक का लेल। एहि सं रहिते तन्त्रिकाक तकार एवं उद्दीता लकल एहि लइक आइत बन चुकल। उद्दीता ने त दइ फकरक स्वीक संग काइ सर्वताक संग बलात्कार कएल-गेल ओ ओकर हत्या काइल गेल। तकर चर्च की ? परज जगन्नाथ बाबू एमहर किहु दि सं प्रेस पर कब बेसी खिस्मिनाइ छलह। गत बर्ष त ओ कम से कम एक दिनक लेल आर्यावर्त इण्डियन नेशन के दखल कइए लेने रहथि। परज अबन एहि सभ उपाय सं ओ हारि गेलाह त गत मार्च मे तीनटा अमर के तमिलनाडु पठओलेनि-ओइठाम प्रेसक मुँह केना बल भेलए से उपाय बनवाक लेल आ जुलाईक शेष दिन ओकरा कार्यरूप मे अनलेनि।

आगठामक अपेक्षा विहार सरकारक एहि चालिक विरोध कइ तीव्र भेलए आ म रहलए। १ अगस्त के बिहारक पत्रकार लोकनि जगन्नाथ मिश्रक वहिष्कार क निर्णय लेलेनि। २ अगस्त के लगभग १०० पत्रकार के पत्रकार गैलरीक पास रहितो संघर्ष से नहि प्रवेष्ट करय देल गेलनि आ लडिआओल गेलनि। ६ दिसम्बर १९८० के मैथिली सेनानी लोकनि अपन वाक्स्वाधीनताक दावी मे प्रदर्शन केने रहथि त एहिना लडिओल गेल छलाह। २ अगस्त के एहि स्वाधीनताक दावीद्वार प्रेसकमी लोकनि अपनयो जगन्नाथी छोट द्वारा लडिआओल गेलाह। ३ अगस्त के एहि करिषा विधेयक विरुद्ध मे लोक सभा सं सभसे विरोधी नेता बाहर म गेलाह। विदार विधान सभा ओ विधान परिषद मे दुइदुल नाद चलेत रहल। ४ अगस्त के बिहारक पत्रकार, छात्र-युवा वर्ग, राजनैतिक दलक नेता-कमी (विरोधी), शिक्षक, श्रमिक संगठन सभ के सभ बाट पर पहरा एहि 'काळा

लोक कथा

एकटा रहथि राजा। ओ जेहेने परा-कमी रहथि, तेहेने प्रजा बलल। राजाक नाम-यश अर्पित राज सं बाहरो पसरल छल। परज सभ रहितहुँ राजा के मानसिक शांति नहि छलनि। कारण तेसरपन बीति रहल छलनि मुदा कुतू सखा-सन्तान नहि भेलनि। एकरे चिन्ता मे राजा-रानी दुनू बेकती सतत खिन्न रहैत रहथि।

एहिना एक दिन दुनू गोटे उदात भेल रहथि ता एगो बाबाजी हुनकाह। एका खनर पच्छहि बाहर का बाबाजीक नीक कर्क सखात कइनि आ रचित बन देलक शोषका केलेनि। बाबाजी एकी शाये एक मुट्ठी आवा चाउर टा लेबक इच्छा प्रकट केलनि।

जखन रानी सप सं एक मुट्ठी चाउर बाबाजीक मोड़ी मे देत छलथि त बाबा-वीक नबरि रानीक उपर एकटक लगल रहल परज राजा-रानी धार्मिक प्रवृत्तिक हेतक कारणे एकटा अंगुष्ठा लेवे किएक करितथि। बाबाजी चाउर के अपन मोड़ी मे रखैत राजा सं बललह-हे राजा ! हम अहाँ लोकनिक मनक व्याथ चुकैत छी। तें हम जेना कहैत छी तेना करू। आहाँ लोकनि के निरिचित सन्तान लभ होएत। परज स्मरण राखू जे इ बात तीन आदर्मी छोट चारिम नहि जानि सकय। अगिला मंगल दिन बेखन अहाँ अपन गाछी जाएव आ किनुरिया गाछ सं एगो आम तोड़ि लायव। मन रहव जे आम माटि पर नहि खय। दहिना हाथे भस्त्रहा फेकव आ नाम हाथे आम लोकेव आ बाहिना मेने आङन जाल आयव। बाट मे कतवो केओ टोकव त बाबी नहि। रानी मा ओ आम अपन खोइछ मे ल ओ फेर विलौट-लोढ़ा सं ओकरा कुचा बना खा लेती। आर एगो बात-पूर समय भेनहि जे मतव कातीइ जाइ मे प्रथम त बाटक बन लेत, किहु दोस्रो एगो छेँह होएत। ओइ छेँह के आँ हो-पोछे रजिब कब क राखि देबक आ तेव सन्तान ओकरा दुनू-तीन लेल देब करिऐक। अपन काजक सेव मे इन बखन घुल त ओ हमरा द दी। हमर कहल मे मिलियो भरि अरुन्धता नहि हो-नै त भयंकर अनिष्टक संभावना।' एतका कहि बाबाजी विदा म गेलाह।

कानून' क विरुद्ध अमन आवाज बुलन्द केलनि आ ११ अगस्त 'काळा-दिवस' क रूप मे पाछन करवाक निर्णय लेलेनि।

आन्दोलनक चिनगारी नीक जकां सुतंगि रहलए। आन्दोलन कर्ता लोकनि अपना के बेजाय सं बेजाय स्थितियो मे लइत रहवाक लड़ा के विजयतोरण धरि छ जेवाक लेल प्रस्तुत क रहलहए। ओमहर लाठी-गोलीक बल पर चलेवला सरकार सेहो अपन लाठी मे तेज लगा रहलए वन्दुक मे गोली भरि रहलए। बेसी त भविष्य कहत-परज ई धरि सत्य जे आन्दोलनक समय केहनो अगामी सरकार के भुक्त पड़लए त जगन्नाथ मितर कून सेतक मुँह छथि। 'जय प्रकाश-आन्दोलन' के एखनो लोक बिसरि नहि सकलए। तखने बिहार के पथ प्रदर्शक कइल गेल छलक। कि बिहार अरन एहि सशक्ति के पुनः पाचि सकत ?

● जय मैथिली

संविधान किनु मैथिलीक ओ
नानाचित्र किनु मिथिला धाम
छाहि जारि सुझाह करव हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

एकटा रहथि राजा

सन्तान सुखक कसना माने सं राजा-रानीक आनन्दक हीना नहि रहल। अगिला मंगल के जेना-जेना बाबाजी कहने रहथिन राजा केलनि आ रानी गर्भवती भेलथिन जे थोड़े दिनक बाद स्पष्ट परिलक्षित भेल। समय पुरला पर रानीक गर्भ सं एगो दिव्य राजकुमार आ दोसर शंख बगम लेलक। नगर उत्सव सं दलभरित म उठल। फेर नेना दिनदुधिन देव होइत गेल। एहि जइ दिन जेना जीत गेल ते हुनका लोकनि के कण्ठो मे रहने।

किहु दिनक बाद जखन तेन हुनक भेटक आ ओकर ऊपर ऊपरदेक त एने अनपुत भेल। राजा-रानीक सच्चा लागि सभ दित हुनक सुतवाक घर से राखल रहनि। एक दिन बखन कते बिलम्ब सं ओ लोकनि घुरथि त देखे छथि जे रानीक शरीरक भात छिल रहनि-जेना कुतू नेना छिटि-छाटि क खेने हो। हुनू गोटे छगुता मे रहथि परज निरुद्धी हेवे ने करनि। एकर बाद ई कम प्रया-चलेत रहल। अचरजक बात ई जे दिन पर दिन भात बेसी खलिआय लगलक। परज ई बात ओ लोकनि वबो ने करथि।

किहु दिनक बाद राजा कतौ बाहर गेल छलाह। एक राति रानी पलंग पर पड़ल रहथि आ खाली संचार लगा गेलनि। हुनकर आँखि कते लागि सन गेल छलनि ता देखलनि जे एगो नेना पीढ़ी पर बैसि क ला रहल अइ खेलक बाद गिलास सं कते पानि पीवि आ हाथ धो ओ शंख मे घुसिया गेल। रानी के भेलनि जे ओ भरिषक अपना देखलनिहें मुदा उठला पर संचार देखि सपनाक वास्तविकता पता बललनि-परज फेर ओ घुपे रहलीह। आनदित न हुनू बेकती एके पारी मे ला देव छडीह-से आइ एके भरी हेवाक काले हुनका सुलहे रहन बलनि।

देवा दिन जखन एज कुचर ई एनी सभ हुनक खललनि। हुनू केले नहि जेना कनेलेनि आ ओइ राति घरे मे तुकाइव रहल। फेर जखन खललनि संचार लगाक केनाइ कन के बल गेल त थोड़ेक कालक बाद देखे छथि जे ओही शंख सं एक दिव्य नेना न्हार भेल आ आसन पर बैसि भोजन क रहल ए। जखन

ओकरा थोड़ेक खायल भ गेले त राजा दोग सँ बहरा लग्यो के नेता के पकड़लनि। ओ अमरकान्त गेले। राजाक संगदि रानी सेहो बुमि गेलीह। राजा पुछलनि—अहाँ के छी बाउ ? एना चोरा संचार अँडटा दैत छी ?

नेना बाजल—हम आम बेओ नहि—अहाँ लोकनिक छोट संताप थिकी—जे शैलक रूप में अमर रही। रहल जात संचार अँडेटाक—से सन्तानक अँडटा भौ के त नहि लग्यो बाही। तै इन लमदित नाइइक बाही से काइत छी। आ चोरा क त हमरा लागइर पड़त—शैलक छेक कुटी संचार लागइर ? नाइइक कुटी त हम राति में चोराइइ क पीवत रहलहुँ आ माँ ओकरा सनना बुनैत रहलीह।

—किन्तु आब त हम अहाँ के हाँइ से रहि जाय देव। रानी बजलीह।

—तै तखन हैत जे शैल के तुका क कुनू पेटी-वार्कस से बस क दिवौक। ओना महात्माजी त तपो दुमिह जेताह—तखन ? तकर भार हमरा पर अह—राजा बजलीह।

ओइ दिन सँ बाजक बहरे खँय लागल परंच वात देखि नहि जाय तै राजा हुनू बाजक के महलक भीतरे लेख-धुप, पढ़-लिख के व्यवस्था केलनि। जे जे दिन मौतिक एक दिन सँ राजा-रानी के बच्चा सँ छोटका नेनाक संस्कार आ जेबलित पर प्रसन्नता होनि तहिना महात्माजीक आगमन सँ सम्भावित अनिष्टक वात सोचि चिन्ता सेहो। आखिर एक दिन महात्माजी आबिह मेळयिन आ अपन धरोहरक याचना केल-थिन। राजा-रानी हुनू बैकती हुनका पूर्ण अन्नक संग प्रणाम केलनि आ शैल आनि हाथ में देलनि। महात्माजी शैल हाथ में लिहति बुनि गेलाह आ आखि लाळ करैत बजलाह—राजा ! वात त एहन नहि छल। शैल खाडी अह' तै एहि शैल सँ जे बहरा-इछ हो—तकरा शिम हरा सोना उपस्थित कल तै त हम शाय देव।

नेचारे राजा के त काइ त शोभित नहि भट द हुनू नेना के उपस्थित करैत बजलाह—है महात्मा, इहइ हुनू सन्तान थिक—अपनेके जे इच्छा हो चुनि लिअ। महात्मा छोटकाक हाथ पकड़लनि आ उठि चिदा भेलह। राजा-रानी उदास मन पर जा पड़ि रहलनि।

ओमहर महात्मा की ओइ वालकक संग गाम-घर सँ बहराहत एगो छोट सन पाँतर में पहुँचलाह, आइठाम सँ बाट दु दिस जाइत रहैक। महात्माजी वालक के पुछलनि—बाउ, एहिठाम सँ ई हुनू वाट हमर कुटी धरि जाइए। एगो ई मासक आ तोकर बलें दिनक वाट छेक। छ मासक बाट में अँवत-पहाड़, तटी-नाला स छेके संगहि बाघ-तपक से हो भय छइ, जखन कि बलें दिनक वाट निरुद्धक छेक। आब अहाँ कहुँ जे हुनू वाटे जाइ ?

महात्मा जी छप मासक वाट जल्द ने। बाघो-साँप देखबक अवसर भेटत आ बहरी पहुँचियो जयव। वालक बाजल।

महात्माजी आनचरित होइत वालक दिस देखलनि आ बजलाह—चल, हमरा लोकनि आपस बली। वालक चुर छल आ

ओकर दाव लहि गेलक। महात्माजी ओकरा संग फेर राजाक ओइठाम पहुँचलाह आ छोट नेना के राखि जेठ बनक माछ बेल-थिन। शोषक डरे भीनु राजा बिना कुनू आनाकानी केनहि महात्मा जीक प्रस्ताव स्वीकार कर जेठजन के संग क देखथिन। महात्मा जी ओकरा छ चिदा भ गेलह।

फेर जखन ओइ पाँतर में पहुँचलाह त महात्माजी ओकरा सँ उदाइ सन केलथिन। जेठका राजकुमार कने हरनैक लम्बाक छल तै बलें दिनक बाट लेबक लीकारक महात्माजी प्रसन्न भ चिदा भेलह।

महात्मा जीक आगमन एगो जगहो जेठक बीच विशाल पहाड़ छल। हुनू जगह सँ राजकुमार के ओ राखि देखथिन आ आदेश देलथिन जे ओ अवसर महलक बाहर नहि जाए। जे जेवो कार्य त सम दिस जाए मुदा दक्षिण दिस नहि जाए।

महात्माजी सँम दिन प्रातःकाल सन पूजा क क बहरा बाथि आ फेर दोसर-तेकर लामक आपस आवथि। एहि बीच राज-कुमार सभ दिस घूम परंच आदिवासीर दक्षिण दिस नहि जाय। एक दिन ओकरा हजान हि छुल्लक की तै, ओ दक्षिण दिस चढ गेल। दक्षिण दिस एगो विराट बड़क गाछ रहैक आ जाइठाम एगो पेड़ इनार। इनार में हुकड़ी रैत ओकर अन्नक छेकन नहि रहलक। इनार में पानि नहि रहैक—खाडी ओकक माथ भरल रहैक। राजकुमार के देखिते मुँह सँ ठाका मारि हँस्य लागल।

हँसबाक कारण बिनावा केना पर मुँह सँम कहलक—वाउ, दू दिनक बाद तोरो इहइ गति भैतह—तै हमरा लोकनि के हँसी लगि गेल ए। जे महात्मा तोरा अमलकहे, से असल से कवाइ थिक। ओ एहिना गाम धर सँ लोक के घना क अनेछ आ महा-काकीक सनस बलिघटन करैछ। मुँह के एहि इनार में बँद छ आ वेह के मांस राखि देवी के माँग लग्यो आ अपने काइछ।

—मुदा एहि सँ बचक उपाय ? राजकुमार आनृतताक संग पुछलक।

मुँह सँम बाजल—बचबाक उपाय छेक अवलै, जे तोरा सँ पार लाग ओ तखन। परस शानि छेक आ महात्मा मरि दिते मत राखत आ पूजा-पाठ करत। सोमखन ओ तोरा बजओतह—सनादि करा नव बख पहिरा की। पूजा जखन भ जेत त देवी प्रतिमाक दहिनाकात बज्जा करह मे लेल देवकत रहलक। ओ तोरा देखै लेल कहत जे बाउ देखइक त लेल रमै मेळ बा नहि। तौ जेखन तुही मुका कराह मे देखइक तखन देवीक पपर लग मे तखारि राखल छेक तोर सँ तोहर माथ छोपि लेवह। तै तोरा जखन ओ लेल देख्य लेल कहत त तोर कहियहक जे केना देखल जाय तै कने हुमा देखुन। ओ तोरा देखबैक लेल अपन पूरा गदनि-मुका क कराह मे ताकत आ तो पहार करि मन राखी जे एके छओ मे ओकर माथ वेह सँ कात भ जाइ आ माथ के नाम होय लोक लिह आ कालीक पपर पर राखि दियहुन। फेर ओकर शरीर के कराह मे द हुकड़ी-हुकड़ी काटि खूब नीक

जकां मुखि देवी के बड़का थाही से भोग लगा दियहुन। सन काव विधिवत भेने देवी प्रसन्न भ बरदान माछै लेल जे कइयुन त पहिल बरदान हमरा लोकनिके बीवित करबाक माइह, दोसर देवी के एहि अमि-शन जगह छोपि आनठाम चलि जाइक, ओ तेकर अपन के मन होअ। तीन सँ बेसी नहि हेवक चाही। तंगहि मन राखी के महात्मा बड़ पहुँच छपि—तोर माछ-नरिना सँ ओ तुम्ह से बचुन। आब तौ बाह। हुना लोकनिक दुःखकरना तौ। हम अह—तौके त रहै तार रहिते मे अँड होइत।

राजकुमार अँडत कला मे बुदि आलल। ओइ राति ओकरा नीस नहि लेलक। ओ बड़ व्यग्रता सँ शनि दिनक बाट जोह्य लागल। परंच ओ तौ ततक छल जे महात्माजी के एहि समक मनको नहि लागलनि।

अस्तित शनि दिन एल। महात्माजी मरि दिन पूजा पर बैसल रहलाह। राजकुमार के सेहो उपाय कराओल गेलक। आ टीक जखन सँम पहुँचैक—महात्माजी सनस कइ गेलक अन्न कला केवनि आ लक-हुनार के सेहो सनस कला नव कल पहिराक देखलक। ओ छेर हुना पर केलाह त राजकुमार के सेहो अन्ना दगल मे बेल लेलनि। लगभग पहर मरि पस्वत महात्मा जी ध्यान तोड़लनि आ राजकुमार दित देखित बजलाह—बाउ देखियौक त जे करा-इक लेल रमै मेळ बा नहि। राजकुमार के त जेना बाण मारि देखलक। किन्तु ओ अपना के एहि स्थिति सँ मुकाबला करैक हेतु तैयार केनहि छल। भट द बाजल—नो, म गेलक। महात्मा जी ओहिना शान्त भावै कहलथिन—कने उठि के देखियौक तै।

राजकुमार उठि के दुरि सँ देखि बजल—लौकित छेक। 'एहिना लोक देखैत छेक ?'—महा-माजीक शिखरत देखैत।

राजकुमार केर सन्मरितताक संग बाजल—शमा कर, हमरा नहि हुन्छ अह। इक सेप सँ अपने देखा दी त केर पूछ नहि होइत।

महात्माजी तखारि सँ आखि हटा राजकुमार के देखैत आलै सँ उठलाह आ कराहक का बा पूरा गदनि नमरा कराह मे तर्कत बजलाह—हे एना.....

एहि बीच राजकुमार तखारि छ हुनक माथ देह सँ पराक क देखल। ओ अपन बात पुराओ तै क लकड़ा। आ जेना मुँह सँम कइते छेकक काम होय नाथ जोइकि देवीक पपर पर राखि देखैक। नहि दिन लइल रहलक बाटे जानि नै कलक जे ओकरा ओतेक कुती आ जोर आवि गेलक। ओ महात्माजीक छटपट करत देखै उठा कराह मे ब देखक आ ओही ने तखारि सँ छोट-छोट हुकड़ी काटि नीक जकां भुजि थाही मे छ सगवतीक सामने पशि देखल आ कलजोहि बाजल—माँ भगवती, जं झुट गखी मेळ-हो त नेना जानि क्षमा अहाँ के प्रसाद परसल अह—भोग लगत। एतवा कहिते एक अदभुत शब्द सँ मंदिर गमना गेलक आ सभ दीप मिमि गेलक। राजकुमार जने संजल—आइठाम

छल ताहीठाम कल ओइने ठाढ़ भेल रहल। कनेके कालक बाद जेना भगवतीक शब्द ओकरा सुगाइ पड़लक—आइ करिपहुँ तौ खादीछ माथ भोग लगओलै। बहुत दिनक पश्चात् आइ मन तुल भेल। आइ तोरा के बरदान लेबक छौक माछि सै।

राजकुमार बाजल—माँ ! जे अरिपहुँ राखि अलेख पर प्रसन्न छी त हुनरा तीन पाँट बरदान दैअ। नहि त ई जे नालमा की हुन बलें केक के हाँदे अन्नक माँस कलाओल लेह-ह आ कला सोइलक मुँह देखियौक हुन मे परंच छेक ओकरा हम के दीन दैलौक। लेख—आइ राई अन्नेछत मेला के छपि अन्न सन लल बाउ आ लेख के जखन हुना हुनू राइ-विपति पड़्य आ अहाँ के स्मरण करी त अहाँ उपस्थित होइ।

भगवती कहलथिन—तहिना हैत। आ

फेर एकटा विचित्र सन शब्द भेलक—दीप सभ अपनहि करि गेलक आ वालभर तलेक हजोतलन म गेलक जेना दिन होइक। राजकुमार ओहिना मेला सँ बहरा हटा कल गेल त हम ओकरा सन्मरित देखलक आ कल करैत लेल होइक जखनक सनस अन्न देखलक। राजकुमार के नेना मे गेठ आ कनेक लकड़ाक बड़ हलै प्रसन्न रहल। मेलेके—आइ लक सभ ई उपर केक। हम ओकरा बेरि लेलक आ जेना एगो अभिनव उपचक रूप ल लेलक। देखैत-देखैत राति बीति गेलक आ पूवकात मे मुखज भगवान उशि एलथिन। तखन राजकुमार के भुलक अतुलभव भेलक। हम केओ भीति मंदिर मे आयल—भोजन जना बनमौल केक। लमक संग परचय-नात भेलक—तखन राजकुमार जखनक जे ओ सन हुनू तै हुनू देशक राजकुमार छलक। हम जाइकइ एकरा अपना ओइठाम लेबक गेठ देखलक। ओने जे बाइराहा छलक जह मे नरपत्नी विचित्र देखैत छेक। जेना लकड़े छेक जखन। सँ प्रसन्न राज-कुमार के नरोटुल कोटा चुने लेल कहत गेठ आ सन सभ के सन एक-एक टा जोड़ा पर चदि अन्न-अन्न देश बिदा भेल। राजकुमार सन के विदा क लोकक—बर त जेबे करव, किष्क ने आर कने दित-दुनिया देखल जाय। ई सोचि ओ बोझ पर चढ़ि बिदा भेल—जेहरे घोड़ा ल जाय। ओइ अभिशप्त जगह पर एक मात्र घोड़ा—जे ककरो कान मे नहि लगलक—घात चढ़इ लागल.....

बाइत-बाइत कलन ओ कनेके हुन गेठ त बट मे दू गो बाजक बला केलाह मेलेके। जेठका राजकुमार जे बजलक—है राजकुमार, हम बाघ क बला अवलै छी—मुदा विश्वासघात नहि करव। बेर विपति मे मरतिर करव। राजकुमार के मन मानि गेलक। ओकरा घोड़ा पर बेठा लेलक आ बिदा भेल। छोटका नाथ उदास भेल देखैत रहल। ओ सभ आर जखन किछु दूर गेठ त एगो गाछक धारि पर दू गो बान्क बला

राजकुमार बाजल—हो छै त बाज, जे सामय कही हमरे पर ते जेट करे।

बाघ कहलक—है राजकुमार, हम बाघ क बला अवलै छी—मुदा विश्वासघात नहि करव। बेर विपति मे मरतिर करव। राजकुमार के मन मानि गेलक। ओकरा घोड़ा पर बेठा लेलक आ बिदा भेल। छोटका नाथ उदास भेल देखैत रहल। ओ सभ आर जखन किछु दूर गेठ त एगो गाछक धारि पर दू गो बान्क बला

लेखावत छल। फेर जेकरा बाजल—हे राज-कुमार हमरो अपना संग नेने चले नै। छी त हम वामन चिह्नि, दुदा तयो कहियो जान मे लागि जेत छी।

राजकुमार ओकरा दिव देखलनि आ कहलथिन—चल आ बस एही घोड़ा पर आ ओकरो बैसा लेलनि। छोटका फेर खिल मने हिनका लोकनिक नाट दिस तकेत रहल।

बाइत जाइत जाइत सभ पड़ि गेलक त राति-बीच विषम कर लेल राजकुमार एगो गाम मे पहुँचल। गामक कात मे एगो घोंचीक घर रहैक। धुइछुइ छा एगो छुड़िया के ठाढ़ देखि ओ कहलथिन—मे मीठी, राति बीच हमरा रख देवे। सोरे फेर त चलिष जायव।

छुड़िया बाजल—रहए किएक नै देव। अहाँ कि हमर घर छटा क बाइद। बड़ भाग सँ ककरो ओइठन केओ अन्धकार अवे छइ। रहू नै।

छुड़िया एगो पटिया आनि आबन नै ओछा देखलनि आ एकर छोटा पानि आनि देखलनि। राजकुमार गोठुछा धरक ओसारा से घोड़ा के चान्हि हाथ-पथर घो पटिया पर बेसि गेल। कात मे जावक आ वामन क बा पड़ि रहलनि। छुड़िया मानस-भात मे लागि गेल। मुदा ओ जते बेर घर जाय त कानय लागय आ आबन आबय त हंसय छोगय। राजकुमार के ई देखि बड़ छगुता लगलनि। अतएत ओ पुछिए देखलनि—मीठी एगो रात पुलिगो?

—किएक नै पुछव ? छुड़िया बाजल। राजकुमार पुछलथिन—तौ जते बेर घर जाइ छै त कानय लागै छै आ आबन एने हंसय लगै छै—एकर की कारण ? छुड़िया बाजल—बाउ, अहाँ एक दिनक भइनु छी, ई सभ बुझि क की करैक।

राजकुमार के बड़ हठ केला पर छुड़िया कहलनि—बाउ, हमरा एके गो वेठा अइ, जेकर काबि गोना छइ—आइ बरियाती गेल ए। तौ ओही खुशी से हम जवन आबन अवे छी त हंसै छी। मुदा परस हमर वेठा देख घेरे मे चलि जाइत सहे तौ क जते छी—जवन क जाइ छी।

एकर बाद ओकरा जत करैत पुछल-दिन—देख के नै। ई देख की लेल ? छुड़िया बाजल—से अहाँ केना हुल्ले। मुदा ओकरा पेट मे पड़ि चुकल छैक। राजा क कात छैक—बेरी-बेरी सभक घर त एक गोटे क सभ दिन देखक पेट मे जेतैक। से नहि भेने त देवता एक दिन से कतेको के खा जाइ छले।

राजकुमार कहलक—ठीक छै—परस तोरा वेठाक बदला मे हम बाएव, मुदा ई बात तौ कती बाज नहि, आ ते पखन सँ कनवे कर।

छुड़िया कनेत बाजल—से कोना हैत वेठा—अहँ त ककरो केदे हवे नै। हम जवन वेठा खातिर अहाँ के कोना मरना देव ?

—आइ सँ हमरा तौ अपने वेठा बुझे। हम तोरा मा कहलैक। मुदा ई गप दोसर केओ नहि बुझे।

छुड़िया मानि त गेल मुदा ओकरा मान मे कनोइ रहवे करैक। ओमहर राजकुमार

एक बेर फेर दम्पताक संग परलक नाट जोइय लगल। छुड़िया बाजल जेन सँ घर मे भानव करय लागल त राजकुमार बाप सँ पुछलनि—बाउ, आब कहै—देव त केना सामना करबि ?

बाप बाजल—हम कयिक क ओकर बाइ घ लेवे आ उस स मस नहि होमय देव।

विम पुछने वाम कहलकनि—हम त फट द हुनू आखिए फोड़ि देवेक।

राजकुमार बाजल—तखन हमरे तँ-आरि सँ ओकर घेरे कटत कते देरी लागत। मुदा सभ केओ सावधान भ जाइ जो।

राति मे सोजत माव क सभ सुतल आ ओर मे राजकुमार घूमि फिरि नगर दर्शन केलक आ फेर राति मे छुड़ियाक आबन का विषम। भिनमरे डिग डिगि पड़लक के आइ ककर गरी छैक से पुनरि पोल-निज मीठ कर देखराव छा ठीक समय क चह बाप नै त राजा ओकरा बहे-इन्वे माकरी मौका देखित।

राजकुमार तैयार भेल। घोड़ा पर बाध आ बाम पहिने सवार गेल आ ओ छुड़िया सँ आशीर्वाद लेलनि। छुड़िया कनेत बाजल—वेठा हमरो अरदा ल क तौ नीवें-मुदा मत कहैत छले जे ओ हुन नहि। राजकुमार विदा भेल—पुवरिया पोखर दिस।

राजकुमार जखने पोखरिक समीप पहुँचल त ओकरा भयंकर गर्जन सुनाइ पड़लक वकरा ओ देखक गर्जन मानि वार ततक भ गेल। जखने मीठ पर पहुँचल त ओ विद्यालयक विकराव देख मुँह बावि छुटलक। वयवा टपकल। उड़ल वाम। आ चमकि उठलक राजकुमारक तब्यारि। दक्षिण मे दिवरा मीठ सन दलक लइस डेर भ गेलक आ शोणितक वामकार छूटय लगलक। राजकुमार सभन संगीक संग दोसर दिस विदा भ गेल।

राजकुमार फिरलो ने छल मुदा नगर मे देखक मरवाक खबरि पसारी वका पसरि गेलक आ कतेको लोक देख के मारनिहार रूप मे अपना के प्रचारित करत राजदरबार मे हाजिर भेल। एकर कारण ई छले जे राजा देख के मारनिहार के आधा राजक संग अपन बेटी किछि देखक दलिका केने छल। मुदा राजदरबार लेला बेटी देखि हुनका तबे मेहन आ दे आइ ककर का छलक तकर पता कबेत ओनिनिक ओहि ठाम सिपाही पठाओल गेल। सिपाही ओनिनिया के पकड़ि दरबार मे उपस्थित केलक। राजा पुछलथिन—आइ तोहर वेठाक पार निया के पकड़ि दरबार मे उपस्थित केलक। राजा पुछलथिन—आइ तोहर वेठाक पार छलौक, ओ गेल छलौक कि नहि ?

ओनिनिया बाजल—महाराज, हमर वेठा काबि गौना करक आपल-ए तें हमर बरिहतपुत ओकरा नहि आय देखक आ ओकरा बदला मे अपने बल गेल।

राजा पुछलथिन—ओ छोक कहाँ। देखवाक पेट मे हैत, आर कतय। एतना कहि ओ हवोटकार भ कानय लागल। राजा ओकरा साँवना देत कहलथिन—आइ देख मारल गेल-ए मुदा के मारलक तकर निखनी नहि भ गेल। तें तोहर बरिहतपुतक वरति। तौ जो, मुदा बाधरि ओ नहि अवेछ तोरा घर पर विपारीक पहरा रहैतीक आ ओकरा अविदे शतय पठा दरी।

ओनिनिया के नेने एमहर सिपाही सभ ओकरा घर पहुँचल ता ओमहर सँ राजकुमार सेहो बुझि गेल। ओ अविदे इतत वाजल—मौनी मधुर खुआ। आइ तोहर देवता के यमपुर पठा देखियेक। आइ सँ ककरो सँ-वेठा ओकरा पेट मे नहि जेतक।

सिपाही सभ आनन्द सँ ओइ विचित्र राजकुमार के देखलक वकरा घोड़ा पर बाध आ बाम शोभायमान रहैक तथा तब्यारि एखनो शोणित मे रंगल रहैक। ओनिनिया खुशी सँ राजकुमार के पनिया ओकरा चुम्मा देत राजाक आदेश सुना देखलैक। राजकुमार सिपाही सभक संग राजदरबार विदा भेल।

राजकुमार के दरबार पहुँचिसे मुदा शहीदार सभ सहति गेल। राजकुमार सँ गप केलाक बाद राजा विलसत भ गेल। जे देखक मानहार ई युवक ओनिनियक बरिहतपुत हो ना नहि हुनू देखक राजकुमार किछ। ओ अपन कनक अंगुठ राजकुमार क संग अपन बेटी के बियाहि आवा राव रूप देखलथिन आ मुदा शहीदार सभ के पकड़ि काली देवाक आदेश सुना देखलथिन। राजकुमार स्त्री आ राज पावि वन सँ रहय लगल।

एहिना मास ६ मास बीति गेल। आब राजकुमार जेना घर-आबनक वातावरण सँ उधि गेल। एक दिन ओ राजाक समक्ष थिकार खेलाय जेवाक प्रस्ताव रखलनि। राजा एहि प्रस्ताव के स्वीकार करत हुनाव देखलथिन ओ सभ दिस थिकार खेलाय, मुदा दक्षिण दिस मुल्लियो के नै जायि। राज-कुमार सुभाकक पालन करैक बात गछि तैयारी मे लागि गेल। राजा हुनका संग आर किछु चतुर थिकारी के तैयार कए विदा केलक। संग मे गाजा बाजा से हो रहैक।

राजकुमार भरिदिन घोड़ा दौड़वत रहल। पड़क एकटा थिकार हाथ नहि लखनि अवजक बात त ई जे जते जे थिकार उठैक से दक्षिण जंगल दिस पड़ा जाइ—आ ई अपन सग मुँह छेने घुरि आवयि। दिन लगविआयल जाइत छल। अन्ततः ई निर्णय लेलनि जे आय जे हुनू थिकार भेटतनि—से बलव किएक नै जाओ ई खोर करत आ चितु मारने नहि फिरि नइ। संवेन सँ एगो हजिर हुनका सेहो लनि आ ओ मर केलनि। हजिर सेहो देखि दिव कएत आ हो जखने सेहो गेल से पतो नै लगलनि। ओमहर रूप छत्रभुक्त करत रहे आ तइखन हरिण हिनक आखि सँ अद भ गेलनि। एमहर पिपासे कंठ सुखा रहल छनि। किछु दूर पर एगो पोखरि सन हुमना गेलनि आ ई ओमहेर घोड़ा दौड़लनि। ठीके एगो विशाल पोखर रहैक मुदा चारु कात सँ घेरल—मात्र एक या घाट—बल-वक जेवाक सिद्धी। राज-कुमार घोड़ा सँ पनखल आ खट-खट सिद्धी उतारि बइखन ओजुर से कल केव लखल। तइखन दोलकाव बसल एक रूपती कुमारि कन्या पर नबारि पड़लनि जे हिनका हाथक इशारा सँ जल नहि पीवाक लेल कहि रहल छलनि। राजकुमार कातर दृष्टि ओकरा दिस तकेत अतुनय केलथिन—हे देवी। वियसे हमर कंठ सुखा रहल-ए आ मन व्याकुल भेल अइ। जे चित्र बल नहि पीवि

सकलौ त प्राणे छुटि जायत। एहना अब-एना से अहाँक निनिध कि उचित भेल ? युवती बाजल—हे आगम्यक, हम आहाँक स्थिति बुझि रहल छी, परञ्च हमरा संग वाधता अइ।

—जे कुनू अतुविधा नहि हो त कि हम ओहि वाधताक सम्यक् जानि सकैत छी ? राजकुमार पुछलथिन।

युवती बाजल—जे अहाँ जानए चाहैत छी त छुनू। अहाँ देखिए रहल छी जे हम कुमारि छी आ हमर एकमात्र सम्बल ई पोखरि थिक। हम प्रण केने छी जे एहि पोखरिक उपयोग उणइ व्यक्ति करताह जे हमरा संग विवाह करवाक लेल राजी होथि। आ हमर विवाह हुनके संग होइत जे हमरा पाशा खेलाय मे हरा देथि। कि अपने एहि लेख तैयार छी ?

राजकुमार प्यारें व्याकुल छल। ओ गवा खेले लेख तैयार भ गेल। युवती कहलनि—आ जे अरने होरि जाइ तखत ? तखन की ? हुनक प्रश्न भेलनि।

तखन हम अहाँ के, अहाँक घोड़ा, बाध आ बामक संग पाथर दना एहि मीठ पर स्थापित क देव। बाध तैयार छी ?—युवतीक प्रश्न छलैक।

राजकुमार स्वीकृति दय पाशा खेलाय लेल बेसि गेल। पाशा तीन बेर चलल परञ्च तौनू खेप राजकुमार हरि गेल। युवती हुनका सभ के पाथर बना देखलनि। ओमहर जं बं राति बीते राजा-राजीक संगहि राजकुमारक पत्नी चित्ता सँ व्याकुल रहथि। महल मे कक्षा-रोडि आरम्भ भ गेल आ मोर होइत-होइत लगरो हल्ला भ गेलक जे राजाक वमाय जे काबि-थिकार खेलाय गेलथिन से नहि फिरलथिन। अरि-सक दक्षिण पर चल गेलथिन आ तें फिर-जाक आवाजो नहि।

ओमहर जे मुँह सभ नवजीवन प्राप्त क के अपन-अपन देश फिरल छल अपन-अपन जीवाक खिलवा लोक के कहैक। ई बात परसेत-परसेत राजकुमारक माय-बाप कान तक गेलैक। ओकर छोटका भाइ के खखन ई रक्षमण घटनाक पता चलैक त ओ माय-बाबू सँ प्रस्ताव केलक—माइ के खोच नै केवाक। पहिने त राजा-राजी अपन-अपनी केजियत करत से अतुमहि देखलनि। जेकरा राजकुमार घोड़ा कहलनि किना नेह। एहि ले ओ जे जे दिनक बत देखक करत ओकर मन छलक जे उ नाव क बात जेवाक गप कहलक नहि नइहना बी ओकरा आपल द बट्ठा नै जेठ भाइ के ल गेलथिन। आ जेठ भाइ निश्चिते बल दिनक वाट बायब स्वीकारने होएतक तें ल गेलथिन। परञ्च वर्ष दिन वाट ओकर सरसा घोड़ा मात्र एक मास से चलि गेलैक। मंदिर धरि जेवा-मे अखुविधा नहि गेलैक कारण ओ रास्ता मंदिर तक जाइत रहैक। मुदा मंदिर ओकरा एकदम सुन्न-मशान बुझैक जेना कतेको वर्ष सँ इष्टिगाम लोक नहि आयल हो। आ चारुकात घुरि-फिरि देखि लेखक आ नाइ बाटे आयल छल जे बाट छोड़ि जे एकटा दोसर वाट रहैक ताइ बाटे घोड़ा हकलक। जाइत-जाइत जं किछु दूर गेल त बंगल सँ एगो बाधक राजन सुनैले। ओ सावधान भ तब्यारि केलक ता बाध बहुत लग आवि गेल रहैक। बाध

आ चाण बीबित भ गेह । दुनु मांहर सोन-
सोनी होइतहि जिनहो मे पिलव नहि
भेलैक । धुक दोसर के भरि पाज क धेलति
ब्रह्मर पुन बाघ आ दुनू नाम सेहो धेजा
धड़ी करय लागले ।

[illegible]

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$

विप्राज्ज्वलन् । तं युक्तीं स कदलधिन—
रूपवी ओना त इम अथां सग्ग मे किंहु
नहि जनेतं छी पावव जखन पत्नी बनाइए
लेख तखन जन्माक प्रयोजनो नहि । चल्
मान हमर लोकनि इहिठाम सँ चली । हुन
गोटे विदा भेलाह त युवतीक नजर ओह

निविद पाषाणक ढेरी पर अंशकें गेलक । राज-
हाना । कवन कोन कहलैक किनु ताकि
दककती को ।
दुखी लखलखलैक कहलैक ।
कवन को । किनु ते कहलैक ।
राज कोन कहलैक ।
दिना अहा निगलि कहलक भूरी कहलैक
हो कहल । कहल कहल पर कहल कह
कोन लंग परी बाच आ एगो लख कहल
कवन भूरी त अहा कहल कहल कहल

वैजना तीन ह्रैम प्रया हारि गेल अ
तोडुवर हन आका देखनि के भावर
ना देखिरेक । ई के देखैत जो से उबर
ल पावर थिक ।

राजकुमार वाजल—जबल अहाँ हमारा
हठी त निन्दिते अहाँ केँ सम जनभावक
सँवकार अइ आ हमरो कर्तव्य जे किछु
वीची नहि किन्तु अहाँ केँ जानै कि
स्याक समाधान भ सकै ?

युवती वाजिय—विमु बुझै हम अइबे
करी तलन एतेथरि व्यस्तै के हमरा के
तेँ देनै अहाँक समझाक समायल होएत
न होएत होएत कहैत देव । एक मारीक छेउ
तँ देव सर्वक बात की होएतक जे ऊँ
साम्रीक छेउ अपन जान अपनिक अ

राजकुमार दास—हे प्रिये जे अहाँक
सँय त एहि दास पाथर केँ अहाँ पुनः
पत नना दिवौक कारण हमरा पूरा
गाल भर रहल ए ई हमरे जेठ भाइ
—
युवती वाजयि—एहि छोट सन बात
अहाँ एते निमित्त छयौं हि निअ हम
न न हिनका लोकनि केँ वीचित क दैत
एतना कहि ओ पोखरि सँ युवक भै

आ चाव जीवित भ गेल । हुनु माह सोभा-
सोभी होइतहि चिन्हो मे मिलव नहि
मेलैक । धक दोष केँ भरि पाव क धेलति
एमहर पुन नाथ आ दूर नाम सेहो घेला
वही करय लागले ।

[illegible]

ओं धिनु किन्तु पूछने तबआरि खीचि छोड़ना
 के दूख करत ओकरा स्त्री, घोड़ा वाघ
 आ बास सम कैं काटि देलनि आ अपने
 घोड़ा पर तवार भय विधा मेवाह । ओ
 तखन राजादह पदु खोजह त खसि गइ
 गइ छैक । अजिने राजा कहलनि ह
 उ कि किछु नै कह्यु के राजा कह
 बलाइ जे कह कहि कह्यु नै ।

一、
 二、
 三、
 四、
 五、
 六、
 七、
 八、
 九、
 十、

अतः गली भूगोलि आ न भूके केलनि

राजकुमार, वज्रह अहांक कुनू दोप
हं मिय दोष हमर कपाक भिक । आइ

[illegible]

राजकुमार आर बार से ऊनय खाकाह
थाव ओ एहि दुनिया मे नहि आह हम
मा बाई ओकरा हवा केने छी...ओकर
पारक वरखा सपिहु हम नेह नहि
मे अथला सहोदो के विरवास नहि क
हु ।
पत्नी हुनक पाएर पकड़त कहथिन—
इ अहांक, हमरा किछु ने बुनाइ पड़ि
ए । हमरा सफ-नाक कहू ते त हम

1111

समा-सम्मिति

विद्यापति कला परिषद, किरीबुर, मेधाहस्तबुध क. तत्त्वबोधन में अप्रिल "८२" के अंतिम सप्ताह में विद्यापति स्मृति पर्व धूम-धाम संभनाओल गेल। कार्यक्रम आरंभ कुमारी चुकी, कुमारी सीता, कुमारी मधु, कुमारी माला तथा कुमारी बेबी क "जय-जय भैरवि मंगलाकरण सं" मेल। मंगलाकरणक प्रत्युतीकरण श्रीमती इन्दु प्रसादक द्वारा मेल।

निम्नालिखित व्यक्ति विद्यापतिक चित्र पर श्रद्धार्पूर्वक मान्यारण कयलनि।

- (१) सर्व श्री जी. डी. सिंह (महा-प्रबन्धक किरीबुर)
- (२) एस. के. दास (चीप ड्रीन्ट-ट्रेडर, गुवा माइल)
- (३) एस. वी. चौधरी (कार्यकारी महाप्रबन्धक मेधाहस्तबुध)

(४) जे. एल. मसीन (उपाध्यक्ष स्पोर्ट्स एण्ड रिक्तियेन काउन्सिल मेधाहस्तबुध)

(५) यू. के. प्रसाद (अध्यक्ष विद्यापति कला परिषद)

एहि अवसर पर स्वागताध्यक्ष श्री सी. एस. सिंह उपमुख्य कार्यक्रम प्रबन्धक उपस्थित जन समुदायक स्वागत करत बजलाह जे कवि कोकिल एक महान विभूति छलाह। विद्यापतिक असुरसुग हुनक काव्य प्रतिभाक कारणे सम्पूर्ण देश में मेल। बंगाल, आसाम आ उडिसा त प्रत्यक्ष रूप प्रभावित अछि। बंगाल त ऐतेक प्रभावित अछि जे हाल धरि लोक विद्यापति के बंगाली भूमेत रहल। तकर कारण ई छल जे विद्यापतिक गीत के प्रचारित करवा में महाप्रसु चेतन्य सन व्यक्तिक योगदान छल।

ओ इहो बजलाह जे बखन हम विद्यापतिक श्रृंगारिक गीतक उल्लास जयदेवक गीत सं करैत छी तऽ विद्यापतिक गीत बेसी सुस्त आ सख्य बुझाईत अछि।

सभाक अध्यक्षता करैत श्री जी. डी. सिंह (महाप्रबन्धक किरीबुर) बजलाह जे विद्यापति एक महान आत्मा छलाह आ हुनक व्यक्तित्व जाति आ सम्प्रदाय विहीन छल। विद्यापति अपन रचनात्मक प्रवृत्तिक कारणे कोनो खास क्षेत्रक नहि छलाह। विद्यापति पर सम्पूर्ण देशवासी के समान रूप सं गर्व छनि। प्रसन्नताक बात जे विद्यापति कलापरिवर द्वारा आयोजित ई पर्व जाति आ सम्प्रदाय विहीन अछि।

आगत अतिथि के धन्यवाद देत संस्थाक अध्यक्ष श्री यू. के. प्रसाद (संयुक्त सलाहकारविज्ञ किरीबुर) अपन उद्गार व्यक्त कयलनि जे स्मृति पर्वक आयोजन में प्रत्यक्ष व्यथा प्रोक्ष रूप जे व्यक्ति वा जे संस्था सहयोग देलनि, तिनका सभ के ई संस्था धन्यवाद देत अछि। एहि अवसर पर ओ आग्रह करैत बजलाह जे एहिना सहयोग बनल रहय।

एहि अवसर पर स्पोर्ट्स एण्ड रिक्तियेन काउन्सिल मेधाहस्तबुध के विशेष सहयोगक हेतु विशेष रूप धन्यवाद देल गेल। संस्थाक वित्त सं श्री जी. आर. सिंह, श्री जी. आर. शाहा श्री ए. एस. भट्टाचार्य,

अस्मोदय प्रकाशन ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,

फलकता-७०००१३ क लेल श्री मेहेस्वर भा

द्वारा प्रकाशित तथा पयनियर अर्ध विन्टिर्न ३२नी, बुन्दान नेशनाल स्ट्रीट,

फलकता-५ में मुद्रित। सम्पादक—श्री जनार्दन भा

श्री एस. के. तपस्वार, श्री जी. के. लाहिडी तथा श्रीमती डी. अप्पासाव के साहनीय सहयोगक हेतु धन्यवाद देल गेल।

अंत में सहयोगी कर्मठ व्यक्तिक जनिक परिश्रम ई आयोजन सफल भेल चर्चा नहि करब कृतज्ञता होयत।

संस्थाक महा सचिव श्री एस० आर० पी० सिंह, महबूब आलम (उपाध्यक्ष जे० पी० दास (सदस्य) जी० सी० मंडल, तदस्य डा० सी० डी० मिश्र, सत्येन्द्र सा, वी० डेटे, अनिलकुमार, उग्रेश सा, सहदेव सिंह, उग्रमोहन सा, आर० पावन, दिगम्बर ठाकुर बिन्देश्वर भा सहदेव सा, गंगाधर सा, जे० वी० तिरिया, डी० चाकी आर० वी० दास, स्वा सिंह, अशोक कुमार सा, एस० जे० भा, वी० के० सिंह, यू० एन० भा, एस० के० चौधरी आदिक सहयोग आ परिश्रम के नकार नहि जा सकत अछि।

—सत्येन्द्र मोदी

बाबू भोला लाल दास स्मृति समारोह

विगत १ जन के साहित्य संस्कृति कला मंच कौशिकीक तत्त्वबोधन में एस० एल० एकेडमी ब्लेरिया सभायक परितर में मैथिली दधीचि बाबू भोला लाल दास जीक पुण्य स्मृति में एक भव्य समारोहक आयोजन भेल। समारोहक प्रारम्भ भगवती नन्दना, गतिकार नवल द्वारा मिथिला-वर्णन आ श्री रमानन्द रेणुक स्वगत भाषण सं भेल। डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणिराम क संग-पतित में सम्पन्न श्रद्धांजलि कार्यक्रमक उद्घाटन करैत श्री बाबू सोहेब चौधरी मैथिलीक विकास में बाबू भोला लाल दास जीक योगदानक चर्चा करैत मैथिलीक वर्तमान स्थितिक विषय उपस्थित ओलाक ध्यान आकषिप्त करैलनि। मुख्य बक्ता डा० रामचन्द्र नाथ चौधरी मिथिलाक सर्वांगीण विकासक लेल सम्पूर्ण मिथिलावासीक एकजुटता के बाबू भोला लाल दास जीक प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि चर्चाकनि, मुख्य अतिथि दरंगा विद्या उद्दयोग केन्द्रक महाप्रबन्धक श्री रामेश्वर पाठक मिथिलाक प्रति अपन अपार प्रेमक प्रदर्शन करैत मिथिलाक सांस्कृतिक महत्त्वक गुणगान केलनि। बाबू भोला लाल दासजीक सुपुत्र श्री बगदीश प्रसाद कर्ण द्वारा श्रद्धांजलि अर्पणक उपरान्त अग्रभा अध्यक्षीय भाषण में श्री मणिराम दासजीक व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर विस्तार सं चर्चा करैत सम्पूर्ण मिथिलाक बारणक आह्वान केलनि।

श्रद्धांजलि कार्यक्रमक उपरान्त श्री मणिरामक अध्यक्षता में सम्पन्न कवि सम्मेलन में भाग लेनिहार प्रमुख कवि छल सर्व श्री प्रदीप मैथिली पुत्र, मिहिर शिवा-कान्त पाठक गीतकार नवल, चन्द्रमणि, जीतेन्द्र सिंह, कामेश दीक्षक। एहि अवसर पर एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन जन सेहो छल। समारोहक समापन श्री सुरेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा धन्यवाद भाषण सं भेल।

—सम्पादक रेणु

आया-बिबि

जेना कि ज्ञात भेल अह मिथिला फिल्मस, दरमंगा एवं अवश्यक बैनर में 'भीबल आंचर' नामे मैथिली तिनैमा बनि रहल अह जे अवसर ८२ धरि लैयार भ जायत। एकर निर्माता छथि श्री पुरुषोत्तम बोहरा। स्व० शारददत्तक कथा पर बनि रहल एहि फिल्मक संवाद एवं गीत रचना केलनिहें प्रो० श्री सोमदेव। संगीत श्री गौरांग व्यास एवं श्री एल० एन० त्रिपाठीक छनि आ निर्देशन श्री नेहुल कुमार क। कलाकार लोकनि में अरुणा इरानी, किशु कुमार, एल० एस० दूबे, कल्याण दिवान, देवयानी ठाकुर माधुर विष्ट आदि छथि। गायक-गायिका छथि—मोहम्मद कपूर, अल्का यासी ओ चन्द्राणी मुखर्जी। फिल्म सम्पूर्ण रंगीन ३५ एम.एम. में बनि रहल।

मैथिली में कतेको फिल्म बतबाक चर्चा यदा-कदा हमर लोकनि सुनेत आयल छी, किछु त आया-छिदा आ किछु सम्पूर्ण बनि के तैयारी भेल परञ्च हुनसभक बाल जे दर्शक धरि आइबरी नहि पहुँचि सकल। 'कचादान' मैथिलीक नाम पर भनहि बते पाइ कि एकर ने पीटने हो, परञ्च ओ जे मैथिली फिल्म नहि छल ते मानवा में किनको दुविधा नहि होएतनि। 'नमता गायक गीत' क रिडीज हेवाक सोरहा सप्त

—जयदेव लाल

चिट्ठी-पुरजी

'देशिल वपना' खूब नीक बहार भऽ रहल अछि। खूब स्वस्थ। मिथिला-विभूति परिचयमाछा बह अवश्यक छल छापव। नाम बन्द नहि करू। कतेक चेत छैत छी तबन अपन रचना पठलब। —सोमदेव

भुत अंकक सम्यक्सीय दह विचारो-तेजक—दुदा मैथिलीक साहित्यकार लोक-निक लेल नहि। 'गाम सं दूर मिथिलाक मजदूर' ओ 'मिथिला-विभूति' स्तम्भ के आखन पाठक लोकनि जे महल देखि, मुदा एकर सही मूल्यांकन होएत भविष्य में। ओना ई बात जं सख्य पूछी तऽ एहि पत्रि-केक सम्बन्ध में कहल जा सकैत अछि। 'वाल्मीकि' आरभरि जे प्रकाशित भेल अछि तकर बते प्रशंसा करी थोड़ होएत। श्री एहिना 'बाबकथा' सेहो नहि देल जा सकैत

—विष्णुदेव भा

★

कह लोचन कविराय

लाठी जकर महिस तकरे छड़ के नहि जानय भनहि नाम गणतंत्रक ल बलंगी ठानय ल बलंगी ठानय सरिपहुँ आन ने नेता लाठीक बलपर जीत कहाबय वोट विजेता कह लोचन कविराय सत्य-शिव-सुन्दर लाठी गण-भक्षक तंत्रक रक्षक गणतंत्रक लाठी

हाम अवसरो भेल परञ्च रिडीज नहि भ सकल—पता नै कि कारण छैक। एहिना 'ललका पान' क बर्च छल—परञ्च ओकरो कोनो निलुकी नहि ज्ञात होइत अह। एहिना स्थिति में जे 'भीबल आंचर'क संवाद पर लोक विस्वास करत तकरे हुन टीक। परञ्च हमरा लोकनि के जाइ सुन सं सनाइ प्राप्त भेलए, संगेल अक्लें अह जे ई दर्शक धरि पहुँचि सकत आ अवि-स्वातन्त्र स्थिति पर कवित्वक प्रति करत।

मैथिली तिनैमाक लेल बह नीक 'कचादान' छैक परञ्च बाबरी एकर गोट रिडीज नहि होइछ बाबरी निर्माता लोकनि के विस्वासे केना हेतनि। ते जं ओ लोकनि एहि क्षेत्र में पदार्पण करवा सं थकाइत छथि त अनुचित नहि, परञ्च ई धरि निर्विवरि जे एक गोट फिल्मक प्रस्तावो निर्माता लोक-निक 'लाइन' लागि जायत।

आशुक दुग से फिल्मक की महल छैक ते कहवाक प्रयोजन नहि। अद्या करैत छी जे 'भीबल आंचर' मैथिली फिल्म में गोटि रोचक स्थिति के तोड़व आ मिथिलाचलक हेरापल-मुतिआचल प्रतिभा के आलोक दे अएबाक अवसर भेटतके।

प्रस्तावना

अङ्क - १-२

जनवरी फरवरी ८४

मुख्य - पचास पाइ

देसकोस सँ देसकोसधरि

देसकोस—ई इश्वर नाम थिक एक पत्रिकाक जकर सम्पादकीय लिखवाक लेब हम देसक छी। एहिना एक दिन आर नैसक रही, आई सँ लगभग अढ़ाइ बरस पहिने। ओही पत्रिकाक नाम छल देसकोस। मर, १९८१ मे प्रकाशित भेल छल। स्वभावतः ओइ दिनक बात मन पडि रहल। परन्तु से बात लिखवा सँ पहिने हम कहि देल छल छी जे सम्पादक जे त हम ओइ देसकोसक रही आ नै आर देसकोसक छी ओइ दिन हम नेपथ्य मे रही आ आइयो नेपथ्य मे छी। किन्तु, सम्पादकक भार तहियो हमरहि छल (जे तीन व्यंजक रहल) आ आइयो हमरहि छल।

मर, १९८१ मे जे देसकोस प्रकाशित भेल छल तकर सम्पादकीय मे पत्रिकाक प्रयोगक सन्दर्भ मे हम लिखने रही।

...ई प्रायः सभ मानैत करैत छथि जे मैथिली मे पत्र-पत्रिकाक प्रयोग छैक। निश्चित हमरो लोकनि मानैत छी जे मैथिली मे एक नहि अनेको नीक पत्र-पत्रिकाक प्रयोग छैक—जे अग्रेष्ठ मिथिलाक विभिन्न समस्या पर प्रकाश द सकै, तकर समाचारक सूत्र द सकै, जे बातीव चेतना आ एकताक झंझ फूटि सकै, आ दक्खेना नैक आन्दोलक पसार सकै, जे मैथिली भाषा केँ अपन गौरवशाली अतीतक स्मरण करा सकै आ अतीतक भिसुवन विस्मृत मिथिला केँ मजबूती मे विश्व विश्वासत बनेबाक करपनाक बरस द सकै, जे पुनर्जागरणक स्वादक बने आ मैथिली भाषा केँ नव मिथिला निर्माणक प्रेरणा शक्ति प्रदान क सकै, आ तेँ देसकोसक प्रयोग छैक।

ई बात बहुत पत्रिकाक सञ्चारक हम कहि सकैत छी। अथवा एना कही जे एहि सभ विषय केँ ध्यान मे राखि एक हमरा लोकनि देसकोस प्रकाशित करा छल बाध्य भेल छी। पत्रिकाक दीर्घजीवन बहुत किछु पाठक पर निर्भर करैत। आइ सन्दर्भ मे हम लिखने रही—'बर्हावरि पाठकक मन अछि जे मैथिली (मैथिली-सुख सं छपल छल) पत्रिका कीनत छथि आ पढ़ैत छथि। हुनका नै देश-विदेशक विभिन्न समाचार जे हिन्दी-अंग्रेजी पत्रिका मे भेटैत छैक, अपने भाषाक पत्रिका मे भेटि जाइत त निश्चित इश्वर किनता आ पढ़ता। देसकोस एहि विस्वासक आधार पर बहार भ रहल अछि तथा पाठकलोकनि केँ विश्वास दिवैत अछि जे अग्रगण्य भाषाक नीक सँ नीक पत्रिकाओ सँ नीक पत्रकारिता मैथिली मे देवाक प्रवास करत।' नीक वा वेबासक

निर्णय त पाठकक काम थिक परन्तु प्रवास हमरा लोकनि अवसरे बने रही। इश्वर कारण छल जे प्रवेशक मे सम्पादकीयक अतिरिक्त-परिवर्तनक पक्षपर चीन, घोषणा देबाय नहि, मैथिली आन्दोलनः के कृत्य, आरक्षण, देसकोस विशेष मे गोदावरी देशीक संग साक्षात्कार, विद्यापुता हस्तमंखल बुरसक'क चिह्नक अतिरिक्त पोथी परिलय, अभिनन्दन सभ हमरा अपनहि लिखय पड़ल छल। इश्वर कारण छल जे लेखकक नाम-रक्षा / कविता छोड़ि—नहि देल गेल छल। जे हो, एहि देसकोसक सन्दर्भ मे से आश्वासन हमरा लोकनि नहि द सकै छी, कारण देश-विदेशक विभिन्न समाचारक निमित्त पत्रिकाक जे कलेजर हेवाक चारी आ राहिल छल जे अर्थक प्रयोग छैक से हमरा लोकनि पाठ नहि अछि। ओतनुना हमर पर्याप्त अर्थ पत्रिकाक देसकोस मे व्यय भ चुकल अछि। तथापि बार् प्रयोगन केँ ध्यान मे राखि ई पत्रिका बहार न रहल, तकर पूर्तिक प्रवास अवसरे करत। सोस शब्द मे कही त जेना 'देसिकवयना' अक्टूबर १९८१ सँ अक्टूबर १९८२ धरि बराबर ओही रूप-गुणक संग ई बहार होइत। असल मे देखलवयना क नव नाम थिक 'देसकोस' जे पत्रिकाक कारणे परिवर्तित भ गेल छल।

आप सब देखिकवयनाक चर्चा भइ गेल त मरिसक रही कहिये देव उचित जे साहित्य विशेषांक (अक्टूबर १९८२) क बाद ओ किशक बन भ गेल। एकर प्रवास कारण भेल रचनाक अभाव, लेखकलोकनिक अवसरयोग। स्वभावतः अ स श बरि अपनहि लिखय पड़ैत छल। कहियो-काल एक आबटा बार्ह सँ भेटि गेल त भेटि गेल। ओना माइ बनचक, उपेन्द्र दोषी आ जीवकान्तक सङ्ग्रह केँ विवरण नहि आ सकै छ। ओना बहुत तेर बहार करय ना रहल छी त ई आशा निश्चित अछि जे लेखक लोकनि सदयोग करता। पाठक लोकनि आ विशेष केँ देखि नभना क भइक। पाठक लोकनि सङ्ग्रह-सङ्ग्रह पहिनिह जसँ मात होएत से विश्वास अछि आ सशर विश्वास हमरा लोकनि पुराय थिक।

सय मैथिली
—रामलोकन ठाकुर

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला घान
छाहि-जारि सुझुह करव हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

देश

शिक्षाक माध्यम आ मैथिली

अपन मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक अधिकार भारतीय संविधानक अनु-सार प्रत्येक नागरिकक मौलिक अधिकार छैक। ओतवे नहि संविधान मे आर अछ रुप कइल गेल छैक जे सरकार एहन कोनो आइन नहि बना सकै छ बाहिर सँ एहि अधिकारपर आघात पहुँचै। एहि लेब संविधानक सातम संशोधन द्वारा राष्ट्रपति केँ विशेष-अधिकार देल गेल छ जे ज सरकार एहि तरहँ कोनो प्रयास करय त ओ तारुण लोक बनावि। परन्तु एतबा होइतहुँ संवैधानिक स्वयंनताक अभाव सँतीस बरसक बादो जे मिथिलाक मे नैना सुटका केँ अपन मातृ-भाषाक माध्यम शिक्षा नहि देल जाइत छैक आ नवबोली कोठाक भाषाक काढ़ा पिआ-ओल जाइत छैक त तकरा की कहल जाय। असल मे संविधान थिक सरकारक रखल बकरा ओ बखन जेना चाइए उपयोग क सकै, व्याख्या क सकै। परन्तु सभ दोष सरकारक नहि छैक। हमरा लोकनि सभ सँ बेसी बिसेदार छी अपन भाषा-संस्कृतिक अयोग्यताक लेब। शोधक-शासक सदा सँ जनताक भाषा संस्कृतिक विरोधी रहल। ओ जनताक बौद्धिक रीढ़ तोड़ि अपन पछ-बगुआ बनेबाक प्रयास करै करैत आ तेँ ओकर बगो फाकें भाषा होइत छैक। ई भाषा कहियो संस्कृत छल, कहियो उर्दू-फारसी छल। कहियो ओभी छल, आ आइ कोठाक भाषा हिन्दी अइ। सरकारी भाषा हिन्दीक सम्राज्यवादी आकांक्षा के देखि-परसि के भारतक अग्रगण्य बाति सभ चेतल आ तकर परिणाम भेल १९५६क राज्य पुनर्गठन - भाषाबारे प्रान्तक निर्माण। हम मैथिल बाति एहिठाम खुक गेलहुँ जे महान ऐतिहासिक भूल छल आ तकर कल भोगि रहल छी।

परन्तु भूल कि हमरा लोकनि एकलेर बने छी। एखनो बखन-बखन माइ कएल जाइए जे मिथिलाक मे शिक्षाक माध्यम मैथिली हो अथवा मैथिली भाषा नैना के मैथिलीक माध्यमे शिक्षा देल जाय। ई माइ केहन अग्रगण्यक भिन्न से विचारक पक्षधरि माइ केनिहार लोकनि केँ मरिसक नहि छनि अथवा प्रतिक्रियाशील तत्व जे ऊपर-ऊपर त मैथिली भक्तक संग रचेर परजव वस्तुतः ओ मैथिलीक विनाश चाहिये तकरे ई माइ छैक। कहवाक प्रयोगन नहि जे वर्तमान मे ई तत्व बेसी सक्रिय अइ।

आम कने एहि माइक व्यवहारिकता पर विचार कर। मानि लेब जे सरकार एहि माइ केँ मानि लेब। एहना अवस्था मे एकै वर्गक छात्र जे मैथिली माध्यम स पढ़ैत तकरा लेब अलग शिक्षक चाही, हिन्दी उर्दू, बाङ्ला आदि भाषाक माध्यमे पढ़-निहारक लेब अलग-अलग शिक्षक चाही। एहिठाम ई कइय नहि पड़त जे सरकारी

रेकर्डक अनुसार मिथिलाक मे ई सभ भाषाक बहनिहार रहै।

दोसर समस्या थिक पोथीक। बिहार मे स्कूली पोथी बिहार टेष्ट बुक कम्पेरेशन कएल जे सरकारी संस्था थिक आ तेँ हिन्दीक पक्षपर आ मैथिलीक विरोधी थिक। स्वभावतः जे हिन्दी पोथी सत्रक प्रारम्भ मे बाजार मे आवि जाइत छैक जेना बहुत खेप आवि गेल होइत, त मैथिली पोथी तकर ई-७ मास बाद मे पटाओल जाइत छैक। विचारणीय थिक जे बखन बल्लेडिन ने आइकाल कोठ सभास नहि भ पवैत छैक तखत ५६ मास मे केना होइतक या एते दिन छात्र केना प्रतीक्षा करत? एहि सन्दर्भ किछु संस्था सभ अविभाजक आ शिक्षक लोकनि के मैथिलीक माध्यमे शिक्षा दिया-बचि। देखि—सेहो कि चक्रवात नहि थिक? जे अभिभावक एखनो स्कूल बिदा भेल छात्र के पढ़िने इत्साइक पत्रपिआइ द ब्याक वा मरिस के नहा अतवा लेब कइल तकरा सँ कतेक आशा कइल बा सकै छ? दोसर एतेरिनुका विभागीय भाषा संस्कृतिक प्रभाव मे जे अपन भाषा चेतना मरि सिरायल छैक सेहो कि कस्तो संतुकाएल अइ। बर्हावरि शिक्षकक बात अइ—दोसर विषय हुनको संग बान्नु होइत अछि। दोसर बात जे मिथिलाक मे शिक्षावृत्ति ओइने स्थिति चयन करैत छथि जिनका अपन चाकरी नहि भेटैत छनि अथवा खेतीवारी आ अग्रगण्य पारिवारिक भमेछा बेसी रहैत छनि आ एहि चाकरी मे रामक अग्राव रहिओ अनायासे सभ काब सम्भरि लेब छथि। कोवहुआ नइर सभ एहि शिक्षक समुदायके हिन्दीक बिबल पर भुमेल सहज बुझि पड़ैत छनि आ मैथिलीक नम लिख कटकर। तेँ अचरभक बात नहि जे मैथिलीक चर्चा मुनिसे अपिकोछ शिक्षक लोकनि अपन नाक मुनि छैत छथि—संकीर्णताक गन्ध ने आनि जाइत। मिथिलाक शिक्षक संगठनक शिक्षक नहि थिक जे भाषा लेब इत्साक करत सुलूस बाहर करत आ अनजान करत। ई बात हमरा लोकनि केँ मन राखैत छथि।

दोसर बात थिक पोथीक दाम। एके विषयक हिन्दी पोथिक दाम जे एकरका रहैत छैक त मैथिलीक चारि टाका। एही चाँछि मैथिली विरोधी सरकारी संस्थाक थिक। मिथिलाक लोक बकर नौछिके नहि आर्थिको रीढ़ टुटि चुकल छैक से किछु तीन टाका बेसी द क अपन भाषा प्रेम नहि देखाओत। एहिठाम ईहो बात लिखम मरिसक अवसरे जे बाइठाम पोथी विक्री केँ हिन्दी, उर्दू, पोथिक निर्मित मात्रा एक सश टाका बमा देव पड़ैत छनि तहीठाम मैथिली पोथीक निर्मित पाँच सश टाका।

(नेपाछ पृष्ठ ४ पर)

मिथिला विभूति

याज्ञवल्क्य

प्राचीन ग्रंथसमूह में बाह्य मुनिक चर्च सर्वाधिक अर से आन कैओ नहि मिथिलाक सन्तान योगीश्वर याज्ञवल्क्य छथि । अवधी भाषाक महाकवि गोश्वामी तुलसीदास अपन रामचरित मानस में सेहो हिनक चर्च करै छथि—याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी, भारद्वाज रहहु पददेवी ।

ई जे केहन पेश ब्रह्मशानी छलाह ताहि सम्बन्ध में बृहदारण्य कोपनिषद् में कहल गेलख जे एक खेर वेदेक बनक अरबदेव यज्ञ कइलनि बाद में विभिन्न देशक ब्रह्मण सम इगडा भेलख । हिनका लोकनि में विशिष्ट ब्रह्मशानी के छथि से बनसक निमित्त ओ एक हजार गाय बन् वा देवजिन आ घोषणा करा देवजिन जे जे विविध ब्रह्मशानी होथि से सम गाय बन् । परदेसी कोनो पंडित के बज्जन साहस नहि भेलनि तखन याज्ञवल्क्य अपन शिष्य सामश्रवा के गाय सम होकि जेवाक आज्ञा देवजिन । गाय सम हंकिते परदेसी विद्वान लोकनि तमसा गेबाह आ शूद्र भेल आख्याय । विषयी गेबाह इहए मिथिलाक सन्तान योगीश्वर याज्ञवल्क्य आ पराजित प्रदेसी पंडित भरनासन मुहल आपस भेलख । ताहि दिन सँ ओइ राजवंशक ई कुलपुत्र भेलख । कइबाक तयो-बन नहि जे ओइ वंशक राजा लोकनि जे ओहन ब्रह्मशानी होइत गेलख से हिनकहि प्रसादे ।

याज्ञवल्क्य देवरातक पुत्र छलाह । हिनक समयक सम्बन्ध में एखनहुँ विद्वान लोकनि में मतान्तर अछि तथापि अंशिकतया विद्वानक मत ई ३०० ई०क पूर्वहि मेक छलाह ।

हिनका सम्बन्ध में जे बात समसं देवी फरिछाएल अर से ई जे ई मिथिलाक छलाह—सैनिक छलाह । एहिठाम ई बिखल भरिलक अन्तर्गत नहि होएत जे सैनिक जातीक उदासीनताक कारण अनेको विभूति एखनहुँ हेराथलछथि या आन देशक लोक हुनका आनैवाक निर्मित प्राणपण चेष्टा क रहल । कविपति विशासति पर हेमनिधरि बंगाली लोकनि दाबी करैत छलाह आ गोवीन्द दास के त अखनहुँ अपनओनहि छथि । काबिदास के उल्लेख कहल जाइत । उदयनाचार्य के बंगाली कहल जाइत छल । विछुए दिन पहिने एगो निवन्ध पढ़ैत रही बाद में कुमारिख भट्ट के तमिक बिलख गेलख । परजव याज्ञवल्क्य संग एहि तरहक विवाद नहि भेल तकर प्रबल कारण जे संहिता में स्पष्ट बिलख अर—‘मिथिलाया स योगीन्द्र’ । मिथिला तत्व विमर्शक अनुसार अधुना नेपाल में घनुषाढा कुसुमा गान में याज्ञवल्क्य मुनिक आश्रम अर ।

कइल जाइत जे याज्ञवल्क्य वैशम्पायन मुनिक शिष्य छलाह परजव गुरु सँ खटपट भ जेवाक कारण हुनका सँ पढ़ल समस्त विद्या के ओ त्यागि देल । एही सँ प्रमाणित होइत जे मिथिलाक सन्तान केहन आत्मा-भिमानी होइत छलाह । तकर बाद ओ सूर्यक उपासना कए शुक्रबन्धुवेद प्राप्त कए-लनि आ परचात याज्ञवल्क्यस्मृति, योगी

याज्ञवल्क्य, योगशास्त्र आदि विभिन्न ग्रंथक रचना कएलन्हि ।

भारतक प्राचीनतम स्मृतिकार में हिनक नाम आदरक संग लेल जाइत छ । तनुक अतिरिक्त बहिन सामाजिक दार्शनिक दोष, नहि भ सकलख । इहए कारण थिक सर्वाधिक टीका हिनकहि मथार लेखल गेल बाद में भिन्नाधरा बालकीदा आ दीप-आख्या विशेष प्रसिद्ध अर । एहिठाम इही उल्लेख केनाई भरिलक आवश्यक जे मनुक अपेक्षा याज्ञवल्क्य बेसी प्रगतिशील आ व्यवहारिक आ पराष्ट छथि । परवर्तीकाल में शंकराचार्य बाह्य अद्वैतवादक प्रचार कइलथि यद्यपि तकर आधार चादरायण व्यास कृत वेदान्त दर्शन के कहल जाइत छ, किन्तु वस्तुतः तकर प्रवर्तक याज्ञवल्क्य छथि ।

याज्ञवल्क्य स्मृति जे हेतु सामाजिक दर्शन थिक आ तार सामाजिक आधार थिक मनुकल तँ एहि में मनुकलक बन्म (गर्भान्वात) सँ मनु पुनर्जन्मक काल कला पके निलुपित कएल गेलख । ओतने नहि, पुरखका बादो तकरा निमित्त कएल जाइत अछि एकोविंश पञ्चांगदि विषयपर सेहो विस्तार पूर्वक विचार कएल गेलख आ पश्चिमिदेश कएल गेलख । आइसो मिथिला देश में प्रचलित आचार व्यवहारक आधार बलुनः हिनकहि ग्रन्थ थिक ।

एहि ग्रंथ में आचार व्यवहार प्रायश्चित्त तीर्त विषयपर फराक फराक विस्तार पूर्वक स्पष्ट विचार राखल गेलख । समाजक विभिन्न वर्णक लोकक हेतु उचित अतुचित काब पर प्रकाश देल गेलख जे एहि सँ पहिने वा परचातो धर्मिक कोनो विद्वान क सकल छथि । पुरुष स्त्रीक वैवाहिक योग्यता, एक दोसरक प्रति कर्तव्य, पिता पुत्रक सम्बन्ध तथा एक दोसरक प्रति कर्तव्य, राजा प्रजाक सम्बन्ध ओ कर्तव्य आदि सम विषय विवेचन भेलख । राजा स्वराचारी नहि होथि त तकरा लेल उचित योग्यता तथा राजबर्ग निलुपति भेलख । मनुस्मृतिक अनुसार बाह्य ब्रह्मण के सर्वोपरि मानि अपराध कएलहुँ सन्ता दण्डक भागी नहि कएल गेल छल तथा शूद्रक सर्वधर्म में कठोर दंडक विधान अर—याज्ञवल्क्यस्मृति ठीक तकर विपरीत विचार रखैत छ । एकरा अनुसर आर आरनक नजरि में समाजक सम अंश समान अर केओ पेश वा छोट नहि आने कैओ एकरा परीक्षि सँ बाहरे छथि । तँ वर्णक आधार पर केव के प्राथमिकता देनाइ तथा दंड में मार्भश्यक ई खण्डन करैत छथि । कोनो अपराधक लेल दंडादेश वा फौजबा सुबा सँ पहिने अपराधक विचार अभियुक्तक वयान अभियोगक प्रमाण आदि के आवश्यक अर्तक रूप में निलुपति कएल गेलख । आरनक समस्त अवहेलित महिला वर्ग के पुरुषक समान दर्जा सर्वप्रथम याज्ञवल्क्य स्मृति द्वारा देल गेलख ।

जेना कि पहिने कहि आयल छी, याज्ञवल्क्य स्मृतिक टीका सम में सर्वाधिक चर्चित अर एगारहम सताब्दीक मिताशरा हिन्दू आरन (Midha Law) क रूप में समस्त ग्रामाणिक इहए ग्रंथ थिक बकर

इज्जत माय-बाप !

जे कहल सत्त-सत्त करल, सत्त छोड़ि

बिछु नहि कहल । कलमक सपना खा क काँ छी । ओना ई बात दिगर भेल जे हमर सत्त मात्र हमरेटा हो आ अहाँ के ओइ स कोनोटा सरोकार नहि हो । अशक्त में सत्त छर की तकरो त आइपरि निष्पत्ती नहिज भ सकलख । जे भोलि सँ देखे छी जे सत्त थिक आकि जे कान सँ सुने छी से सत्त थिक ? जे अनुभव करे छी से सत्त थिक आकि विमाग बकरा उचित बुझैत से ? तँ इज्जत, सत्त की छर से हमहुँ नहि बने छी । एतवेटा बने छी जे जे आँखि सँ देखल, कान सँ सुनल आ हृदय सँ अनुभव कएल—सहइ कहल । रहल गए विमागक त से इज्जत, फँत नामक बलुक रहि खोपड़ी में नितान्त अभाव छर । तँ एहि अभाव के अन्तवैत वंशक गबदी के अपन कंठ सँ उतारि छी आ मायक उपर सँ खरि बाए दिऐक—वंदा सदा अहाँक आभारी रहत ।

पाठकक इच्छास में कोनो लेखकक हाकिर भेनाइ तलआरिक चारपर चखव सन छर, सीताक अग्नि परीक्षा सन आ विशेष क ओकरा लेल जे कविता लिखैत हो । आर अपने त बनिबे छी जे कवि सँ बेकार पहि देश में गदहो के ने हुनक बाद छर । इज्जत, गदहा तैयो काजक होइए जे पर सँ घाट आ घाट सँ धर धरि बाबीक कपडा चोइए, किन्तु ओइ कवि के की कहल जाइ जे ने त परक अर ने घाटक । ओना एर देश में किछु लोक अवसरे छथि जे यदा-कदा कहियो के दू आहुन बास ओगारि देत छथि । परजव एहन लोक आ एहन कवि छबिबै कतेक ?

किछु कवि के हास्य रंज्य अथवा सखर पाठ करैक वदीलत कहियोकाळ दू चारि केजवा भेटि जाइत छति, अथवा भल होइक फिलिमवाला सपने के कोनो कविक बुकबदीपर वाह वाह क दैत छर किन्तु ताहुँठाम कविक कपरे काज करैछ वा गोटी सुवारबला बात कहि सके छी । ने त

मान्यता वंगाल आ आसाम छोड़ि समस्त भारतीय न्यायालय में छैक । वंगाल आ अखन में बीमूतवाहनक ‘दयाभाग’ स्वीकृत अर । एही आइनक अनुसार सर्वप्रथम पेशक सम्पत्ति में विधवा स्त्रीक हिस्सा स्वीकृत भेलख । ओतने नहि एहि आइनक अनुसार धुरनिहारक कोनो बेटी कुमारी होइक तकर विवाहादिक खर्च लेल सम्पत्ति फराक क देसाक सेहो विधान छैक आ वंचक सम्पत्तिक विभाजन वेटा लोकनिक बीच होइत ।

दान विषयक चर्चाक क्रम में याज्ञवल्क्य स्मृति समस्त पेश दानक रूप में दान-दान के निलुपति कइने अर ।

विद्वान लोकनिक मते याज्ञवल्क्यस्मृति मनुका के देखैत एतकाळ में—बकरा कि साहित्य-कला विकासक स्वर्णयुग कइल जाइत अर । राबकीय मान्यता प्राप्त लेलक आ एही ग्रंथक आधारपर समस्त राजकाज चलैत छल जेना कि मौर्याकालीन चासनक आधार कौटिल्यक अर्थशास्त्र छल ।

—मुजतबा अली

लेखा-जोखा (१)

आँखिक लोक में त निराशा, मुक्तिबोध आ कतेक ने नामी-निरामी कवि या त बतार भ गेबाह या बिनु औषध-चारीक चर्चि देखनि । ई बात फराक थिक जे मुरझाक बाद हुनको लोकनिक लेख एकाधटा शोक समा भ जाइए ।

इज्जत, हम हुनके लोकनिक खानदानक एगो कवि छी । कतौ गोटी नहि सुनल आ ने करैक बोराग छी—तँ केओ बासो नहि ओगारलक । पहिने एहि बातक कचोटो दुइए जे केओ कवि ने पूछै ? परंच जेना जेना समय बितैत गेल, दुखि ठेकान जगत गेल । माने इज्जत हमरा त कोनो ठर ठेकान नहि भेटल मुदा दुखिपरि ठेकान लागि गेल । भेले हता कि शुरु-शुरु में बलन कि हम नवे रहि शहर में आइल रही, हमरा मन में कविताक समुद्र उमड़ि पड़ल छल आ हम ओइ में हुंसी-मारि मोती बहार क क लोक के देखलिन-तियेक आ चरखा में वाह-वाहीक हंस पनितहुँ । ओना हम वाह-वाही चारैत नहि रहि । चारैत रही जे जाइ समाजक हेतु हम कविता लिखै छी, हमर संगी सम सेहो ओइ में भाग बिअए । परंच भेल कि इज्जत, ओइवे दिन में हमरा समक नेताक पता लागि गेल । ओकरा समक कविता स कम अपना नाम सँ देखी विनैर छलेक । ओ सम कोनो मुख्यपर अपन नाम छओनाइ आ पचारित कैनाइ में अभिलिखि रखैत छल । एक दिस त ओ सम लोकक दुख दर्द क संपर्क बल करै छल त दोसर दिस ओकरा लोकनिक सम समय सुविधा बटोरबा में योति जाइत छै ।

इज्जत, हम बेसी पढ़ल-लिखल नहि छी । किन्तु नेता में हम जते पैघ लोक के पढ़ने छी तार सँ एते अवसरे बुकलहुँ जे बिनु निष्ठाक बिनारी में किछु पओनाइ असंभव । परंच जेना-जेना नमहर होइत गेलहुँ—देखलहुँ कि जे केओ किछु हासिक देखनिहै तार में हुनका लोकनिक तोड़-बाँड, गोटी सुतारनाइ बेसी छलनि ।

इज्जत, हम मानै छी जे आहुण युग आदर्शक युग नहि थिक । हम इही मानै छी जे सत्त, ईमानदारी आ मानवीय मूल्य भगवानेसन अगोचर छर । आहुण युगक संग ओकर कोनोटा सम्बन्ध सरोकार नहि । हमरा इहो बुनल अर जे लोक उगत सूर्य के नमस्कार करै । जे चिदरूप भ जाइए । बकरा कुशी भेटि जाइ छर, बकरा कोनो प्रमाण-पत्र वा पुरस्कार भेटि जाइ छर—तकरे समठाम मान्यता भेटैत छैक । किन्तु इहो कि एहिठाम सम संयोग प्रबल छर ।

इज्जत, चान्सक बात छर सभ । आर सौचित होयब इज्जत जे कि हमरा कतहु चान्स नहि भेटल—तँ हम एना कहि राख छी । ई इज्जत, एकरम सत्त छर जे हमरा कतहु कोनो चान्स नहि भेटल आ भरिषक भेटवो नहि करैत । किन्तु इज्जत, एक बात पुछू, अपने बसाव देव ? की एही लेल हम अपन वाट छोड़ि दी जे सम भौतिवा गेल अर ?

ॐ

लाल बुभुक्षकरक चिट्ठी

श्रीमान्, सम्पादक जी महोदय !

नमस्कार सह बन्धु मैत्रिणी ।

आशा हाजूरति की बिबू ? विरहित बन् के सदा वस्तु—तकरी पर छनि बाळ बुभुक्षर के । असल ने वं पुछी त बाळ बुभुक्षर विदेश भूमिक दुपचा सन्तान छथि ने, ते तरबा स विज्ञानवरि विदेश छथि । केओ गारि पढ़नु वा अधीनारि देउन, वा ई चाट बगाइ देउन—हुनका लेखे खन सन ।

हं, अहाँ बिबू जी के 'देखिब वयना' क डिक्शनरी नहि भेटि 'देखिको' क भेटल, ते ओही नाम स पत्रिका वहार करल पढ़त । एहि मे चित्ताक कोनो कारण त हमरा नहि बुझि पड़ै । देखिब वयना हो वा देखको—चात एके मेळ । बबने देखकोस अह त देखिब वयना रहैठा करत—से एक बगबाय निभ के कइए हमारो बगबाय निभ ओकरा नहि भेटा सकैत छथि । अहाँ कने जानफोक बोग द क विचार आ अपन नाक दाहि भरण करु के आइ सें छ सय चर्ल पहिनिहि बाबा विद्यापति की कहि गेल छथि—बालवन्द विद्यावध भाषा

हुहु नहि बगाइ दुपचन हावा

ओ परमेसर हर तिर सोइइ

ई किचइ नाजर मन मोइइ

से हुनत सम जते किइक ने नाळइ पट-पटाओ—बालवन्दमा सन हमर ई भाषा चारिओटि मैथिली भाषीक हृदय रूपी निर्मल आकाशपर आर दिगुन तेब सँ बमवसाहल रहत-बाबरि ई पिबि रतैक । ते अहाँ चिन्ताकयुक्त भ क कान मे गणेस छप खाटी सरिखो तेखे द सुनि सकैत छी ।

आब भाषिका विषय—राष्ट्रिय संकटक सम्बन्ध मे । सम्पादक जी, ओमती गाँधी बहुत किछु वक्त छथि त सकर ओ अर्थ नहि होइत छेक जे हम—अहाँ बुझैत छी । ते ओ बलन कहैत छथि जे राष्ट्रिय बहिर्या आत्मगणक संभावना छेक आ तकर समर्थन करैत महान मार्क्सवादी श्रीमान् मजदूरी-वाद कहैत छथि जे सुहरि क्का युद्धक नङ्का बाणि रहल त तकर अर्थ ई कथ-मवि नहि जे हम सभ गोटे बाढा भाळा क शत्रुक सामना करै छेक वाटपर वहरा बाइ । इतर सोच अर्थ होइ छइ जे अहाँ आजन मे जे पयार पसरल अइ वा अलक टेरी बाणल अइ, कोटी-वहारी ने जे किछु अइ, पौती-पेटारी मे जे गहन-गुदिया अइ—से सभ सर्व प्रबानमयीक सुआ कोथ मे दान द दियेक । जं ताइ मे कय हो त ओके वा मे जा कान मे प्रवेश द कहिरि सँ मुँइ भाषि सुनि पड़ु—वाकी काज देशक कय-सेवक लोकनि अपनहि क छेक । सम्पादक जी जेना कहनी छेक ने जे हुइ भ नेबा आ नाक बाळे छनि से तकरे परि अहूँ के अइ । हेओ ओमान्, शब्द भनहि बहा होइत होइक परंच ई के कहलक जे ओकर अर्थ सेहो बहस होइत छेक । अर्थ त देश-काज मानक अनुसार बदलैत रहैत छेक । जं सच पुछी त, एइए सभ लोचि क इत राजनैतिक शब्दकोश तैयार करवाक काज हाथ मे लेख ए आ सोइ-बहुत काबो मेळइ । असल मे प्रायः सर्व दिन सँ हम श्रीमती गाँधीक समस्त भाषणक प्रत्यक्ष

देश मगर महान छइ

अपाठक के देश हिन्दुस्तान छइ
आर जे किछु हो मगर महान छइ

चारवधु अइ एतय पटरानी धनल
कुछवधु कलपत छइ वनवास मे
आइ भरथा पर एतय अभिमान छइ

अतय कजे पर चले सरकार छइ
राजिशाही हाथ सभ बेकार छइ
देश बहिले जा रहल आगु मगर
बचल हड्डितक ने साबुत राष्ट्र के
की देते, साबुत बचल त शान छइ

गोध-गोधर मनावैए महोत्सव
देश के सेवक बनल जलछाइ छइ
नाक छुनि सिछुड़ी सडांध एतय कहाँ
बीस सूत्री इत्र के पैगाम छइ
ठीक सँ देखू प्रशान न ई विकै
अरे एकर नाम हिन्दुस्तान छइ

की कहल ? कुहूर जेना भूकैत छइ
अरे ई त छेक भाषा राष्ट्र के
आर ई सभ शवान नहि छथि राष्ट्र कथि
राष्ट्र नायक के गवै छथि आरती
भात भनहि बिचित्र छइ खासियत
तखन ने ई देश हिन्दुस्तान छइ

—रामलोचन ठाकुर

कविता

ओता छी । अहाँ कहू ने जे ई दुपुबिया
विरोधी दलक नेता समक पाछा हुमनाइ सँ
श्रीमतीक पाछा हुमनाइ नीक की नहि ?
कहियो छेइ जे सर चोट ओतार के आ
एक चोट ओतार के । विरोधीदल सभ कतबो
एकठा भक चिकरनु—वार लगति ओते
फुविए बाजल जते श्रीमतीकी अक्षर एके
मंज सँ शक्ति लेत छथि । सम्पादकजी-हमरा
त पुरे पसेरीमरि विस्वास अइ जे फुविए वन-
नाक हेतु जं कोनो नोबेक पुरस्कार रहितै त
सर्वप्रथम ओ श्रीमती गाँधी के भेटिनि आ
जेना कि कइवी छेक जे सुकिरिए नाम कि
कुकिरिए नाम—से राष्ट्रक त नाम
होइतेक ।

हमर श्रीमती जी राष्ट्रक अलंकार
रखा लेब सेहो बेकी चिन्तित बुझना बाइत
छथि आ ते ओ पाया लोक के बिचिछजता-
वारी तख सँ सवधान रहवाक चेतौनी देत
छथिन । एहि तख मे ओ बम्पू-रक्षनीक
अमताशील दल, नेशनल कांफरेन्स, आसा-
मक आन्दोलनकारी तथा पंचांगिक अकासी
दल के मानैत छथि । परञ्च जे अहाँक
भरण शक्ति विभाइत नहि होत मने इहत
जे इइए कनफरेन्स श्रीमतीकीक मंगार छल
—विगत चुनावक पूर्व आ जे हेतु विगत
चुनाव मे मंगारी दृष्टि गेलनि । आ कनक-
रेस अपन खेती समारि लेबक आ ई दुवि
मेळी त ओ बिचछेकतावादी आ सावधायिक
भ गेल । तहिना जनता सरकारक अलमदारी
मे भइकल असम आन्दोलन के हिनकेदल
ने वसात केने छेक परञ्च जे हेतु ओ
हिंता मुछी सँ बाहर भ गेल ते राष्ट्रविरोधी
थिक । तहिना पंचांगिक आगि कि दिनके
पञ्चाङ्ग नहि चिकनि ? एखनो प्रायः कोनो
दिन नाम नहि बाइल कहिया एकाधटा
निरपराध हिन्दूक हत्या नहि कइल बाइत
होइक—परञ्च, सरकार छेले खन सन ।
विपुलक उपजाति संगठन जे कतेको खून-
खपापीक बिम्बेदार अछि जे श्रीमती कीक
भंगारे छनि ।

असल मे श्रीमती जी तेहन माहिर
खेळाही छथि जे वाव कतो आ प कतो
करैत छथि । किछु दिन पहिने विहार
अरणक दौरान ओ वबडीइए जे ककरोपर
'हिन्दी' माने कोठाक भाषा बादल नहि बा
रहल छैक । अहाँ के छुराता बाणि सकैए
जे जं श्रीमती कीक कथन ठीक छनि त
निहारक भाषा हिन्दी मेवे जेना केले ?
तथाकथित आबादी सँ पहिने बाइ मैथिली-
भाषीक संस्था डेढ़ कोटि छेक से आबा-
दीक वाद पयन इबार केना भ गेलै ?
प्रश्न आर छेक जे बलन सभ भारतीय
समान अइ त देखक भाषा संविधान मे छैक
आ समस्त सरकारी सुल-सुविधा पबेए
तखन हमरा लोकनिक भाषा मैथिली किइक
चारल अइ ? एहि सभ प्रश्नक जवाब लेब
कने आर पाछु बाइ पढ़त । किछु दिन
पहिने ओ बाबल छडीह जे भाषा-वर्म-क्षेत्र
आदि नगण्य विषय के विसरि लोक राष्ट्रीय
अलंङ्कताक छेक केन्द्र के राजिशाही
बनाए । एहिठाम भरण रखवाक थिक
जे ई बात ओही लोक सँ कहल गेलैए जे
दोसर स्तरक नागरिक अइ—सरकार भाषा-
भूमिक बन्ने भारतीय संविधान मे नहि छैक,

कारण ओकरा अधिकार भेटि गेल छैक से
त छोड़ि नहि सकैछ । भाषा विस्तराक
सोच अर्थ सेब पशु बनि गेनाइ आ सुविधाक
लेब पशुओ मे गददा सभ सँ उपयुक्त होइए ।
चर्म विचरि बाउ—माने मार्किट—मतलब
सरकार अपन इच्छासुधार कखनो अहाँपर
कपड़क मोटा बादि सकैछ, फलनो उस
बादि सकैछ आ कखनो अपने चढ़ि सकैछ—
अहाँ कान छुनि पटपावी । भूमि विसरि
बाउ—माने अहाँ के पोखरि वा हाट-बजार
ना पहाड़ पर ल गेल बा सकैए—घास
चरवाक पबलिवो भेटि सकैए ।

अहाँ के हमर ब्याख्या सुनि-पढ़ि
असरब कागि सकैए । अहाँ कहि सकैछी जे
कोनो देखक प्रबान मंत्री एहन बात केना
बाबि सकैछ ? परञ्च सत पुछी त अपन
देशक बात त हम नहि कहि सकैत छी
परञ्च भारत सन विश्वक वृहत्तम गणतान्त्रिक
देश मे एहन बात प्रबान मंत्रीइटा क
सकैछ । जं दोसर केओ लोक के गहदा बने
छेक कहै त ओकरा मारि रोइना सँ कमर
फोड़ि देख केतैक, कुहूर हुइका देख केतैक
आ इहो मे जं नहियो टोकल बाइ त काँके
अवस्था पठा देख जेतै । ओना ई बात सत्य
होइतहुँ कोनो महसुस नहि रखैए जे श्रीमती
कीक अपन कहिक भूमि-भाषा धर्म-संस्कृत
किछुओटा नहि छनि । महसुस त ई छैक
जे माटि सँ अग्रगण्य रहितहुँ ओ समस्त
भारतीय भाषा-संस्कृतिक विद्याल पुछबारी
पर अमरबती बका पसरल छैथ ।

हं त जेना कहैत छबहुँ जई समस्त लोक
बकरा चब पर श्रीमती जी के राजपिछवन
प्राप्त छनि गइरा बनि बाइल त राष्ट्रक
अलंङ्कता खदा सदा लेब बरकराए रहत । जेना
कि देश किमानित भइयो के अलंङ्क अइ,
किछु भाग पकिस्तान बकिश लेबक आ
किछु चीन दवा लेबक, किछु लंका के दान
दे देल गेल आ किछु बांग्ला देश के दान
के अगो से देशो के राष्ट्र अलंङ्कित अइ—

तहिना हमर दुकड़ी होइतहु ई अलंङ्कित
रहत । जं आर सोच शब्द से कही त राष्ट्र
क अलंङ्कताक अर्थ मेळ नैहए परिवारक
शासन परंपरा के अलंङ्कित रहनाइ ।

चारद कनवरी के अपन दिखीक भाषण
मे अशोक आ अकबरक प्रबंधा मे पंचमुख
श्री मती जी भएते कहलनि जे जेना अकबर
आ अशोकक समय मे केन्द्र राजिशाही
छल-तहिना ओ चाहैत छथि । ओना ई
कथा भिन्न जे महाराणा प्रताप सन देशद्रोही
अकबरोक समय मे छलै । एहि सन्दर्भ
मे अशोक महान छलाइ जे कछिग के ठंढा
क देखनि ।

अहाँ के त मने होइत जे विहारक तेत
मान प्रलमंजी श्रीमान् चन्द्रशेखर सिंह शष्ट
शब्द मे घोषणा केकनिहे जे केन्द्रक अर्थ
होइछ नैहए परिवार आ ते केन्द्र के
राजिशाही बनेवाक अर्थ मेळ नैहए परिवार
के राजिशाही केनाइ वा नैहए परिवार के
राजिशाही केनाइ—माने जेना तेहलक
बाद श्रीमती गाँधी तहिना श्रीमति गाँधीक
बाद आजुक नेता, काइएक आशा (Today's
leader tomorrow's hope) राबीव
गाँधी के विश्वासरुह केनाइ आ राबीव
गाँधीक बाद काइएक नेता परसूक आशा
(tomorrow's leader day after
tomorrow's hope) राहुक गाँधी के
विश्वासरुह केनाइ आ राहुक गाँधीक
बाद

आशा अछि जे हमर एहि ब्याख्या सँ
अहुँक राजनैतिक बुद्धिक किछु विकास
होइत । ई पत्र नितान्त वैयक्तिक आ गोप-
नीय थिक—ते एकरा छपवाक कय नहि
करी ?

पत्रोचर नहि देवाक प्रबल आकांक्षी
श्रीमान् लालबुभुक्षर
बुभुक्षक माम बाबो

किलु देखल : किलु सुनल

विगत ३४ दिवस के अ० मा० विधिका संघ कलकत्ता, अरन रबत बयन्ती वर्षक उपरद्वय मे मिथिला-विभूति पूर्वक आयोजन कैने छल-स्थानीय स्वीन्द्र भातो विश्वविद्यालयक समारोह मे। इहि अवसर पर बगो हमारिका सेहो वहार कएल गेल कम सं कम दोसर दिन मंसवर कवि सम्मेलनक समय अपनहि हार्थेगोर देखेक हमारिका निरुद्धनि संघक प्रोपराइटर श्री बाबू साहेब चौधरी। हमारिका देख। सं पहिले लोकक मुई नीक बढी निहारि लेनाइ आसयक छनिहै—कही अग्रजक हाथ ने पड़ि बाइक। ओना विहलोक बाद कहि देखलिन—सम तयार नहि भ सकै।” ओना ई बात दिया नेक के हमारिकाक उतर ने छल छै—मिथिला विभूति-नेक अवसर पर उरविचल समस्त मैथिली प्रेमी के सनेह।” कोहो हमारिका ने कार्य-क्रम क विवरण नहि छैक। पहिल दिन ओ पचो पचो निरुद्ध गेल छलैक तकर नयना देखू—अखिल भारतीय मि० संघ कलकत्ताक रबत बयन्ती आ’ मिथिला विभूति पूर्वक कार्य-क्रम। ३-२२-८३ शनि ४ वजे सं।

१. मनोनीत अध्यक्ष ओ अन्य अतिथि के मंचपर स्थान ग्रहण २. माध्य भद्रान ३. गोसाउनिक गीत ४. शरातादक्षक भाषण ५. संघ अध्यक्षक भाषण ६. उपाध्यक्ष भाषण ७. पञ्चान अतिथिक भाषण ८. प्रबान वक्ताक भाषण ९. मान-पत्र अर्पण १०. विविष्ट व्यक्तिक भाषण ११. अभ्यासीय भाषण १२. कवि सम्मेलन १३. फंठ संगीत :—(अ) चन्द्रमणि (ब) सरस-रमेश (स) पवन गोविन्द (द) रमण (प) प्रदीप (क) रवीन्द्र महेन्द्र। मनमोहन-विषय वृत्तमसारायण भा।

पचो मे छपल तिथि के बाद देख काए सप्रेम नीक, कारण इए कार्यक्रम प्राय हुनू दिनक छल। दोसर दिन अति-रिक्त मे मुख्य आयोजन छल आ से नीक छल त रमण, प्रदीप, मनमोहन-विषय आ शरातादक्षक फंठ संगीतक लोक वाट तकिते रहि गेल। कविजोडनि के पहिल दिन विचरो नहि कएल गेल छल।

जेना देखल, मिथिला विभूति मे किण्वी मणिपद्म मिथिलेन्द्र श्री देवनारायण बाबु आ विदेसर मंडल सम्मानित नेबाह। जेना सुनल, मधुर श्री आ उदित बाबू के सम्मान भी० पी० सं पठा देख जेतनि। दोसर दिन के कवि सम्मेलन मेक तकर अध्यक्षता केडनि अइय किण्वी श्री भाग लेबनि सर्व श्री माधवन्द मिश्र वीरेन्द्र मलिक, रवीन्द्र नाम ठाकुर, रमण प्रदीप मैथिलीपुत्र, उदयचन्द्र झा ‘विनोद’ राम बोजन ठाकुर, विभूति आनन्द, बक्षरण भा हारार अर्जुन झाक कारण, विनोद कुमार झा, सरस, चन्द्रमणि, रमेश, जेही प्रेमचन्द राठ, कृष्णकान्त झा आदि।

अरणोदय प्रकाशन ३३/५, छा० देवदार रहमान रोड,

बुन्दावन वैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ से मुद्रित।

२३/१/८३
219 6771/67 44

बालसंच

अटकन मटकन

अटकन मटकन दहिया चटकन
बजे छौ दिन्ही त मार द चटकन
मिथिला से रहि क दिन्ही बजे छौ
खा होरे अन्न अपमानो करे छौ
सई चुपचाप जगो छाजो ने कनियो
गरबनि पकड़ि क छागो दही पटकन
बितु राइय मिथिला खिलि सेल रहै
भाषा बिहोन सेल लोक तों मरने
मायक ई छाज काज दोरे से जानि के
जाति पति भेद बिसरि आबो त बढ़ै
आइ ननि बिनार पीत पीतक प्रयोजन छइ
रणचंडीक आइबान करे मने मच
—रामलोचन ठाकुर

मैथिली पोथी/पत्रिका कीनू आ पढ़ू

इतिहासईता (कविता संग्रह)	—	२/४ टाका
वेताक कथा (हास्य-व्यंग्य)	—	४ टाका
आदगर (अनुदित नाटक)	—	५ टाका
प्रतिष्ठा (अनु० कविता)	—	४ टाका
अर्धनारीश्वर (सपन्यास)	—	२५ टाका
मुरशी धुनन्दन शृंगार : (व्यक्ति ओ कृतिरस)	—	७ टाका
मैथिली लोककथा	—	५ टाका

संस्कृत करु :—

अरणोदय प्रकाशन

कलकत्ता

मिथिलावासीक मांग :—

१. मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे स्थान हो।
२. केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
३. मिथिलांचल मे निम्नतम सं स्वरूप स्तरपर शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो।
४. मैथिली विहारक दोसर राजभाषा हो तथा मिथिलांचल मे एकरा प्राथमिकता देल जाइक।
५. आकाशवाणी वृद्धिमा तथा भागलपुरक प्रसारणक माध्यम भाषा मैथिली हो।
६. समस्तीपुर सं जयनगर धरि बड़ी लाइन बनाओल जाय।
७. मिथिलांचल मे यातायातक सुव्यवस्था हो।
८. मिथिलांचल मे कृषिक अवस्था मे सुधार हो तथा रोबी दाही सं बचवाक सपाय हो।
९. मिथिलांचल मे कृषिपर आधारित सरकारी उद्योग-धंधाक विकास हो।
१०. मुजफ्फरपुर दूरदर्शन केन्द्रक प्रोग्राम मे मैथिली के प्राथमिकता देल जाइक।

मैथिली सुक्ति मोर्चा

कलकत्ता

—सुखतया अली

□

मिथिल संस्कृतिक आधार स्तम्भ

(प्रोफेसर हरिमोहन झा)

मिथिलाक संस्कृति अत्यन्त प्राचीन आ कालिख अछि । सरल जीवन आ उन्नत चरित्रक विशेषता । शील, संतोष शास्त्र-परा एवं धर्मानुष्ठाना एकर नैतिक गुण । विद्या-विनोद, मेधुर परिहास एवं तत्त्वपरायणता एकर भूषण । एहि नैतिक आधार-विद्या थीक आध्यात्मिक उन्नति । औपनिषदिक युग सँ मिथिला ना दार्शनिक विचारधाराक लेल प्रसिद्ध छ । जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम प्रभृति एहि अही भूमि पर उत्पन्न भेलह । एहने-ने मनीषिक पुनीत साधना सँ एहिठामक संस्कृतिक जीवन अनुप्राणित भेल अछि ।

राजर्षि जनक जीवन-मुक्तिक प्रतीक छह । हुनका विषय मे ई उक्ति एखनहुँ सेह अछि—“मिथिलायाँ प्रदीपायाँ न दहति किंचित ।” एहि सँ बढि कऽ नास्तिक-योगक उदाहरण और न कहिए ? दूर-दूर धरिक जिनारु हुनका सँ कहल गेल छल—“जनक जनक इति वै जनाः धार्वज ॥ ११११॥” देवी भागवत मे कहल गेल छल—“वन्देऽस्मिन् येऽपि राजानस्ते सर्वे नमस्तथा । विख्याताः शानिनः सर्वे वन्देहाः परिकीर्तिताः ।”

(अर्थात् जनक वंश मे जसे राजा भेलह, सब हुनके वक्तो आत्मजानी । देह के कुच्छ बुझबाक कारणे हिनका तम के विवेक कहल जाय लागल) ।

मात्र राजादिके नई, मिथिलाक साधारण जनता आध्यात्मिक रंग सँ रंगल छल । एकर प्रमाण श्रीमद्भगवत मे भेटइए—“एते वै मिथिल्य राजनः आत्माविद्या-विशारदाः । योगेश्वर प्रसादेन, दृढ बुद्धिं संयुक्ता गृहेष्वपि ।” जल मध्यक कमल जकाँ, संसार मे रहितु संसार सँ निर्लिप्त रहब एहि भूमिक आदर्श रहल अछि । इएह आदर्श भारतीय संस्कृतिक आत्मा थीक ।

याज्ञवल्क्यक आत्मवाद दार्शनिक साहित्य मे विशिष्ट स्थान पाओल अछि । हुनकर अचण, मनन एवं निदिध्यासन सम्बन्धी उपदेश सहस्राब्दि सँ एहि देशक सांस्कृतिक चेतना के जगवैत आवि रहल अछि । ओहि कालक मैथिल स्त्रियो तत्वदर्शिनी होइ छलीह । याज्ञवल्क्यक स्त्री मैत्रेयीक वचन छनि “येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम् ?” (अर्थात् जे अमृत, अमरजान नहि अछि, से कऽ कऽ हम की करब) । दार्शनिक गार्गी ब्रह्म विषयक गूढ़ प्रश्नादि सँ याज्ञवल्क्य के चकित कए देने छलीह । न्यायशास्त्रक रचयिता गौतम से हो मिथिलक विभूति छलह । स्कन्द पुराण मे गौतमक निवास-स्थानक वर्णन एना अछि “असीद् ब्रह्मपुरी नाम्ना मिथिलायाँ विराजिता, तस्यां वसति धर्मात्मा गौतमो नाम तापसः ।” एखनउँ मिथिला मे गौतम स्थान आ गौतम कुण्ड प्रसिद्ध अछि । गौतम प्रणीत न्याय

सत्यतः मिथिला तर्क, शास्त्रक जननी कहल जा सकइ छथि । प्राचीन न्यायक प्रणेता गौतम आ नव्यन्यायक प्रवर्तक गंगेश—दुनू मिथिलक संतान । अहिना, मीमांसा दर्शन अमिद्विदिक श्रेय सम सँ अधिक मिथिले के अछि । पूर्वमीमांसाक तीव्र शाखा (कुमारिल, प्रभाकर तथा गुरारि मिश्रक) एतह प्रादुर्भूत एवं प्रसूत भेल । मिथिला मे न्याय ओ मीमांसाक अधिक उत्कर्षक कारण इहो भेल जे मिथिला के बौद्धदर्शनक पाथर बिहोड़ि सहए पड़लैक । बौद्ध तार्किकादिक आक्रमण सँ बौद्धिक कमकांड आ ईश्वरपदि के बचएबा लेल मिथिला से एक पर एक उद्भट मीमांसक नैयायिक होइत रहलह । ई परम्परा कहएक शताब्दि धरि रहल ।

मंडन मिश्र मीमांसाक सम मे अग्रगण्य छलह । हिनकर प्रकांड विद्वत्ता सुनिकऽ शंकराचार्य हिनका सँ शास्त्रार्थ कए हिनकर गाम (वर्तमान सहरसा जिलाक सुप्रसिद्ध ग्राम महिषी । महिषी अथवा महिष्मती । महर्षि बशिष्ठ अहीठाम भगवती उग्रताराक आराधना कएने छलह ।) आएल छलह । तहिना मिथिलाक बौद्धिक स्तर केहेन ऊँच छल, से ‘शंकर-दिग्विजय’ सँ ज्ञात होइए । जखन गामक कोनो इनार पर शंकराचार्य कोनो पनिमस्ती सँ मंडन मिश्रक विषय मे पुछलथिन तऽ उक्त पनिमस्ती उत्तर देलकनि—“स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं वीरगमना यत्र चित्तो गिरति । द्वारस्थनी इन्तर सग्निरुद्धः जानीहि तन्मंडन पंडितौकः ।” (अर्थात् जह दरवाजा पर टांगल पिछ्जा मे सुगा-सुगी ‘ब्रह्म अपन प्रमाण अपनह थीक आ ब्रह्मक प्रमाण ई विश्व थीक’ अह महान वाक्यक आवृत्ति कए रहल होइथ, तकरे मंडन मिश्रक स्थान बूझि लेब ।) मिथिलाक स्त्री केहेन होइत छलीह, एकर ज्वलन्त उदाहरण मंडन मिश्रक पत्नी सरस्वती देवी छथि, जे ओहि एतिहासिक शास्त्रार्थ मे मध्यस्थक कार्य कएलनि ।

भारतीय दर्शनक इतिहास से वाचस्पति मिश्रक बड़ आदर्शीय स्थान अछि । छंभो दर्शन पर समान अधिकार रखबा कारणे हिनका षडदर्शवल्क्य कहल गेल छनि । ई दरभंगा जिला, डाढ़ी गामक रहनिहार छलह । उद्योतकरक न्याय वार्तिक पर ई अपन सुप्रसिद्ध ‘तात्पर्य टीका’ रचलनि, जकर आरम्भ मे ई लिखइ छथि—इच्छामि किमपि पुण्यं दत्तरं कुनिवन्धपंकमनानाम् उद्योतकरगवीरानामतिजर्तनीं समुद्वरणात् ।

(अर्थात्, उद्योतकरक बूढ़ि राम सम दल-दल मे पंगल छथि, तनिके उदार कए थोड़बो पुण्य कए चाहैत छी ।) वाचस्पति मिश्र बौद्ध तार्किक समक खंडन करैत एहेन विद्वता सँ न्याय शास्त्रक तात्पर्य सिद्ध कएलनि जे ई ‘तात्पर्यवार्थ’ कहबए लगलह । शंकर भाष्य पर हिनक सुप्रसिद्ध ‘भामती’ टीका वेदान्त क्षेत्र मे गौरवपूर्ण स्थान रखैत अछि । ‘भामती’ हिनकर विदुषी पत्नीक नाम अछि । आधुनिक दर्शनक ई जगमग

हजुर माइ-बाप अपने सम्बन्ध मे कहनाइ खुब करी, सहरा ठीक हएत । किएक त जखन हम दोसराक सम्बन्ध मे कहैत छी ते कतहु नै कतहु अपने परिवार प्रस्तुत करैत छी । खाइ हम दोसराक प्रशंसा करैत होइ वा निन्द । दोसराक गुण-स्वभावक किरण आवि, के उदयनाचार्यक नाम सेहो अप्रमाण्य । हिनकर ‘न्याय-कुसुमाञ्जलि’ ईश्वर विषयक आद्वितीय ग्रन्थ अछि । नास्तिक बौद्ध सम संगे युद्ध कए आत्मीयताक स्थापना करब, हिनके सन धुरंधर आचार्यक काज छल । हिनक सम्बन्ध मे एक किंवदन्ति अछि जे एक बेर ई कोनो कष्ट मे पड़ि गेलह तऽ ईश्वर के समुपहित करैत बजलह—“ऐश्वर्य मदमत्तो-ऽसि मामवशाय वर्तसे, उपस्थितेषु बौद्धेषु समाधीना तव स्थितिः ।” (अर्थात् हे ईश्वर, अहाँ ऐश्वर्य-मद मे मत्त भऽ हमर उन्मत्ता करैत छी । मुदा, बूझि राखू यदि हमर अस्तित्व अहाँ पर निर्भर अछि तऽ अहाँक अस्तित्व बौद्ध समक मध्य मे हमरे पर निर्भर अछि ।) एहन छल मैथिल पंडित समक आत्मनिश्वास मैथिल पंडित समक इहो गर्वोक्ति प्रसिद्ध अछी—

“व्यभिच पदविद्यां तर्क मान्वीक्षिकीं वा यदि पाथि विषये वा वर्तयामः स पन्थाः । उदयति दिशि यस्यां भातुमान तैव पूर्वा नहि तरणिरुदिते दिक पराधीनवृत्तिः ।” (अर्थात् भाषा ओ तर्क के हमसभ बिहर लज्जायक, सएह मार्ग बनि जएतइ । सूर्य जह दिशा मे उगइए, सएह पूर्व दिशा कहावइए) ई सूर्य दरभंगा जिला, करियन ग्राम मे उदित भेल छलह ।

जह प्रकार आठम आ दसम शताब्दि मे मंडन, वाचस्पति आ उदयनक प्रकाश मिथिला मे वाचस्पतमान रहल तहिना तेरहम आ सोलहम शताब्दिक मध्य गंगेश, पक्षधर आ शंकर देदीप्यमान नक्षत्र जकाँ चमकैत रहलह । गंगेश उपाध्याय नव्यन्यायक जन्मदाता छलह । हिनकर निवास दरभंगा जिला, मंगरौनी गाम मे छल, ई करियन गाम मे अपन विद्यालय स्थापित कएने छलह, तकरा डीह पर एखनउँ किछु चिह्नहि छैक ।

मिथिलाक नव्यन्याय परम्पराक इतिहास गौरवपूर्ण अछि । तीन-चार शताब्दि मिथिला सँसे भारतक प्रमुख ज्ञानपीठ-विद्यापीठ बनल रहल । दूर-दूर सँ आवि कऽ विद्वान सभ एतए अवच्छेदकता, प्रकरता आदिक ज्ञान प्राप्त करए अत्रैत छलह ।

गंगेश उपाध्यायक नव्यन्याय परम्परा मे तम सँ प्रसिद्ध भेलह पक्षधर मिश्र । हिनका विषय मे प्रसिद्ध अछि—‘शंकर-वाचस्पत्योः शंकर-वाचस्पती तदौ, पक्षधरप्रतिपक्षी लक्ष्मी भूतो न च क्वापि ।’ (अर्थात्, शंकर आ वाचस्पति, शिव अ ब्रह्मसत्तिक तुल्य छथि ।) परन्तु पक्षधरक समक्ष तऽ किओ नै देखइ मे आवैत अछि । कहल जाइए जे ई जह पक्ष के धरइ छलह तकरा सिद्ध कऽ रह छलह ।

जहाँ ई पक्षधर जाँने निरगमन भोजन ।

अन्तःकरण सँ उत्प्राइए आ फेर हमर प्रति क्रियाक शक्य अस्तित्वार क लेह । भौतिक सँ कुनू दार्शनिक कहने छाँझ जे मनुष्यक तीन रूप होइ छह । पहिल ओ, जे ओ स्वयं अपना बारे मे जेनेह । दोसर ओ, जे (शेषार्थ पृष्ठ ४ पर)

छह आ हिनका सँ ‘मणि’ ‘आलोक’ प्राप्त कए नव द्वीप लए गेलाह ।

मैथिल संस्कृतिक ओहि स्थान युग मे मिथिल छल सांस्कृतिक जीवन केहेन छल, तकर उदाहरणस्वरूप पंडित भवनाथ मिश्रक नाम गौरवपूर्णक लेल जा सकइए । ई दरभंगा जिला, सरितव गामक निवासी दरिद्र ब्राह्मण छलह । मात्र सवा कऽठा जमीन छलनि । ओह मे जे साग-पाल उपजइ छलनि ताहि सँ निर्वाह करैत छलह । एहेन त्वाभिमानी छलह जे कहियो ककरो सँ कोनो याचना नहि कएलनि । तहूँ ई ‘अयान्ती मिश्र’ नाम सँ विख्यात भेलह । ई आजीवन विद्यादान कएलनि आ अन्त मे गंगाधाम कएलनि । गंगा सँ विदा होइ-काल ई श्लोक पढ़लनि—“अधीतमध्यापितमर्जितं यदाः न सोचनीयं किमपीह भूले, अतः परं श्रीभवनाश्रमणः मनो-मनोहारिणी जाह्नवीतटे ।”

हिनकर पुत्र शंकर मिश्र एहेन संस्कारी भेलह जे पाँच वरखक अवस्था मे ई श्लोक रचि कऽ मिथिला नरेश केँ सुनौलनि—“बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती अपूर्णे पंचमे वर्षे वृणयामि जगत्त्रम् ।”

ई श्लोक एखनउँ धरि गाम-गाम मे प्रसिद्ध अछि आ छोट-छोट बालक सभकेँ शैशवावस्थे मे कण्ठस्थ कराओल जाइत अछि । शंकरक विद्या सँ प्रसन्न भऽ मिथिलेबा हुनका प्रचुर पुरस्कार देलथिन । मुदा हुनकर माता भवानी तऽ अशाची मिश्रक पत्नी छलथिन । ओ शंकरक जन्मे-काल एक चमहन केँ वचन देने छलथिन जे शंकरक पहिल कमाइ ओकरा नेछाओरक रूप मे देल जएतैक, ई प्रतिज्ञा स्मरण अवि-तह ओ सभटा सभति ओहि चमहन केँ दऽ देलथिन । मुदा ओहो चमहन तऽ मिथिलेक माटि-पानि पर जनमल छल । तहूँ सभटा धन सँ एकटा सावजनिक पोखर खुनबा देलक जे आवहु धरि चमहनिको पोखर सभे विख्यात अछि । आई सँ किछुए पीढ़ी पूर्व मिथिलाक जातीय चरित्र एतेक महान छल ।

एहेन छल मिथिलाक संस्कृति, जे साग, संतोष आ स्वामीमानक अदभ्य व्योति सँ जगमगा रहल छल । अही सांस्कृतिक विशेषताक कारने मिथिला सहस्रोवर्ष पर्यन्त तीर्थ भूमि बनल रहल ।

कहल जाइए जे पहिने मिथिलाक भूमि जलक आधिक्य कारने बड़-ड आद्र छल । बौद्धिक युग मे आर्य सम एतए आवि नदी-नदक काते-कात यज्ञ करैत एहि भूमि केँ रहवाक योग्य शुक्ल ज्ञानौलनि । तहूँ एकर नाम ‘सीधुति’ पड़ल, जे अब सिद्धत अछि । एहिठामक एक-एक

जहाँ जहाँ जगती नन्दन सँ तजिच उदित । जेने

प्रो० हरिमोहन भा माते वतमान युगक सर्वाधिक पठित साहित्यकार, प्रिय साहित्यकार हरिमोहन वाबू, हास्य सम्राट् हरिमोहन वाबू, मिथिलाक दार्शनिक परमेश प्रबल स्तम्भ हरिमोहन वाबू जीवित छथि आ ताधरि जीवित रहता जाधरि मैथिली भाषा-साहित्य । हरिमोहन वाबू जीवित छथि जे हरिमोहन वाबूक प्रति उचित सम्मान / श्रद्धांजलि मैथिली भाषा कइबाक प्रयोजन नहि जे हरिमोहन वाबूक प्रति उचित सम्मान / श्रद्धांजलि मैथिली भाषा साहित्यक में समुद्र केनाइ ओकर विकासक पथ प्रसन्न केनाइए या होएत आर किछु नहि, किछओटा नहि ।

—प्रो० हरिमोहन झा

हम—आश्चर्य ! एहि दित हमर ध्यान

औरि किष्क होइत अछि ?

बढ़ि सकय । नीक नम्र अन्वा लेख पारश्चम
सै पद्व एक तरीका अछि जे आज पुरान

हम कहलियेहूँ — धन्य हो खटकरना
अहाँ जे ने सिद्ध कइ दी !

खट्टर-फंका नज्जानह—देखो, सारङ्गधर
मत्त में प्रथम विकार होइत छै मही न
बुद्धि । दही चूड़ा चीनी खेला उत्तर पेट में
महंत अक्षर

एहेन नभली परीक्षा क सर्टिफिकेट
बला लोक कोन नोकरी पौलाह ?

मोचंडी आ उद्वता; हिंसा आ अय-
साध बढ़बा से परीक्षा आ परीक्षापत्र क
कुपय हाथ लुक ।

समस्त जीवों में मुँह रुद्ध कि रहल अछि ।

॥ ५ ॥

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जोरि सुझाह करब हम
विद्रोहो मिथिलाक जवान

पिता : मृत्युसज्जा मैं / □ विभूति आनन्द

□□

यंत्रणापूर्ण जिवनीक समग्र ऊँच-नीच

हमरा असोचल अछि बाउ।

हम एकटा लोहजनक गाछ भऽ जीब्लहुँ

जकर सर्वांग शून्या सँ आक्रान्त रहैत आयल

हाल ई देह-गाछ तहिने ते कोकानि बुकल

बहिया सँ एकर देह पर दोसर गाछ अपन अस्तित्व बनावऽ लागल।

□

बाउ।

हम अपन एहि मानसिक तहरजमीन केँ

लाव व्यापक कन्यावाक प्रयास करैत अयलहुँ अछि,

ई जोह तऽ फूसि-पटक भऽ जाइत रहल अछि

अथवा, शून्य मे विचरैत कोनो नरिा-जीवी

अथवा, विजया-जेवी मनुक्खक शकवास भऽ कऽ

एहि समाज द्वारा मान्यता प्राप्त करैत रहल अछि।

□□

आ तँ,

जीवनक एहि लोख वेला मे

परिवर्तनक ओर होइत बितल सम्पूर्ण बय

आइ हुनः ओही प्रसन्नवादी युवा मे

खुन बहने उदाका लगा रहल अछि।

□□

हमरा खोए,

अपन संस्कृतिक मोह आ बड़पनक कटाह बंगल मे

अनेरे बौद्धाइट रहलहुँ

भृति मे जीवाक हमर-अहाँक ई आम मानसिकता

मोहान्छन कऽ कऽ लोक केँ तोड़ि कऽ छुंज कऽ देत छै बाउ।

□□

अपन पितरक तर्पण करैत

आकि

मनुवादी परम्परा मे पलेत

बुद्ध, गोब आ मूख ओर-ओर मिलबैत

अथवा

गौरवपूर्ण इति-वृत्तिक बीच फिक्कड़ि खेलाइत

आइ जे कि हम वर्तमान सँ कटल रहलहुँ—

जीवनक सभ सँ अथवाह शब्द पर

स्वीकारक मोह भर माया पर बितै छी।

□□

आइ हम

हिमास्थक कोरा मे बसल अपन गामक

बीच जीबडी पर ठाढ़

आलि सय विराट शून्य केँ लटने

बुरीक असल मार केँ

दूटा कमजोर पयर पर

सङ्घारि रखवा मे विफल भऽ रहल छी।

ई एकटा सुद्रा धिक पदचातापक

जे हमर दीर्घ जीवनक सौम्य निष्कर्ष अछि।

□□

हम आर अधिक ई पीड़ा नहि तहि सकल

हम जा खल छी बाउ।

अहाँ सभ द्वारा उठल ई अतंख तजनी

कवनो हमरा लौंछवैत तन बुझाइत अछि,

कवनो वेधैत तन ल्यात अछि मौल।

□□

हम जीवनक सार्थकता मादे सौचियेठ संकलहुँ—

कऽ नहि पौलहुँ किछु।

बहिया जुआनी क उठान पर रही—

गबदी माय नीक खोत छल

बहिया अनीतिक विरोध कऽ सकैत रही—

दृष्टि-छज्जा सँ लोचल रहलहुँ

वैचारिक स्तर पर जतने साकाय रही

अथवा मे ततने शिथिल होइत रहलहुँ

हमरा कहाँ सभ किन्हुँ माफ नहि करव

अहाँ सभ जे आइ

X X X

श्रीमान् सम्पादक जी।

नमस्कार सह ब्य मैथिली।

आगा इच्छा-सुरति छी लिखूँ अहाँक

न बुझैले अइ जे दिननादिन मिथिलाक

विगडैत हाल-गति सँ मनभरि मनदुखबी

चाहो मास छवीसो दिन लाल बुझकर केँ

धेनहि रहैत छनि। ओना ओ बेर-बेर

महाकवि प्राच्यक फामूला द मन केँ बुझे-

थाक प्रयास करैत छियि जे—

दिले नादां बुझे हुआ क्या है

अखिर इत दूद की क्या क्या है

सुनको उनसे क्या की है उम्मीद

जो नहीं जानते क्या क्या है

किन्तु तैयो अथक मन कुतर्निहारे

नहि। आ ताइ पर सँ कहै छी सम्पादकजी

पठनाक एक प्रातिक प्रथिया मे यलकलाक

कोनों छबीस बख सँ बुझकुनिया कइत

नेतानी क ताक्षातकार पढि त आर छितनी

भरि छपुना मे पडल छी। सम्पादक जी

अपने त नहिज रहने होइत कारण मैथिली

पौथी-पत्रिका कीनने-रहने क्वाइन अपने

लोकनि केँ पतिया ल्यात अछि, पञ्च केँ

पढिती त बानथि उगिलाहा जे भिसिबोभरि

फूसि कहैत होइ अहाँक सपना "...." त अहूँ

कम स कम अक्से कहिती—बहिवारी

सम्पादक लोकनिक विवेक जे जे एहन बण

शेकर वक्तव्य केँ प्रामाणिक घोषित क

केलनि। सम्पादक जी अपन पहिलक चिट्ठी

मे हम अहाँ केँ इतिहास करवाक दुआव

देने रही। अहाँके बुझैले अइ जे हम ते त

विज्ञा यतनक पटिया छी आ ते उनि समाज

क प्रचारक। तबन एहन बात लिखनाक

कारण खाली अपनेक स्मरण शक्ति केँ मजबूत

केनाइ छोड़ि काने की म संकेछ ? आ जे

अपने हमर सुभाव मानि अग्यार करैत

होएब त तनक दावि स्मरण करैत चल, जेना

जेना हम कहैत बाइत छी।

नेता जीक अतुलार कलकला जे किछु

कण्ठक तनर अद मात्र छओ गोटे केँ

छेक जाइ मे तीन गोटे हुनक विरोधी

विकलांग स्थितिक मोग भोसि रहल छी।

सभक भाणी हमही छी/हिमही या छी।

X X

हम जा रहल छी प्राण,

मुदा संघर्षक ई प्रवाह चलेत रहक चाहि।

मरनि मे भऽ जाय ई थार

हमरे जकां अहूँक संतति मे दिअस ई उपराग

मनुक्ख स्वयं होइए अपन भाग्य विधाता

जे जानक हे हमर जान

वेरामी ने भऽ पावब ई सोन-धण।

X X

रामनामी चढ़ारि ओहि जीवन, चाहे

मंदिर-मल्लिद भऽ कऽ रहक, चाहे

पाग, पगडी आ पञ्जामक कोर तकैत रहव

तऽ रहि जायब मैथिल माने मिथिला वाली

X X

अहाँ सभ केँ एकटा सौत मनुक्ख बनवक अछि

मिथिला आ मारिख क दद भोगवाक अछि समान रूपे।

एकटा होइए

विद्यताम तँ भटसिभरि धरिक कथाक मूल कथ

से जानब हे हमर मौत

मुदा जानब नहि गीत

बाउ "....." हे हमर मौत "....." विदा

बड़ी बुद्धा चीनी

थिक। परतु एकटा ऐड सवगुणक अधिप
शोक चाही अर्थात् दही बेदी होमक चाही।
हम - अहा। तोस्य दशनक एहन तल
दोसर के कहि सकैत अछि।

खट्टरकका बजलाह - यदि पहिना निम-
त्रण दैत रहत त क्रमशः सम दशनक तल
कुमा देवौह। त्रिगुणसिक्का प्रकृति द्रष्टा
पुख के रिक्तते छथि। एकर अर्थ जे ई
त्रिगुणात्मक भोजन भोक्ता पुख के नचैत
छथि। ते नृत्तान्त भोजनोर्विभाः।

हम कहलिऐह - परतु 'खट्टरकका'।
पछिमाहा सम त दही चुहा चीनी पर हँसैत
छथि।

खट्टरकका अंगपोछा सँ मांग घोटैत
बजलाह - ही, साधु लिही खनिहार दधि
विपदान्नक सौरभ की बुझाह। पवित्रमक
जहन मादि बज्जल तेहने अन्न बज्जल, तेहने
लोको बज्जल सन। अपना देसक भूमि सरस,
भोजन सरस, लोको सरस। बूझा पुथी
तल। दही सब तल। चीनी अतिन तल।
ते कस पित बाहु - तीव्र दोष के समन
कवाक सामर्थ्य धरि ने छैक। देलह
अनादि काल सँ दही चुहा चीनीक लेबन
कैत-कैत हमरा लोकनिग जोगित ठण्डा भऽ
नेल अछि। ते मैथिल जाति के आइ
धरि कहियो दुद करैत देलकहक अछि।

हम - खट्टरकका काँ सँ कहाँ शह
चला देख्लौं। बीच-बीच मे तेहत मार्गिक
अंग कस दैत छिएक बे...

ख० - अंग नहि, यथाये कहैत
छियौह। देलह, भोजन सँ प्रकृति केनेत
छैक। चाही मादि खा कस मादि सेल रहैत
अछि। साँघ बसात पीपि कस फनकेत
अछि। साँघ सभ डबल रोटी खा कस
मूख रहैत अछि। मुर्गा खनिहार मुर्गा
कका लखैत अछि। और हम सभ साग-
भौटा खा कस साग-भौटा सेल छौ। हमरा
लोकनि भक्त (भक्त) क प्रेमी थिकहुँ, ते
एक दोसरा सँ बिभक्त रहैत छौ। ताहू
पर की त दिदल (दाँछि) क योग मेले
ताक्य। तखन एक दल भऽ कस कोना रहि
सकैत छी।

हम - अहा। की अलंकार छटा।

ख० - केवल अलंकार नहि, विज्ञानो
छैक। कोनो जातिक स्वभाव दुत्तवाक हो त
देली जे ओकर सभ सँ प्रिय भोजन की
थिकैक। देलह, बंगाली ओ पछिमाहाक
स्वभाव मे की अन्तर छैक। जेह भेद रत-
गुहा ओ लइह मे छैक। तदुहा सरलओ
कोमल होइछ, लइह ओ कठोर। तदुहा
बुद्धक प्रतीक थीक, लइह पवित्रमक। ते
हम कहैत छियौह जे ककरो जालीप चरित
दुम्भताक हो त ओकर प्रधान मधुर देली।
हम - खट्टरकका, अपना सभक प्रधान
मधुर की थीक।

ख० - अपना सभक प्रधान मधुर थीक
खाजा। देहात मे मिठाई कहते ओकरे
बोध होइछ। खाजा मे रसगुल्ल जकाँ स्निग्ध
होइछ, ने लइह जकाँ ठोस। ते हमरा
लोकनि मे ते चंगालीवला स्नेह अछि, ने
पंजाबीवला दृढता। तखन खाजा मे

अखण्डिय प्रकाशन २३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता ७०००३३ क लेल श्री महेश्वर भा

खट्टरकका संसार

सम्पादक जी जे एहि दशक सँ अहूँ सहमत
होएव जँ ओ गण निरतिर जाइ के कहियो
नेताजीक संस्थाक मंत्री बनबाक विशेष
योग्यता मानल जाएत छैक-ओकरा सर
समन्धी से ना प्रभाव मे कोनो नीक बर
खनाह। २६७२ ई० क 'द्वयन' जँ अपने
सरणक उलटाबी आ खास के असा मातक
त विषय आर स्पष्ट म बाएत।

जहाँधरि नेता जीक नाट्यकार होए-
वाक बात थिक से त पोथी छवि मेने
सम जनेछ। कहवाक प्रयोजन नहि जे
खाल बुभुक्करक सेहो ई नैतिक आ वैधानिक
क्षयित्व म बाइत छनि जे नेता जी के
नाट्यकार मानि लेथि। परजब अहाँ त
ओही नगरक लोक छी आ नाटक सँ सेहो
बुझल छी ते हम अहाँ सँ नित्यही पुछथ
चाहै छी—कि तसिपहुँ ई नाटक नेता की
अपने लिखने छथि? एकटा गण आर—कतेक
संस्था के प्रबंधक क तोड़बाक अर्थ नेता
जी के छनि तकरो पता ल्योनाइ छनि
किनी। ते ते कहै छै तम्बादक जी जे—
मन्दकल दुह भानहि नीक, दुदा दहि
नेता जी के कहलनि। तसपहुँ बुझ मेने
लोक कि छना दुरि जाइए।

प्रत्येक परत फरक-फरक रहैत छैक से
अनो सभ मे रहिते अछि।

हम - वाह! ई त चमत्कारक गण
बूछ! मौलिक!

ख० - पेट ठ वा चाँचि बात हम पनि
नहि ते छी।

हम - वास्तव मे खट्टरकका! अहाँ
ठीक कहै छी। गाम-गाम मे गोखरी घर-
घर जे पट्टीदारी भगवा। कचहरी मे पोर-
पाग देखाइत अछि। से कियेक?

ख० - एकर कारण जे हमरलोकनि
आमिल-मस्जिद बेसी खाइत छी। तीव्र-
शोक मेले ताक्य। तीतो मे कम रुचि नहि।
नीम-भौटा, कोल, पटुआक भोर...। दही,
जैह गुण कारण मे रहतेक तेह ने काप मे
प्रकट होतैक। कटुता, कषयता ओ तिकाता
हमरा लोकनिक अंग चीन गेल अछि।
खाइत हम सभ अपना मे थतेक कटाउभ
करैत छी।

हम - परतु बंगाली सभ मे थतेक प्रेम
किऐक?

खट्टरकका भाग मे एक औषुर चीनी
मिलबैत बजलाह ओ सभ प्रत्येक वस्तु मे
मधुरक योग दैत छथि। दाँछियो मीठ,
तरकारिओ मीठ, माछो मीठ, चटनियो मीठ
तखन कोना ने मधुर रहतेह? अनो
जाति मे पहिना मीठक ब्यवहार होमऽ
लागन तखन ने। ते हम कहैत छियौह जे
अपना जाति मे जौ संगठन करवाक हो त
मधुरक बेसी प्रचार कह। केवल सभा केने
की होतैह? भोजन मे मात, दहुर मीठ।
गाम सँ दुगोल दूर करवाक भौ त 'पुही
चूड़ा चीनी खण कटली वाडू, वरपीक
भोज करह।

ई कहि खट्टरकका भांगक लोटा उठौ-
लनि और दु-चारि बूद शिवजीक नाम पर
छीटि बट-बट कय समटा पीपि गेलह।
(खट्टरककाक तरंग सँ)

कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री अनंदन भा

बड़ी बुद्धा चीनी

बड़ी-मतीजीक चच त नेता की थेलनि
पलव बेटा भातिज देर मे चुपची कियैक?
कहली छह ते जे उचित कहने संग विधुआए
नेत हम अवसे पुछितयनि जे श्रीमान
लोक छुपी वा घुरा क दूख त गेल नाके ते?
आकि नहि?

सम्पादक जी कते कहूँ—एकटा अजगुल
अनदोख रहै तखन ने। नेताजीक अनुसार
बल दसेक सँ कलहला मुइछ अह। आइ
अही कते शान भाक जोग द क विचारल जे
राजभोग पओनाइ त महान आन्दोलन थिक
परजब मैथिलीक इतिहास मे सर्वप्रथम राज-
धार्मिक राजास पर अगम साधुमापाक
न्यायोचित अधिकार लेल जे मैथिल सन्तान
जोषित बहोलेनि आ लछीक मारि खेलनि
तकर उयावचो नहि। एकरे ने कहैत छह
जीविते गय गीइनाइ। सुक्ति मोर्चाक
दड़िभंगा आधेशानक समय जे ई नेता जी
पीट मे बूझा भौकलनि से लोक भने बिस्तरि
जाओ मुदा समादक जी हमरा त पुरे पसेरी
भरि विश्वास अह जे अहाँ नहि बिसरल
होइह।

नेता जी आर एगो नव गम बूछल-
निह—सम्पादक जी। अवसे के म हुनले
दोष्ट जे कुहराक हुकर जकरे हाथ मे मादि
जगल देखैत छह तकरे पाछू लसि जाइए।

से नेता जी तहिना कहुन राजनैतिक गंध
मादि पटनिवाँ संस्था आ महासंस्था सँ
बुझि गेलह। जे व्यक्ति मैथिली अकदमी
के पठिनिय कोना दोसर संस्था कहि आलो-
चना मेने छथि तथा डा० जगन्नाथ मिश्र ते
मैथिली प्रेमी छथि नहि बालिक जाहि
राजनीतिक दल सँ सम्बन्धित छथि बेह दल
सभ सँ बेसी मैथिलीक क्षति आइ धरि
केलक अछि। लिखने छथि से जे आइ
एहि संस्था क प्रोपराइटरक पाछा 'ताड़ि
द्रोखैत कीर' छथि से तकर कारण त अवसे
छैक। आ से छैक 'उजरा काम' जे प्रेस
धरि नहि कलकत्ता होसपिटलक केद धरि
पहुँचि जाइत छैक। आ से उजरा काम
जगरा हाथ मे नेता जी देखैत छथि तकरे
पाछा लागि जाइत छथि। ओना जे एकरा
नेता जी सफे स्वीकार क लिथि त लख-
बुभुक्कर के आपसि के कहए, पथियामरि
प्रसन्नता होइतनि। कहियो छह जे देखि
पाकल आम तेह ने भेलह ईल भा। आ
कि नहि? आ ते जँ नेता जी अपन
चामुन्टाक संग हवाइ अड्डापर आ के
ओही जगन्नाथ मिश्र के फूलक माला पहिरा
बजलाह त अकरे की? किन भेतक लोटा
त मिथिला मे रहदो पाओल जाइए।
सम्पादक जी वच अनावश्यक रूप ते
दतार भेल आ रहल-ह, ते समात केनाइए
उचित। अपने सँ हमर बेर-बेर पावद
प्राप्ता जे एकरा अपनहि धरि राखी। कम
सँ कम चर्चित पत्रिकाक संपादक लोकनिक
गीद-दछि सँ अवसे बचाबी अयथा हुनको
लोकनिक प्रामाणिकता ने कही संक्षिप्त म

जाइए।

प्रज्ञोत्तर नहि बेबाक प्रबल आकांक्षी

श्रीमान खालबुभुक्कर

बुभुक्कर ग्रामवासी

बड़ी बुद्धा चीनी

लोक ओकरा बारे मे जने छह आ तेसर ओ
जे कि ओ तसिपहुँ होइए।

किन्तु हुरा एह तीन रूपक भलाबे
एक चारिम रूप सेहो मनुक्खक होइ छह।
ओ ई, कि जे ओ नञि होइए, मोने जे ओ
बनबाक इच्छा रखैए, जाइ स ओकरा आगा
वदवाक वा उन्नति करवाक आकांक्षा बनैत
छह। संभवतः हएहओ चारिम आयाम
छह जकरा द्वारा मनुक्ख जिनगी मे किछु
क छैए। हुर बहिया हमरा होइ भेल
तहिया अपना के एक समुद्र परिवारक
दुखला कच्चाक रूप मे पाओल। तहिया
सम तरक सुविधा छलैक। पिता रचिक मन
छलाह। माँ परम संतकारी। बाबा कदर
सनातन धर्मी। नाना आय समाजी। दाहक
हुकुम परिवार मे चलैत रहैक आ हम ओकर
एकलौताक पहिल सन्तान। मोने दाहक
अधिन्यायवादक उत्तराधिकारी। आ फेर
समय करोट पेड़क जे रहैक ते नञि रहल।
टुटल लोक छल आर ओकर अतीतक याद।
हुर वादक एक नम्रा लिखितला छह जे
सुद म गेल त लिखैक नाम नञि छिड़।
तेहने मे एतने कही जे लिखा एक नञि
ओकर भीतर आ ओकर संग चलेत कतेको
लिखला।

ते माद-बाप अपने बारे मे कहनाइ
यष्ट सहज नञि। किएक त खलन केओ
अपना बारे मे कहैछ त ओ भीतर-भीतर
कौन अपना के 'थूड़ पवन' मे तब्दील क
लेए। बह खसनाक कोज छह ई। किन्तु
आदमी त जन्तमिते अइ खतरा उठाव लेल।
बाहि ओ स्वयं के कत्तवाक हो वा दोसरा
के कटवाक किवा अपना-आप के परिवार
मित्र, समाज वा देश जे वदवाक—हो।
हालांकि घटना कवनो अहाँ के, असहिमत
धरि पहुँच्य नञि देल किन्तु कतो ने कतो
पहुँचाओत धरि अवसे।

ई पहुँचनाइ विशेष अर्थ रखैछ। खल
के तखन खलन कि अहाँ अपना बारे मे
कहैत दोसर के समेटि रहल होइ।

हुरा दोसरा के समेटवाक तेहो बड़का
छुटा होइ छह। आखिर जिनगी, अलावे
अपन पिरियानी, दुख-सुख के एक छुटोफक
रूप लेत छह।

कसूर माफ हो, हुर माद-बाप, जँ हम
कही जे एह समाज मे बाँटिया लोक कहियो
ने खगता मेले। जँ होइत त अहक वा
हमरा देखैत हइ समाज मे पाइ ल के
'करखन' नामक जे दिनाप पतरि रहल छह
ओ कहियो ने खतम भ गेल रहित। किन्तु
जहिना दिनापकला के कत्तवाक आवृति
पहि जाइ छह आ कसटनाइए मे ओकरा
परमानन्द प्राप्त होइ छह—टीक इष्ट दल
हमरा सभक अह। शिकाइत कत्तवाक टीक-
दारी त लोक नेने अइ परख जान-अमजान
मे आइ 'करखन' केर हिस्सेदारी बनेत
जाइए।

आबओर अहाँ त जनिने छी, माद-बाप,
शिकाइत बेवस लोकिया करैए।

मिल्ल २२ वी, हुदावन बेशाल पट्टी

प्रज्ञा

अङ्क-५६

मङ्गल-जून २४

सूच्य-पचास पाइ

अपना दिस सँ

मैथिली आन्दोलन आ मैथिलीक साहित्यकार

मैथिली आन्दोलन' कहिया आरम्भ भेल से निखरी त नहि कहल जा सकैछ, जखन एतेधरि त अवसरे जे तीस-पैंतिस बर्ष सँ एकर चर्चा चलि रहल अछि । जे ई, दिसम्बर १९८० प्रदर्शन, जे मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता आ निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ, पटनाक सम्मेलन प्रयास सँ भेल छल आ पहिले-पहिले मैथिल सततक शोधित सँ सम्बन्ध भोजल छल-के बाद द देल जाय त मैथिली आन्दोलन आइधरि नाच-गान आ प्रस्ताव पारित केनाइ धरि सीमित अछि आ इएकर कारण छैक जे चारि कोटि मैथिली भाषी एहि तथाकथित स्वाधीन भारत मे पराधीन अछि, गुलाम अछि । भाषा सस प्रमुख आ पबित्र अधिकारी से ओकरा वंचित राखल गेल छैक तखन आन अधिकारक चर्चा की हो ? स्पष्ट छैक जे अधिकार भील मलने नहि भेटैत छैक-कहि के लेखक पढ़ैत छैक । एहि लेल शोधित न्याय पढ़ैत छैक, बाल्यकाल प्रयोजन पढ़ैत छैक । जे एहेन हमरा लोकनि अपन अधिकारक हेतु संघर्ष नहि क पसोल्हुँ-तें वंचित छी । जे जाति अपन अधिकारक प्रति संवेत छल वा अछि से संघर्ष क करकार के नाका दम के देखल पड़ल आकर समस्त माछ मानि लेल गेलक ।

जखन उचित भेटैत छैक जे एही भारत मे जखन मान जाति-जन्म, साधन, लाल मे अपन माइ के सँ सँ प्रत्येक परकार पर पहिने चारु नखन मैथिल जाति आर लोक-पे तीस साल सँ मान प्रस्ताव-धरि कयके सीमित अछि-हमरा जनतेक एक जाम उतर छैक जे कोनो लड़ाइ हुन द सतारवती नहि आर मम माइत छैक । एहि लेल तेयारी करय पड़ैत छैक, जाइ से बल्लो लागि जाइत छैक । एहि तेयारी के हम आर्यिय समाजक भूमिका कहि सकै छी जकर चिमटा मे सस सँ पहिल आ प्रथम मैथिली साहित्यकारक होइत छैक । ई भूमिका संघर्ष निमित्त ओहोते महत्त्वपूर्ण होइत जेना कि मकानक चेल ओकर नीच सँ साहित्यकार, लोकनि स्वशासनक अपेक्षा करी लेलन, अस्तित्वमानी, निर्भिक आ तबतकालीन होइल छथि-ओ अपन रक्तान् माध्यम अपन अस्तित्वक मोक्षार्थी नीति आ तबतकालीन समाज उन्मादित भेल अछि आइ से लेक से । ओकरा प्रति जोड़ ओकर, गोपल होइक । एही भावनासँ एहि साहित्यिक सांस्कृतिकता के प्रत्यक्षिक करैक जातिक निमित्त समुदाय मे एक संघर्षमे लगे क प्रयास करैत छथि तबत तबत महाभारती सँ छ के विदेशी आक्रमण करि के भेता सस के ओ समाने प्रसारित होइत-एहि तबतकालीन निमित्त के प्रतिपादित करैल लोक के सस मिलि रहबाक समय अपन आशयक समाज परिवर्तन मे तबत करबाक लेल गोरि करैत छथि । एकरे दोसर शब्द मे जातीय चेतना कहल जा सकैछ । जे एहेन मैथिली मे एहन काज ताहि मेले तें लक्ष्यधारण के इहो नहि पता छैक जे ओ मैथिल थिक आ मैथिल एक जाति थिक, तथा जाति आ जातीय संस्था भिन्न वस्तु थिक । इए कारण छैक जे लोक अपने मुँह न्हिबारी बनि जाइछ वा दासरेक मुँह मे शब्द दुनि लजित नहि होइछ तमसावत नहि अछि अपितु 'महलजी छुरि' बजा गौलान्वित होइत अछि । तें उदयनाचायक गर्वित ओकरा लेल कोनो महत्त्व नहि रखैछ, लोरिक, सखेस, बंदा चमार आ गोरियाक सत्तास्य भेट मरे लेल बंगाल सँ पनाबधरि ओआइत अछि । तें जे एक वाक्य ने जरी त कोनो जातिक अस्तित्व रखैत नहि ओकर बिकासक गुलाब थिक इएह जातीय चेतना जकरा अभाव मे पेश स रैन जाति चेतना के प्राप्त होइक आ इतिहास ओकरा मत नहि रखैत छैक । एहि सन्दर्भ मे सस जखन मैथिली साहित्यक दिस तर्कता छी त पूणतः निराश होमाम पड़ैछ । स्पष्ट छैक जे साहित्यक विप्लवतार मेलाह साहित्यकार आ से साहित्यकार जे अखरि अपाक आन्दर हो, चेतनाहीन हो, शून्य प्रवृत्ति, होत साहित्यक स्थिति जे केहन होइत से कतरो सँ मुकादम नहि । इएह कारण थिक जे मैथिलीक साहित्यकारक लेल देश मिथिला नहि, भारत भ जाइछ कारण मिथिला के देश लिखनाइ से हुनको संकीर्णताक बीच होइत छनि, राष्ट्रदोहक गंध लगेत छनि । ओना हमरा हुमेल अछि जे 'आमार सोनार बाङ्ला' (भारत नहि) लिखि रबीन्द्रनाथ कवि गुरु आ विध काँच बनि गेलाह । इए कारण थिक जे मैथिलीक साहित्यकार जखन कलम पकड़ै छथि त संवर्धनम कोठाक भाषणक अभ्यास करैत छथि पञ्च जखन ओहठाम कोनो पुछारि वा मोजर नहि होइत छनि अथवा क्षतिया के दूर क देल जाइत छथि-तखन एतने मित्रा सुभाष खाण जकाँ मैथिली मे लिखनाइ प्रारम्भ करैत छथि । जे एकाध मोटे के कोठावालीकरण मे स्थान भेटियाँ जाइत छनि-त ओहो धारी वाली के के तहि उठाक सकारक चरमिल

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धास
डाहि-जाड़ि पुछुह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

मिथिला राज्य कहिया धरि !

मिथिला राज्यक गप होइत अछि । अखिल भारतीय राजनैतिक दलक सदस्य जेह गप जखन आत्म विस्मरणक अभाव मे छथि, बरस मिथिला आ मिथिलांचलक कहल जाइत अछि, तें मिथिला राज्यक स्थान बात करब राष्ट्रद्रोह चूमल जाइत छैक । तें पर ओकरा मिथिलांचल कहल जाइत अछि । जेह गप जखन कोनो नेता बजैत छथि, तें हुनक निराशा सूचित होइत अछि । जखन कवनो एहन नेता बंढित होइत छथि तें निराशा मे मिथिला राज्य आ मिथिलांचलक गप करैत छथि । कोनो साधक कार्य-क्रम आ उद्देश्य-कड को एहेन गप नहि करैत छथि । निराशा या कु ठाक पीड़ा मे मनोविकासक अवस्थामे एहेन जखन करैत छथि ।

इ गप जखन कोनो सांस्कृतिक संस्था करैत अछि, तें ओकरा नवसिमे भीत-नाद रहैत छैक, बंदा-चिट्ठा रहैत छैक । कोनो कार्यक्रम वा नीति नहि रहैत छैक । मिथिलांचलक जकाँ जखन मैथिलीक धातो लेखक करैत छथि, तें ओ हमेशा कोनो चेवी चमत्कारक आशा करैत छथि जे आकाश सँ कोनो अन्तार उतरताइ आ लानि गे हुबल मिथिला या मैथिली के उग्ररि लैत ।

एहि समयक छोट-बूझ नेता कानो मा मैथिलीक निमित्त किछु करैत छथि आ पही दुन साक लोक झार, बिहारक जखल मैथिली समर्थक । भीता-बहल जाइछ जे कोनो चालीक शरण से गने बेसी नाम यहा होइत छैक आ भेट नहोत छैक । सस जे विकासक काम तें कतइक प्रयत्न सन इहो निराधार बुझि पड़ैत । जातिवादी विचारधारा अपन मैथिलीक संस्था दास मिथिलाक सीमा धर कर नेपाल, बंगाल, उड़ीसा सँ ओरमधुरि पहुँचि गेल । हुनका ने त कोनो कोठावालीक जेने अवधारणाक आश्रय धरता भेटैत । सीन्धु नदी बगल मे लिखि निस कवि बालक आ हुनका बगल उतरत । एहि पराम्भिक अवस्थाक श्रद्धा जेना हुनका मेले 'जहूँ जाँ भयक मनेत अछि' हमरा जनैत भेल छैक । लोक जखन वा चाफरी कोठे सेना देखत तहिण ए सिमर बात अछि जे लेखन सँ जखन लोक के समानि पाइ भेटैत छनि जे तबत हम चाफरी आ ओना अरुण ओइ इछ अथवा 'मनो' भात सस के लेखक आन वचनाक आकार नहिबने पड़ैत छैक आ ओही पर विचार सेना अछि ।

साथ अछि जे जखन नहिबने मैथिलीक साहित्यकारक निमित्त मान सम्मान, विभक्ति प्रतीक कोनो महत्त्व नहि रखैछ । जे एक अन्तर भात चा एक हुनका सँ सेना नाइइ होल छल, ओत छथि, देश-नाइक लेल मैथिली के इच्छा बढा देब छथि । आ तें मैथिलीक महान नेता साहित्यकारक उपरिभाव से स्वसम्मति सँ पलायन पातिभ मे जाइछ जे मैथिली कोनो स्वतंत्र भाषा नहि अपितु कोठाक भाषाएन अंग थिक आ जे एकरा साहित्य अकादमी सँ निष्कासित क देल जाय । तें मैथिलीक कोनो महाकवि मैथिलीक प्रतिनिधित्व करैक लेल आरामत रहितहुँ कोठाक भाषा मे भोजन मुखर कर लेल आपन लौढ़ छथि । तें कोनो मैथिलीक महाकवि दूटा आत्मी छोटक भूमकीपर मैथिलीक मम स कोठाक भाषा कोणएल लगैत छथि । तें कोनो महाकवि अपन मैथिलीक मम स कोठाक भाषा कोणएल लगैत छथि । तें कोनो महाकवि अपन सावुभाषा कोठाक भाषा थिक अपनहि पाटि लेत छथि, तें कोनो मैथिलीक महाकवि अपन सावुभाषा कोठाक भाषा लिखैत छथि । एहि सन्दर्भ मे 'मिथिल पत्रिक'क अभीष्ट संक के प्रकाशित श्री भद्रीप मैथिलीपुस्तक विमर्श आ 'दिलकुल'क एहि संक मे श्री वसन्तक 'प्रसंगवत' विशेष उल्लेखनीय अछि । संस्करण बात जे एहि किन्तु पर आदि के अति रसमरावादी संक के अति उपवारी-मार्क्सवादी कर्मोद्दिगार साहित्यकार मे कोनो प्राथम्य नहि । तें ओ आइतय नहि जे स्वर्ण मंदिर, मे सनाक प्रवेशक विरोध मे बहराएल सिक्क कुदत मे जे कहर मार्क्सवादी रस भाग लेत अछि उएह मैथिलीक नाम पर लोक चिन्तुइए । ओकरा लेल समीच आन्दोलन प्रगतिशील आ मातृभाषाक भाषाक मान्यताक आन्दोलन वृद्ध आ आन्दोलन हुमाइत छैक ।

एहिठाम ई कहि देन आवश्यक जे जाहि मैथिलीक साहित्यकारक हम लख कबहुँ न तकर अवधारो अवलै छथि-परच अपवाद त अपवाद थिक । ओना हमरा सत ऐहल लोक एही आशा मे जीवि रहल-ए जे आइ ते कछि इएह अपवाद नियमक रूप लेन आ जखने मिथिला-मैथिली अपन समस्त स्वाधीनता अधिकार भात के सनत ।

— अग्रदूत

प्रसंगवशा

— घनचक्र

मात्र अमरा समक भारो टा मे नहि, अपितु संपूर्ण विषय मे जतन-जतन शासनक लेख जनताधिक पद्धति के स्वीकार कएल गेलक अछि, ओतड दृष्टि स्तर पर दू टा चीज समान रूपेँ परिलक्षित होइत छैक — जनता द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रकारक 'मांग' आर सरकार द्वारा निर्धारित रूपेँ देल गेल किस्मिन् किस्मिन् आश्वासन । परिणामक दुखना कएला पर कतहु कम-बेश नते मऽ सकैछ मुदा 'मांग'क 'स्तर' आ सरकारी 'आश्वासन'क 'पद्धति' मे सबसँ समानता भेटैत । अस्वाक मांग पर सरकारी आश्वासनक समीक्षण केँ हल कवा मे लागल, प्रशासन-तंत्र संस्थाँ व्यस्त देखवा मे आबोल मुदा समीक्षणक दूर पक्ष मे मात्र सखीक दृष्टि टा होइत देखल गेलैक अछि, आर किछु नहि । ई 'मांग' आर 'आश्वासन'क चोरान-उकड़ी कोनो नव रसु बा घटना नहि छियैक जस साबिके सँ चल आबि रहैक अछि परन्तु एहि मे एकटा बात तथ्यपरक छैक ओ ई के अपराधज / असमर्थक मांगक लेख देख गेल आश्वासनक निशाना केँ उत्तरि अर्धत छैक आर तखन ओकरा केँ किछु प्राप्ति मऽ जाउक (जुबुक काड़ा खरपर) ओ ओहि मे त्रुटिक अनुभव कऽ लगैत छैक वा दुस्कारि देल गेल पर अपन नांगरि सटका सघरि जाइत छैक मुदा समय एवं सक्षमक औचित्यपूर्ण मांगक निमित्त देख गेल आश्वासनक अवहेलनाक फलस्वरूप स्थिति विस्फोटक रूप धारण करै छैक — जेकरा दुस्तेज मे स्फूर्तता प्राप्त मऽ जाइत छैक, ई एकटा ऐतिहासिक तथा श्रम जनक नकारक नहि जा सकैत अछि । ओना एहि तरंग केँ सेहो अन्वीकार नहि गेल जा सकैछ जे अपराधज / असमर्थक समुदाय मांग नोजायजे होइत छैक वा ओकर कोनो औचित्य नहि रहैत छैक वरत सरकार एवं प्रशासन-तंत्र अपराधज / असमर्थ लोक समक चरित्र केँ जीवित रहैत छैक तेँ ओकरा समक जायजो मांग केँ लटका देल छैक — ओकर निमित्त देल गेल आश्वासन पर ध्यान नहि देल छैक — ने कहियो ध्यान देलक आने देतैक ।

उपरोक परिकल्प मे जे हम सम अनन-अपन स्थितिक पर्यवेक्षण करी त परल हेतु ई निर्णय करवाक लेल प्रायः समक समक जाय-पहुत जे बहुत हम सम कोन गोल सँ सम्बन्धित छी ? अर्थात् आगत / आगिजक गोल सँ वा समय / सक्षमक गोल सँ ? ओना हमरा जनत मैथिल तँ अन्तर्गत / अपराधज मध्ये नहि सकैत अछि ? ? ? ? आ जे हम सब दोसर गोल सँ सम्बन्धित छी अर्थात् अपना केँ तक्षम / समय-बुद्धि त छी तँ मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक लेल न्यायोचित एवं औचित्यपूर्ण मांगक एहन उपेक्षा किएक मऽ रहल अछि ? हम सम अस्वाभाविक रूपेँ जा रहल छी ? ? ? ? एहि तथ्यक अवचेष्टणक लेल हमरा सम केँ सम सँ पहिने अपन-अपन आत्म निरीक्षण (Self Introspection) कऽ पड़ैत पड़ैत अपन मांगक औचित्यक विवेक्षण

कऽ पड़ैत आर विफलता अवफलताक कारण ताकऽ पड़ैत ।

एहि तथ्य केँ अस्वीकार नहि केँल जा सकैछ जे अपना केँ जागरूक भवनिहार मैथिल समाजक नजरे सँ पंचानने प्रतिशत मैथिल विद्वत् नहि मऽ सकैत छथि । अतएव, हुनका लोकनिक 'मांग' मे हुनका लोकनिक निहित स्वार्थ, हस्त-प्रचार आकांक्षा-एवं स्वयं केँ दोतरा पर आरोपित करवाक अतिरिक्त आर की मऽ सकैछ । हम अपने व्यक्तिगत अनुभवक आधार पर ई कहबाक साहस कऽ सकैत छी जे मिथिला-मैथिल आर मैथिलीक इहो स्तुदाय अछि जे दुबौटा छात्र कऽ जीवि रहल अछि — ई स्तुदाय मैथिल जनताक सम वर्ग मे विद्यमान अछि खाहे ओ हरेक स्तुदाय हो अमचीवी हो, जकारी पेशाक वर्ग हो, वणिजक सम्प्रदाय हो ; राजपुरुष वा राजनीतिज्ञ हो । जे निष्पक्ष भाँषे देखल जाय तेँ आशुकि मैथिल समाजक स्वरूप खबधा परिचित देखवा मे आबोलत जे पूर्णतया सुविभाज्य नदी एवं अवसरवादी मऽ गेलैक अछि, जकारा अपना पर विचार नहि छैक जकारा अपन माटि-पानि ; अपन संस्कृति, अपन भाषा आर धर्म-भालक प्रति स्नेह नहि रहि गेलैक ममत्वक बाते कोन । राम-धर मेँ लऽऽ महाभाग 'परि छिड़िआएल मैथिल समाज केँ ई महापारी दृष्टि स्तर पर प्रसित कएने छैक आ सँ समय रहैत एहि रोगक उपचार नहि केँल गेलैक तेँ एकर परिणाम भीषण मऽ सकैछ । राम-धर नौआ-जहान आउ, कतहु एहि बातक आभास नहि भेटैत जे मिथिलक लेख सेहो कोनो समस्या छैक । खतिहार राम कृष्ण काश मे लीन ; मथाम धर्मीय समाज मामिख-भोकरमा मे बागल ; जकारी पेशा महासभा (असने मे अस्वस्थ) वृत्तिक व्यापारी समाजक लेल नोच-तेलक भाँष मे उत्तार-जहावक अतिरिक्त कोनो समाज ने छैक जे विकास-छात्र केँ सरकारी आशंक प्राप्त / उल्लंघन मे लागल अस्ता भाषा मे बातो कवाक लेख सकत नालवेत नहि । ओ हऽ भय अछि मिथिलाक क्षीयण समाज जे परलते धरि मैथिली आ मिथिबाक लोक कबा केँ जिओने अछि । सीते मिथिला नोआ आक कतहु कोनो समस्याक चर्चा नहि भेटैत मुदा तेनो मैथिलीक जे पंच-पञ्चिका अछि ओहि समय सँ जत होइछ जे 'समस्या' मिथिलाक पर्यायवाची शब्द बनि गेलैक अछि । अन्यान्य भाषाक पंच-पञ्चिका सम मे सेहो यदा-कदा एहि तरहक समाचार पढ़वाक लेल भेटि सकैछ । परन्तु उठैछ जे मिथिलक लेल अखन कोनो प्रकारक समस्या नहि, मैथिलक लेल जनत हकर कोनो औचित्य नहि अपन माटि-पानि सँ जखन ककरो नहि अपन मातृभाषा सँ जखन ककरो अउरतो नहि त ई समस्याक प्रति बिशाला भाव की ? ई जिशासु लोकनि केँ ? ? ? ? हिमाल लोकनि केँ चीख अवश्यक नहि अनिवार्य सुस्तवाक चाही ।

हमर कहवाक आशय ई कथमपरि नहि जे हमरा समक समक कोनो प्रकारक समस्या नहि अछि । पर सँ बाहर 'परि विभिन्न प्रकारक समस्या सब सुरक्षित चर्चा मुँह कोनो शब्द अछि । भारत सन अर्ध विकसित देश

मे समस्या आर अभाव नहि रहैतक तेँ आर कतऽ रहैतक — आ कतऽ धरि मिथिलक प्रश्न अछि ओतड समस्या आर अभाव नहि रहवाक तेँ प्रश्न नहि रहैत छैक परन्तु प्रश्न उठैत अछि जे की वस्तुता मैथिल सम्प्रदाय केँ अपन समस्या आर अभावक पूरा ज्ञान छैक ? की मिथिलक जनता केँ ई बात ज्ञान छैक जे ओकरा समक सब सँ पैघ समस्या की छियैक ? कोन प्रकारक अभाव ओकरा समक जीवन मे व्यस्त छैक बाहि लेख सरकारक समक्ष 'मांग' राखल जा सकैछ ? अभाव आर समस्याक सने स्पष्ट रहैत छैक 'मांग' (Demand) जकारा स्तुति ज्ञान भाग भवनिहार केँ उदैत छैक जे ओकरा समक हक मऽ अपन हल नायक चुनवाक छैक प्रेरित करैत छैक । आर दल-नायक ओहि अभाव-अस्त, सम्प्रदायक समाज केँ शिक्षा मोध देत छैक — सुद-निमित्त निर्धारण करैत छैक । सरकारक समक्ष क्रमबद्ध रूपेँ 'मांग' रखैत छैक जे व्यक्तिपरक नहि मऽ सम्भावित समाधिषक कल्याणक निमित्त होइत छैक । आर एहन मांगक अवहेलना कएला पर सरकारक कतहु भिडखालक स मना कऽ पड़ैत छैक तेँ कतहु सलज गाक । एहि परिस्थिति मे ज अपन मिथिला क्षेत्रक 'मांग' पर विचार करी त देखबा मे आबोलत जे मिथिलक जन स्तुदाय नै अपन 'अभाव' आर समस्याक समुचित जानकारी नहि छैक, उचित ज्ञान नहि छैक अर्थात् जे अभावक अछि ओकरा एहि बातक ओनो चिन्ता नहि छैक जे ओ अभावक अछि वरत एहि प्रकारक अभावक अस्तता आर समस्याक ओ आशुनि निर्णयित मांग नै मऽ अछि । मिथिलक मुख्य जनता केँ अपन अभाव आर समस्याक प्रति कोनो प्रकारक चिन्ता नहि छैक आर ओकरा एहि असमर्थता (Helplessness) केँ अपन स्वायत्ताश्रय आधार बना रहल छैक किछु गतल-पुँअल राजनीतिज्ञ, राजपुरुष, किछु मध्यमवर्गीय तथा अशिक्षित, जागरूक लोक मित्र साहित्य सेवी आर बिद्वत् (एहि प्रकारक नलता-सुगंधी लोक, किछु स्नाथी तल द्वारा कान्तिक गारा सेवत देल जाय रहैत अछि मुदा ओ कतहु जर नहि पकड़ि सकैक अछि ओनो पकड़ैक, कासा, अधिकांश मैथिल केँ एहि स्नाथी तल समक दुरित-प्रिय ज्ञान मऽ गेलैक अछि, किछु क्रौटिक वा एव किछु साहित्यकारक नेतृत्वा पर ओ सुगन्धायल अछि । तेँ मिथिला केँ एकटा पुष्पक सख भनैवाक सुगमरीचिका देला-ओल बाउक वा मैथिली केँ बिहारक द्वितीय पञ्च-भाषा ननेवाक आन्दोलनक आह्वान कएल जाउक वा मिथिला केँ औद्योगिक परिवर्तन दिएवाक लेल कान्तिक किणुल कबा-ओल जाउक, मैथिल समाज ताबतधरि नहि जागत यावत धरि ओकरा ओकर 'समस्या' आ 'अभावक' ज्ञान नहि कराबाल जाइत छैक, एहि प्रकारक आन्दोलन सँ समबद्ध स्नाथी तल समक निष्कासित नहि कएल जाइत छैक । मुदा एहि समस्याक समाधान हेतु अतिरिक्त सल नहि । हमरा समक समक्ष सख पैघ समस्या अछि नेटलक — टपल नेटलक अभाव मे मिथिलक जन-मानवक भनौबल दृष्टि गेलैक अछि ओकर सौर्य आ सामर्थ्य छिड़िया गेलैक अछि — आत्मसम्पत्ता केँ टपल मनोचक केँ बोझाक छिड़ियावल सौर्य सँ पैघ हमरा समक एहि बातक जेसाह रगत राखल पड़ैत जे हमरा समक चुनवा

देशक आधुनिक परिवर्तन मे आर्थिक, राजनैतिक वा कोनो प्रकारक लक्ष्यक समाधान सरकार द्वारा साबित धरि नहि केँल जाइत छैक यावत धरि समस्या समक वगडित मऽ कमबद्ध रूपेँ सरकारक समक्ष नहि राखल जाइत छैक — सरकार पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ दबाव नहि देल जाइत छैक । आर प्रत्यक्ष अछि जे एहि सँ कायक निमित्त जनता केँ इच्छापूर्वक वा अनिच्छा सँ कोनो ने कोनो राजनीतिक दल पर निर्भर करि पड़ैत छैक कारण राजनीतिक दल हम एहि समक लेल प्रारगत संगठन कइल जाइत छैक — तक्षम होइत छैक । भारतीय राजनीति मे राजनैतिक दल समक छवि यद्यपि विह्वलित मऽ गेलैक अछि तथापि ई समय कार्य होकर समक मायसे मऽ रहैक अछि । तेँ हमरा समक अपन समुदायक प्रति देखल सरकारी आधुनिकताक प्रति लेल आइ तेँ काँहि, कोनो ने नाते रहल श्रम मे जायजे पड़ैत वा कोनो एहन राजनैतिक दलक संगठन करय पड़ैत जकारा लेल मिथिलक सौर्य मैथिलीक समस्या सवोपरि होइक । देशक प्रसिद्धित राजनैतिक पार्टी 'काम से' सँ कोनो प्रकारक आलोचनाक नय देत खाहे ओ इतिहासक क्रम सँ होति ना जगजीवनीक वा अन्य किनो केँ लोकदल — चौधरी चरण सिँहक वक्तव्यक नीति सँ आलोचन मऽ छयय रहैक अछि भारतीय जनता पार्टी अस्त विहारीजीक चरणपदक परिकल्पना कऽ रहैक अछि जनता पार्टी अपने संचुका ओम्हाएटि आ तत्परता मे फलदायक वाउक लेल प्रणायाम कऽ रहैक अछि तखन नीचल रामपंथी पार्टी सम से भावपूर्ण रामपंथी पार्टी (सी.पी.आई.) केँ वृणित चरित्र देखि लोक समक आर समस्याक विचार धारा सँ सेहो अनासक्ति उत्पन्न होमय लगलैक अछि तथापि दुःकर्य एहन जनपंथी पार्टी सम छैक जे निष्ठापूर्वक अपन कार्य कवाक प्रयास करैत छैक — जकारा जन समयत भेटैक तऽ किछु आशा ओकरा सँ कइल जा सकैछ । तेँ एहन विपक्षक परिस्थिति मे साक्षात्त भय जे हम सम कोनो एहन पार्टी विशेषक चुनवा कऽ की तथा ओकर संग दियैक त हमरा सम केँ बहुत किछु समस्या भेट सकैछ । मिथिलक जनमानस केँ मजबूती कऽ उदावऽ मे मिथिलक छत्र समुदाय केँ जगाव मे जे हमसब निष्ठापूर्वक कोनो निष्ठावान पार्टी केँ सहयोग करियैक त सकल कार्य आर जल्दी मऽ सकैत अछि मुदा ई सब कवा सँ पैघ हमरा समक एहि बातक जेसाह रगत राखल पड़ैत जे हमरा समक चुनवा

घनचक्र

करऽ पड़त आर विफलता अवपलताक कारण
ताकऽ पड़त ।

एहि तथ्य के अव्यक्तिगत नहि केवल जा सकैत जे अपना के जगत्वाक कहनिहार मैथिल समाजक नब्बे सँ पंचानव प्रतिशत मैथिल गिब नहि भऽ सकैत छथि । अतएव, हुनका लोकनिक 'मांग' मे हुनका लोकनिक निहित स्वाधः स्व-प्रचारक आकांक्षा-एवं स्वयं के दोषदा पर आरोपित करवाक अतिरिक्त आर की भऽ सकैत छ । हम अतः व्यक्तिगत अनुभवक आधार पर ई प्रस्तावक वादस कऽ सकैत छी जे मिथिला-मैथिल आर मैथिलीक इन्ह समुदाय अछि जे सुखीया ल्या कऽ जीवि रहल अछि — ई समुदाय मैथिल जनताक सभ वर्ग मे विद्यमान अछि बाहे ओ कुलक समुदाय हो श्रमजीवी हो, चाकरी पेशाक वर्ग हो वणिजक समुदाय हो ; राजपुस वा राजनीतिविद् हो । जे निष्पक्ष भाव देखल जाय तँ अखुन मैथिल समाजक स्वरूप संस्था परिवर्तित देखवा मे आओत जे पूर्णतया सुविधावादी एवं अवसरवादी भऽ गेलक अछि । जकरा अपना पर विश्वास नहि छैक जकरा अपन माटि-पानि ; अपन संस्कृति, अपन भाषा आर लुरि-भासक प्रति स्नेह नहि रहि गेलक ममत्वक बाते कोन । गांधीधर सँ लऽ कऽ महानगर धरि छिड़िआएल मैथिल समाज के ई महासारी इतल स्तर पर प्रस्थित कएने छैक आ जँ समय रहैत एहि रोगक उपचार नहि केवल गेलक तँ एकर परिणाम भीषण भऽ सकैछ । गांधीधर जे आन्दोलन आर कहनु एहि चातक आभास नहि देखत जे मिथिलाक लेल सेहो कोनो समस्या छैक । खेतिहार सभ कृषि कार्य मे लीन मध्यम वर्गीय समाजक पारिवारिक-मोकदमा मे बास्कर ; चाकरी पेशाक बलासम ; अंगरेज सँ अलमलत ; वणिज-आपासी समाजक लेल नोन-तेलक प्राव मे उदार-चढ़ावक अतिरिक्त कोनो पारोने नै छैक ; शिक्षक-छात्र के सरकारी आशिक प्राप्तन ; उल्लेखन मे लागल अथवा भाषा मे बढती करवाक लेल कसरो मल्लेत नहि । ओ तऽ चल्त अछि मिथिलाक हरीगंगा समाज जे एबनो प्रति मैथिली आ मिथिलाक लोक कला के जियने अछि । मैथिली मैथिली बोधा आर कहनु कोनो समस्या नच नहि मेला मुदा तयो मैथिलीक जे पत्र-पत्रिका अछि ओहि सभ सँ ज्ञात होइछ जे 'समस्या' मिथिलाक पर्यायवाची शब्द बनि गेलक अछि । अन्याय भाषाक पक्ष-पत्रिका सभ मे सेहो यदा-कदा एहि तरहक समाचार पढ़वाक लेल भेटि सकैछ । प्रश्न उठैछ जे मिथिलाक लेल जखन कोनो प्रकारक समस्या नहि, मैथिलक लेल जखन एकर कोनो औचित्य नहि कोनो अपन माटि-पानि सँ जखन कसरो मोहे नहि अपन मातृभाषा सँ जखन कसरो अरुणो नहि त ई समस्याक प्रति जिज्ञासा भाव की ? ई जिज्ञासु लोकनि के ? हिन्दीका लोकनि के चौगुन आवश्यक नहि अनिचाय सुझावक चाही ।

हमपर करबाक आवाय ई कथमपि नहि
जे हमरा समक समस कोनो प्रकारक समस्या
नहि अछि । गर सँ बाहर धरि विभिन्न
प्रकारक समस्या सब सुरक्षित अछि मुँह कोनै
राट अछि । मात सत अछि विकसित देश

मे समस्या और अभाव नहीं रहता है और
काऽ रहता - या काऽ धरि मिथिलक
प्रश्न अछि ओतऽ समस्या और अभाव नहीं
रहता है प्रश्न नहीं रहै छैक परंतु प्रश्न
उठैत अछि जे की चलता मैथिलसम्वदय
के अपन समस्या और अभावक पूरा जान
छैक ? की मिथिलक जता के ई बात जान
छैक जे ओकरा समक सब तँ पैघ समस्या की
छिछैक ? कोन प्रकारक अभाव ओकरा समक
जीवन में बास छैक जाहि लेल सरकारक
समक्ष 'मांग' राखल जा सकैत ? अभाव
आर समस्याक संगे तटल रहैत छैक 'मांग'
(Demand) जकर समुचित ज्ञान मांग
के निहार के रहैत छैक जे ओकरा समक एक

बुट भऽ अपन दल नायक चुनवाक लेख प्रेरित करैत छैक । आर दल-नायक ओहि अभाव-ग्रस्त, समस्याग्रस्त समाज केँ शिक्षा बोध देत छैक—सुद्ध-नितिक निर्धारण करैत छैक । सरकारक समक्ष क्रमबद्ध स्ले 'मार्ग' रखैत छैक जे व्यक्तिपरक नहि भऽ स्वभावतः समष्टिक कल्याणक निमित्त होइत छैक । आर एहन मार्गक अवहेलना कएला पर सरकारकेँ कतहुँ भिन्नवाक्यक स मना कऽ पड़ैत छैक तँ कतहुँ लाछइ गाक । एहि परियोजना मे ज अपन मिथिला-क्षेत्रक 'मार्ग' पर विचार करी त देखबा ने आओल जे मिथिलाक जन समुदाय केँ अपन 'अभाव' आर समस्याक समुचित जानकारी नहि छैक, उचित 'शान' नहि छैक, अर्थात् जे 'अभावग्रस्त' अछि ओकरा एहि बातक कोनो 'चिन्ता' नहि छैक जे ओ 'अभावग्रस्त' अछि वरन एहि प्रकारक अभावग्रस्तता आर समस्यादिक ओ 'अपन' नियति मानि नेने अछि । मिथिलाक मुख्य जनता केँ अपन 'अभाव' आर समस्याक प्रति कोनो प्रकारक चिन्ता नहि छैक आर ओकरा एहि अनुश्रवण (disregard) केँ अपन स्वायत्तजनक आधार बना रहल छैक किछु गन्त-रु'अल, राजनीतिज्ञ, राजपुत्र, किछु सम्प्रदायीय, तथा 'कथित' जागरूक लोक किछु साहित्य 'सेवी' आर किछु एहिप्रकार चलता-चुराई लोक । किछु स्वार्थी तत्व द्वारा कानूतिक तारा संसत देखजाय रहलैक अछि मुदा ओ कतहुँ जोर नहि पकड़ि रहलैक अछि आने पकड़लैक, फासा, अधिकार, मैथिल केँ एहि स्वार्थी तत्व समक्ष दुरभित्त-भित्त शान भऽ गेलैक अछि किछु नौद्विक ब्रा एव किछु साहित्यकारक नेतानी पर ओ सुगुहायल अछि । तँ मिथिला केँ एकटा पृथक राष्ट्रक जन्मक सुगमरीचिका देला ओल जाउक वा मैथिली केँ बिहारक द्वितीय राज-भाषा नैयाक, आन्दोलनक, आह्वान कएल जाउक वा । मिथिला केँ औद्योगिक परिवेश दिएवाक लेल कानूतिक विपुल बज्जीक जाउक, मैथिल समाज ताबयबि नहि जागत यावत् धरि ओकरा ओकर 'तमसा' आ 'अभाव'क शान नहि कराबल जाइत छैक, एहि प्रकारक आन्दोलन सँ समाजक स्वार्थी तत्व समक्ष निश्चितयित नहि कएल जाइत छैक । मुदा एहि समस्याक समाधान ह'ब ओतिक सरल नहि । हमरा समयक समक्ष तसत पैघ समस्या अछि नेतृत्वक—सफल नेतृत्वक अभाव, जे मिथिलाक जन-मानवक मनोबल दृष्टि गेलैक अछि ओकर सोच आ सामर्थ्य छिड़िया गेलैक अछि—आवासयता, छेक टाक मनोबल केँ बोझबाज, ... छिड़िआसल सौच्य आर सामर्थ्य केँ चोटि भऽ एकजित्त करवाक

मैथिली राज्य

लोक कोनों प्रसन्न कोनों बिला अथवा कोनों रसक विला लेख ने कहियो बाबल आने बाबल चाहैत अछि ।

पदेन त्वाणीय जनताक संगठन नहि भऽ सकैत अछि ।

एहेन छोटोबुर जतनाक बात प्रश्न आ दिल्लीक छोटका नेता सम क्रिष्ण कुनेत छथि ? ओ अपन निरीक्षन-क्षेत्र केँ हाउ' बुनैत छथि । बिना काज क्यने ओ सुनाव नीतड चाहैत छथि । दस-बीसटा मोटक ठीकदार केँ ओ मिला कऽ राखऽ चाहैत छथि जे हुनक क्षेत्र मे जपकार करैत रहैत ।

हमरा ओहि ठामक नेता लोकनि मिथिलाक नेता बनियो मे सकैत छथि । ओ अपन निर्वाचन क्षेत्रक नेता छथि आ ओकरे नेता बनऽ रहल चाहैत छथि ।

अपना ओहि ठामक नेता लोकनि अपन सुनाव क्षेत्र टाके देवा राज्य, जिला-सरकार बुनैत छथि । ओतवे दूर ओ पक्की सड़क बिबली आ पुलक बात करैत छथि ।

जे चितरी-बस्तियारएक नेता छथि, ओ जनसमूहक बात नहि लोचैत छथि । जे पटौलक नेता छथि, से बाँझक बात नहि लोचैत छथि ।

बालगीत

करिया मुम्मरि खेलै छी
होल पटापट मारे छी
लोख पटापट मारे छी
गुणिस गेरा जे मचकस के
तकरे मारे जारे छी ॥

एके धरती समतरि बहिन
बाटल कहाँ अकास छइ
एके चान सुरज छइ तहिन
एके गृहे वसात छइ
मेद-भाव के बात करै जे
तकरे मारे-जारे छी ॥

इषा-द्वेष हटाबै छी
घृणा-विमोद मेटाबै छी
बुद्धि-विवेक दीप लेसि हम
प्रेमक ज्योति पसारै छी ॥

—राम लोचन ठाकुर

मैथिली पोथी आ पत्रिका कीन् आ पढ़ू

	मूल्य
१. इतिहासहता रामलोचन ठाकुर	२/४ टाका
२. वेतालकथा—कुमारेश काश्यप	४ "
३. प्रतिध्वनि (अ०) रामलोचन ठाकुर	४ "
४. जादूगर रामलोचन ठाकुर	५ "
५. मैथिली लोककथा रामलोचन ठाकुर	५ "
६. अर्द्धनारीश्वर—मणिपद्म	२५ "
७. मुन्शी रघुनन्दन दास : व्यक्तित्व ओ कृतित्व (सकलन)	६ "
८. निष्फलक—जनादेन भा	३ "
९. सुभाएल कनकनी—महेन्द्र मलंगिया	३ "

अरुणोदय प्रकाशन सं भेंट सकैछ

अपना-अपना निर्वाचन क्षेत्रमे दही पर चीनी परसनिहार नेता मिथिलाचलक बात करैत छथि, तेँ छोट अछि जे ओ ठकैत छथि आ कोनो मनोविद्युति क कारणो बड़-बड़ा करै छथि ।

ई लोकनि एम० एल० ए० क मोट जीतवा लेल जनताक खुशामद करैत छथि, कधी बात लेल हिक्का लेल जनताक कोनो मोखर नहि अछि ।

मोट जीतव आ तकर बादक काज लेल ई लोकनि जगदम्बाक कुमा पर अवलम्बित छथि, योग-टोन आ भाग्य पर आश्रित छथि ।

जगऽ नेताक दृष्टि एतेक एकगामी हो तऽ मिथिलाचलक बात करव पाखब दुताइन अछि । तबतना मोटलाक एतेक बरक वादो मिथिलाचलक विकास नहि भेल अछि आ ने ताहि दिशामे कोनो प्रकारक दूर-सार देखवा मे अवैत अछि ।

एखन दिल्ली दूर अछि । बिना जामाण आ संगठन कयने ई दिल्ली पहिना दूर रहत ।

७/१०/८४

सेवा मे
प्रो० श्री नगेश्वर झा,
विद्या मन्त्री,
बिहार सरकार, पटना ।

महाराज,
अपने के श्रोते होएत जे प्राथमिक तार
धरि मातृभाषाक माध्यम सं शिक्षाक अधि-
कार संविधान स्वीकृत छैक आ ई अधिकार
भारतीय नागरिकक मौलिक अधिकारक
अन्तर्गत अवैत छैक । सेहक बात जे तैतल
कस देवा स्वाधीन मेलाक उपरान्तो बिहार
सरकारक मैथिली विरोधी नीतिक कारणे
मैथिली भाषी छात्र अपन एहि प्रमुख आ
पवित्र अधिकार सँ चर्चित राखल गेछ अछि ।

एकरा कागजी मान्यता भनहि देखेल होइक
परख वास्तविकता इएह छैक जे मात्र पहिल
आ दोसर वर्गक पोथी मैथिली मे उपलब्ध
छैक दोसर वर्ग धरि मैथिली आ तेकर वर्ग
सँ हिन्दीक माध्यमे पढ़नाइ जे कतेक अछु-
विधजनक ओ अस्वाभाविक छैक से कह-
नाक प्रयोजन नहि । स्वभावता कोनो नेता
आ तेकर अधिमावक मैथिली माध्यम केँ
नहि चुनैत अछि । तेँ आवश्यक छैक जे
अनतिथिलेखन वर्ग आठ धरिक समस्त वि-
द्वक, पोथी मैथिली मे उपलब्ध कराओल
जाइक । संयोगसमे मैथिली भाषी छात्र
मिथिलाचलक प्रतिनिधि छी तथा ई विभागो
अहाँक अधीन अछि तेँ नियन्त्रित जे शीघ्र
लेखा-जोखा

एक परिवारक सभ बच्चा एके रंग नहि
होइत छैक । बंगालगत कोनो जीव होइत
छैक से हम नहि मानैत छी आ तेँ तस्कार
तन वायवीय भावना मे हमरा कहियो
विश्वास भेल ।

हजर माइ-बुआ, हम कबूल करैत छी
जे हमर ज्ञान वा बातकारीक परीक्ष नइ
छोट अछि, तेँ जे अतीन्द्रिय छैक, तकरा
सम्बन्ध मे हमर कोनो बोलख नहि । शालक
अथाह साराक असंख्य खरि छैक । के
नते जानि सञ्चालक तकरे प्रता कतेक के
छैक ? खासी एक बातक प्रता अछि हमरा
कि हमर बाल मनष जे प्रका अविकल भेल
छल से आइयो अनुसन्ति अछि । हमर

पहिल खाना शाप प्रका अहिवा छल
भोजन सँग छल केने छलथि । गौतम
इन्द्र केँ शाप देने छलथि से तेँ हुमरा नाग
होइछ परख अहिवा निरराध होइवहुँ
शाप प्रका भेलह एत किछक सह-ज
ई खलनामनी व्यवसाय आखक देने नाहि
सुगो सं पहिना होइत एले-फ । जे शोषित
अइ तेकर आस शोषण होइत छैक । ज
शासक अइ ओ हुनक चलेवै आ आकर
प्रतिद्वन्द्वी ओकर दमनक अभियान । किन्तु
निरपराध अहिवा, शासक पक्ष आ विपक्षक
दुखकक बीच निरन्तर प्रसार होइछ । कि
अहाँ के पलत नहि बुकि पड़ैछ, हजर माइ-
बाप

कह लोचन कविराय

माइक, हथा करैत अछि, कठ नोकि कए पुत
श्राद्ध करए पुनि वैदिकी, कनियों नहि अजगुत
कनियों नहि अजगुत करए पुनि भोज जवारी
मुंह देखि केँ दान, करैत छि लोटा-थारी
कह लोचन कविराय मिलक्षण बुद्धि जपाइक
पाचक भेल मधाइ, समल कर्जा माइक

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

शिक्षा मंत्रीक नाम पत्र

एकर व्यवस्था कराओल जाय । एहि उद्देश
मे हम अपने केँ इमरण दिआबस चाहैत छी
जे तन्मय १९८० मे जखन हमरा लोकनि
पटना मे अपनेक निवासस्थान पर अपने सं-
भेंट केने रहै त अपने अंजन अनुमयता
देखओने रही परख से असमर्थता त आइ
नहिने अछि, बल एहि विभागक अपने
सकैतवाँ छी ।

शासक जे एहि उद्देश मे हम राख्यति
नै सेहो पत्र लिखने छलथि । विधानक
साम संशोधन (१९८६) द्वारा प्रदत्त
विशेष अधिकारक अन्तर्गत बिहार सरकार
केँ निर्देश देवाक आग्रह केने छलथि ।

जेना कि हमरा आप संख्या—१९०/रा०
दिनांक २२ जुल ८४ द्वारा सूचित करल
गेछ । उचित आग्रह हेतु राख्यति सवि-
वालय बिहार सरकार केँ लिखि चुकल छैक
(पत्र संख्या—३६५-पी १९९१/८४
दिनांक २४-१-८४) ।

आशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

अशा अछि जे अपने मया विम एहि
सन्दर्भ मे उचित कार्य क बाटि नीति कोटि
मैथिली भाषीक दीव आकांक्षक पूर्ति क
सकन ।

रामायण

वर्ष—१ अंक—१ अक्टूबर, १९८२

सम्पादकीय

वालचन्द्र विजावड भाषा
दुहु नहि लगइ दुजग हासा
ओ पसेसर हर सिर सोरइ
ई गिहइ नाजर मन मोरइ
देसिल वयना सम जन मिट्ठा
ते तइसन जन्मओ अवइहा

विद्यापति

अइ स ई सय वल पूर्व, जवन कि भाषा चेतना नामक वस्तु कम सं कम भारत में नहि छल, ताइ समय मिथिलाक सन्तान कविपति विद्यापतिक ई घोषणा निश्चित हमरा लोकनिक लेल गर्वक विषय थिक। कहबाक प्रयोग नहि जे आगा चलि केँ सूर दुखी आदि विभिन्न कवि केँ अपन भाषा में काव्य रचनाक प्रेरणा एतहि सं प्राप्त भेलनि। विद्यापति जाइ इदता आ विद्वता आ विद्वत्ताक संग ई घोषणा केलनि, तहिना एकर पालन सेहो आ तकरे परिणाम भेल जे मिथिलाक भाषा-साहित्य चन्द्रमाक अलोकनि जकाँ देश-कालक सीमाक अतिक्रमण करावे में सफल भेल, मैथिली में काव्य रचना परम्परा नेपाल सं आसाम धरि आ उड़ीसा सं बंगाल धरि बनि गेल, बार शेष कड़ीक रूप में बीसम शताब्दीक बंगालक, 'मानुषिदेव पदावली' थिक।

ई जनकवि विद्यापतिक जनवादी चेतनाक परिणाम छल जे जनगणक कथा व्यापक चर्चा साहित्य में भेल, जनभाषा साहित्यिक भाषाक गणिमा प्राप्त केरक। इहए कारण छल जे विद्यापति जनगणक कंठहार बनि गेलाह, हुनक रचना मात्र हमधार्मिक सांस्कृतिक नहि देनदिन जीवनक अंग बनि गेल। ई विद्यापतिक लेखनी शक्ति फल छल जे 'बहुलोल'क सैनिक शक्ति केँ परास्त केलक आ मिथिलाक स्वाधीनताक रक्षा केरक। तें विद्यापति मैथिलीक पर्याय बनि गेल छथि।

खेदक विषय जे आइ पुनः मिथिलाक माथ पर दुर्दिनक मेघ मरझा रहलए। मैथिली तर राहुप्रस्त भेल छथि। मैथिल सन्तान अवचेतनाबद्धा में पड़ल अइ, साहित्यकार अखाद केँ छोड़ि (श्वातृत्ति में लगल छथि आ शिवसिंहक स्थान पर कतेको 'बहुलोल' जनमि गेलए। एहना अवस्था में खगता अइ एक नलि अनेको विद्यापतिक जे नवचेतनाक शूल फूँकि सकथि, भौकीक आराधना क पुष्पक निर्माण क सकथि, बहुलोलक लोल दायि मैथिली केँ राहुमुक्त क सकथि आ आकाश केँ मेयमुक्त क नव आशोक पवारि सकथि। 'देसिल वयना' हुनकेँ स्वागतार्थ प्रतीक्षारत अइ।

शक्ति-पूजा

भगवती दुर्गा शक्ति प्रतीक छथि। भागुरी शक्ति मनुष्यक विनाश आ देवी शक्ति गृहस्थिक प्रतिष्ठाक निमित्तहि हिनक प्रादुर्भाव भेल छल। ई अमन कर्म में सकली-सूत भेल छलीह आ तें युगों सं हमरा लोकनि उत्तम मनुष्यक आवि रहल छी। शक्ति स्वरूपा भगवतीक पूजाचना करैत आवि रहल छी।

भगवती दुर्गा मातृरूपा छथि। मारक रूप में हिनक पूजा-ध्यान हमरा लोकनि करैत आवि रहल छी। माँ अमन नेनो केँ सिनेह करैत छैक, शक्ति-सदबुद्ध प्रदान करैत छैक, हमरो लोकनि तकर आकांक्षा खेलैत छी।

आब प्रश्न उठैए जेकि हमरा लोकनि एहि पूजाक अधिकारी छी? पूजाक निमित्त जे पवित्रता, इदता, सत्य-नष्ठा आ समर्पणक भावना आवश्यक—से हमरा लोकनि में अइ? रामायणक अनुसार मैथिली केँ रावण अपहरण क केँ ल गेल छल। मर्यादा पुरुषोत्तम राम प्रण ठनलनि जे एहि काजक निमित्त रावण केँ उचित शिक्षा द क ओ मैथिली केँ आपस अनतइ। रामायणक कथा संग महाकवि निराशक 'राम की शक्ति पूजा' बला कथा जोड़ि दी त आर नीक होएत। तदनुसार राम अपन प्रण केँ पूरा कर-बाक निमित्त शक्ति पूजा केलनि, पूजाक समय हुनक फुलझाली सं एगो फूल त्रिपत्ता भ गेल, जकर अर्थ भेल पूजा गंगा मोनाई वा अपूर्ण रहि गेनाइ। रामचन्द्र कजिनो विच-रित नहि भेलाह, ओ नहि बिसरल जे ओ कमलोज छथि आ तें दुरंत अपन आँखि

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
हाहि-जारि सुझाह करव-हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

—रामलोचन ठाकुर

बाढ़ि : अइ नदिया केँ गैह बेबहार

मिथिला में एक बड़ प्रचलित कहवी छैक जे 'देवो दुवल घातक'। कारण मिथिला एकर युक्तमोगी अछि। बेर बेरक प्राकृतिक विपर्यय एकर रीढ़ कमजोर कऽ देने छैक। भाग्यवादी मिथिला आर बेसी भाग्यवादी बनल जा रहल अछि। एहि वर्ष पड़ने रौदीक प्रकोप छलैक आ समस्त मिथिला धू धू कऽ जरि रहल छल। खेत सबमे लहलहाइत बीया-चाँलि-जरि गेलैक। घर खाली आ बाहर साफ। जवन वर्षा होमय लगलैक तऽ लोकन मन में एक बल्लास एलैक आ ओसव अपन सम्पूर्ण शक्ति सं चास-वास में लागि गेल छल। ठीक एहने समय में बाढ़ि एलैक आ लोक बाढ़ि जहि करय लागल, ओकरा सामने रौजी-रोटीक समस्या चकमाउर देमय लगलक।

मिथिलाक भरिसकेँ कोनो एहन अंचल हेटैक बाढ़िआम नदी नहि होइक। एहि देशक प्रायः समस्त आमांचल नदीक परि-सर में चबल अछि। ओना तऽ नदी प्राकृतिक समस्या थिक आ खास कऽ ओहि देशक हेतु बाढ़िआम लोकजीवन कृषि पर आधारित होइक ताढ़िआम एकर आर बेसी उपयोगिता आ महत्ता छैक। परंच इहो तहिना सत्य जे सम्पत्तिक संगे विपत्ति सेहो रहैत आयल अछि। सम्पत्तिक सुरक्षा आ उचित उपयोग नहि पअने विपत्ति केँ टारल नहि जा सकैछ। वर्षाकाल में ई नदी सब भरि जाइत छैक आ उच्छ्रय लागैत छैक आ संगहि ताण्डवृत्य करय लागैत छैक। ई दृश्य मिथिला वासीक हेतु केहन विनाशकारी भऽ जाइत छैक तकर प्रत्यक्षरूप एहन बहुतो ठाम भेटि अछि।

मिथिलाक पैघ पैघ नदी में गंगा, कोशी, कमला, बलान, गंडक, करैह, बागमती आदि अछि। बाढ़ि में एहि नदी सबहक भूमिका रहैत छैक वाच वोन में लागल-जगात केँ इबाधन, गाम-धर केँ

कनिओ विचलित नहि भेलाह, ओ नहि बिसरलाह जे ओ कमल नेत्र छथि आ तें दुरंत अपन आँखि बहार कय भगवती पर शेष पुष्पक रूप में चढ़ैबाक हेतु उद्यत भेलाह। भगवती देखन प्रकट भेलथिन विजय पर प्रदान केलथिन।

आइ फेर मैथिली अशोक चायिका में चन्दिनी छथि आ हम चारि कोटि मैथिल सन्तान चुपचाप हाथ पर हाथ केने बैसल छी। कि हमरा लोकनि माइक दूध नहि पीने छी? कि हमरा लोकनिक देह में शोणित नहि? कि हमरा लोकनि बहिर छी जे बंगला देश, असम, दक्षिण अफ्रिका, फिजीलाहन वा आयरलैंडक गर्जन नहि सुनाह पड़ैए? आ कि हमरा लोकनि नपुंसक छी? आ बं से छी त की अधिकार अइ शक्ति पूजाक? आ ज से नहि छी त आउ—एहि पवित्र आ शुभ अवसर पर हमरा लोकनि अपन मातृ भाषाक उद्धारक शपथ ली तैलन शक्ति पूजाक सार्थकता आ उत्सवक सम्योगिता।

दहायन आ माल-जाल केँ भसियायव। कोशी एखनहुँ मिथिलाक लेल अभिघाप बनलै अछि। एहि बेरक बाढ़ि सं ओना तऽ समस्त मिथिला प्रभावित भेल अछि मुदा कटिहार, सहरवा, पूर्णिया, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर जिला सभ में बहुत अधिक एकर विभिन्नता रहलैक आ तें सबसँ अधिक क्षतिओ भेलैक अछि। एहि सं लाखों लोकक जान-मालक क्षति भेलैक अछि आ ओसव आश्रय विहीन भऽ गेल अछि—बीया-मुताक संग लोक नट जकाँ बाटे-घाटे वैया रहल अछि। अयाचीक सन्तान आइ पावभरि अन्न आ पाँच हाथ वस्त्रक लेल विकल भऽ रहल अछि। व्यावस्थाक तरफ सं जे अनुदान भेटि रहल छैक तकर कय कोन? ई तऽ ओतुका लोकक दाखण व्यथे गवाही दऽ रहल अछि जे ओकरा सचरक एहि अवस्त कष्ट केँ दूर करबा से ई अनुदान कतेक सहायक भऽ सकलैक अछि। अनुदानक विशेषांश अक-सरक कोष केँ निश्चित भरलैक अछि आ अलग्ग ओहि दुःखक समुद्र में छोटल गेलैक अछि।

बाढ़ि मिथिलाक लेल कोनो नव घटना नहि। नदी-मातृक देश मिथिला अदीए सं एकर कोपभावना रहल अछि आ तें एहिआमक लोक एहि सं अभ्यस्त भऽ गेल अछि। दोसर उपाइयो ने छैक? सरकारी अवहेलना आ मैथिल जातिक अवचेतना-दूर, एहि लेल समानरूप सं दावी। तें प्रतिवर्ष बाढ़िक ताण्डव लीला होइत छैक। प्रतिवर्ष लोक मरेत अछि, घर आंगन खेत छैक आ चास-वास भेत छैक आ एकरे पीठ पर अबैत छैक नाना रंगक रोग व्याधि। लोक मरेत अछि, घिसियोर कटेत अछि। कतय छैक ओकर एहि समस्याक निदान? समाधान केँ करैत? देश तऽ आबाद भेल मुदा इ इ वर्षक बाढो एहिआमक ई समस्या समझे बनल रहि गेलैक। कि एक? —जयदेव लाम

चि हा-इ जि पर चा बी मे हा-ए। कन-मके क्षमण आ शाक उठल इलनि पहिने ।।

कलकत्ताक रिकसा बाहक

कुछि मधान मिथिला देश मे अमक महत्ता आदिह काल सं बुझल गेल-ए आ मान बुझले टा नजि गेल-ए एकरा बड़ पैघ स्थान देल गेल-ए। ई गौरव मिथिले देश के टा छइ जे माथ पर राजकुट आ हाथ मे लगानि धेने कुनू राजा हरबाहि केने छथि। राजर्षि जनक के दृष्टान्त इतिहास मे अमतीम अइ। ते मिथिला जन धान्य सं भर-पुरल छउ। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नजि छउ, ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छल। इएह कारण छइ 'जे' एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छल, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल। के नजि जने-ए जे भारतीय इ गोट दर्शन मे चारि गोट एही भूमिक देन थिक। पश्चात आनि के स्थिति बदलि गेलक। लोक अम के अबलाह नजरि देखय लागल आ अमक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक ओकक रूप मे बुझल जाय लागल। अमविभाजनक आधार पर बनल समाज व्यवस्थाक स्वस्थ-सबल देह मे जे नरक गान्धी लागि गेले। प्रहाक कथन जे 'गुण आकर्मक आधार पर' हम चारि वर्णक सिद्धान्त कहल ए' बिहरा देल गेल आ तकरा स्थान पर ब्रह्मम मुह सं ब्राह्मण आ बौद्ध सं राजपूत आदि जनजाक कथा के मटि देल गेल राजर्षि जनकक हर जोत-बाक काज के नून लेल लगल मिथक बना देल गेल। तथा कथित उंच वर्णक हेतु आब लागनि घेनाइ पाप भ गेले आ एही-ठाम सं मिथिलाक अद्योगतिक इतिहासक आरंभ होइए।

अम के हेय बुझनाइ तथा एहि सं विमुख भेनाइ विलासिता आ संयक प्रवृत्ति के जन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुनः शोषण प्रवृत्ति के जन्म देए। स्वभावतः अमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बँटि गेल—शोषक ओ शोषित। एक दिस शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लगलक त दोसर दिस शोषित अमिक वर्गक अभाव यातनाक बीच। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छइ आ जन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नग्न नृत्य प्रारंभ भेल।

एक दिस जनसंख्या वृद्धि आ दोसर दिस उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानु-दिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितहु ओह मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि कइल गेलक। कावे के करेत ? भूस्वामी अही भेल आ दिस-राति विलासिता मे डूबल रहल त दो उर दिस अमिक वर्ग शक्तिहीन छल। ताइ पर सं रौंदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लगलक। जीविकाक अन्यान्य साधन रहलक नजि। एहि यंत्रागुह मे मिथिला

मे कलकारखानाक विकास नजि भ सकल। एकरो कारण मैथिल जातिक अवचेतनता तथा वृणित राजनीति आ बंचक मिथिलाक राजनैतागण छथि। अजुक राजनीतिक पहिछ शर्त होइ छइ बनता के मुल बना-कए रखनाइ तथा अभाव मे रखनाइ, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक माया, ओकर सभ्यता-संस्कृति के नष्ट क देनाइ। राजनैतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिस अमिक वर्ग के दिन-राति खटलाक बादो पेटपरि अन्य आ देहपरि बल नजि उप-लब्ध भ प्रभोले। पेटक स्वाजा मे ओ स्वर्ग हु सं पैघ अवन बननी-बंमभूमि के, अपन भाइ-बहिन, भती आ नेना के परिजन-पुर्जन के तेजि शहर दिस पड़ाएल।

मिथिलाक अमिक भारतक कुनू शहर सं बेसी बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अइ। एहिठामक जूट मील हो वा गंजीमील वा छापाखाना सब ठाम मैथिल अमिकक बहुश्रुता छइ। भाका वाला, टेञ्जवला आ रिकसावला मे अहली प्रतिशत मैथिल अइ।

रिकसा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छइ पहिल त साइकिल रिकसा जे आनोटाम पाओल जाइए परंच दोसर तरहक रिकसा जे मात्र एही ठाम टा पाओल जाइए ओ थिक 'टाना-रिकसा'। 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली मेल लीचनाइ। एहि मे रिकसा चालक नहि रिकसा खिचनि-हार होइए। एकर आकृति एतनेन टमटम सन होइत छइ आ टमटमक घोड़ाक स्थान मे एहिठाम मनुख रहैए—मनुक सन्तान। घोड़ाक गरदन मे बँटी रहै छइ आ एकरा हाथ मे हथड़ा पर टन-टन मारेत गाड़ी आ बस सं बचेत ओकर संग दौड़त।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिकसा छइ आस्वभावतः एगारह हजार परिवारक दून-रोटी एही सं, चले छइ।

एहि रिकसा पर बेसत काल प्रायः अमना के अमानुष सोचबा लेल बाध्य भेल छी। चेसाखक टहाटही दुपहरिया मे बलन सुबब गोलाई आगि वोकरे छथि आ नीचा बाटक पीघ घमि जाइ छइ तबने खाली देह आ खाली पदरे दू-तीन आदमीक सवारी लय दौड़बा मे जे की परिश्रम होइ छइ तकर हमरा लोकनि कल्पनाओ ने क सकै छी। तहिना अखाद मे जलन सुसलावार बलों होइत रहै छइ वाट पर पानि नमि जाइ छइ आ खाबि-खुधिक पता नहि चले छइ, ओकड़-पाथर जागि जाइ छइ—जेहन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पाणरे चल्नी असंभव तेहना स्थिति मे सवारी लय दौड़नाइ क

परिश्रम आ खतराक अनुमान सहजहि कएल जा सकल। आ एहन जीतोड़ परि-श्रम केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छइ। एह मे दू टाका रिकसा मालिक के देस्य पड़े छइ। बाकी मे अमन खेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिआइए।

ओना त छ वै तक मे एगो रिकसा भेटि जाइ छइ, परञ्च सेहो बुता एकरा लोकनि के नहि रहै छइ जे अपन रिकसा कीनि सकल। दोसर बात जे खाली रिकसा कीनि लेजा सं त होइ नजि छइ। रस्ता बाटक जे स्थिति छइ ताइ मे सखिन किछु ने किछु मरम्मत लिगले रहै छइ आ ताइपर सं पुलिबक खर्च आप क छइ। तेहना स्थिति मे भाड़ा पर रिकसा खेनाइ छोड़ि दोसर उपाये की छइ। आते मालिक के द 'क' जे बचे छइ ताइ मे भरि पेट अन आ भरि देह बल सपनाए बनल रहि जाइ छइ। देया—मिथिलाक हजार-हजार अमिक, ओरिक सलहेस—अम सं विमुख नजि होइछ। ओ अमक महत्ता, मां बाप आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य के नीक जकां हुनेह। ते एक टा पांव रोटी आ एक कप चाइ पीवि दिनभरि रिकसा नेने घंटी बजवत दौड़त रहैए।

एमहर बंगाल सरकार बाट आमक वहवा क के विनु लाइसेंसक रिकसा के बन करवाक योजना बना रहलेह। कहवाक प्रयोजन नजि जे वास्तव मे जाइ टूक-टेम्पूक कारणे आ ट्राफिक पुलिसक वही ओखरीक कारणे बाट जाम होइ छइ ताइ पर सरकारक किछु चलि नजि सके छइ आ ते अपन 'पामार'क उपयोग एही अडगठित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अइ। एहि ठाम मात्र पांच हजार रिकसा के लाइसेंस छैक आ बाकी विनु लाइसेन्सक अइ।

मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आजुक युग मे सिनेमा के प्रचार वा लोक शिक्षाक सम त सहज आ कारणर माध्यम कहल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छैक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। बिहारक तीन गोट प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ महरगी एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि। ओना भोजपुरी मे कएकटा सिनेमा बनवो केलेक अछि आ नीक बकां चलैक अछि। मगही मे सेहो सप्पत खाय लेल सिनेमा बनल छैक परञ्च सब सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि। एमहर कएकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परञ्च आइबेर एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९७८ मे हमहू एहि क्षेत्र मे पदावर्ण कएल स्व० राजकमल चौधरीक अमर कथा 'ललका पाग'क संग। ई एगो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बजैत

अछि भारतीय नाराक आदर्श सीत प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि। एहि कथ वर्तमान समय मे बड़ बेसी आवश्यकता उपयोगिता छैक। ते हम एहि कथ चयन कएल।

सिनेमा संसार मे यद्यपि हमर मथ पदावर्ण छल परञ्च नाट्य-मंचक दीर्घ उ पर्यंत अनुभव तथा सिनेमा जगतक ख्यातिनामा कलाकर लोकनिक संग सहयोग हमरा प्राप्त छल। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे ज ई फिल्म बनि सकल त निश्चित टकर के होइत। प्रमाण मे एकर सीतसम जे रेकर्डिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिल्म मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छैक आ गीत रेकर्डिंगक अतिरिक्त कला-कार-चयन आ दृश्य चयनक काज सेहो शेष क लेल गेल छैक। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ न अर्थ लगभग सिनेमा शोषांश पृष्ठ ४ पर

कन्नकतक रिकसा बाहक

कृषि प्रधान मिथिला देश मे श्रमिक महत्ता आदि काल सं बुझल गेल-ए आ मात्र हुन्तले टम नजि गेल-ए एकरा बड़ पेव स्थान देउ गेल-ए । ई गौरव मिथिले देश केँ टा छह जे माथ पर राजहुकुट आ हाथ मे लागनि जेने कुनू राजा हरबाहि केने छथि । राजर्षि जनक केँ दृष्टान्त इतिहास मे अस्तीम अह । तेँ मिथिला धन धान्य सं भर-पूरल छह । अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नजि छह, ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छल । एएह कारण छह जे एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छह, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल । केँ नजि जेने-ए जे भारतीय ६ मोट दर्शन मे चारि गोट एही भूमिक देन थिक । पश्चात आवि केँ स्थिति बदलि गेलक । लोक श्रम केँ अबलाह नजरि देखय लागल आ श्रमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक चोकर रूप मे हुन्तल जाय लागल । श्रमविभाजनक आधार पर वनल समाज व्यवस्थाक स्वस्थ-सबल देह मे जर्जरक गान्धी लाँचि गेल । प्रहाक कयन जे 'गुण आकर्मक आधार पर' हम चारि वर्णक सिद्धान्त कएल-ए' बिसरा देल गेल आ तकरा स्थानपर ब्रह्मम मुँह सं जाफण आ बाहि सं राजपूत आदि वनबाक कथा केँ मटि देल गेल राजर्षि जनक हर जोत-नाक काज के तून तेल लगा मिथक बना देल गेल । तथा कथित उंच वर्णक हेतु आब लागनि घेनाह पाप भ गेले आ एही-ठाम सं मिथिलाक अद्योगतिक इतिहासक आरंभ होइए ।

श्रम केँ हेय बुकनाइ तथा एहि सं विमुख भेनाइ विलासिता आ संचयक प्रवृत्ति केँ जन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुनः शोषण प्रवृत्ति केँ जन्म दिए । स्वभावतः श्रमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल । समाज दू वर्ग मे बँटि गेल—शोषक ओ शोषित । एक दिव शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लगलक त दोसर दिव शोषित श्रमिक वर्गक अभाव यातनाक बीच । एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छह आ वन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नरन दृश्य प्रारंभ भेल ।

एक दिस जनसंख्या घुंछे आ दोसर दिस उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनामु-दिन अभाव ग्रस्त होइत गेल । खेती पर आधारित रहितहु ओइ मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि कएल गेलक । करये केँ करेत ? भूस्वामी अहरी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दी-उर दिस श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छल । ताइ पर सं रौंदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लगलक । जीविकाक अन्याय सावन रहलक नजि । एहि यंत्रायुगहु' मे मिथिला

मे कलकारखानाक विकास नजि भ सकल । एकरी कारण मैथिल जातिक अवचेतनता तथा वृणित राजनीति आ वंचक मिथिलाक राजनेतागण छथि । अजुक राजनीतिक परिष्ठ शर्त होइ छह जनता केँ मुर्ख बना-कए रखनाइ तथा अभाव मे रखनाइ, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक भाषा, ओकर सभ्यता-उन्नति केँ नष्ट क देनाइ । राजनैतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि । दोसर दिस श्रमिक वर्ग केँ दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि बस्त्र नजि उप-लब्ध भ पओलकै । पेटक स्वाजा मे ओ स्वर्ग हु' सं पेव अपन जननी-बन्धुमूर्ति केँ, अपन भाइ-बहिन, पत्नी आ नेना केँ परिवर्जन - पुरजन केँ तेजि शहर दिस पड़ाएल ।

मिथिलाक श्रमिक भारतक कुनू शहर सं वैसी, बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अह । एहिठामक बूट मील हो वा गंभीरील वा छपाखाना सब ठाम मैथिल श्रमिकक बहुलता छह । भोका वाला, टेजवला आ रिकसावला मे अखी प्रतिशत मैथिल अह ।

रिकसा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छह पहिच त साइकिल रिकसा जे अनोटाम पाओल जाइए परंच दोसर तरहक रिकसा जे मात्र एही ठाम टा पाओल जाइए ओ थिक 'टाना—रिकसा' । 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली भेल खीचनाइ । एहि मे रिकसा चालक नहि रिकसा खिचनि-हार होइए । एकर आकृति एनमेन टमटम सन होइत छह आ टमटमक घोड़ाक स्थान मे एहिठाम मनुख रहैए—मनुक सन्तान । बोझक गारदनि मे घंटी रहै छह आ एकरा हाथ मे हथड़ा पर टन-टन मारेत गाड़ी आ बस सं बचेत ओकर संग दौड़त ।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिकसा छह आस्वाभावतः एगारह हजार परिवारक तून-रोटी एही सं, बले छह ।

एहि रिकसा पर देसत काल प्रायः अपना केँ अमातुष सोचवा लेल बाध्य भेल छी । बेसाखक दहादही दुपहरिया मे जखन सुन्न गोसांइ आगि वोकरे छथि आ नीचा बाटक पीच घमि जाइ छह तखने खाली देह आ खाली पणरे दू-तीन आदमीक सवारी लय दौड़ना मे जे की परिश्रम होइ छह तकर हमरा लोकनि कल्पनाओ मे क सकैत छी । तहिना अखाड़ मे जखन सुलझार बलों होइत रहै छह बाट पर पानि जमि जाइ छह आ खाबि-खुधिक पता नहि चलै छह, अकिङ्क-पाथर जागि जाइ छह—जेहन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पाणरे चल्थी असंभव तेहना स्थिति मे सवारी लय दौड़नाइ क

परिश्रम आ खतराक अनुमान सहजहि कएल जा सकैछ । आ एहन जीतोड़ परि-श्रम कैलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छह । एह मे दू टाका रिकसा मालिक केँ हेमय पड़े छह । बाँकी मे अन्न खेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिआडर ।

ओना त छे तेक मे एगो रिकसा भेटि जाइ छह, परञ्च सेहो हुता एकरा लोकनि केँ नहि रहै छह जे अपन रिकसा कीनि सकल । दोसर बात जे खाली रिकसा कीनिते लेजा सं त होइ नजि छह । रस्ता बाटक जे स्थिति छह ताइ मे सदिखन किछु ने किछु मरमति लगले रहै छह आ ताइपर सं पुलिसक खर्च आप क छह । तेहना स्थिति मे भाड़ा पर रिकसा लेनाइ छोड़ि दोसर उपाये की छह ? आतेँ मालिक केँ द 'क' जे बचे छह ताइ मे भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र सपनाए बनल रहि जाइ छह । हेवा—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, लोरिक सहेस—श्रम सं विमुख नजि होइछ । ओ श्रमक महत्ता, माँ जान आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य केँ नीक जकाँ भुमेए । तेँ एक टा पाँच रोटी आ एक कप चाइ पीवि दिनभरि रिकसा नेने घंटी बजवैत दौड़ैत रहैए ।

एम्हर बंगाल सरकार बाट आमक बहला क केँ बिनु लाइसेंसक रिकसा केँ बसे करवाक योजना बना रहलेए । कइबाक प्रयोजन नजि जे वास्तव मे जाइ टुक-टेरपूक कारणे आ ट्रफिक पुलिसक बड़ी ओसूरीक कारणे बाट जाम होइ छह ताइ पर सरकारक किछु चलि नजि सके छह आ तेँ अपन 'पामार'क उपयोग एही अडगडित मजदूर वर्ग पर कार्य जा रहल अह । एहि ठाम मात्र पाँच हजार रिकसा केँ लाइसेंस छेक आ बाँकी बिनु लाइसेंसक अह ।

मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आजुक युग मे सिनेमा केँ पचार वा लोक शिक्षाक सभ सं सहज आ कारगर माध्यम कहल गेल अछि । परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छेक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो । बिहारक तीन गोटा प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ महगरी एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि । ओना भोजपुरी मे कएटा सिनेमा बनबो कैलक अछि आ नीक जकाँ चलैक अछि । मगही मे सेहो सपत खाय लेल सिनेमा बनल छलैक परञ्च सभ सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि । एम्हर कएटा सिनेमा निर्माणक समाचार बदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परञ्च आइपरि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि । १९७८ मे हमहुँ एहि क्षेत्र मे पदावर्ण कएल स्व० राजकमल चौधरीक अमर कथा 'ललका पाग'क संग । ई एगो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बजैत

बंगाल सरकार नव लहसैस बनेबाक प नजि अह । एहि महगीक युग मे ओ वैसी दिन एही 'वहरिया' बोम केँ दो लेल तैयार नजि अह सं कारण जे किष्क ने होउ, पाउब एत धरि छह जे एकर वन भ गेने छ । हजार हे बेकार बनि जायत । एकरा लोकनिक 'बुनिधन' (संगठन) नजि छह । एक संगठनक महजन भेल रहैक । नेता सभ निश्चिते रिकसा खिचनिहार नजि छ पड़ा गेले आ प्रदर्शनकारी रिकसा मज सनक पुलिस नीक जकाँ पीटाइ कैलक एकरा लोकनिक लेल बजनिहार केओ छह । फलतः बेकार मजदूर के अपन गा बुरि गेनाइ छोड़ि दोसर कुनू द्वारा ना छह । परञ्च समस्या छह जे गामे जा ई सभ की करत ? की खाएत-पीत ? केना गुजर चलते ? कहादन देश अजा भेल छह आ इहो सभ ताइ अजाद देशव नागरिक छी । संविधान मे लिखल छह जे सभ नागरिक समान छह । सभ केँ एके रंग अधिकार छह आ एके रंग सुख-सुविधा भेटैत । ओना इहो नीके छह जे ते बात एकरा लोकनि केँ नजि हुनक छह । एकरा लोकनि केँ नजि हुनल छह जे देशक उत्तर ते लोकक उन्नति होइ छह आ इहो सभ ताही लोकक अंश थिक । मुदा एते अवस्थे हुनक छह जे ई सभ बिहारी ओ आ बिहारक मुख मंत्री बाबू श्री जगन्नाथ मिसर छथिन जे एकरे गाम-घरक लोक छथिन । चुनावक समय मे रामेगाम बाइ—छथिन आ गरिबहा लेल मारिते रास की कहादन करवाक गप कहे, छथिन कि से गप खाली चुनावेवारी रहै अह आने सरिपहुं हुनका लग एकरा लोकनिक समस्याक निदानक कुनू योजना छनि ?

—मुजतबा अह

अछि भारतीय नारांक आदर्श सीताक प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि । एहि कथाक वर्तमान समय मे बड़ बेसी आवश्यकता आ उपयोगिता छेक । तेँ हम एहि कथाक चयन कएल । सिनेमा संसारमे यद्यपि हमर प्रथम पदावर्ण छल परञ्च नाट्य-मंचक दीर्घ आ पर्वति अनुभव तथा सिनेमा जगतक ख्या-तिनामा कलाकर लोकनिक संग सहयोग हमरा प्राप्त छल । हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे जे ई फ़िल्म बनि सकल त निश्चिते टकर केँ होइत । प्रमाण मे एकर गीतसभ जे रेकर्डिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि । एहि फ़िल्म मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छेक आ गीत रेकर्डिंगक अतिरिक्त कला-कार-चयन आ दृश्य चयनक काज सेहो होब क लेल गेल छेक । मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ ज अर्थ लगभग-नि-शेषा पृष्ठ ४ पर

लोककथा

महाकाली

(चित्राख्याक पेटी सीता भारतीय नारीक आदर्शक रूप में मानल जाए छथि । अन्ना ओइठाम कहौ छर—सीता जन्म विदोने गेल, दुख छोड़ि मुल कहियो ने भेल । परजय, धर्य, करुणा आ त्यागक प्रतिमूर्ति सीताक आत्मनिर्माण पर बनन बोट पहुँचलनि त ओ महाकालीक रूप धारण केलनि । मिथिला में प्रचलित लोककथाक आधार पर प्रस्तुत अर उपर चित्रित कथा—महाकाली ।)

लका विजयक उपरान्त अरत बन-वासक अर्धवि शेष कइ राम जानकी आ लक्ष्मणक संग अयोध्या फिरलाह । कतेको दिन तक हुनका लोकनिक बहुशय फिर-बाक आनन्द में उरख चले रहल । जवन ई क्रम शेष भेलक त किछु दरबारी सम प्रस्ताव केलनि जे रावण सन पराक्रमी के बच करवाक उनकर में महाराज रामक बाहिक पूजा हेवाक चाही । विरोधक प्रभु ने उठि सकत छले । पूजनोत्सवक तैयारी बड़ बोर-बोर सं चल्य लागल । सीता के सेहो एकर भनकी लगलनि । तयो ओ एकदिन राम सं पुछि देखलनि—फेर कून उरखक आयोजन भ रहल छर ? महाराज राम अवका सं प्रतिपन्न केलनि—अहाँ के नञि पता ? सीता अरय सं बिहू रेत बनली—जवन केओ कहवे ने केलनि त पता रहत कोना ? असलमें तकर प्रयोजने अहाँ लोकनि नञि बुझै छी । स्त्री त माघ आदेश पालनक निमित्त होइत अर । ओकरो जे आत्मा होइ छर, हृदय होइ छर, ते सोचवाक पछवातिह अहाँ लोकनि के कहाँ अर । राम बजलाह—हमरा खेर अर जे अहाँ सं विचार नञि छेल । प्रजागणक विचार छनि जे महा-पराक्रमी राजा रावण के बच करवाक उप-लक्ष में हमर बाहिक पूजा हो । प्रजाक विचार में हम तेता म के बहि गेलहुं जे बनिका द्वारा पूजा होइत तिनको मत लेनाह विस्तरि गेलहुं । परन्व आम बाधरि अहाँ अरन स्वीकृति नञि देव—ई पूजा नञि होइत ।

सीता करशयन—हम स्वीकृति नञि देव से अहाँ किएक सोचि लेबहु ? काजो बहुत अगुआ गेऊए ।

राम—से जते किएक ने अगुआ बाओ—तकर चिरता हमरा नञि ।

सीता—अहाँ हमर विचार पुछे छी अथवा स्वीकृति चाहै छी ?

राम—निश्चित विचार पुछे छी । जे अहाँक विचार ई काज उचित हो तखन स्वीकृति दिय ।

सीता गंभीर स्वर में कहलौयन—अहाँ के पता अर जे रावणो सं भेष परा-क्रमी आर एगो रावण अर । जाइ देशक महिलागण कोयकथ रावण के पकड़ि

ओकरा दशो माधपर दीप कारथोने छजहि आ बड़ अनुनय विनय केलाक बाद ओकरा मुक्ति भेटल छलेक । ताही पताल लोकक राजा सहस्रनाहु रावण एखनो जीविए । राम गंभीर भ गेलाह आ घर सं जुम्पे बहरा गेलाह । प्रात भेने भरिनगर में डिगाडिगया पीटवा देऊ गेले जे जाधरि महाराज राम सहस्रनाहु रावण पर विजय नञि पयोताह ताबहि ई उरख स्थिति रहत ।

जवन लक्ष्मण के ई बात पता चरलनि त ओ फत के के राम लग पहुँचला आअजी केलथिन—माइ हमरा आशा देल जाओ हम आइए संभरि ओकरा पराल कए बन्दीबना आपत आवि जायव । उरखक आयोजन स्थिति नञि हेवाक चाही ।

महाराज राम बिहू रेत बड़लथिन लखन ई अहाँक शक्ति सं बाहरक बात थिक । हमरी शक्ति सं बाहरक । एहि निमित्त हमरा हुनू भाइक संग देवेहीक रहनाइ परमावश्यक अर । जाउ हनुमान के कहियतु रथ तैयार करथि आ देवेही के सेहो तैयार हेवाक निवेदन करवनि । हमरा लोकनि आर देरी नञि कय थिये विदा होइ ।

लक्ष्मण रामक दुइ तैकत चुपचाप विदा भेलाह । कनिजे काळक बाद रथ तैयार भेल । रामक बामदिस जानकी आ दहिना में लक्ष्मण बैसल । चारथी हनुमान ।

जवन रथ सहस्रनाहु रावणक राखक सीमा में पहुँचे त गुप्तचर द्वारा ओकरा खबरि लगलक । लो ओहीठाम सं तौर छोड़लक आ समदिया द्वारा समाद लेलक त पता चललक चारथी जानर निपत्ता भ गेलक । रावणक बाण सं हनुमान रातसमुद्र पार फेका गेलाह । ओ दोसप बाण छोड़लक त लक्ष्मण के सहइ गति । तेसर में राम मुर्छित भय रथ पर टरि गेलाह । तकर बाद ओ कतेको बाण छोड़लक परंच सभ व्यर्थ गेलक । सीता विकलरूप काँ रथ पर बैसल छडीह । रावण के जवन सभ पता चललक त ओ अमानस्य भेल । ओकरा बुझा में देरी नहि लगलक जे रथ पर बैसल महिला दोसर केओ नञि आदि शक्ति थिकीह । शक्ति उपासक हेवाक कारणे ओ मनेमन हुनका नमस्कार केलक आ अपन भूलक लेल क्षमा याचना केलक ।

एतहर देवलोक में खलबली मचिगेल आ सभ देवावि देव महादेवक ओतय पहुँचलाह जे कुनू द्वारा घराउ ने त अनर्थ भ जायत । देवागणक आकुलता देखि महादेव प्रस्थान केलनि । ओ सीताक समीप अपन रूप बदलि पहुँचलाह आ हुनका लिखिएवाक हेतु नाना तरहक ब्यंज्य बाण छोड़्य लगलाह—अच छी हे देवी स्वामी सुहल पड़ल लक्ष्मण सन देयोर मरल, हनुमान सन सेवक मरल जकरा अहाँ अर

कविता

वसन्त गीतक मादे

(कवि जीषकात्मक छेल)

एक गोट
रुन्दनहीन-उदास
पतझड़ वन में
भेल छल हमर जन्म
आ
छतीस बर्ष बीतलाक बादो
स्थिति ओहिना छइ
ओना

सुनउ त हमरो अइ जे
कहियो पहिठाम रहैत छल
बारहोमास छतीसो दिन
वसन्त बहार
आ ताही आशा में हम
पटवैत आएल छी साधालुसार
एहि पतझड़ वन केँ
वसन्त सन
पावल सेहो दन्तकथा बनि चुकल-ए
पहना स्थिति में
हमरा सं वसन्तगीतक आशा
करवे होइत अनुचित
भाइ दे !
आउ नै

हमरा लोकनि संग मिलि पटाबो
(कारण)

गाछ सभ पखनो अइ श्राणबंत त
हमरा विश्वास अइ
आइ ते काळि
एहि में होएतैक तब पखय
रंग-विरागक फूल
जकर मादक गंध सं महमद करत सर्वत्र
पोचि मधु मातल मधुप गुंजन करत
तखन
हमहूँ लिखय आ
निश्चित लिखय
वसन्त-गीत जे
अकाराक नहि
परिविरोक वपज थिक

—रामछोचन ठाकुर

अमर, हेवाक वरदान देले छलथि तेयो
अहाँ देखे वन सन । ई त अहाँ सक हो ।
अनुनय विनय केलनि । अदरत दशन महा-
देव एहिँवर आनि महाकालीक वाटने पहुँ
मानव रूप में आवि मानव के कलकित
रहलाह । उदमुली कालीक नजर नञि
पड़लनि आ हुनक एहर महादेवक छातीपर
पड़लनि । ओ कत्ता सवधानि नीचा
तकलनि त महादेव के चीन्ह लाजे बी
कुचि लेलनि आ पुनः अपन पूर्वक रूप में
आवि गेलीह । सीताक इष्ट रूप महा-
कालीक रूप में सर्वत्र पूजित होइ-ए ।
सीता आपस रक्षर शहीह आ अपन कन-
गुनिया आगुर चीरि अमृतमान करा रामके
चेतन अवस्था में खनलनि । फेर लक्ष्मण
आ हनुमान के खोबि बीजित केलनि आ
सभ अर्थ ध्या फिरलाह । रामक बाहिपूजाक
बदला सीताक बाहिपूजाक प्रस्ताव उठल
परंच मैथिली तकरा अस्वीकार केलनि
ताहि दिन सं सीताराम माने राम सं पहिने
सीताक नामक परिपाटी चल्य लागल ।

चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अबे छो
तोरा ले फिटु छवै छो
जतय बहै छइ गीगा-कमला-
तकरे गीत सुनवै छो ॥
जाहि माटि सं जतमलि सीता
सण्ड हसर ई धरती
याज्ञवल्क्य गौतम, कपिल के
भूमि रहत नमि परती
सुगो शास्त्रक गण करै झुल
तकरे गीत सुनवै छो ॥
ई लोरिक-सलहेसक धरती
ई शिवसिद्धक धाम छइ
महादेव-बनि काकर अखला
मिथिला देश मदान छइ
जाधरि चान-सुलज ता रहवै
सहए शपथ दोहरवै छो ॥

—रामलोचन ठाकुर

मैथिली सिनेमा

हार प्रोड्यूसर नेटि जायि त ई मातक
अन्दरे फिल्म बनि के तैयार भ जायत ।
ओना एहि लेउ इन बिहार सरकार सं सेहो
सम्पर्क काकाक प्रयास कइल परतव सरकार
दिल सं सबक दस्तुरी तक नहि आवि
सकल ।

फिल्म आइ आनो दृष्टि सं उपयोगी
अछि । आइ वैचारिक के समझा छैक
तकर बहुदूरपरि समझान एहि सम्बन्ध
भ सकैत छैक । कतेको युवा हउ कचकार
से त कमिजियन के सेबी-सेडीक संगहि
असम प्रतिभा विकासक दुबोस मे टि लकेन
छनि । बमरूवा चिल्ल सन, के निरोध के
तल मनोरंजन होइइ, कासक लाख टाका
मिथिलांचल सं क बाइछ । मैथिली
फिल्म भेने ताइपर रोक लगतेक आ चल
पार बरे से रहत । मिथिलाई व्यवसायी
लोकनि देखा-देखी एहिसे अपसर होय-
ताइ । फिल्म उद्योग के आर्थिक सहयोग
छैल एगो केन्द्रीय संस्था छैक—एन०
एफ० डी० सी० (National Film
Development Corporation) जे
राज्य सरकार माध्यमे फिल्म उद्योग के अर्थ
सहयोग देत छैक । महाराष्ट्र, प० बंगाल,
तामि नाडू, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य-
सरकार एहि सं प्रचुर टाका लव अस्त-

दृष्टिभङ्गा—हमरा लोकनिक दृष्टि-
संग प्रतिनिधि सूचित केलनिहै
जे स्थानीय मिथिला बरसवर्ष मोर्चा
तकसरक दोसर सत्ताह मे एगो दुदिना
तमेलनक आयोजन करय जा रहल-ए ।
पहिल दिन मिथिलाक सर्वाधिपण विकास
पर विचार-विमर्श होयत । एहि मे समस्त
मिथिलाक प्रतिनिधि भाग लेथि तकर
प्रयास चलि रहल ह । दोसर दिन विराट
प्रदर्शन होइत जाहि मे लगभग पचास
हजार लोक के भाग लेयक बात अइ ।

बनवर्ष मोर्चा इहो निर्णय लेलक ह,
जे मार्च १९८२ मे बनारसपुर मे एकटा
अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली काहिय सम्मेलन
आयोजित करत । कार्यक्रमक उपलब्धता
लेल 'देसिल बयना' क शुभकामना ।

$\times \times \times \times \times$

गिछी—हमरा लोकनिक दिछी प्रति-
निधि सूचित केलनिहै जे अखिल भारतीय
मिथिला संघ, दिछीक तत्वावधान १४
सितम्बर के होमयवला प्रदर्शन । १४४
मंगक कार्यक्रम तत्काल स्थगित भ गेलह ।
ई कार्यक्रम कहिया बरि हैत से अज्ञात
अइ । ज्ञातय जे श्री योगेन्द्र झा, एम०
पी० एहि संस्थाक पृष्ठ शोधक छथि तथा
राजेन्द्र यादव, हुस्मदेव नारायण यादव,
शिवचन्द्र झा (सांघर) आदिक सहयोग
एहि संस्था के प्राप्त छइ । देशक राज-
बानी मे देवांक कारणे तथा राजनैतिक
नेता लोकनि छानछाया से रहवाक कारणे
ई संस्था निश्चित मैथिली मैथिली निमित्त
बहुत काब क सके-ए आ हमरो लोकनि
तकर आधा करैत छी । मैथी त भविष्ये
करत ।

अपन राज्यक फिल्म उद्योग के बढ़ा रहल
अछि परन्तु बिहारक अकेलप्यटाक कारणे
बिहार राज्य एहि सं वंचित अछि । एकर
हितक टाका बमरू मे जुडा रहल छैक ।
बिहार सन पेच आ सम्पत्तिकाही प्रदेश मे
इहो फिल्म स्टूडियोक नहि मेनाइ केहन
लज्जास्पद विषय थिक से सहजहि सोचल
जा सकैछ । कहथी छैक जे बरे बुद्धिक त
बेहुक के लेत ? पता नै बिहार सरकारक
ई बुद्धिके छैक अथवा ओ बिहारक विकास
नहि चाहैत अछि । परन्तु स्थिति येइ छैक
आ मिथिलाक संगहि समस्त बिहारक
लेखक, कलाकार, तक निशियन सरकार सं
ई अपेक्षा रखैत अछि जे ओ आबहु एहि
दिशा से सतर्क होअओ आ समुचित प्रयास
करओ ।

—श्री कान्त मंडल

आन्दोलन समाचार

मैथिली मुक्ति मोर्चाक अभील

मिथिला मे दुर्गापूजाक परम्परा यह
पवित्र आ प्राचीन अइ । लाख दिक्दारी
अछेतो निश्चिते एइ खेप समस्त मिथिला
मे पूजनोत्सव होएत आ बहुतेकाम लोक-
निक कार्यक्रम होएत । मोर्चा समस्त प्रबुद्ध
युवावर्ग सं निवेदन करै जे समस्त लोक-
निक कार्यक्रम मैथिली मे कएल जाय ।
सतय कतौ नाटक मंचन हो हो निश्चितमे
मैथिली मे देवाक चाही । माइक अर्चना
माइक भाषा मे हो—कौटुक भाषामे
बिबहु नहि । गंगाजलक बदला तारी-
दालक उपयोग सर्वथा अनुचित—से ध्यान
रखल जाय ।

मिथिलाक छी—मैथिल छी

मैथिली बर्वाउ—हिन्दी इटाउ

मैथिली बाबू, पढ़, लिख । समकाल
मैथिली मे कर ।

चन्द्राक दर—

एक प्रति पचास पाइ

सलियाना पांच टाका

बांच सालक बीस टाका

वितरक लोकनि सं—

'देसिल बयना' क इलेक्सी छैक सम्पर्क कर—

वितरण व्यवस्थापक,

अखण्डेय प्रकाशन,

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाइ । कम खर्च मे सुन्दर टंग सं
अधिका प्रचारक एक मात्र साधन ।

सम्पर्क कर

विज्ञापन व्यवस्थापक

अखण्डेय प्रकाशन,

लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

१. अपन मौलिक आ अक्राशित रचना 'देसिल बयना' मे प्रकाशनाय पठाव ।
२. 'देसिल बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक । आन्दोलन सम्बन्धी
रचना के अप्रतिकार देल जायत ।
३. निधिला-मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव ।
४. 'देसिल बयना' स्वयं विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ ।

कह लोचन कविराय

जगन्नाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगहा छान
खइ उमकी गोइय संतत निधिन कएल बथान
निधिन कएल बथान माछ ई सरूपवाली
अपन के खाएत सोचत शुभ अतके खाली
कह लोचन कविराय बजा नट जल्दी लावू नाथ
बेचू बत कसाइक हाथे ई अलख जगन्नाथ

विपत्ति असगरे नहि अबैछ

समाचार सुन सं ज्ञात मेलइ जे दृष्टि-
भ्रमा अचल मे हैजाक प्रकोप छैक ।
बादिक बाद एहि तरहक महामारिक पर-
नाइ कुतु नव घटना नहि थिकेक । बादिक
समय वातावरणक संगहि पैघ जलक दुषित
भ मेनाइ स्वाभाविक छैक आ ई महामारीक
समय प्रायः एहीठाम सं होइत छैक । परन्तु
अबालक बात त ई छैक जे एहि सं रच-
नाक लेल सरकार द्वारा कुतु तरहक प्रयास
रहित नहि भेल—नहि होइत छैक ।
कलम रोग पूर्णतः परति जाइ छइ तलन
उत्कारी वृत्र सक्रिय होइत अइ लोकके
टक्का-कुविदशा लेल । ओना सरकार के
बीमारी रोकनाइ सं बीमारी परतनाइ मे
लभ छैक कारण ओकरा समचा सम के
कमेलाक स्वर्ण-सुयोग भेटैत छैक आ सरका-
रक पाया सक्रिय होइत छैक । हाथ रे
अभांगल मिथिलाक लोक ! कि आबहु ओ
सं नहि चेतत आ एहि कृतिम रोग-यातना
सं मुक्ति पैदाक प्रयास नहि करत ? ओना
ई बात त भविष्ये मे दृष्ट होयत परञ्च
इतेबेरि दृष्ट छैक जे न आबहु ओ नहि
चेतत त ओकर दुखक नहि ओर' लागि
सकैत छैक ।

चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अबे छो
तोरा ले किछु लखे छो
जतय वई छइ गीत-कमला-
तकरे गीत सुनवै छी ॥
जाहि मादि सं जनमलि लीला
सखइ हमर ई धरती
वाजकबन्ध गौतन, कपिल के
सुनि रहत नखि परती
सुगो शास्त्रक गप करै छल
तकरे गीत सुनवै छी ॥
ई छोरिक-सलहेसक धरती
ई शिवसिंहक धाम छइ
महोदेव बनि चाकर अपला
मिथिला देश महान अइ
जाधरि चानसुरुज ता रहतै
सदप रापय दोहवै छी ॥

— रामलोचन ठाकुर

मैथिली सिनेमा

हार मोक्षदूर मेदि जायि त ६ मासक
अन्दरे फिल्म बनि के तैयार भ जायत ।
ओना एहि लेख हम बिहार सरकार सं सेहो
सम्पर्क कवाक प्रयास कएल परखव सरकार
रिस सं पत्रक उत्तरो तक नहि आबि
सकल ।

फिल्म आइ आतो एहि सं उपयोगी
अछि । आइ वैकारिक जे समझा छैक
तकर बहुतदूरपरि समाधान एहि माध्यमे
भ सकैत छैक । कतेको युवा वृद्ध कथाकार
मे त कमिथियन के रोखी-रोटीक संगहि
अपन प्रतिभा विकासक सुयोग भेट सकैत
छनि । वगैरया फिल्म सभ, जे विदेश के
सत्त मनोरंजक होइए, लाइक लाल टाका
मिथिलीचल सं ल जाइछ । मैथिली
फिल्म सेने तारपर रोक लगैतक आ धरक
पाइ धरे मे रहत । मिथिलाक व्यवसायी
लोकनि देखा-देखी एहिमे अप्रसर होय-
ताह । फिल्म उद्योग के आर्थिक सहयोग
शैल एगो केन्द्रीय संस्था छैक—एन०
एफ० डी० सी० (National Film
Development Corporation) जे
राज्य सरकार माध्यमे फिल्म उद्योग के व्यर्थ
सहयोग देत छैक । महाराष्ट्र, प० बंगाल,
तामि नाडू, उड़ीसा, मणिपुर आदि राब-
सरकार एहि सं प्रचुर टाका लय अपन-

द्विभङ्गा—हमरा लोकनिक दहि-

अंगी प्रतिनिधि सूचित कैलनिहै
जे स्थानीय मिथिला जनसंख्या ओचो
नवभरक दोसर सप्ताह मे एगो दुदिना
समेजनक आयोजन काय जा रहल-ए ।
पहिल दिन मिथिलाक सर्वांगीण विकास
पर विचार-विमर्श होयत । एहि मे समस्त
मिथिलाक प्रतिनिधि भाग लेथि तकर
प्रयास चलि रहल-ए । दोसर दिन बिना
प्रदर्शन होइत काहि मे खाना पचाव
हजार लोक के भाग लेबाक बात अइ ।

सतसंवर मोचो इहो निर्णय लेखक ए,
जे मार्च १९८२ मे जनकपुर मे एकटा
अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य सम्मेलन
आयोजित करत । कार्यक्रमक उपलब्धा
लेल 'देसिल वयना'क शुभकामना ।

× × ×
दिछी—हमरा लोकनिक दिछी प्रति-
निधि सूचित कैलनिहै जे अखिल भारतीय
मिथिला संघ, दिछीक तत्वावधान १४
सितम्बर के होमयवला प्रदर्शन । १४४
भंगक कार्यक्रम तत्काल स्थगित भ गेल-ए ।
ई कार्यक्रम कहिया परि हैत से अज्ञात
अइ । शतभ्य जे श्री भोगेन्द्र झा, एम०
पी० एहि संस्थाक गृह पोषक छथि तथा
राजेश यादव, हुस्मदेव नारायण यादव,
शिवचन्द्र झा (संस्तर) आदिक सहयोग
एहि संस्था के प्राप्त छइ । देशक राज-
धानी मे देशक कारणे तथा राजनैतिक
नेता लोकनि छात्रछाया से रहवास कारणे
ई संस्था निश्चिते मिथिला मैथिली निमित्त
बहुत काज क सकै-ए आ हमरो लोकनि
तकर आशा करैत छी । वेही त भविष्ये
कहत ।

अपन राज्यक फिल्म उद्योग के बड़ा रहल
अछि परन्तु बिहारक अकर्मण्यताक कारणे
बिहार राज्य एहि सं वंचित अछि । एकर
हिल्साक टाका वगैर मे फुका रहल छैक ।
बिहार सन पेव आ सम्पत्तिशाली प्रदेश मे
एगो फिल्म स्टूडियोतक नहि नेमार केहन
लज्जास्पद विषय थिक से सबजहि सोचल
जा सकैछ । कबही छैक जे बरे बुरिक त
जेतुक के छैत ? पता मे बिहार सरकारक
ई बुरिके छैक अथवा ओ बिहारक विकास
नहि चाहैत अछि । परन्तु स्थिति यहै छैक
आ मिथिलाक संगहि समस्त बिहारक
लेखक, कलाकार, तफ निर्दिपन सरकार सं
ई अपेक्षा रखैत अछि जे ओ आबहु एहि
दिखा मे सतर्क होअओ आ समुचित प्रयास
करओ ।

—श्री कान्त मंडल

आन्दोलन समाचार

मैथिली मुक्ति मोर्चाक अपील

मिथिला मे दुर्गाश्राक परम्परा बढ
पवित्र आ प्राचीन अइ । लाख दिकदारी
अछेतो निश्चिते एइ खेप समस्त मिथिला
मे पूजनोत्सव होएत आ बहुतायत सांस्कृ-
तिक कार्यक्रम होएत । मोर्चा समस्त प्रेङ्ग
दुशवर्ग सं निवेदन करैत हो से समस्त सांस्कृ-
तिक कार्यक्रम मैथिली मे कएल जाय ।
सत्य कही नाटक संवत्स हो से निश्चिते
मैथिली मे हेबाक चाही । माइक अथवा
साइक सावा मे हो—कौनक माननि
दिछहु नहि । गंगाबल्लभ बड़वा सारी-
बालक उपयोग संवत्स अनुचित—सै ध्यान
रालल जाय ।

मिथिलाक छी—मैथिल छी
मेथिली बचाउ—हिन्दी हटाउ
मैथिली बाजू, पढ़, लिख । समकाल
मैथिली मे कर ।

चन्द्रक दर—
एक प्रति
सखियाना
पांच सालक
पचास पाइ
पांच टाका
बीस टाका

वितरक लोकनि सं—

'देसिल वयना' क एकेन्वी लेख सम्पर्क कए—
वितरण व्यवस्थापक,
'असुरोदय प्रकाशन',

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

'देसिल वयना' मे अपन विज्ञापन दए लाभ उठाव । कम खर्च मे सुन्दर दंग सं
अधिक प्रचारक एक मात्र वाहन ।

सम्पर्क करू

विज्ञापन व्यवस्थापक

असुरोदय प्रकाशन,

लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

- अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल वयना' मे प्रकाशनाथ पठाव ।
- 'देसिल वयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक । आन्दोलन सम्बन्धी
रचना के अग्रगण्यता देल जायत ।
- मिथिला-मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव ।
- 'देसिल वयना' स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुन्तावक स्वागत करैछ ।

कह लोचन कविराय

जगन्नाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगड़ा छान
खइ वमकी मांडइय संतत निधिन कएल बथान
निधिन कएल बथान माल ई सरङ्गताली
अपन के खाएत सोचत शुभ अन्तके खाली
कह लोचन कविराय बजा नट जल्दी लगवू नाथ
बेचू वर कसाइक दायो ई अलख जगन्नाथ

विपत्ति असगरे नहि

अबैछ

समाचार सुन सं ज्ञात मेलख जे दहि-
अंगी अवल मे हैबाक प्रकोप छैक ।
बादिक बाद एहि तरहक महामार्मिक परसर-
नार कुनु नव घटना नहि थिकेक । बादिक
समय वातावरणक संगहि पत्र चलक दुषित
भ नेतार स्वाभाविक छैक आ ई महामार्मीक
ब्रह्म प्रायः एहीठाम सं होइत छैक । परन्तु
अचरजक बात त ई छैक जे एहि सं वच-
नाक लेल सरकार द्वारा कुनु तरहक प्रयास
परिते नहि मेल—नहि होइत छैक ।
सबन रोग पूर्णतः पहरि बाइ छइ तखन
सरकारी वंश सक्रिय होइत अइ लोकके
उकवा-कुलिया लेल । ओना सरकार के
सीमारी रोकनाइ सं बीमारी परनाइ मे
लाभ छैक कारण ओकरा वमचा सभ के
कसेबाक स्वर्ण-सुयोग भेटैत छैक आ सरका-
रक पाया सकत होइत छैक । हाथ रे
अप्रामाद मिथिलाक लोक ! कि आबहु ओ
सं नहि चेतत आ एहि कृतिम रोग-यातना
सं मुक्ति पैदाक प्रयास नहि करैत ? ओना
ई बात त भविष्ये मे शय होयत परखब
एतेचरि शय छैक जे वं आबहु ओ नहि
चेतत त 'ओकर दुखक नहि ओर' लागि
सकैत छैक ।

असुरोदय प्रकाशन, ६१, सुदतान अलास रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेख श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पापनियर आर्ट प्रिंटर्स, ३२-बी, इन्दरवन वैशाख स्ट्रीट,
कलकत्ता ५ मे मुद्रित । सम्पादक : श्री जनार्दन झा

रामनिशना

वर्ष-१ अंक-२

नवम्बर, १९८१

मूल्य-पचास पाइ

सम्पादकीय

विद्यापति स्मृति-पर्व

कोनो जातीय विभूतिक स्मृति पर्व मनेबाक पाछा निर्बिवाद रूपेँ एक गोट महान आ पवित्र उद्देश रहैत आयल अछि। हमरा जनतबे, ओ उद्देश यिक ओइ विभूतिक शक्तित्व आ ऊर्ध्व सँ सिद्धा केनाइ हुनक हमण सँ जातीय सर्वोच्च आ चेतना जागत केनाइ आ जातीय एकता केँ सशक्त केनाइ जे कोनो जातिक सनाइ विनासक मूलाधार अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे कहिया करियो विद्यापति स्मृति पर्वक शुभारंभ जे कोनो मनीषी कएने होइतह तिनका मोन मेँ इएह पवित्र भावना सजिहित छल होएतनि।

ओना त मिथिला मेँ एक सँ एक विभूति म झुकल छथि आ समक स्मृति पर्व मनओनाइ सँभवो नहि हुसँता बाहरल। तथापि कविद्वेषराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर, कविपति विद्यापति, महाकवि डाक, महाकवि चन्द्रा झा, महाकवि लालदास, महानबी लोरिक, लोकसेवक महावीर राबा सलहेस आ दोनाभद्री आदि विभूतिक स्मृति पर्व मनओनाइ वर्तमान संदर्भ मेँ बड़ बेसी महत्व रखैत अछि। किन्तु, खेदक विषय जे वर्गबादी दृष्टिकोणक कारणेँ विद्यापति केँ छोड़ि आर समस्त विभूति लोकनि केँ निसरा देख गेल आ विद्यापति स्मृति पर्व सेहो अपन उद्देश-पूर्ति मेँ पूर्णरूपेण अवशक प्रमाणित भेल अछि।

अलुकर विद्यापति-स्मृति पर्वक जे रूप अछि से मिथिला-मैथिलीक नाम पर कलंक छोड़ि आर किछु नहि यिक। सांस्कृतिक कार्यक्रमक नाम पर दिनराक नाच होइत अछि, कवि सम्मेलनक नाम पर गाहीक साही भोट सम फकड़ा पाठ करैत अछि आ भद्रविरिया बेग सन कंड फारि-फारि भूँइगोइ लोक सय अमाक केँ मैथिली सेवक कहि प्रचारित करैत अछि। ओतबे कि एक मिथिलाक मिस्त्राकर-बयनंद सम सेहो एहि मंच पर पूजित होइत अछि। आ एहि मद मेँ लाखो टाका भूकिल देख जाइत अछि। एकमात्र परनाक चेतना समिति एहि मंच मेँ लाख टाकाक लगभग खर्च करैत अछि। न स्पष्ट कही त आइ जे विद्यापति-स्मृति पर्वक विभूति रूप अछि तकर पूर्ण श्रेय एही संस्था केँ छैक।

कविपति विद्यापति महान विद्वेदी-भगतिशील कवि छलाह, वीर कवि कलाह, लोक कवि छलाह आ छलाह महान दार्शनिक, राजनीतिवेत्ता, समान सुधारक। परजव हुनक बात अछि जे आइवर मात्र श्रृङ्गारिक कवि या कलनोकाक भूक-कवि कहि दिनका अपमानित कएल जाइत रहल अछि आ ताइ हेतु सम सँ उपयुक्त मंचक रूप मेँ प्रयोग कएल जाइत रहल अछि दिनकेँ स्मृति पर्वक मंच। मैथिलीक नाम पर जे स्थापित संस्था बनल अछि ओ सालभरि अनहि मुद्दल पढ़ल रहबो परजव एहि अवसर पर ई पर्व मना अपन जीववता केँ प्रमाणित करबैत करैत।

आइ समय आनि गेल अछि जे एहि धुनि आयोजनक मात्र बहिष्कारेता नहि खुलि केँ विरोध हो। एहि मेँ खर्च होमयवला पाइ सँ मैथिली पोथी-पत्रक प्रकाशन हो तथा मैथिलीक सरकारी मान्यता छल संवर्षक मंच मेँ खर्च हो। इएह विद्यापतिक प्रति सम सँ प्येव आ पवित्र अर्दाबलि होएत।

निज मू - भाषा हित मरय
मरय ने, असर नैत अछि
तकरे गाथा विश्व ई
गाओत, सदा नैत अछि

--मैथिली मुक्ति मोर्चा

कलकत्ता

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु निधिला धान
छाहि-छारि सुडुह कब हम्म
बिद्वेही स्मिथि छाक जवान

बुदारी-मचा बनाम सत्ताक राजनीति

अन्यान्य प्रांतीय सरकारें बर्का बिहार सरकार सेहो बुदारी-भत्ता योजना चालू केलक अछि। ई भत्ता बुदू लोक केँ भेटैत छैक जे काम करैक जोकर नहि रहैत अछि तथा गुजर-बसर करैक दोसर द्वारा नहि रहैत छैक। स्वभावतः लोक एहि योजनाक स्वागत केलक। परजव प्रथम उठैत अछि कि सरिपहुँ ई भत्ता अवसक्त-अवहाय बुदू-पुरनिवाँ केँ भेटैत छैक? भत्ता-दानक पाछा कोन भावना काम क रहल अछि— लोक सेवक आ नै स्वजन पोषणक? कि एतौ तने धुनि राजनीतिक गुटबन्दी काब क रहल अछि?

देशिक जनताक वनरामपुर संवाद प्रतिनिधिक अनुसार एहि भत्ताक नाम पर खुलि केँ स्वजन पोषण आ राजनीतिक दल-बाबी चलि रहल अछि तथा अगिला चुनावक आधार क्षेत्र तयार केल जा रहल अछि। ई भत्ता ओकरो भेटैत छैक जे मुखिया सरपंचक समर्थित हो, सत्ताधारी दलक समर्थक हो। भनहि ओकर उमेर तीस-पैंतसे किछक नै होइक आ छानी भीरानी किछक नै करैत हो। किछु ओहरो व्यक्तिकेँ भेटैत छैक जकरा सँ अगिला चुनाव मेँ नीक सहयोगक उमेद सरकार केँ छैक। दोसर दल जे सत्ते अवहाय अछि तकरा संग पूर्ण अन्तर्भेद केल जा रहल छैक। डाँडी-दारी चढ़ेबाक फरात किछु लोक मनोकामना त पूरा भ जाइत छैक परजव जे दोसरदलक समर्थक रूप मेँ चिनहार अछि अथवा डाँडी-दारी चढ़ेबा मेँ अवमर्ष अछि—तकरा छेल कोनो द्वारा नहि छैक। बी०डी०ओ० सं दल० डी०ओ० तक दौड़-वडहा केलक बादो हुनका आश्वासन छोड़ि आर किछु प्राप्त नहि होइत छैक। एहि अजुत-अनटोलक विरुद्ध सँ कतौ केओ वाजल त ओकरा पाछा सरकारक चर्दीधारी सँ बिना बर्दी बना सिपाही धरि लागि पड़ैत छैक आ सुस्थाथि चेता देत छैक।

एहन एकटा घटना अछि मनीगाछी ब्लॉकक पूर्वी क्षेत्रक। कुटी हाइस्कूल मेँ विद्यालय बनसमावेश छैक। ब्लॉकक सम कर्मचारी, भाना-भभारी आ क्षेत्रक दल० दल० ए० प्रो० श्री नागेन्द्र झा उपस्थित छलाह। टाका बाटल जा रहल छल। महावीर पासमान पंक्ति मेँ ठाढ़ छलाह। नाम स्वीकृत भेल छलनि तें पाइ भेटबाक पूर्ण आशा नैने। परजव बखन दाता लय पढ़ू चलाइ त आकाश-पतनक स्थिति। तीन पीढ़ी सँ दोसरक जमीन मेँ बल महावीर पासमान मेँ आव चीनि करैक बुत्ता नहि छनि। हुनक अपराध छलनि जे

ओ बी०डी०ओ० आइ केँ 'गोट' देने छलथिन। महावीर पासमान बहमान नहि छथि। जमीन-शर जलन हुनका उगास चालूकनि त बी०डी०ओ० आइ० मदति देने छलनि आ अखनो विपत्तिक समय मदति करैत छनि। तें बी०डी०ओ० आइ० के गोट देनाइ हुनका डचित बुझैत नै।

महावीर पासमान टाका नहि भेटला सँ हताश नहि भेलाह। ओ बी०डी०ओ० लय अंगन फरियाद पढ़ूचलनि। परजव ताइ सँ किछु नहि सेलनि। स्थानीय युवकेँ सभ एहि अनीतिक विरोध केलक त सरकारी अफसरक कोपमाजन बनि गेल। अन्ततः पूर्ण समर्थन अभाव से ओहो सभ बुदो सति छेलक। बी०डी०ओ० आइ० केँ एतेव सँ संतोष नहि भेलनि त दोगा-पुल्लिक संग एकरा लोकनिक बरपर आक्रमण केलनि। सरकारी अधिकारी-लोकनिक आंगन मेँ प्रवेश अन्ततः लोक केँ अनटोहात छपलक आ कतव्य बोध बगलैक। आरंभ सैर आपर-मुद्रा सँ हिनका लोकनिक स्वागत सँ उवरि नहि सकलाह। स्थितिक गंभीरता देखि सशरी एम० दल० ए० साहेब मकट भेलाइ आ अंगन दाव सँ सरकारी अफसर लोकनि केँ भोगेबा मेँ सफल भेलाह। संवाद पठेबाक समय बरि दोगा साहेब अंगन क्षेत्र सँ नगर छवि। ओना ओहो वेसल नहि छथि आ वलकटा फरबरी केरा दर्ज क केँ युवक लोकनिक नामे वारंट जारी करा देने छलनि। एहिना छथि केरा पासमान। टाकाक बदला हुनक घर उबारि देबक पड़यत नीक जकाँ रचल जा रहल अछि।

बी०डी०ओ० दल० डी०ओ० सं दल० दल० ए० आ मंत्री धरि गुप्त सम-भौता भेल अछि तें शिकायत जते होइत तते चपा जाइत। दोसर एहना स्थिति मेँ शिकायत वा विरोध करै के करत? यह यिक बुदारी-भत्ताक वास्तविक स्थिति।

--जयदेव लाभ

नव पोथी

मुनिव्यास लेखक डी० ब्रज किशोर वर्मा
मणिपद्मक सामाजिक उपन्यास
अर्धनाशीद्वर
कीनू आ पढ़.

संस्कृतक सारापर सचाक बबूर

गाम सं दूर : मिथिलाक सजदूर-३

कलकत्ताक ठेलावला

संस्कृत भाषा मात्र मिथिल्या मे नहि, समस्त भारतवर्ष मे देवभाषाक नामे खात अइ आ एकर लिपि, से वर्तमान मे मैथिली, हिन्दी, नेपाली आदि लेखन मे प्रयोग होइए—देवाक्षरक नामे। ओना त देवता-एक अस्तित्व संदिग्ध अइ सखन हुनका लोकनि द्वारा कुनू भाषाक प्रयोगक प्रस्ने उठओनाइ अतंगल, परञ्च एतबापरि सख के हिन्दूक समस्त धर्म ग्रंथ एही भाषा मे छैक। ओतवे किछक, एकर जे विशाल साहित्य भंडार छैक आ दीर्घ परम्परा छैक से एतनो कुनू भाषाक हेतु इष्पार्क विषय भ सकैछ। किन्तु, सम होइतहु, ई भाषा मुतावस्था के प्राप्त भेल आ तकर एकमात्र कारण छैक जे ई कहियो लोक भाषा नहि बनि सकल।

एतहर बर्ल दिन सं मिथिलावलक संगहि समस्त बिहार मे संस्कृत प्रेमक बाढ़ि सन आबि गेलए। भरिखे कुनू गाम छुटन हो बाह्यम नस्कृत विचारधरक रथापना नहि भेज हो से भनहि कागतेपर किछक ने भेज हो। ई भिल कथा जे ओइ गायक लोक संख्या हबारी सं ओर छैक आ ताहठम पहिनहि सं अंग्रेजी अपर बा मिथिल स्कूल विद्यमान छैक। एहिठाम ई लिखि देव अनुचित नहि होएत जे अंग्रेजी स्कूल मे सेहो नस्कृत पढ़ेबाक पूर्ण व्यवस्था छैक, भनहि से ते चउक किछक ने होइक। बहने एह गोट गाम अइ नहुवनी जिलाक कामची। एहिठाम प्राचीन संस्कृत पाठ-शासक अ तैरिख अंग्रेजीक मिथिल स्कूल पहिनहि सं रहलाक बादो दू गोट नव पाठ-शाखा खुलल। एगो संस्कृत प्राथमिक सह माध्यमिक विद्यालय आ दोसर संस्कृत प्राथमिक सह माध्यमिक बालिका विद्यालय। एहि गाम सं आध कोव उत्तर अवस्थित पानीमोहन गाम मे सेहो दू गोट प्राथमिक सह-माध्यमिक संस्कृत विद्यालयक स्थापना भ चुललए। एतौ पहिने सं एगो अपर प्राइमरी स्कूल विद्यमान छैक आ घरक अभाज ने मिथिल स्कूल नहि बनि पओ-छैक जखन कि विद्यार्थी बड़ बेटी छैक। जे स्कूल छैक से प्राचीन गुरुकुल जका गौडी मे चलि रहल छैक आ सेध देखिते गुरुजी लोकनि छुट्टीक वंटी हुनहुना देत छथिन। अधोष चरिया सम खुशी सं कुदत फनत घर चउ बाइए। घरक चिन्ता ने गामक, लोक के छेक ने सरकार के। आ लगभग बहने स्थिति मिथिलाक सम गामक छैक, अपवाद के छोड़ि।

बिहार सन लिखरि प्रवेश मे आ खास के मिथिला मे, बाह्यम जातीय चेतना नामक वस्तु नहि छैक अपन भाषा-संस्कृति सं लोक पूर्ण उदासीन अइ आ अपन अधिकार प्राप्तिज लड़ाइ मे नसु संस्कृतक परिचय द चुकल-ह बाह्यम हठम संस्कृत-प्रेमक बाढ़ि देखि ककरो छुटता लागि

सकैत छैक। की सरिपहुं ई संस्कृत प्रेम थिके आ ने आन बिछु ?

एहि प्रश्नक सटीक उत्तर पेश लेख हमरा लोकनि के कनेक पाछा जाय पड़त। १० जून १९८० के बिहारक वर्तमान मंत्री मण्डल अपन पहिल बेतार मे उर्दू के बिहारक दोसर राजभाषा बनेबाक निर्णय लेखक। पहिने ई कहि देव आवश्यक जे उर्दू सेहो बिहारक क्रिएक समस्त भारत मे कुनू सुलभानक मातृभाषा नहि छैक। भाषा धर्मक नहि क्षेत्रक होइत छैक आ स्वाभावतः जे बाइ क्षेत्र मे स्थायी भावे निवास करैछ ताही क्षेत्रक भाषा ओकर मातृभाषा होइत छैक। परञ्च हरो सख छैक। जे संस्कृत जेना हिन्दूक लेल तहिना उर्दू सुलभानक लेल आ खार के तथा-कथित हिन्दी प्रदेशक सुलभानक लेल धर्मक भाषा थिकैक। सुलभानक समस्त धर्म ग्रंथ एही भाषा मे छैक। ई भिल कथा जे संस्कृतक पंडित वर्ग जकां मुला-मौलवी के छोड़ि सर्वसाधारण के ई भाषा अवितो ने छैक। किन्तु धर्मक, प्रतिके कने बेसी कट्टर देवाक कारणे लोक के एकरा प्रति मोह छैक आ बिनु जनै दुकाने एकर समर्थक बनि बाइए। बिहार सरकार एही कट्टरता सं काम उठओलक।

धर्मे भतिहि जे कुनू किछक ने हो एकर उभरिचउ सत्ताक कब्जक रूप मे लेल छैक। ई मानव जातिके विभिन्न दुकड़ी मे बाँटि ओकरा अकल बना देने अइ बाइ सं ओ एकलद भय शोषणक विरोध नहि क सकैर। धर्मे सर्वसाधारणक विरुद्ध महान धड़पंत्र थिक जे सत्ता द्वारा अबाध शोषणक पथ प्रसन्न करैए। आ सत्ता भनहि राजतंत्र वा तथाकथित प्रजातंत्र जे किछक ने हो ओकर चरित्र एके छैक। उर्दूक मान्यता-धर्मक आधार पर जनताक विरुद्ध एक घृणित धड़पंत्र छोड़ि आर किछु नहि थिक। जन कंटरोच आ माहयारी मे कलह जेकाक एहि धड़पंत्र मे बिहार सर-कार अपन कुशल नायक डा० जगन्नाथ मिश्रक नेतृत्व मे किछु समयक लेल सफल अवल्ले मेलाह। एहि नीति सं एतेबेरि अवल्ले भेल जे आन मिथिलाक कुनू सुलभान अपन मातृभाषा मैथिली नहि पढ़त ओकरा बदल मे उर्दू पढ़त। मैथिली पढ़ने ओकरा नोकरीक आशा नहि छैक जे उर्दू सं छैक। ई दिग्गज वात जे उर्दू ओ नोकरी नहि दिया सकैत छैक—पहिल खेप मे भनहि पाँच-दस हजार के जीविका भेटि गेलैक। परञ्च प्रत्यक्षक सामने लोक प्रमाण नहि तकैत अइ।

आइ भाषा विचारक चाहतेया नहि बीविकोपार्जनक साधनो अइ। अंग्रेजी पढ़ब लोक हरी हुआरे आतन केज्जक आ एखनो पढ़ैर जे एकरा द्वारा बीजिजा भेटव सख छैक। मैथिलीक सरकारी मान्यताक मांगक पाछा हरैर कारण छैक। दोसर मातृभाषाक

महानगर कलत्ता जत विशाल विक-वित्त आ व्यक्त शहर ने बाउ बाउ चाम रक्षार्थ साधारण बात छैक ओ पर्यटकों के जेना रेशल-लेइल भ गेल छैक। दाम-बल, द्रुक टेम्पु टेक्नी प्राइवेट कालक बीच खिला ठेकाक अस्तित्व अनायासे ककरो ज्ञान अपना दिस आकषित क जेना मे पूर्ण रूपेण सकल होइए। ई जेना कहैत हो जे मनुष्यक सर्वोपरि थिक मनीन ओकरापर लिखन नहि पाबि सकैछ, ओकर स्थान नहि छ संकेत। देव सं पैच कल्लाखाना मनहि कने किछक ने पहरि बाओ रह उद्योगिक अस्तित्व ओ

माध्यमे जातीय चेतनाक विकास तथा जातीय एकता सयक होइत छैक जे देव-जातिक सर्वाङ्गिण विकासक मूलाधार थिक। इहए कारण छैक जे १० जूनक पश्चात् मैथिली आन्दोलन एकटा नव मोड़ लेलक आ पहिल खेर मैथिल सन्तान अपन शोणित सं पटनाक राजपथ के हुवा देलक। ई आन्दोलन नकारात्मक नहि सकारात्मक छल, कबरा विरोध नहि अपन न्यायसंगत अधिकार प्राप्तिज छल आ तँ एकर आगि एखनो प्रवर्द्धित अइ जे समय पाबि कल-नहुं दावानलक खम्ब द सकैइ। ओना मिथिलाक व्यवस्था-मिजोपर एकरापर अवल्ले संकीर्णता केहुल लगेबाक प्रभाव केलक आ असफल भेलापर लोक के दिग-अग्रित करवा लेख संस्कृत विद्या-विज्ञानक धड़पंत्र रचलक।

सरकारक एहि घोषणाक पाछा दू गोट उद्येध छैक। पहिल त मैथिली आन्दोलन के दिगभ्रमिउ केनाइ कारण महाराजी मान्यता एखनो लोकक मन सं नहि हटलैए बाह्यम आ कर्ण कावस्थ के छोड़ि आन वर्ग रहनो अपना के मैथिल करवा मे संकोच दोष करैए आ अपन मातृभाषा के मातृभाषाक रूप मे स्वीकार करवा सं हिचकिचाइए। लोकदलक उदय एहि विमर्द के बदेवा मे आगि मे जीक काब केज्जक। फलतः मैथिली आन्दोलन मे बहुसंख्यक ओही वर्गक लोक छल जे संस्कृतक पोषक रहल-ए आ संस्कृतक द्वारा ई सुविधा भोगी वर्ग अपन स्वार्थपूर्ति होइत देखि आन्दोलन सं विमुख भ बाधत। दोसर एहि वर्गक सरकारी चमचा सम के माह्यरी नामक 'कौरा' भेटि जेतैक आ ओ सदा सरकारक पाछा नाछिड़ि होलवैत रहत। मुस्लिम तमुंदाय मे जे सरकारी चमचा छल तकरा उर्दूक माध्यमे 'भार' धरा देल गेलैक। एहि तरेह शायक दलक पाया मजबूत बनि जेबाक पूर्ण संभावना छैक। ओना हेतक की से त भविष्ये कइत परञ्च एतेबेरि निःतर्कच कहब बा संकेद जे अपन समस्त कृतित्वक अछेओ मिथिल्य-मैथिलीक अजो-जातिक लेख पूर्ण जिम्मेवार हरैर बाह्यम आ कर्ण-कावस्थ रहल-इ।

नहि भेटा सकैछ। संविधानक पोषा बते मोट किछक मैहो विदेशी आवागुलित बाही मे देसल लोक आ ठेवा विचित लोक समान नहि भ सकैए।

ठेलागाड़ी माने ओ गाड़ी अकड़ा छैल जे छ गेल बाय। ई ठेलागाड़ीक विकृतरूप थिक बाइ मे जुआ अथवा बाला नहि होइत छैक। एकर मुररा ठेलागाड़ी जकां सठल नहि रहैए अतिष्ठ हुनू छांठक बीच हाथ देहुंके कगइ खाओ रहैत छैक जकर मुँह मोट रती सं मिजाओल रहैछ। एहि मे (हेरांगंध पृष्ठ ३ पर)

से जे हो परञ्च सरकारी घोषणाक परचात आन्दगाहील संस्कृत विद्यालय खुलल लागल। ओना त एकर अवधि बहुत पहिने समय भ गेलैक मुदा स्कूल एखनो खुबि रहल-ए। दुतीन वर्ष पहिने सं खाना-पत्र तैयार कइल बाइछ आ पटना बा के 'विक डेट' मे लोक दरवाजा द अवेइ। 'इन्स्पेक्शन चार्ज' सरकार मात्र तीन से टाका रहने छैक आ सेहो जे-पचास उपरी देवे 'विक डेट' मे बना होइत छैक। आर किछु बेटी देने 'इन्स्पेक्शन' केनिहारक चयन करबाक अधिकार लोक के भेटि बाइत छैक। पैची लेख अपन छेकक कपिटी धम-धम-इ-० बा पराकित नेता छपि। हिमका अगिला सुगम मे मोटैक बाइटी बाही।

माध्यमिक विद्यालय छेउ ओकरा नाने परती-परांत जे कुनू तरहक आठ कट्टा जमीन खोखरी हवाक बाही। खाना मे छात्रक नामक अमान नहिइ के होइत छैक। असली स्थिति देखने के करैछ। तजानी बीन्दबाइ। गोट बीन्दबाइ। गामक बते जे अवेइ छौंटा छल आ खार के 'इन्दिरा-संकेत' बना, जे मैथिल त नहि पाठ क सकल मुदा कुनू तरहे माध्यमिक प्रमाण पत्र उतर क लेने अइ—एहि स्कूल मे लिखिक बनि गेल। ई भिल बात भेले जे ओकर, संस्कृतक हिल्लक तक नहि करय जवैत छैक। एगो शिक्षक महीदय विगत बरसक, खाता खाता तैयार करैत छलाह बाइ मे हमरा सोने मे लिखलनि 'ओध्या अवकाश'। एहि तरेह संस्कृतक केहन विकास होइत से त बुरल्ले अइ तखन मैथिलीक अहित अवसे होइत। हमरा लोकनि संस्कृत-पाठ-खाला मे पढ़ने छी मैथिलीक माध्यमे। संस्कृत पाठ्याला मे व्याकरण, श्रोतिष वा न्याय सम मैथिलीक माध्यम सं पढ़ाओल बाइत छल। आशुक एहि मूलक भाषा हिन्दी छैक संस्कृत एक विषय अनिवार्य, अवल्ले रहैतक परञ्च आन विषय सम अंग्रेजी स्कूल सन रहतक आ तँ विद्यार्थी जानू सक अन्त-गत छात्र मैथिली नहि पढ़ना छेउ बाइ कइल बाइत। एकर सन्दर्भ ने, कही सं संस्कृतक सरासर सत्ताक चङ्कर गाछ रोपबाक ई धड़पंत्र थिक।

—अग्रपट्ट

मैथिली आन्दोलन

मैथिलिक आन्दोलन बनब' पड़त

भारत आ नेपालक समृद्धिवासी भाषा । नहि रहि सकत ! एहि निराशाक की कारण परिवारक सदस्य होइतो मैथिली के अपन वाक्पिब अधिकार नहि भेटलेक अछि । चौदहम शताब्दी सं आठम शताब्दी धरि ले हम शताब्दी सं आठम शताब्दी धरि ले मैथिली सम्मानित भाषा रही मे गेलहु । मैथिली सम्मानित भाषा रही मे स्थान नहि पाबि सकल अछि । भारत नेपाल मिलल तीन करोड़क दावा बजनिहारक होइतो आइ शसकीय निकाय सं उपेक्षित पड़ल अछि आखिर की कारण छै एहि अवहेलनाक ?

एकर पृष्ठमे खोजाखे मैथिली भाषा के संग कण्ठगेल वर्ग वादी बलात्कारी सम के कलई खोल पड़त । मैथिली के पोती भेटारी किवा पोथी-पतराक परिचिने समेटिके रखनिहार पुस्ता संस्कृतह पंडित लोकनि एकरा बत जीवन सं काटिदेल खीन्ह । ब्राह्मणतंत्र वर्गक लोक एकरा अपन भाषा मानना पर तैयार नहि भेलाह । हुनक मानसिकता मे अटकल पचल बे सन्देह रहनि से क्रमिक व्यवहार सं पुष्ट होइत गेलन्हि आ ओ लोकनि अपनाके मैथिली भाषा सं पराक राखि लेलन्हि । आ जेकि ओ वर्गजे दावा कमनिहार वर्गक शतमति-शत बेसी छल, एहि दीशि रूचि नहि देखै लक एकर विराट भाषाभाषीक सूची होइतो एकरा अलख वर्गक भाषा हलवाक सरकारी ठप्पाक मारि भोग पड़ेलेक मैथिली के ।

भारतमे नहि, नेपालो मे सरकारी स्तर किवा उच्च सरकारी ओहदाक लोक सम ससरि ई० बरि इन्हइ धारणा बन मोने छलाह जे मैथिली एक वर्गक मात्र भाषा थीक । मुदा तकर परिवर्तन एत भंगेलक अछि एत बहुजांशमे लोक एहिदोष सं मुक्त अछि ।

भारतीय क्षेत्रमे हमदेखत छी मैथिल वर्गमे विराट अस्तमानता । भाषा ले के एखनो लोक मैथिली अर्थक भाषा अछि से कहबाले आन्दोलन करैत अछि । समा करैत अछि-पत्र पत्रिका मे विचार छपैत अछि । ई दुर्भाग्य नहि तँ भार की मेल । पटना दरभङ्गा सहरा, खजौली, बयनगर, रहिका, कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई सभठाम मैथिली भाषाक मान्यताले संगठन आ कार्यकर्ता सक्रिय छथि । बरोबरि कार्य क्रम सभ घोषित रहल अछि । लोक सम अमल सेहो करैत रहलाह अछि । मुदा, हमरा अनिते दिनका सभके बाहिरुपमे सहि योग भेटबाक चाही ताहिरुपमे कोनो कोन सं भेटैत नहि होयतनि से हमरा ओरे विस्वास अछि । एकरो मूल मे उण्डइ भाषा सम्बन्धी असमंजसता प्रमुख कारण मानल जा सकैछ ।

मैथिली पत्र-पत्रिका निकलैत अछि । एखन तँ व्यावर्तन पत्रिका आ खब हमरा आगामे राखल अछि । बहिसा खुशी होख अछि ई बापारण्ड दौर देखिक । तहिना कतौ दलक भान सेहो अछि ई दीर्घ बीबी

नहि रहि सकत ! एहि निराशाक की कारण मैथिली भाषाक प्रति समवेत आकर्षणक अभाव ।

मैथिलीक पुस्तक सम निकलैत अछि । मैथिली अकादमी सन-सन मात्र सरकारी संस्था निकालि पाबि रहल अछि । सेहो ओकर तीनगोट लक्ष्यमे एकगोट मात्र पुरा म रहल छैक । मुदा एहि सं अतिरिक्त मैथिली पोथी प्रकाशनक की इलित छैक । एक तँ प्रकाशकक अभाव छेना नहि सकत । जं छविमेनेल तँ कीनत नहि । एकर-मूल मे सेहो सम्पूर्ण मैथिल के भाषा साहित्यमति ल्हावक अभाव मानल सदाका चाही । आखिर मैथिली सम्बन्धी कोनो विकास क काब मे सम्पूर्ण मैथिलक असहयोग क्रियाक महत्पूर्ण बाधा अछि । अग्रज भाषा आ साहित्यक प्रति विराग कसी लेल । तँ हम कहब कहियो ब्रजभोल अनुरजानी मे संसल लोक अछरगेल अछि । भोलिया गेल अछि ।

तएँ मैथिली आन्दोलनकेँ दू दिशा मे मोरू । एकटा गाम दीधि-दोसर अधिकार दीधि । एकटा महत्वपूर्ण दिशा मेल गाम-गाम, घर-घरमे पेल । मैथिली भाषा अहाँक भाषा थीक से ओकर चिनवागमे लिबाउ । ओकरा बालबच्चा, से समाज दे-दीवाट समक दीमागमे भरू । ओकरा महत्वदीओ । ओकर पढ़ल लिखल समाज केँ मंचदीक्षीक, हाथमे अँझा टीझीक, नेतृत्व टीझीक । ओहमकेँ ज्ञावियौ ओहियोक । ओ वर्ग जागत मैथिल जागत आ चलन मैथिल जागत सम्पूर्ण मैथिली जागत । मैथिली आन्दोलनकेँ मैथिलक आन्दोलन बनाउ ।

—राममरोस कापड़ि 'धम्म'

कलकत्ताक टेलावाला

ओतबा बगइ रहैत छैक जे एक आदमी-ओइ मे पेरि केँ टाढ़ म सकै । बल्लक स्थान मे इण्ड आदमी गौदी पीचै । नाथिक नीचा रस्सी पर जोर देत आ हाथ सं हुनू बाँध पकड़ैत । पाछा सं एक आदमी टेलेत रहैत छैक । भरियार लोक भेजे खसता अनुसार एक अथवा दू आदमी हुनू कात पहियाक पाछा सं चोर लगवैत छैक । कोनो कोनो टेला मे खुआम स्थान पर हाथ दु-एक बाँध रहैत छैक चकरा हुनू दिस दू आदमी पकड़ि केँ बीचैत ।

कलकत्ता मे लगभग १० हजार टेला छैक चकरा बैसी भाग बड़ा बाजार मे छैक । बड़ाबाजार व्यापारक केन्द्र हेवाक कारण काब भेटव सजस होइ छैक । आन अँवलक टेलावाला केँ कहियो काब भेटैत छैक कहियो नहि भेटैत छैक । बाइ बाट मे टूक टेम्पू नहि जा सकैछ टेला ताहू बाटे चलि बाइछ । दोसर सामानक मात्रा कम रहने टूक टेम्पू केँ भाड़ा मे लाभ नहि भ सकैत छैक स्वभावतः टेलाक प्रयोजन ।

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

बहिनदाइक नाम एगो चिट्ठी

बहिन दाइ !
अहाँक चिट्ठी भेटल छल मुदा खताया देबा मे भेल बड़ विलम्ब पुरि किए कही जे/छलहु' बड़ व्यस्त सरियहु' की लिखी/वा किएक लिखी तकरे नजि क पओने छलहु' निर्णय तँ बहिन दाइ !
उतारा देबा मे भेल विलम्ब ।
बहिन दाइ !

हम खनेत छी जे अहाँ एहुँबेर बनओने हएब शामा-चकेबा तकने हएब हमर नाट लंगलपर आंगि विरदावन मे / आ नजि पाबि हमरा भेल हएब उदास / बहल हएत आखि सं दहो-बहो नीर ।
किन्तु बहिन दाइ !

अहाँ मानी वा नजि मानी थिक बरि ई सत्य / जे कुन दावानल केँ नजि मिभाओल जा—सकैछ सोवनी लोटा सं/आ,
जेना अहाँ लिखने छी—

ठीके हम बड़ बदलि गेलौहै हम बुझैत छी / जे विरदावन / ओ विरदावन नजि रहि गेल-ए आइ / एकटा नाजि हमारक हमार खुमिला जनमि गेल-ए / आ इण्ड विरदावन थिक ओकरा सभक स्थायी आवाज एकर पुरान गाल समक घोघरि मे एक सं एक अनोख विषयर करेए निवास आइ

एहिठामक वसतो आइ विषयुक / सोसो हेवाक अनुपयुक्त तँ

हमरा विचारें / एकरा बसिए गेताह थिक नीक

निमेषवाक प्रयास सर्वथा अनुचित

शक्तिक अपव्यय / जे करवाक थिक संचय

आगामी कालिक निमित्त

बखन कि हमरा लोकनि लगाएब

निश्चिते लगाएब / एगो नव विरदावन

पटाएब / हुनू डबरीक पानि सं नजि

अपन धाम सं / आ फुलाएब

रंग-विराक फूल / अपन आशाक अनुकूल

अपन कल्पना केँ देव वास्तव रूप ।

बहिन दाइ !

हम मानैत छी / आ अहूँ मानव

जे आइ / अपनने गाम मे

हम सभ छी अनटिया-अनचिन्हार

बकर नजि छर डुनू पता-ठेकाना—

सरिपहु' कतेक अवहय थिक ई पीड़ा

मुदा/ताइ लेल

कयमपि उचित नजि कानन / वरम्

चीन्हव अपन शक्ति आ

बाहरोक शब्द केँ अकानन—आ

एगो भण ठानव

त कालि—आगामी कालि

हमरो एगो परिचय रहत

विरदावनक हम—हमर विरदावन ।

—राजलोलन ठाकुर

चिढ़ी पुरजो

देसिल वयनाक प्रवेशाक भेटल। कतेक नौक लामक से वर्णन नहि कइ सकइत छी। वास्तव मे पत्रिकाक भाषा, विषय आओर सफादन केस सुन्दर आर उपयोगी भेल अछि। इहि प्रयास हेतु अपना दिलि सं आर 'मैथिली समाचार' परिवार दिलि सं शतशः अभिनन्दन आओर शुभकामना स्वीकार करू।

—डा० रुद्रकान्त मिश्र, इलाहाबाद
देसिल वयना पहुँचल। मन प्रजुछित भए गेल। हम शार्दिक शुभकामना व्यक्त करैत छी ओ पत्रिका पलख जुलइ से कामना करैत छी।

'देसिल वयना' जन जीवनक प्रतीक बनइ से हमर इच्छा अछि आ तबने विद्यापतिक भाषाक समुचित समर्थन होएत।

'विनु भाषाक लोक अछि

जानू मृतक समान

चरैत घास पीवैत पानि

मात्र पशुक समान'

हमरा आशा अछि ओ पूर्ण विस्वास करैत छी जे अपने लोकन जाहिलप सं मैथिली माक सेवा करैत छी तकर मूल्य भावी पीढ़ी पेवे करत।

—डा० मदन मिश्र, भटपुरा

जहूना देखल वयना सब जन मिट्ठा तहिना ई पत्रिका सम मैथिल पुत्र के मंद उगेत रहैत आ ई अनवरत प्रकाशित होएत रहैत इहो हमर विचार अछि। हमर सभ शुभकामना आ सहभाग बनल रहैत।

—सूर्य नारायण मंडल, नई दिल्ली

देसिल वयना लेल बहुत रास शुभकामना। भस्मिह वरयोग देवा मे पाछू नहि हइव, विस्वास राबी। अगिला अंक सं न्यूज अपूर्ति करव।

अपने लोकनि मैथिली लेल ज्ञान-प्राण छगा देने छी। हमरो छान लोकनिक किछु कर्तव्य भय बाइत अछि जकर निर्वाह करव, से आशा अछि।

—बोरेन्द्र मा, दड़िभंगा

देसिल वयना के पहिल अंक देखलौं। ओ ई 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' के प्रमुख मासिक पत्र थिक तखन एकरा एतेक सामान्य ढंग सं छपने मुक्ति मोर्चाक अयश हैत।

हमर निवेदन जे एकर प्रकाशन स्तरीय ढंग सं केल जाए। मुक्ति मोर्चा एखनवरि की सभ कयालक आ भविष्य मे की सभ करवाक योजना बना रहल अछि से ईमानदारी सं छापि देल जाए। ओहि अंकक एक प्रति श्री बरेन्द्र कुमार पता सं पठा देल जाए। 'मिहिर' मे एक बेर ओ मुक्ति मोर्चाक प्रति किछु अपमानजनक शब्द-समक प्रयोग कइने छलह, जकर जबाब हम 'मिहिर' मे पठा देने छलौं।

—नवीन चौबारी, हवड़ा

अङ्गणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री मोहेश्वर भा द्वारा प्रकाशित तथा पावनित्वर आर्ट मिट्टर, ३२-बी, बुन्दारवाला ब्याख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री बनार्दन झा

मिथिला एक्सप्रेसक सामने धरना

हमरा लोकनिक उत्तर कलकत्ता प्रतिनिधि जनश्रोतनिहे से मत २५ अक्टूबर के विद्याल संस्था मे मैथिल युवक लोकनि शवका टीशन पर कामा भेलाह आ पञ्चातरेल पटरी पर धरना दय मिथिला एक्सप्रेस के पञ्चातरेल पटरी पर धरना दय मिथिला एक्सप्रेस बाद मे अधिकारीक आश्वासन भेटलाक बाद पटरी मुक्त भेल आ स्वाभावतः गाड़ी घंटाभरि विलम्ब सं प्रस्थान केलक। युवक लोकनिक मांग छलनि जे उत्तर विहारक लेल मात्र दू गोटा गाड़ी देवाक कारणे बड़ दिक्कदारी होइत छैक तँ गाड़ी-बढ़ाओल जाय। पूर्व रेलवेक मैनेजर महोदय अपन आश्वासन पूरा करवा लेल छठि पावनवरि शवका वरौनीक एगो स्पेशल गाड़ी देवाक घोषणा तकर पराते क चुकल छथि। ओना त उचित छलक जे गाड़ी समस्तीपुर तक बाइत आ रोक बाइत, परञ्च...

मिथिला आ नार्थ विहार एक्सप्रेस—इएह दू गोटा गाड़ी हावड़ा सं पहिने समस्तीपुर बाइत छल आ आब गोरखपुर तक बाइत। गोरखपुर चल गेते एतेवरि अवस्थे भेलए जे भीड़ बढ़ि गेलए आ देसिल वयना आबुक आन्दोलन-सक कार्यक्रम मे जाहि सं मैथिली ओ मिथिला के नव स्फूर्ति आ मृतप्राय आत्मा मे संजीवनीक संचार करय एहि लेल हमर हार्दिक कामना अछि। पत्र-पत्रिकाक पृष्ठ पर कोनो भाषाक संघ चलेत अछि। देसिक वयनाक प्रथम अंक देखि केने माने सतोष अछि। मुदा एकर प्रभावता पर सन्देह जामना बाइत। कारण एकरा संगे एकटा पृष्ठक अभिवृद्धि आवश्यक। देखि वयना अपने मेव मात्र स्वर मे सुलभ-विह-रल, झुंझ-पिछड़ल, भांग-ताड़ी-याँजा मे खुबकी लेत मृतप्राय मैथिल जनमानस के उद्देखित करय एहि लेल हमर आग्रह अछि। हमरा जे सहयोग करव से देव।

—वेदनाथ विमल, गलमा

□ प्रिय पत्रलेखक सन्तुषाण!

वय मैथिली।

सुभाव आ सहयोगक आश्वासन लेल आभारी छी। एक खेप फेर कहि दी जे 'देसिल वयना' आन्दोलनक पत्र थिक, फेसनक नहि। एकर कइय आन्दोलन-सक चेतना जाग्रत केनाइ थिक—देखल ओना बहुश्रोताह नहि। एकरा ताही दृष्टिसे देखल जाय। जे एहि मे कोनो खासि शुभना जाय तँ मित्र-मित्रोव लिखी, ताइ तरहक रचना पठाबी—हमरा लोकनि तकर स्वागतैत नहि करब—आभारी सेहो रहव। पत्रिका अपन उद्देश्य मे सफलभूत तखन होएत जखन कि एकर प्रवेश गाम-गाम मे होइत—ई जन-जग। लय पढ़ि सकए। एहि कार्य मे अपने लोकनिक सहयोगक अपेक्षा अछि र भ्राते प्राप्त होएत—ताही विश्वासक संग—

—सर्पादक

एहि तरहे जे उपार्जन करै, ताइ मे अमन खर्च आपरिहार के प्रतिआडर। खेना इक लेल एकरा लोकनि के बेसी चिन्ता नहि रहैत छैक। कत' तत' मोड़ पर सगु-आ' बला बेसल रहैत छैक। सगुबा' यनि पीथि दुसप बाइए। राइत मे टेलेपर सूति रहल। दिक्कदारी होइ छइ, वसिक्काल'मे। परञ्च घर भाड़ा लेवाक दम रहैत नहि छैक। केहनो टुटली महुँया छैत केहनो अंचल मे छैत से देह से स कम मे भेट निहार नहि। दुरस्थ गेते काज मे असुविधा हैतक। फलतः कतिन परीशमक परचालो खान पानक ठीक नहि रहैत छैक आ तँ इएह लोकनिक देह पर कहियो माउल नहि होइत छैक।

एहि घंघा-मे बेसी लोक भोजपुरी क्षेत्र क अइ। मिथिलांचलक मुँगेर, गुज्जरपुर, पुर चम्पारनक मधहर सभ अइ। मधुबनी दड़िभंगा आदि क्षेत्रक मधहरक संस्था रिक्का मे बेसी छैक ठेला मे बड़ थोड़। से जे कुतू घंघा मे किछक ने हो समक-अम आ आर्थिक स्थिति समाने छैक। समक संग अपन डीह डावर छोड़वाक विवसता छैक' जीवनक प्रति मोड़ छैक आ अमक प्रति निष्ठा छैक।

—मुलतया अली

बाल गीत

हुक्का-लोली

हुक्का-लोली लेले छी हम
मन्डार के भइकाने छी हम
आधाबार भगान छी हम
मैथिल-पुत्र कहावे छी हम ॥

महरी के ललकारे छी हम
दुराचार के चारे छी हम
अन-धन-दक्षरी घर के छी
निर्धनता बेलवे छी हम ॥

भेद-भाव के भेदवे छी हम
दम-द्रेप के घटवे छी हम
बाट-बाट मे दीप बरा के
घर-घर श्योति बगाने छी हम ॥

परिजन, अखिन हो वा हरिजन
सम सं हाथ मिलाने छी हम
हुक्का-लोली गीत गवे छी
नव उछाय पतारे छी हम ॥
—सूर्य नारायण मंडल

कह लोचन कविराय

चमचा गुण के खान थिक कईछ
जकरा चमचा छइ जते से ततवैक महान
से ततवैक महान राजनेता युग चैता
प्रागतिशील कवि, कथाकार, शिल्पी, अभिनेता
कह लोचन कविराय करय सभ संभव बसबा
भारत भास्य विधाता जय-जय-जय हे चमचा

छलछलकाक टेछावाछा

टेछावाछाक मेहनति तेहो रिकसावलाक
अनुत्पे छैक। बड़ा-बाबा अंचल मे एक
टेछाक दैनिक आमदनी ५० सं १५० तक
होइत छैक बाइ मे तीन स चारि आदमी
तक रहैत अह' एहि मे चालिख टाका महि-
नवारी शानाक सलामी लगैत छैक। ताइ-
पर सं दिन मे ५-१० टाका ट्राफिक पुलिस
के देमय पड़ैत छैक। पुलिसक गारि आ
दुरचरन उपकरे मे भेटि जाइत छै।

सुभाव आ सहयोगक आश्वासन लेल आभारी छी। एक खेप फेर कहि दी जे 'देसिल वयना' आन्दोलनक पत्र थिक, फेसनक नहि। एकर कइय आन्दोलन-सक चेतना जाग्रत केनाइ थिक—देखल ओना बहुश्रोताह नहि। एकरा ताही दृष्टिसे देखल जाय। जे एहि मे कोनो खासि शुभना जाय तँ मित्र-मित्रोव लिखी, ताइ तरहक रचना पठाबी—हमरा लोकनि तकर स्वागतैत नहि करब—आभारी सेहो रहव। पत्रिका अपन उद्देश्य मे सफलभूत तखन होएत जखन कि एकर प्रवेश गाम-गाम मे होइत—ई जन-जग। लय पढ़ि सकए। एहि कार्य मे अपने लोकनिक सहयोगक अपेक्षा अछि र भ्राते प्राप्त होएत—ताही विश्वासक संग—

—सर्पादक

प्रगति रचना

वर्ग—१ अंक—२

दिसम्बर, १९८१

मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

६ दिसम्बर

बर्ल में तीन सप्ताह पश्चात्ति दिन होइत अछि। बेरा-बेरी एक बेर क सभ अवेत अछि आ चल बाइत अछि। दोसर तरहे कही त वीति बाइत अछि। काळक्रमे लोक ओकरा विचरि बाइत अछि। फेर दोसर बल अवेत छैक आ ओहिना वीति बाइत छैक। ई नियम आदि कालहि सं चलेत आबि रहल अछि आ बाबुरि बिस्व-व्यापक रहत चलेत रहत।

परजब जो कोनो नियमक अपवाद होइत छैक। बहु नियमक अपवाद छैक। अपवाद होइत अछि ओ दिन जो कोनो व्यक्ति, समाज वा बातिक मानस पटल पर एगो अमिट छाप छोड़ि बाइत अछि। ई दिन बखन अवेत अछि त अपना संग ओहि विशेष बटनाक कथा-गाथा केँ जेने अवेत अछि आ लोकक मानस पटल परक विस्मृत प्राय स्मृति केँ पुनः नव क बाइत अछि। ६ दिसम्बर मैथिल बातिक लेल एहेने एगो दिन थिक, गौरवपूर्ण दिन। बल रूपी आकाशक तीन सप्ताह चओषाडिटा नखत्रक बीच सूर्य सन गुरुर प्रचंड नैबोदीस।

६ उपर दिन थिक कहिया ग्रामांचल सं प्रवासवरिक मैथिल पटना में बसा आबि छल। मेरु छल अपन संविधान सम्मत अधिकार प्राप्ति सं वर्ष छेल। बसा मेरु छल मायक दूबसन पवित्र अरुन मातृभाषाक न्यायोचित सम्मान-अधिकार प्राप्ति सं वर्ष छिउ। ई उपर दिन थिक कहिया मैथिलक सिंहाद सं गगन गुंजायमान मेरु छल, शहर दलमलित मेरु छल। ई उपर दिन थिक कहिया न्यायक-गोरखाधारी अन्यायी जगन्नाथ मिश्रक सरकारक बोरखा उत्तरि गेल छलेक, आसन डगमगा मेरु छलेक। सरकारी बर्दीधारी गुंडा सभ आतंकित भ उठल छल। लाठी गोलीक बल पर बनल आ चलेत सरकार केँ फेर लाठी-गोलीक सहारा लेसय पड़ल छलेक। परजब तैयो सिंह शावक सन निबर मैथिल सेनानी सभ अपन लक्ष्यपथ पर बढ़ैत गेल छल। ओकरा पर लाठीक प्रहार होइत रहलेक, ओकर रक्तक चार बहैत रहलेक किन्तु पहर पाछू नहि मेलेक, मुह सं आह नहि बहरेलेक। बहरेलेक त उपर आकाशी नारा—हिन्दू मुसलिम बीर बवान। हम सभ छी मिथिला सत्ताम ॥ हमरा चाही माइक बोल। आनक बोलो दूरक टोल ॥

आ तें ६ दिसम्बर अन्यान्य तिथि सं पराक अछि, महत्वपूर्ण अछि, अविरमणीय अछि। ई उपर दिन थिक जे मैथिली आन्दोलन केँ नव मोड़ देलक, सही रूप देलक आ मैथिल जाति केँ एहि कलंक सं मुक्ति दिअमेलेक जे ओ अपन अधिकार प्राप्ति लेल संघर्ष नहि क सकैत अछि, 'शोणित नहि' बहा सकैत अछि। आ तें मिथिल-मैथिलीक इतिहास में ई दिन अमर रहत। अमर रहत कलकत्ताक मैथिली मुक्ति मोर्चा। अमर रहत पटनाक निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ। अमर रहत मैथिली पुत्र नखुनी भों, सुशील, विजय पाठक तथा अन्यान्य समस्त मैथिली सेनानी लोकनि।

६ दिसम्बर अमर रहत। ई प्रतिबल आभोट आ बाबुरि मैथिली केँ समस्त न्यायोचित अधिकार नहि मेदि बाइत छैक-बाइले छ कि आन्दोलन मेरु छल—मैथिल जाति केँ अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक उद्धारक लेल, अपन मायक दूधक लब रालेक लेल उसकत रहत। ई प्रतिबल आभोट आ मैथिल जाति केँ अपन सहोदरक शोणितक बदला लेनाक लेल उसाहित करैत रहत। ई प्रति बल आभोट आ मैथिल जाति केँ ओकर अग्रवक्ताक कथा-गाथा कहि-कहि प्रोत्साहित करैत रहत, कसब्यक स्मरण करैत रहत। ई प्रतिबल आभोट आ मिथिलाक अभिनव जयचंद-मिर्जाफर स्मरण दियेवत रहत, ओकरा प्रति घृणा भरैत रहत आ मिथिला केँ एहि जयचंद-मिर्जाफर रूपी कलंक सं मुक्त करवाक पाठ पढ़वेत रहत।

६ दिसम्बर मिथिलाक लेल ओहिना थिक जेना बंगालक लेल २१ फरवरी। फर्क एतबाधरि अक्से छैक जे २१ फरवरीक इतिहास बंगालक रचा-बसा केँ जानल छैक—स्मरण छैक आ तें बचा-बचाक कंठ सं सुनल बाइत अछि—आमार भाइर रक्ते रंगो

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुझाह कख हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

मैथिली आन्दोलन

एकांगी इतिहासक कुफल

कहिया कहियो आ बतय कहियो मैथिली आन्दोलनक चर्च चलत त केओ केओ बाबुरि देताह-एह, मैथिली सं बतहु आन्दोलन मेलेण ? ई गप ततेक सहन-ताक संग बचल बाइए जे एहि में संदेहक जेना कुन गुं बाइते ने रहैक, विचार कर-बाक कुन लागते ने होइक। विद्वान-बुद्धिमान लोकनि अपन बातक सत्यता विद्व-करवा छैल मिथिलाक मौगोटिक-देहिहा-विकि विभक्ति पर व्याख्यान देताह, मनहि लोक विचारा करओ वा नहि। परजब ज सत्य पुछल बाय त बाबुरि केओ महासु-भाष बहिरि नीक बर्ना विचार नहि क पओलनि अथवा विचार करवाक खगता नहि बुझलनि। तें आइ एकर बड़ बेसी खगता छैक जे आर विलम्ब नहि क एहि विषय पर नीक बर्ना विचारल बाय। विभिन्न दृष्टिओ विभिन्न कोन सं विचारल बाय

हमरा बनवै ई गप किछुल निग-घार अर जे मैथिल जाति आलसी होइए, डेखुक होइए आ तें ओ मेहनति नहि क सकैए, आन्दोलन नहि क सकैए। ई गप सत्य जे बाइतास जीवन-यापनक साधन सुलभ रहैत छैक ओ थोड़वे श्रम में उप-लब्ध भ बाइ छैक ताह तामक लोक बेसी परीश्रम नहि करैए। क्षमिभाव मिथिल-देशक मांति ततेक ने उपबाउ छैक, प्राकृ-तिक सम्पदा तते बेसी उपलब्ध छलेक जे निविवाद लोक केँ ओइ मेहनति बेनहि सत्ता सहबता सं जीवन निर्वाह भ बाइत छलेक। पूर्व में लोकक संख्याक संगहि खगता सेहो सीमित छलेक आ संभवक प्रवृति आइ कालिखन प्रबल नहि छलेक।

सम्पदाए आइ विपदाक मूल बनि गेल छैक। कलकत्ता, पटना, दिल्ली, प्रभा-बर्हि देखू मिथिलाक मजदूर दिन राति अपन बाम चुभा रहल-ए। रिक्ता, ठंढा, भूका हो वा चटकल, गंभीरक, प्रेस, ट्राम, चर वा अन्यान्य कारखाना मैथिल मजदू-रक भरमार छैक। परजब जे पाइ ओ उपार्जन करैए तकर सिंहाग परदेश में खर्च भ बाइ छैक। ज ओकरा अपने देव-कोस में चाकरीक सुविधा रहितक त निविचते ओकर आर्थिक स्थिति आइ दोसर तरहक रहितक।

आहापरि दोसर आतोपक प्रश्न अइ जे मैथिल जाति बीरवंका नहि होइए। ओ लड़ाकू जाति नहि अइ सेहो निरावार (शेषाघ पृष्ठ ७ पर)

एकुनो फेरबारी, आमि/भुल्लै पारी ? ठीक बंगाली जाति एकरा नहि विचरि सकैत अछि। २१ फरवरीक परिणति थिक बंगला देश। ६ दिसम्बरक परिणति एखन सामने नहि आयल अछि। एकर ख्याति २१ फरवरीसन नहि भ पओलकेक अछि। परजब तार में ६ दिसम्बरक कोन दोष ? ई दिन मैथिलीक साहित्य कारक अवचेतनाक परिचायक थिक।

६ दिसम्बर १९८० क मैथिली आन्दोलनक नख पुरा भ रहल छैक। बंगाल बर्को हमरा लोकनि एहि अवसर पर कोनो सभा समवेद्य नहि क रहल छी परजब एहि पवन अवसर पर फेर अपन ग्रथ केँ दोहरवैत छी जे बाबुरि मैथिली केँ अपन समस्त न्यायो-चित अधिकार-सम्मान नहि मेदि बाइत छैक, हमरा लोकनिक संघर्ष जे ६ दिसम्बर १९८० केँ आरंभ भेल छल, चलेत रहत। 'देखिल बयना' एहि मुक्ति चेतनाक संवाहक बनत। एहि लेल ओ मैथिलक जातीय चेतना केँ बगाओत, जातीय एकता केँ सशक्त करत आ संघर्ष चेतनाक निर्माण करत। मिथिलाक सर्वोच्च विचारक, अतीतक त्रिभुवन विख्यात मिथिला केँ भविष्य में विस्मयित अनेबाक बल्पना केँ उबारार कात, ओकरो साकार बनेबाक पथ प्रशस्त फल। एहि पुनीत कार्य में हमरा लोकनि समस्त छेलक—पाठक लोकनिक सहयोगक अपेक्षा करैत छी।

जय मैथिली

६ दिसम्बर, १९८० : एकटा अभिमत संस्मरण

ई कहऽ नहि पढ़त जे कोनो आंदोलनक पुछभूमि बुद्धिबिबी बर्ग तैयार करैत छैक। कोनो सामूहिक समस्या छेल ई वर्ग अनपेक्षित एक छुट भऽ जाइत अछि। ई मानऽ पढ़त जे मिथिला मे सेहो एना भेलैक अछि। समय-समय पर गोछी, सभा मंच आ पत्रिकाक माध्यम सं आवाज उठाओख गेलैक अछि। मुदा एहि तब ने नीहित स्वार्थक प्रमुखता रहलैक। तथा कथित मैथिली सेवी मैथिली मिथिलाकें आशू में राखि अपन उल्लू सोझा करवा मे धात रहल। कोनो ने-कोनो तरहें अपन स्थान समाज में बना लेबाक लेल लोक केँ उकते रहल। एहि सं मैथिली मिथिलाक काज पछुआइत गेलैक। आ मिनीफरक पताका फहराइत रहलैक। एकर श्वलंत उदाहरण अछि वर्तमान विहार सरकार आ ओकर मिथिलाक प्रति किया कलाप, मुदा मैथिल एहि लफ्फा सब सं कदिया तक उकाड़त रहत ?.....आ तकरा जवाब देलकैक कि दिसम्बर, १९८० क दिन।

६ दिसम्बर, १९८० क पहिने तक लोकक चारणा रहैक छै मैथिल आंदोलन नहि कऽ सकैत अछि। अर्थात् खून नहि कूँड सकैत अछि। मैथिल पनिमरु होइत अछि, ते ओकर जांच या गर्म-गर्म अभिव्यक्ति चिनगार आ धूरे तक रहैत छैक, ओकर साहस आ पैरुख टाट झुकावऽ आ आरि छाँटऽ तक रहैत छैक, ओकर बुधियारी समिलो आ परीक्षा पाव कऽ तक रहैत छैक। मुदा, ६ दिसम्बर, १९८० एहि चारणाकें मिथ्या प्रमाणित कऽ देलक। तथा कथित मैथिली मिथिला सेवी केँ दसि आगुर काटऽ पड़लैन। मैथिली केँ मचा कऽ लापवला मिलजक साथ ठनकि उठलैक। गोलेही आ तिकम लगाकऽ मंच पर सुशोभित होवऽ बलाक होस टिकान पर आबि गेलैक आ समस्त बेसी 'लोकप्रतिनिधि' तथा मिनीफरकका छूटि गेलैक, ओकर कुर्सी डोकाड लगलैक।

खुल्लू गाँधी मैदानतें आरम्भ भेलैक। विश्वास रहैक जे पटनाक बुद्धिबिबी मैथिलक अमार लागि जेतैक, मैथिलक भीड़ गाँधी मैदान सं छेकऽ आर बछाँक परि छैक जेतैक। एहेन विश्वास कऽ लेवा मे कारण एहि सं पूर्व बनता सरकारक समय पटना मे मेल एकटा आर प्रदर्शन नाहि मे पटनाक स्टूट आ टाह धारीसभ सेहो मैथिलीक सपूत कहवऽ मे लाजक अनुभव नहि कयने रहथि। मुदा एहि प्रदर्शन मे हुनका लोकनि केँ कोन भय, केहेन बाबा बस

केलकनि नहि जाँचि सरकार ककर आ ककरा लेख ? तकर शान नहि रहलनि ? सभ्य अछि जे एहनो तक मैथिलक अर्थ ओ लोकनि किछु सुझी भरि तथा कथित सभ्य लोक तक सीमित राखबाक चेष्टा मे छबिमुदा, एहि गलत चारणाक निराकरण ६ दिसम्बर, १९८० क दिन कऽ देलक। असली मैथिल-पुत्र सब माटिक रंग छाल कऽ देलक। बाँ आबो अपरत सब हेर बनल रह्य त जनताह ओ, आ जनतानि हुनकर भविष्य। ई बात अवस्य छैक—ने अपरत मरय ने छुतहर कुट्य अर्थात् अपरत लगले नहि मरेत अछि। मुदा ओ मरत अवस्य ताहि मे संदेह नहि।

ओहि दिन चोटाएल संतान सभ केँ दबाइ-वीरोक जरूरति छलैक। ओम्हर किछु लोक चिन्हार होवऽ लेल प्रेस मे पतियानी मे ठाढ़ छल। एम्हर ओकर संगी कुहरि रहल छलैक, ओम्हर ओ सभ अलवारक पना मे अपन-अपन नाम छपवऽ लेल देहाल छल। एहि सं बेसी निरक्षरता आर की भऽ सकैत छैक ? एहि सं बेसी प्रशुता आर की भऽ सकैत छैक जे सुबा आंदोलकारी लाठीक सारि सं मोचबाय भेल छल, आ ओम्हर किछु लोक सत्ता-चारीक ओतऽ चिन्हा-परिचय करवा मे, हुनकर खतन करवा मे लागल छलार।.... बाह रे विवेक।

जे होइत छै से नीके होइत छैक। बहुत केँ चिन्हवाक मौका लोक केँ भेटलैक। ओकर छल-बल-कल देलबाक अवसर रहलैक। एकटा कहबीयो इहने सन छैक—कुम्हिये मामो, कि सुकिये नाभो। केहेन हास्यास्पद बात—जे एगो कयु इसर दर्दक बीगैया नहि कऽ, कहलनि—इमही इंसि मेळौ तऽ कहुना नाभो छेतै। इमरा लागल जेना ओ आर व्याकऽ पुलि-सक हँदिवा होथि।मुदा, तेँ कि लोक एहि सं इतोहाह भ जाइह ? तेँ कि इम अपन संवेधानिक अधिकार छोड़ि देव ? बाँ मरैत माटि लेल जाहि सं इमरा सभक शरीर बनल अछि। इमरा शरीर पर मात्र ओकरे अधिकार छैक नकर दूव पीवि इमरा सभक जीवन सं-चित भेल अछि। ६ दिसम्बर, १९८० एकर पक्का सबूत छैक। ओ दिन मैथिल संतानक बीवटक वस्तावेध छैक।

माय के माय कहवा मे लाब कयीक ? बयोधुद शेखर जी, सर्वश्री सीम भाद, प्रवाही भाइ गोकुल नाथ जी, पूज्य जी एवं भाइ राममोहन जी अपन कर्तव्य नीक जेकाँ निमाइत रहलार। मुखिया जी आ

विरंचि जी ? श्री चंद्रकांत झाँ आ श्री पीताम्बर पाठक पूर्ण सक्रिय छलाह कि केलेँ से किछु नहि, आ कहलक ते

बड़े अवकाश। एकदिस प्रजापंचक रक्षार्थ पत्र-पत्रिकाक निष्पक्षता पर जोर आ दोसर दिस प्रेस पर आन्तरिक दबाव। प्रेस बल कऽ देबाक समझौता। माटि-पानिक सन्तानक खून आर बछाँक चौराखा पर बहल, से भूँड, निरुद्धा शान प्रदर्शनकारी पर ताइमदीह लाठीक प्रहार भूँड : मैथिली तीन करोड़क भाषा, से भूँड, मिथिलाक मुखलमानक भाषा मैथिली, से भूँड, अर्थात् सीता, बनक आ विद्याप तक मिथिला भूँड।तखन सत्य को ?.... सत्य मात्र विहार सरकार बोवगा, आ सत्य मात्र सरकारी कुहरा द्वारा प्रेस मे समाचार केँ तोड़ि-मरोड़ि कऽ छवि देबाक बलाखार/रोखो प्रचारण मे नतमाना इल्लेख। तबतन इच्छेय।वे मायक नहि भऽ सकल से आन ककर ?.....तकर अर्ध-स्मरणीय मेल ६ दिसम्बर, १९८० जकर मुख्य नारा छलैक :—
हिन्दू-मुस्लिम बीच जवान,
हम सब छौ मैथिल संतान।

शोणित दे शोणित मैथिलार्थ

मिथिला गौरव डा० लक्ष्मण भा निथिल-मैथिलीक उदारक लेल आन्दोलन शैल हुनकेँ रहथि आ क्रान्तिदर्शी नीर कवि राधाचार्यक कलम क्रान्तिक चिनगी उगिलय लागल। मिथिलांचल सं प्रवासधरि पतरल मैथिलक बीच राधाचार्यक विहनाइ सुनाइ पड़लैक—शोणित दे शोणित मैथिलार्थ, प्यासे तकवल अछि खड़य हमर। किन्तु गाम-घरक सुतल खनामकय मैथिल धुंधु लेल घन सन। शोणित त दूर रह्यो, धाम पर्यंत देवाक कृपा नहि केलनि।

कारण स्पष्ट अछि। क्रान्ति चाव-बोनक फविल नहि थिक कोनो गाल-विरीछक फल-फूल नहि थिक। ओ त अदभ्य बीवती शक्ति, पौष पुञ्ज सं निरुद्ध लाल बाल, गरम-गरम चिनगी थिक जे अनुदुल्ल वातावरण पवित्रे घडकि उठैत अछि। एहि लेल समर्पित भावना, एकत्र निष्ठा, धैर्य, साहस आ संयमक संग मोन मे उच्चाल तरंग बना उर्ध्वगक लोलछहरि सनाइ आनखक। किन्तु एतय त विद्यापति पर्वक संघ सं उच्चाल तरंग उठैत अछि। विद्यापतिक पदावलीक संग उर्मिला नागरक आंचर, गोदर महाराजक तबला आ अकसरक पारखी राबनेताक मेघ-गर्जन (वर्षा नहि) सं उच्चाल तरंग उठैत अछि।

गुडबन्दी मे बख्त स्वार्थ लोछर, झुट्टा स्वाभाविक कतिपय कविक किछोल मे उठैत अछि—क्रान्तिक आइवान.... डा० लक्ष्मण झा केँ गारि पढ़व, राध-राचार्य केँ कुहरैत छटछटात छोड़ि देव,

बय-जय मेरवि ह्वारो बर्षधरि सुतला आ गथला सं की हतैक ? नाचरि झुड

शेषार्थ पृष्ठ ६ पर

बाहि सरकारक राजतंत्रक खाल ओड़ि लोक शिवक हतन करव कर्त्तव्य छैक, जे ओ संविधान मे ताल पर राखि शासन करैत, जे ओ गोली डंढा हाथे निरीह बच्चा, कुशकाय बूढ़ अवकाशनी पर निर्भर प्रहार करैत, ओकरा पर भरोसा कयनाइ कोनो तरहक औचित्य नहि रखैत अछि। जे नेता लोकनि भूतपूर्व सरकारक समय क्षमता केँ मैथिली-भक्त सावित करैत छलाह, जे प्रतिनिधि लोकनि आस्वास्त देत छलाह जे सत्ता मे अवेत देरी लोक मांग केँ पूरा अवसर करैत, हुनका लोकनिक चरित्रक कोन विश्वास ? सरकार मातृभूमिक संतान केँ एहेन कुख्यात संघ आ दल सं सम्बन्धित होबाक निरावार घोषणा कऽ सकैत अछि जाहि दलक एक भाषा फर्मुला मे विश्वास छैक, जे दल मैथिलीक नीर विरोधी अछि, मिथिला सपूत केँ कहाँ तक आरवऽत ? आ जे नहि आरवऽले तें ६ दिसम्बर, १९८० क दिन एकटा जगबियार अभिमत केँ एरति हास मे सदा सदा केँ लेख अंकित करैत मायक मुक्ति लेल संघर्षक शुभारम्भ कयकल।

— सुशील

छकैतो

आइ दू टा घटना घटले ।

मेखक नोकर चाउर-बालि, तीमन-तरकारी कीन' बराबर गेल रहए । ओकरा छूरा मिराक, चौरस्ता पर सन्दा छीनि लेलके आ तकर एक्के घंटाक बाद, माने एगारह बजे एकटा छोडा पोखरि मे नहराए गेले आ छवि गेले ।

× × ×
एवका हल-बैराह छे । चोरी, डकेती, छिनारी, हत्या, डाटे प्रभृति के खबरि सँ आब ककरो कोनो तरहर उल्लेखना, कि आश्चर्य, कि तामतव ने होइ छे । यँर किछु दिन पहिने सात बजे साँझ मे दू गाटे के घेरि क स्कूटर, घड़ी, स्पेया छीनि लेलके । जेना चौबक दाम चढ़ने लोक कम स-कम समान कीन' लगैए तहिना एहन समाचार सुनि-सुनि मिर-मिरा क रहि जाइए आ साँझ मे घर सँ बहरेनाइ बन्द केने जाइए । ओना कहल बा सके छे जे सबटाम त हएह रामा एएह खटोला छे । मुदा लोक बत' रहत तखनेक सूर-ताड गोल-माल देवाक बेसी चिन्ता हेतु मे ।

बीचन—जेना छुभी चलैत रहै छे ।
पेया अइ, अँक सँ कुशी लड़वाक ।
मे वाफाद रहो आही मे । बरख समस्त मेलेण से काब माने लेखा चढ़ि गेनाइ स्वाभाविक छे—तार पर सँ एक त दार मोरे बड़ दोसर नहेलीहे । अर्थात् एही देखबाक रहै छे जे लाभ ओतवे हो बार सँ कम-स-कम टेकब लगो, कम-स-कम नोस देब' पड़े, इन्कीमेय देब' पड़े, अन्य सुविधा देब' पड़े । मुदा एकरो आवश्यकता कही रहि पेतै मेबिध्य मे । विधुर चाँड बिदाबाद । फाजुल सरकारक बहने समा-धान सब जँ होइत रहले त मुनीमी-कला त जेत गताल खता मे खेर.....हे लागल रही अँक स अँक मित्राब' मे । तखने ओ पटु चले ।

—अरविन्द बाबू ।

—की छी ?

मुही मुकौनहि पुछे छिये, अर पेया मे लोकक मुलमंडल स बेसी महत्वपूर्ण आ ध्यानाकर्षक बुझ' रहै छे केल्कुलेटरक स्क्रीन पर उगीत-द्वेयन हरियरका अँक सब ।

—मुलोचन स सब किछु छी ने लेलके ।

—की ?

एकबेर किछु बूफ, मे ने आएल, जेना बेटी भबल भ गेला पर अपस-वाम अँक सब स्क्रीन पर आब' लगै छे ।

—धवता छीनि केँके ।

—की छीनि लेलके ?

अँकाम्यात एक लाख मोड़ पर आबि गेल छल । मुही उठा सके छलीं से उठल ।

ओकरा दिस ध्यान गेल । विलोचन छल—मुलोचनक छोट भाइ । पछिला माठ एक नंबर महुआ एक पौआ आनि देने रहए हमरा छे । एक बनमा प्रीति क चौबीस घंटा सुतले रही । आश्चर्य लगैए जे लोक नोदका पर एते जोर किछु दे छे ?...

मुलोचन विलोचन हजारीबागक महतो अइ । ओना ई हुनू त कमशा मेखक नोकर आ करखाना मे डीका-मबूर अइ मुदा बेसी महतो सब पानि उपबाक काज करैए । महतो, पानि उपनिहारक पर्याव छे एत' कस तेलक दू टा टीनक एक भार पानि, पुरान गहिनी छ स्पेया मास, नव आठ स्पेया मास, छुहरा आठ आना स ल'क एक दोबा भार आ कमनी रेट बारह मारक एक हाबरी माने सवा छ स्पेया धानिक अक्का छे एत' ।

—तो केना एते एत' ?

विलोचनक ड्यूटी दोसर शिफ्ट मे रहै छे, अर्थात् दू बजे दिन त दस बजे राति धरि । एखन एगारह बानि रहल छे ।

—भोर मे बजोने छल भैया ।

सहकमी' बौदिया गेला । प्रश्नक बरखा होब' लागल, सुरक्षित वातावरण मे जे स्वाभाविक छे से बिहासा, उलंझा, आश्चर्य भय होब' लागल ।

—की भेलै ?

—की छिनलके ?

—कत' छिनलके ?

—कते गोटे रहे ?

—केना ?

सबटा कमशा: वक्तव्य, वक्तव्य कमशा: शिकाइत आ से अंततः समर्पणक मुदा घ' छिलक ।

—दस बजे दिन मे एहन कुंआड ।

—राति-विराति जे ने हो छेह अनर्थ ।

नागाडुन जेना अही क्षेत्रक लेख

खिलने होयि' टक सेर तो कम विकता है'

से वय, अल्लक भाव स बिकाइ छे एत'

एक तरहै चूटीर उद्योग भ गेल छे वय

वनौनाइ चाँक होइत देरी ओर पार स

माने लाइनक ओइ पार स घूम बड़ाम

आरम्भ भ बाइ छे भोर सुनवे जे लाका

पढ़ले की दू दलक संवर्ष छे की टेलिया

होइ छे की रखले-रखले फुटि गेले एक

रातुक वात कही छी एक्केस टा आवाज

मेले बेरा-बेरी । भोरे दूधक दाम साढ़े तीन

स्पेया भ गेले । राति मे दूधक विकता सबहक

वेघार रहै, सर्वसम्मति ब आठ आना प्रति

सेर दाम बढेबाक प्रस्ताव पाव भेलै ओ

एक्केस वमक सलामी अही परित प्रस्तावक

लेख डोकल गेल रहै से धरिना होइत रहै

छे, आ लोक हतमम मेल बा रहलए । लगे

मे त चेक पोस्ट छे ।

—ओइ चौक स आगू बंगाल विहा-

रक सीमा छे । सीमा पर चेक-पोस्ट छे ।

अस्सी वर्ग मादलक क्षेत्रफल मे एकटा

साधारण पुलिब चौकी सेहो छे अपन समस्त

सर्वशक्त विशेषताक संग । चौक पर सेहो

एकटा ने एकटा खाकी घारी रहित छे—सबदिन ।

—पुलिवके त अपन शिखा स ने मत लव छे । ओकरा कोन गर्ज छे हस्तक्षेप करवाक ?

एहना मे घटना पर घटना मोन पड़ लगै छे, बिछुए दिन पहिने एकटा टुक वला माने चौअन्नी ने देलके से चौक पुलिस ओकरा टुक पर लटक गेल डाइवर कैपिन दिस आ बहस 'कर' लागल डाइवर सेहो गाड़ी आल्ले अवसल केलक मुदा रोकत किछु ? चौअन्नी पाटी स डर क्यौक ? अंततः कहांदेन 'पुलिस लिटअरिंग पकड़ि छेलके संतुलन बिगाड़ले आ लगेक स्टुडिओ स बहराइत एकटा परिवार पर चढ़ि गेल डाइवर आ पुलिस संगहि पकाएल मर्द आ बेटी त तल्लाव मरि गेले-स्मॉट डेड । पत्नी के जाइ के अस्पताल ल जाइबले ओहोरो रस्ते मे प्राण छुटे गेले । देत ने कचा रहै, बान मादक आहुत्याक दोसर नाम छे बी० टी० रोड,

—सोभता बला पूल त हरदम जाने रहै छे ।

—खेहरला पर त अवसले पकड़ल बा सके छले ।

—मुलोचना के हल्ला कर चाहै छले...

सीमा पर दइ छे वज्रआइ रह अही वज्रआइ दइ पर पूल छे महाबूढ पूल बिहार दिस एकटा बौई टोकल छे अविकलम भार पवि टन' खालियो टुक पाँच टन स भारी होइ छे दिन मे कम स कम दू बैर पूल काम होइ छे माठ टुक सबहक दू वागली लाइन,

रिक्षा, कार, टेम्पो आ लोक । पूल मले-

रियाक रोगी जकां थरथराइत रहै, पूल

जाम रहै छे । खेहरला पर डकेत पकड़ल

जा सके छले । मुलोचन हल्ला ने केने हेत ।

—मुदा हल्ला केनहु स लोक सब

दौड़िते ?...

—लोक सब दिन प्रति दिन कायर

डेराबूक मेल बा रहलए ।

—सकै अपन जान के मोह छे ।

—के डकेत स दुश्मनी मोल लेल ग

हं, आनं त नहान । अपन गरदन आ पेट

बाँचल रहक चाही अमकर चावक चिन्ता

केना स अनयो लसेदु छपवाक सोइसी

आशंका त रहिते छे ।

—बीचन अवग्रह मे पढ़ल जा रहल छे

—लोक कोना बाँचत, कोना संसार

चलाओत....

—बात-बात पर वय-चाकी होब' लगै

छे, सक्क कमक छौ छे गोली चल

लगी छे ।

विलोचन कनमूर छेले, हकवका गेल

ओ हमरा दिस देखैत रहल, हम ओकरा

दिस देखैत रहलिये । संभवतः ओ चाहे छल

जे अरविन्द बाबू किछु बहान करता आ

की वजता बाइ स अइ स्थिति स उभात

हैत हमरा ने कुभा रहल हल जे की

चाबी अथवा करी मेटेरियल कंबम्पसन,

सुटिकाइजेशन परसेटब, प्राफिट रेडियो,

लंच डकेती एक्के मे मित्र मेल माथ मे बोलमारि कर' लागल रहए ।

—कत' छो सुलोचन ?

एकटा सहयोगी हमर सहायता करे छथि ओना असर मे हमर सहायता ने छल

है । सहकमी' लोकनिक वक्तव्य उदाहरण मेल बा रहल छले केना ककरा संगे की घटित भेलै रेल मे रस्ता पर, बाजार मे, किछु दिन

पहिने किछु साल पहिने, ओखिक देखल,

कानक सुनल, देखक भोगलछौडा । क डूब-

नार सेहो मित्र मेल बा रहल छले बरस मे

तखन ओकरो उदाहरण सब अवित कलन,

ककरा राम मे, के डूबले तखन कथा

अविते लहाय बरान' पर, पुलिब स मोट-

माट कर' पर, सबके, अइ सबहक कहवाक

छेल एकटा क कथा त रहिते टा छे, मुदा

ई कोनो सरकारी कार्यालय त छिये ने जे

काज के तिर्जाबलि द, चाइ विवि-प्रिवि

एहन एहन कथा सबहक पारायण केल काइ

की सुनल जाइ । से बात समाप्त केनाइ

आवश्यक छले, कलनो नेतेबर आर्थिक

गारननाइ आरंभ क सके छले हमरा किछु

पुराए ने रहल-जेना कपसर लागल ह ।

सहयोगी अइ स्थिति के भंग करे छथि ।

एकरे कहै छे पुरान चाउर ।

—गेट पर ।

विलोचन आर मिमिरा गेल जेना

इएह साधारण उन प्रश्न कचहरीक समान

होइ । हम केल्कुलेटर के ऑफ करे छी ।

एते काल स चाछुए छल ।

—बनवही ।

आइ वाम के बते बलही संभव हो

खतम केनाइ आवश्यक लाग' लागल लेचक

व्यवस्था सेहो देख' पड़त । लग-पास मे

नीक होइल ने छे । दूर जाए पड़त जेही

टोविक, देखि लेलीं ।

× × × × × × ×

—बात मुदा बड़ विचित्र बूझा

रहलए ।

—हमरा त मुदा संदेह भ रहलए ।

—संदेह हमरो भ रहलए । सुनोवता

सत्य ने बानि रहलए ।

—धरावर बदमासी क रहलए, नमरी

खबर अइ ।

—धही साइबिल बेचि लेऊकए

अथवा ककरो चारने छले धई छिनि-छोड़ि

लेलके ।

—एत' हमरा सके नाटक देवा

रहलक । सार के फूटती ने देखे छी ।

एहन त ई ने बूझाइए ।

हमर स्त्रीण प्रतिवाद छल । दू बरल

स त देखि रहल छिये कहियो कोनो तरहक

गाइबही ने केने छल कम-स-कम कम नबि-

पर ने आएल छल ।

एकरा सब के अर्थो ने किहू छिये

अरविन्द बाबू, ई बकरवालि सब अर्थो ने

बूझवे रग-रग बूझल अइ हमरा ।

—अरविन्द बाबू त ककरे तकरे पर

विश्वास क ले छथिन । एकरा आव मजबुत

लगेनाइ बुझिओ अथवा ने मुदा सब आग-

आइ प्रोफिटन से अपना व सुपरियर के चिकनपुत खेनाइ अवलक हुनक काइ छे से कहने अन्तर नेरु लखने।

—एकटा आर बात छे। सुलोचनमा परत हमरा स पाइ मार्ग आइल छल।

—देखिये ?

—ने।

सपेया ओ हमरो स मंगने रहल। ओकर सार आ बाप आइल रहै। सरबेटीक चियाइ छलै। तीन सौ सपेया मंगलक, हमरा ने छल-सचे ने छल। कहलिये, आन ठाम कोथिअ कर। वंभक्तः सेहो ने भेलैत सौँक से डेरा पर आपए कइलिये एक सौँक ब्यवस्था क देवौ बाकीक बोगार बगलै। से ओ सपेया देखनो जेही ने अर।

—देह त ने केलेक।

—निश्चित रूप स साइकिल-बही बेचि क' सपेया घर पठा देलकए पता लगा लिअ ओकर बाप आ सभ चलि गेल हेलै।

—तखन त एकरा एत' देनाइ उचित ने हेल।

—कने सोचिक देखियौ जे दिन देखार दकतो कते से दू-तीन सौँके लेल ?

बड़ी फाल्गुण छलै की ओ तिवाही बी ? हुँ त देह ही से नव अन्ते रहिये कचे करल चलीलिये सा बी ?

—साइकिल सा बी बला छलै-सेकेव देह। ओकर कते देते तिवाही बी ?

—साढ़े पांच सौ से नव अन्ते रहिये। कते बरख चली लिये सा बी ?

—तीन साल। डाइरेक्टर साहेबके सनक सवार भेलनि आ ओकरा दिया देखियन अइबेर त फाल्गु साइकिल अन्तर्जोए अहाँ।

—चल, ने आवए त अंगने देह ? साइकिल राख' बने छी अहाँ ?

बात-बात पर उत्तरावरी केनाइ दुनू क विशेषता छनि। ओही निच मे तिवाही बी लवीकार केलेजि जे ओर साइकिल के दू-सौ-अढ़ाई सौ स बेटी ने देते केओ ओना ओ हजो बोक्लजि जे सा बी एक-दमो भरफंदी बना देते रहियन साइकिल के। अही बात पर दुनू ने फेर आरम्भ होब' लग्यनि मुदा तखने दरवान आवि गेल,

—तैयो कम स कम तीन सौ त भये गेल हेलै ओकरा।

—पाइ मारि लेलक आ भूठे के नेप जुआ रहलए।

एक मिनटक लेल मानि लिअ जे सचे छनि लेलक त एकर अपन की गेलै ? बही साइकिल रहै कम्पनीक आ चाउर-दालि मेसक। तीमन-तकारीक जे पाइ देने रहिये सेहो मेसक दू चारि थापर ज देने होइ सहे टा मेले ओकर हिस्सा।

ई छला मेस इ'चार्ज। दिनका मेसक मील चार्ज बेसी भ जेवाक चिन्ता स लेलकनि संभवतः मुदा ठीके ओकर अपन कहीं किछु छिनैले। अत्ते देर मेसक चर्चा होइ छे लंब मोन पढ़ि नाइए थूल आर जोर स लगिय गेल।

×

×

×

दरवान आवि क' सुचित केलेक जे एकटा लोके देहातक दूव बाइ करलक छौड़ा जोड़ रे मे हूनि गेलै। कम्पनीक गाड़ी स ओकरा लोक सब अस्तताल ल बाइत गेलै।

आइ गयी वेटीए छलै। सुनाइ छलै जे उठिन क राखि देत चिरिक, सुलाए दे बला जे कहवी छे तेहेने रौद। कम्पनीक बला एरियाक पोखरि छे नहेयाक आ यत्र यत्र काब करबाक लेल पानि सभअइ होइ छे ओइ पोखरि स। चाकर त कम्मे छे मुदा बड़ बेसी शरीर छे। छौड़ा उमंग मे कने आणू बढि गेलै आ हुनि गेलै कहूना क' लोक ओकरा बहार केलेक।

—कोनो गइवइ त ने हेते साहेब ?

दरवान कम्पनीक इन्साब भ जेवाक शोका अचित छल।

—ने, हरन कोनो बात त ने हेवाक चाही। हम ओकरा आवलत केलिये।

—पूछलकए ने ?

दरवान पूर्णरूपेण भास्वत होब' चाहे छल।

—ने पुछि क त ने गेलए मुदा एहना हाल मे पूछबाक होव रहै छे लोकके। तौ बाइ।

सुलोचन आवि गेल ओ आइल छल दरवानक संगहि मुदा पाछुए टाढ़ छल। संभवतः प्रतीक्षा क रहल छल जे दरवानक बात खतम होइ तखन सौँसा बाइ। टंग हुनैत आइल महुभाएइ लट्ठआइल टाढ़ भेल।

—की मेहो सुलोचन ?

—बाबू। सबटा छीनि लेलक।

—केना छीनि लेलकौ ?

—समान लक चौक पर एलिये त एकटा जान-पहिचानी भेटा गेलै। ओ अपन बेग हमरे घरा क गेल पान खाइ छे। तखने तीनि-गोट आविक देरि केलेक आ घंट मे चक्कू मिरा देलक।

—हइल किए ने केलही ?

—कहलक 'हइल कएत त फाड़ि देबी। कळेमेले निचा मूँ त केत रह एसी-ओबी तकले त बुकि जा।

—तखन ?

—ओरा, साइकिल आ बही ल लेलक किछु खुदरा पाइ रहए से आ जेही स चाभी बहार क लेलक तावत ओ जान-पहिचानी सेहो आइल। ओकर बेग त पहिचानि हमरा स छनि नेतहि रहै। चक्कू मिरा क ओकरा जेबी हंसीमि लेलकै। लमो मे एकटा टोक टाढ़ रहै, ओही पर चार्जिक भागि गेल।

—बागिओ ल लेलकौ ?

—हँ

—तोहर जान-पहिचानीक की सब लेलक ?

—आठ सौ सपेया रहै नेग मे बैक मे जमा कर' आइल रहै। जेभीयो मे बीस पचीस सपेया रहै, बड़ी रहै।

—मेसक ताला तोड़' पड़तो ?

सुलोचन चुप रहल। चाभी हेरा गेलै त ताला तोड़हि पड़तै।

—ई सौके एकर कारवाही छिये।

हिनकर टियनाइ हमरा नीक ने लागल सुलोचन के डटलथित ताइ हुओरे ने, हमरा बातालाप मे अग्न सुपरियर हेवाक अ'दाब मे मुखलेप केलेनि तँ अखल मे, हिनकर चालि हमरा एक्कोरती ने सोहाइए।

—हमर की कारवाही भेलै ?

सुलोचन मिरामिराएल।

—चाभी ल क किए गेलै बाजार ?

—त की करिदिये ?

—दरवान लग जमा क क जेवाक चाहे छलै कोनो ओ तोहर घर छिओ जे लाट साहेब कर्का चलथौ चाभी नचवैत बजार। हजार बेर कहि चुकल छी। सब काब ने नवाबी। पांचो ताला आव बेकार भ गेलै। देह ही त लगवै करतै। की ओ तिवाही बी ?

—बत्तीस सपेये अन्ते छलिये। मोद-रेबक छलै।

—ल्यौलही कम्पनीक सात-साढ़े सात ही मे हरदिचून।

ओ नरसि रहल छलियन आ हम खौंभा रहल छलौ। नोकरक सोभो मे दिनका स भन्नाइ ने केल जा सके छल। अपने राचदूतक चाभी संगे ल जाइ छथि कलकत्ता आ अलीगढ़। ओना हमहुँ स्क्रुटरक चाभी जमा क क नहिए बाइ छिये...बात खतम करक चाही। समय सेहो भेल जा रहल छलै आ यूँ तैव मेर जा रहल छल। बातक सून पकड़थौ।

जो मेस ताला तोड़याक उपाय कर आ देखही जे लंचक कोनो व्यवस्था भ सके छे की ने।

—कहाँ छे कोनो समान ?

—किछु ने छी ?

—भात आ दालि बना क गेल छलिये। ओकरा जेना भक् द मोन पड़ल होइ।

—अन्धगा। तौ जो गेट पर स ड्राइ-घर के पठा दे ग।

—दूर गाड़ो त गेल छे ओपरै।

—किए ? एक्केटा स ने ल जाइत गेलै छौड़ा के अस्तताल ?

—ओतर गेलैए अपना डाक्टर साहेब के बजाव'।

—ओहो। हो...

साढ़े एगारह नासि रहल छलै। आन दिन पिउन साढ़े चारह बजे मोन पावे छल तखन होइ छल जे आव उठक चाही। आइ एखने स अक्कड़ बुझा रहल छल। खेवाक लेल बाए पड़त होइल। मुदा गाड़ी आओत तखन ने। पता ने कते देरी ल्याते।

सब अपन-अपन काब मे लागि गेल छल। मेस मैकर सब मुदा अतमनाएल-

सत। रहि-रहि क हमरा दिव देखैत आ गाड़ीक स्तर अक्षतत। हमहुँ कागत-पत्र सरिआव लागल रही। दरवान दोड़ल आइल। सब साक्षात् भ गेल।

—छेड़ा त मरि गेलै साहेब।

ए।

सबहुँ स्तर एक्के देर उठले आ निस्तवता पसरि गेलै। मात्र मशीनक स्तर आवि रहल छलै। जेना सब मनुख लोक भ गेल हो। गाड़ी आव भे त आरो विकल्प भ जेतै।

अइ खचराह छौड़ा के आइए, सेहो एखने इस्वाक छलै। चूची भंग होइ छै। एकटा मेस-मुखा के नहिइ रहल गेलनि।

×

×

×

मोन-मेस निहाले, निमांशा करैत बाइत बजाओल। मेव पहुंचलौ। एखन पांच गोट की किछु सदस्य बाहर गेल छथि। सुलोचना ताला तोड़ि चुकल कल। एक्केटा तोड़' पड़लै। बाकी क सुन्धीकेट चाभी भेट गेलै। दिन मे आटा-रोटी आधा भाज चले छे से तारी अनुपात मे बनल रहै। ओकरा उदरस्थ केल गेलै। आइ केओ, कोनो तरदक शिक्षादत ने केलेकै। भात-दालि मे यिमाहतो की भ सके छलै।

—मोटका चाउरक भात छे ?

मोटका चाउर सुलोचनक लेल रहाइ छे।

—ने, काहिइ सधि गेलै। आइ अने छलिये।

×

×

×

एकटा गाड़ी आवि गेल रहै। ड्राइवर डाक्टर साहेब के घर तक छोड़ि, बलनि तँ देरी भेलै। पांचो जन सवार भ क पांच माइल दूर होइल इ'ट्रनिवास गेलौ। लीननक पहिल विपर-सेशनक उद्घाटन भेलै। अपेक्ष आरम्भ छै तँ पहिब। टोटल एक सौ पाचासी सपेयाक बिल उठलै। मेस इन्चार्ज देलखिन। पान खेवाक लेल फेर एक माइल आपू गेल गाड़ी।

सुर्ती काल मेस इ'चार्ज पूछलाह।

अइ खेवाक, माने एक सौ पचासी सपेयाक की करवे ?

मेस खर्च मे देखा दिओ। खाता त ओरे मे छलै ने ?

अइ बेर त बते जे एडमन्ट क सकी। पानक पीक सभारत हमर उत्तर छल।

सम्मिलित ठहाका मे इ'जनक आवाज एक बेर छुवि गेलै

—कुणाल

★

रेल डकैती

प्रशासने डकैत अछि

रेल-दुर्घटना तथा रेल डकैती आइ-काछि भारतीय रेलक दिनचर्या वर्का भ गेल अछि । समाचार पत्रक पाठक लोकनि सेहो एहि तरहक घटनाक समाचार या त पढ़िते नहि छथि वा अं पढ़ी के-नि तें वइ सामान्य ढंग सँ । स्वभावतः दुःस्वापर कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छनि । घटना भनहि छोट सँ छोट हो वा १२ नवम्बरक साठा वगैर सन आ ६ जुलैक वदवाघाट सन भेस सँ पैघ किशक ने हो । तें भरिसक लोक ई नहि जानय चाहैछ जे बखन एकटा बगी थडुवा भ गेलक तखन छ-ए आदमी कैना मुइरक हेतक बखन सात सात टा बगी कोधीक पेठ ने सना गेलक तखन स्तरिद आदमी केना मुइरक हेतक ? तें लोकक मन मे भारतीय समाचार पत्रक प्रति चकर समाचार मे भिखियो भरि सत्यता नहि रहैत छक घृणा नहि जगैत छैक । लोक नहि जानय चाहैत अछि जे प्रेस-स्वाधीनताक बाहि छैक प्रेस सला सभ चिचिया रहल अछि असली अर्थ 'बलाकार' 'वर्णयुद्ध' 'वर्मयुद्ध' आदि जनविरोधी समाचारक उत्पत्ति प्रसारणो टा किएक होइ छइ । परञ्च एकटा सुकपोमी केँ एहि तरहक समाचार पढ़ि प्रतिक्रिया अवश्य होइत छैक आ सैर प्रतिक्रिया हमरा लिखना छैक बाध्य कैलक अछि ।

घटना यह छोट अछि समाचार पत्रक भाषा मे । पटनाक एगो समाचार पत्रक अनुसार लगभग आठवर्जन लोकक सामान डकैत छ गेलक । लगभग शब्दक अर्थ अहाँ स्वयं क्या ली से हमर अनुरोध । ओना अहाँ अगो सोचि सकैछो जे डकैतक दल मे छैक केतक लोक आ ओकर सभक आवश्यकता केतक सीमित छलक जे मात्र लगभग आठवर्जन लोकक सामान छव बौकीक बी-आन तकसि देखैक । सत्ये संतोष नामक वल्लु एखनो कम सँ कम डकैत मे त छैक ।

घटना विगत ८ नवम्बरक थिक । गाड़ी टाटा मुक्तनरपुर एक्सप्रेस । ओटावर क एकटा डिब्बा लगभग १२५ व्यक्ति, बाहिसे गोट दशक महिला छलीह अपन-अपन बगइ देने बखन गाड़ी खुजैत अछि । गाड़ी जखन बरीनी मे बनेत अछि त डिब्बाक लोकक संख्या दौघर भ जाइत अछि । ठीक-ठीक त नहि कहि सकैत छी, परञ्च किछु दूर गेलाक बाद गाड़ी फेर बिलमैछ आ फेर चलि पड़ेछ । रातिक लगभग साढ़े एगारह बजे बखन राजेन्द्र गूलपर प्राय, बीच-बीचमे गाड़ी पहुँचैछ त डिब्बा मे एगो दुबल आतक मिश्रित कोला हल जुनाइ पड़ेछ । परनात देखल जाइछ जे छुरा पिस्तौल सँ लेछ शोर रसेक लोक पर्सि-

छैक ! कोनो आवश्यक काज सँ नियत समय पर पहुँचनाइ वा नोकरीक हजारी । तेँ सम्पत्ति रामायो केँ भोलोवा सँ छुट्टी चाहैत अछि । आ एहि तरहें ई घटना बिदेसी कर्ज सन दिन दुना राति चौगुना बदल जा रहलछ ।

—उदय कान्त मिश्र

शोणित दे शोणित मैथिलार्य

अन्तःकरण मे भैरवीक नाद, कल-कल निनाइ नहि होयत ।

एषक विषय जे हमहर दूर पूर्व सँ बन सामान्य मे चेतना आबल । मातृभाषा प्रेमी प्रवासी से श्रेय खूब जोर-शोर ल्यो-लनि अछि मुदा प्रवासी मैथिलक आन्दोलनक बात, हुनक गर्जन कि गाम घरि पहुँचि सकत ? मैथिली दुक्ति मोची अप्पना अन्य कोनो संस्थाक नेच मन्द स्वर सँ उलने गाम-घर जागत बखन गाम घरक सरबमीन पर मैथिलीक हेतु संगठन होमय । मुदा से अछि नहि ।

—वैद्यनाथ बिसल

बोनिहारक गीत

चढ़ा छे रे बुधना तौ हंथापर शान रओ ॥
हंसुए मे शान अपन हंसुए गुमान हइ
हंसुए हइ अपन परान आर जान रओ ॥

हम सभ कमाएव आर खाएत केओ आन
लामार छगुन्ता ई हइ केहन विधान
ककरा छे' यस कर्म ककरा छे' देश हइ
अमखल के ठकवा छे' हइ भावान रओ ॥

सोनिता सुखा क पसेना बनेलिये
तकरा चुगा क जे खेतो पटेलिये
ढगिलै तेँ धरती ई सोना सुगन्धि भरल
सरुआ, खेसारी, गहुँम आर धान रओ ॥

रोपने छी कटबे आ घर अपन भरबै
अन्नक अभाव ने आव हमे सारबै
ठकलक बहुत मुदा आब ने ठकबै हम
काखो सँ लड़बै अरोपि देवै जान रओ ॥

—राम लोचन ठाकुर

With the best compliment from :



ASHOK ROAD LINK

9, Munsri Sadruddin Lane,
Calcutta-7

घर केँ मारेत पोटेत नगाही घड़ी रेडियो तथा अन्य केबर छीनि रहल अछि । हमरो पेटी केँ छु' त फाड़ि रेडियो तथा टेबुल घड़ी छ लेलक । संयोगवशा हम शोण मे रही आ ओकरो सभ केँ उत्तरवाक हइपड़ी रहैक तेँ हाथक घड़ी कोनहुना बँचि गेल गाड़ी बरहिया टंशन पर दुर्लभ छेदकर्मक बीच रुकवाक अवस्था मे भेलक । डकैतक दल उत्तरि गेल आ संगहि गाड़ीक गति तेज भ गेलक । गाड़ी देखैकर बगुल मे रुकलक त हमरा लोकनि स्टेशन मास्टर केँ कहलियेक तखन एक न्यूक्लिक पेठ मे छुरा छामल छलक तकरो दनाइ विरो मेलेक । फेर पुडितीक आगमन मेलेक आ हमरा लोकनि लगभग बीच आदमी सँ बचान लेल गेल ।

आब जँ समाचार पत्रक रिपोर्टर विचार करी त स्पष्ट भ जायत जे प्रकाशित रिपोर्ट पूर्णतः मनगढ़न्त अछि, फुलि अछि, एहि तरहक रिपोर्ट छपवाक पाछा निश्चित उद्देश छैक अशामाविक तत्व केँ बढ़ावा देनाइ, रेल प्रशासनक अक्षमता पर भाषाव देनाइ । आ यह थिक भारतीय पत्रकारिताक असली चरित्र ।

आब कने घटना पर विचार करू । सुरक्षित डिब्बा मे प्रवेशाधिकार मात्र ओतबे लोक केँ रहैत छैक जे स्थान सुरक्षित करबोने हो । तेदना अवस्था मे जँ बरीनी मे ओतेक लोक हुकि गेल त निश्चित टी० टी० साहेबक अनुकम्पा सँ कारण हुनको आमदगीक बरिया त वेह छनि । ओना डकैतक दल बरीनी मे उठल वा तकर बाद बखन गाड़ी बिलमले ततय से निश्चयी त नहि कहि सकैत छी—परञ्च बरहिया मे जेना गाड़ी थमकल आ उरते स्पीड पकड़ि लेलक—ताइ पर विचार करी त स्पष्ट भ जाइछ जे डाइवरक सटि-गाटि डकैत दलक संग छलक । स्वयं टी० टी० महोदय सेहो घटनाक समय उपस्थित नहि छलाह । हुनकेँ बयानक अनुसार भीड़क कारणे ओ गाडक डिब्बा मे छलाह । डिब्बा मे पुलिसक कोनो व्यवस्थाए नै छल आ जँ रहेवे करैत त ओहो टी० टी० कोनो घटनाक समय बाहरे रहैत । विचारणीय रहो थिक जे एहि अंचलक ई पहिल घटना नहि छल ।

स्पष्ट छैक जे रेलकेँ नक्षक अछि । रेल प्रशासने डकैत अछि । जँ उपरका कोनो अधिकारी एका अपवाद होथि आ रेल प्रशासन केँ एहि कलेक सँ मुक करय चाहथि—त प्रेसबलाक अनुकम्पा सँ हुनका लग सही रिपोर्ट जाइए नै पाओत । जनता ने अखक सामने प्रतिरोध करवाक मनोबल रहैत नै छैक संगहि आसोँ व्यवधान रहैत

दिसम्बर १९८१

संलग्न मुख्यमंत्री क घोषणा

प्रसंग में मिली

श्रीमान् स्वानामन्यत्तमपादकनो महोदयको दिन शुक्रदिन बाउ आई अपने घरिया-
नय मैथिली । पदित । बेवारा कणक लेप औरिया-

आशा हास्यसुरति ई जे भरि छितनी
आदर छल जे वाता विद्यापतिक बलों मे
आशा त मेर होयत आ भगिपोख गायन
अब । परवाक चेतना समिति कखन एत
र जवारी नौतवे अछि तखन अहाँ छुटि
गायन तकर सँदेह केना कएल जा सकैत
नैछ । परन्व जाननिथि वाया दैनाथ जे
अहाँ के नहि पावि छै हमरा कहैक कबोद
मेछ । ओना अहाँ के नोट नहि गेल आ
नहि पहुँचलौं से नोक मेछ । हमरा त पूत-
पूरी कबौटल भरि विवाध अछि जे वं अहाँ
रहरितौ त शुभ-शुभ के कलकत्ता आपस नहि
जा सकैत छलौं । अहाँ पूछब जे तेहन वत
वात भेलक एहि खेप । त सेहो सुनिष
लिय ।

अहाँ के त बनले होएत जे चेतना
संमिति जन्मआलहि सं प्रतिबल जे बाया
विद्यापतिक वली मनवेत आगल-ए से आन
संस्था सं अपन फराक मइख रखत छेक ।
बनवा टाका ई अशररे बनार खुएबा मे
खर्च करै-ए, ततया समस्त प्रवासी संसय
मिलियो के ने के सकेछ । अहाँ सम ने
तकर-आलोचना केने रहिएक जे एहि
टाकाक अबो जं विद्यापतिक डीह पर खर्च
कएल बाइत ते आइ ओहिठाम नदया-
बुजूर नहि सुकेत खोपडीक स्थान
पर भइ-भवन शोभायमान रहिते । परन्व
इहो त एही संस्थाक विशेषता छेक जे
प्रतिबल राधक मुख मंत्री, रायपाल तथा
अन्याय मंत्री लोकनि के बिभो करा आनि
छेए या इहो लोकनि प्रतिबल मैथिलीक
तेल छोन महल नैवाक घोषणा करैत रह-
लाइ-ए । गत चल जं एहि सनातन नियम
मे व्यवधान भेलैक त एहि लेल निश्चित
दोही किछु भगती छौंटा सभ छल, नेकि
ई संस्था वा मंत्री मंदोदय । कहु त भला,
ई केहन विचार-नियार जे स्वनामधेय
मुख मंत्री के पनहीक माला सं स्वागत
कएल जाय । आ ते जं मुखमंत्री महोदय
पतदुकान ल लेखि त वेताइए की ? त रं
जे कहैत छलै, एहि बैरक स्थिति सामान
छलैक आ ते मैथिल कुल-दुपण, विहार
बड़द-पुत्र, घन-प्रतिनिधि, दुनीनय्य, मुख
मंत्री प्रवर श्री श्री ८०१ श्री डा० श्री बगम
साथ मिश्र की उपस्थित छलाह । ओ म
समा मे उभुक कंठ घोषणा केलनि जे अ
दिन सं ओ मैथिली निमिच किछु न
करता । ओना ओ इहो कहलनि जे ब
लोक हुनकर सभ काब के मैथिली विरोध
कहैत अछि । त भाव ओ एहन काब
करताइ अहाँ के त एगो बिबा बुलल
जे एगो ब्या के सभ दिन मौचाव
मे छल ।

गर्ज पड़ल-ए जे विरोध करो ? बखन
भरल समा में ककरो गबरा नहि सतरलेक
काग काग सभखा के ककर कटेने छलनि ?

असल में वं छुड़ी त है जातिह दिबारा
थिक—जमना भनहि नहि हो, कर्मणा।
तेदना हालत में हमरो ले बर्ख में दू सोभन
परि लागि बाइए आ सए दू एक मोबर
दक्षिणा भेटि बाइए से अपने स किबक
छोढ़ि दी? एगो पाइ त केरो देनहोरो
नहि। एही विरोधक कारणे जेवको कतिन छथि
बन्धु आमंत्रितक घुबी स बारल छथि
नहि। एही कारणे नाल में काटि देल गेलनि।

त त वहल जे अहाँ रहितौ त जुप
रहि नै सकै छैन आ जे किछु बखितौ त
सरकारी-अर्थ सरकारी चमचा सब द्वारा
अँग-भंग कहइ देख जाइत । तेँ हमर त
सबाइ बखि जे अहाँ देखी कूद-कान नहि
करी तेह नीक । कहलकै किने जे अपने
कोते राखक मान । ई बाधा छोड़ दिव
जे जे जनता बिस्तरा बी के सिंहावन पर
बैसलकनि से उतारियो सकै छनि । अवल
मे हमरा लोकनि मूख केँ छिड़ त बना
सकै छी । किछु सिह के पुनः नूत
बनैवाक मंत्र बिस्तार गेल छी । संगहि
अहाँक जननी बरामभूमिभक्त...वला नारा
पुरान भ गेल अछि । आइ-कालि मिथि-
लोक नव नारा छैक चोट-कोट-नोटच
स्वर्गादिधि गरीयसी ।

पूत्र अनर्गल रूप दीर्घकाय भू गो
तं दीप कर्तुं छी । अत मे अपने ह
पादबद्ध प्रार्थना जे एहि अति निता
गोपन ब्यक्तिगत पत्र के अपनहि तक सीमित
राखी ।

पत्रोत्तर नहि पशुदाक प्रवल आकाशी
श्रीमान लाल बुभुकर
बुभुनुक ग्राम वासी

कलकत्ता का भाकावला
महान क सभ सब्द अंग
अच्छि आपद विपद ने एक दोहराक संग
देते छैक । एक संग मिलि आवाज उठ-
वैष । ओना एकरा सुभ हखण मानक
चाही । इहर संगठन एक मकान सं दोसर
मकान के जोड़ि सकछ अपन आयाम बढ़ा
सकछ । अपने मे सं केओ नेता बहरा सकैत
छैक आ तेहन अचित मजूरीक अपेक्षा
करल जा सकैछ । जै वर्तमान मे निश्चित
नहि भेटैत छैक ।

केनिंग ह्यूटक भावी (परिचय लिख
नाह मत टाँकना)
नाह मना वे छनि) एगोकलेडर व्यवसा-
यीक दोकानक संग संयुक्त छथि। दिनक
आमनी त आरो थोड़ छनि परंच तयो
निवाह क लेव छथि। आशान छोट छनि।
—मुमताबा अली

एकाली...
अह ! ई बात सत्य के मिथिलक भोगो-
लिक अवस्थान एकरा नहुतदूर बरि बाहरी
आक्रमण सं नबभोने रहलैक आ के हेतल
बाहरी आक्रमण नहि मेलैक तें केअ
महाराणा प्रताप वा भिवाभी एहिठामा
नहि मेलैह । परअव हरो गप तदिन्ह
सत्य छैक के नखन विछोकि छोड़ो मिधि
मेलैक तें वीर शिबत्रि

लापर आक्रमण
केलक त दौर शत्रुबद्ध

चिहनाएँ क उठवाए। एक नहि भनैको
खेप छिल्लो सधनत के भिखल सन छोड
छोन राख लग पराजित होमय पड़लैक।
जं पृथ्वी राबक संग तलआरि कैने चन्द्रय
दाई पहुँत छलौयन त शिवसिंहक संग सेहो
वीर कवि विद्यापति रहैत छलाह। की
महायुद्धी लोरिक भिखलक संतान नहि
छलाह ? जनिका टाल ठोक्ने भुक्क्य होइत

छल आ जे अपन दुःख, दुःशो, दुःशोद दता
 हाथीक नाछहि पकड़ि डेहमलुक देप सन
 भेकि देत छलाह एहन वीर सन्तान कएछटा
 कुन देस जनमा सकल-ए ? आइ भगहि
 लोक के लोरिकक एहि पराक्रम-गाथा से
 अविवात होनि परजब महाभारत से भीम
 द्वारा हाथी के व्याकास से भेकि देवाक
 कथा आ ठारकन कथा-गाथा के
 सत्य छेक त कुन कारण नहि के महाबली
 लोरिकक कथा-गाथा पर लंदेर कहल
 जाय । लोक लेक महावीर राजा सलहेस
 राय रणभल ओ हुनक बालक गुगली रण
 मल, बंठा चमार आदि वीर पुत्र
 मिथिलाक इतिहास भरल अछि । एकद
 निराधार भिक ई कहनाथ के निविच
 प्रसंगदल थिक, दुसि थिक, एकांगी थिक
 ई बात सत्य जे मिथिलाक भतीत भदि
 कलाक लेल स्वर्णयुग छल, चासिगेड दसा
 सन स्थान रहल-थ । शान-विश
 हाहिल-कला, दर्शन सम क्षेत्र से ई
 भारतक पथ मदर्शक रहल ए । ई ह
 भाविकको लोक कारण मिथिलाक अ

आपानि सभगताक रहलैह । किन्तु सभ राह
तहुं निथिला मात्र छतयें नहि अइ । अरु
जे मिथिला गणतंत्रक जनसदाता अरु से
निश्चित ओकर रक्षाक महत्व तँ अपरिचित
नहि रहल होएत । मिथिलाक हतिदाय,

भनदि जे कुनू कारणे हो, दोसर पक्ष के एकदम सँ चिसरा देने अइ, जे दोसर पक्ष के लोख बनक-
ते नै होत।

यश स्वल्पक नाम त जनेए, गौतम-कपिलक
नाम त जनेए मुदा यिबिबिह सल्लेखक नाम
त अपरिचित अइ, लोरिक-गुगलीक नाम
त अपरिचित अइ। ई त बन्दाद दी
मिथिलाक सर्वहारा वर्ग के जे आइ घरि
एहि महा पुख लोकनि के मिथिलक महान
विभूति लोकनि के अपन कंठ मे जोगओने
अइ। तें महराइ वा गुगरी नाच मे तथा-
कथित पटुल-खिलल घरी मानी लोक मनहि
नहि बाधु—तेयो लोकक करमान पड़ैत
रहैए। अपन माहि-पानि तें जुड़ल, अपन
बीर पूर्वजक गाथा देवाक कारण महरानी
मैथिल द्वारा नैति के अतल हिंदी नाटक
के इह महराइ आ गुगली सल्लेखक नाच
आइ मिथिल्ला से देखेबा मे समर्थ भ
रहल-अ।

रहलभ । आइ हतिहासकारक ई पहिल आ
गवान कस्य छनि के ओ उपल पक्ष

के प्रकाशित करायें कि छोटा मोटा दोष के लक्ष्य फोरेसी में मौका मिल सकता है प्रमाण करायें। ६ दिसम्बर १९८० के आन्दोलन के प्रभावों को देखते हुए यह सुनिश्चित है कि आन्दोलन के संकेत और चिन्हों में परिवर्तन हो रहा है। यह सुनिश्चित है कि आन्दोलन के संकेत और चिन्हों में परिवर्तन हो रहा है। यह सुनिश्चित है कि आन्दोलन के संकेत और चिन्हों में परिवर्तन हो रहा है।

—आमदत

$$\begin{array}{r} 1216 \\ 1216 \\ \hline 2432 \end{array}$$

सभा-सम्मिति

नवम्बरी दिह्लो, १० नवम्बर १९८१ स्थानीय मणिलंकर तमागार मे मिथिला संघ न० दि०) द्वारा दू दिना विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन कएल गेल । पहिल दिनक उद्घाटन कर्तो छलाह श्री कैदार पाण्डेय रेल मंत्री, भारत सरकार तथा मुख्य अतिथि श्री वलंत साठे, लखना एवं प्रचारण मंत्री, भारत सरकार । अध्यक्षता केलनि पंडित श्री हरिनाथ मिश्र, संसद सदस्य । मुख्य वक्ता मे बनिक नाम छलनि श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, श्रम राज्य मंत्री, भारत सरकार, ओ अनुसूचित रहलौह । अन्यत्र गणमान्य व्यक्ति मे सर्व श्री मोबा मन्त्रकन छात्ती, ललित चन्द्र मिश्र हृण चन्द्र पंत, नौ० दफ्ती इरौरी, डी० पी यादव, के० पी० तिवारी, शिव-चन्द्र झा प्रो० अजीत मेहता, राम सहाय पाण्डेय, श्रीमती अनीबा इसाम, आदिक नाम उल्लेखनीय अछि । सांस्कृतिक कार्य-क्रम मे भाग छेलनि श्री सरोद जी, श्री मती सारदा सिन्हा । एहि अवसर पर एगो भव्य मञ्जीरा नृत्य प्रस्तुत कएल गेल । अन्त मे श्री गुणानन्द ठाकुर द्वारा वन्दनाद ज्ञापन कएल गेल ।

दोसर दिन, १ दिसम्बर उद्घाटन कर्ता छलाह प० श्री लक्ष्मीकान्त झा, अध्यक्ष, आर्थिक सुधार आयोग, भारत सरकार । अपन उद्घाटन भाषण मे श्री झा बी कहलनि जे वगला भाषाक उद्भव मैथिली सं भेल । विद्यापति के बंगलाक कवि मानवाक इष्ट कारण छल । हुनू भाषा मे बहु समताता येलक जे कालान्तर मे निरंतर सम्पर्कक अभाव, स्थानक दूरी आ स्थानीय आवश्यकताक कारणे फरक होइत गेल आ बंगला भाषा ओ लिपिक अलग विकास भेलक । एहि संदर्भ मे ओ पूर्वी चञ्चक भाषाक उद्भव ओ विकास एवं परस्पर प्रभावक महन अध्ययनक आवश्यकता पर जोर देलनि । अपन अध्यक्षीय भाषण मे हिन्दुस्तान दैनिकक सभा दक श्री विनोद कुमार मिश्र बी० कहलनि जे विद्यापति पहिल कवि छलाह जे परम्परागत संस्कृत तथा अपभ्रंश के छोड़ि जन-भाषा मे काव्य रचना केलनि आ मात्र रचनाए नहि ओकरा लोक प्रिय सेहो बन-ओलनि । इष्ट कारण थिक जे एखनहुँ बरि घर-घर मे हुनक गीत गाओल जाइत अछि । मुख्य वक्ता श्री गंगा शरण सिंह बी० अनुसार विद्यापतिक काव्य मे आध्यात्म, भक्ति आर सौन्दर्यक अद्भुत समन्वय अछि । हुनक गीत मे गति, लय आर भावक तेहन सार्मन्वय अछि जे ओकरा आधार पर कोनो सफल लय नाटिकाक आयोजन कएल जायकछ । आबुक मुख्य अतिथिक पद पर छलाह श्री वेदानन्द झा, भारत स्थित नेपालक राजदूत ।

एहि अवसर पर एक मन्त्र कवि

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स, ३२-बी, रुद्रावन

नेपाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५, मे मुद्रित । समादक : श्री बनार्दन झा

बाल कविता

समेलनक आयोजन सेहो भेल छल । आम-जित कविगण मे छलाह सर्व श्री महा कवि यात्री, राम सहाय पाण्डेय, रमानाथ अवस्थी, आर० सी० भारद्वाज, कवि चन्द्रमणि मिश्र, कविहर सुमन, प्रवासी, अमर नारायण कुँवर, रवीन्द्र, महेंद्र श्रीरेन्द्र एवं मायानन्द मिश्र ।

अन्त मे सर्वश्री शिलकांत, गिरीश, सरोज, लेखनाथ, सारदा सिन्हा, ए० के० सिंह, एवं नाटक प्रभागक कलाकार लोकनि द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल ।

(देसिल वयनाक विह्ली प्रतिनिधि सर्वनारायण मंडल द्वारा प्रेषित)

× × ×

कलकत्ता २१ नवम्बर ८१ कहा बाजार दुबक तथा हाँस मे मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति स्मृति पर्व मनाओल गेल । अध्यक्षता केलनि श्री मुकुटचारी मिश्र तथा प्रधान वक्ता छलाह मिथिलेन्दुजी कवि पति के अर्द्धाब्धि दिनिहार अनन्य वक्ता-मे छलाह सर्वश्री बाबू साहेब चौधरी, राम लोचन ठाकुर, शारद चन्द्र मिश्र, ब्रह्म नारायण झा, श्रीदेव झा आदि । एहि अवसर पर विद्यापतिक 'सखि हे हमर दुखक नहि ओर' गीत पर आधारित भावपूर्ण प्रस्तुत कएल गेल तथा आर संगीतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल ।

कलकत्ता, १४ नवम्बर १९८१ । संस्कृत साहित्यक मर्मज्ञ आ मैथिलीक प्रकाण्ड पण्डित प० वयकान्त झा 'श्रुतचर' क आकस्मिक निधन पर स्थानीय मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा एक शोक समाक आयोजन विद्यापति विद्यामंदिरक सभागार मे कएल गेल । अध्यक्षता कएलनि परिषदक अध्यक्ष श्री मुकुटचारी मिश्र तथा भाग लेलनि स्थानीय सभ मैथिली सेवी संस्थाक प्रतिनिधि लोकनि । अर्द्धाब्धिक्रम मे विभिन्न वक्ता लोकनि 'श्रुतचर बी' क व्यक्तित्व आ कृतित्वपर प्रकाश देलनि तथा ओहि सं शिक्षा लेबाक अनुरोध समस्त मैथिली भाषी सं केलनि । स्व० श्रुतचर जी मे काण्य सुवनक तथा कुनू वस्तु के नव दंग सं आ एकदम मौलिक रूप मे प्रस्तुत करवा अद्भुतक समता छलनि । 'सीताथण' महाकाव्य मे वीताक गरिमाक उपास्थापन हुनक कला-कौशलक परिचायक थिक । मैथिली मे 'भैरवदूत' ओ 'गीता-बलि'क पद्यानुवाद अपन विशिष्ट स्थान रखैत । एकर अतिरिक्त ओ कतेको मैथिली सेवी संस्थाक संरक्षक छलाह । मैथिली भाषी सदा एहि विभूतिक स्मृणी रहत । अर्द्धाब्धि अवित केनिहार मे छलाह सर्वश्री शारद चन्द्र मिश्र, कालीकांत झा, हरिचन्द्र मिश्र, मिथिलेन्दु जी, राम लोचन ठाकुर, किशोरीकांत मिश्र, एवं ब्रह्मानन्द सिंह झा । अन्त मे दिवंगत आत्माक शान्तिक हेतु दू मिनटधर मौन प्रार्थनाक उपरांत सभाक विघटन भेल ।

नजि छइ तकर विनाश

तलआ तिलकोक कदु-
ककरा लगे ने नोक
अनलोहात ककरा लगे
कोबर घर के गीत
किन्तु मानटा नीक सं
दोपत की बलबल
लोक नपुंसक के कदु
की कौत प्रारब्ध
पुरुष सिंह निश्चित सकष
तोड़ि अकाशक चान
पुनि दुर्लभ पहि जगत ने
तकरा ले' की आन'
मरियो अमर इतैत अखि
कीतिक संग सहन के
बधमहीन मनुवल के
वधे ने नाम त्रिशान
दिय' दिय' टा मात्र सं
भेदय नबि अधिकार
बंचलोटा बुरि जाइ छइ
तेहने छइ संसार
हाथ पसारल बाटपर
मरय हजारो लोक
कुछुर बिलाड़ि मृत्यु पर
के मनबै छइ शोक
हाथ बढ़ा जे ल' सका
छइ तकरे इतिहास
जागल सदा सतर्क जे
नबि छइ तकर विनाश ॥

—राम लोचन ठाकुर

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

'देसिल वयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ वठाउ । कम खर्च मे सुन्दर दंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन ।

सम्पर्क रुक
विज्ञापन व्यवस्थापक
अरुणोदय प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन

१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देसिल वयना' मे प्रकाशनायक पठाव ।

२—'देसिल वयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक । आन्दोलन सम्बन्धी रचना के अप्राधिकार बेल जायत ।

३—मिथिला मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाउ ।

४—'देसिल वयना' त्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैत ।

कह लोचन कविराय

आइ एम एफ के कर्ज थिक एक दवा सओ मर्ज
बस बेचि स्थायिता प्राप्त काब ते फर्ज
प्राप्त करव ते फर्ज अर्ज ई आइ समय के
समाजवादक तज वल्ल क्षमताक लदय के
कह लोचन कविराय ओ महा शत्रु देश के
जे करैत छि निन्दा कर्जक आइ एम एफ के

प्रगतिशील

वर्ष—२ अंक—४

जनवरी, १९८२

मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

भीख नहि, अधिकार चाही

दिखी मे आयोजित विद्यापति-पर्व समारोहक उद्घाटन करैत रेलमंत्री श्री केंद्रीय मैथिली के संविधानक अंशम अनुच्छेद मे सम्मिलित करवाक मांग के समर्थन करैत एहि लेल एक शिष्टमंडल के प्रधान मंत्रीक संग मेट करवाक आवश्यकता पर जोर देलनि। ओ आरो कहलनि जे एहि शिष्टमंडलक नेतृत्व ओ स्वयं क सकैत छथि जे कहल बानि। केंद्रीय बाबू एहि सं पूर्व रांची मे सेहो ई घोषणा केने छलाह।

एहि मे कमिजो संदेह नहि जे केंद्रीय बाबू मैथिलीक सुपेन्डु छथि। मिथिलावासीक दीर्घकालीन मांग आ आवाज—मिथिला विश्व विद्यालय तथा बिहार लोकसेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान दियकहि मुख्यमंत्रित्व काल मे भ सकल। मैथिली अकादमीक निर्माणहुँ मे हिनक सहयोग सद्भावनाकें किसरल नहि जा सकैल।

बर्हपरि शिष्टमंडलक प्रश्न छह, हमरा पूर्ण स्मरण अछि जे १९७० मे अद्वैत स्व० ललित बाबू मैथिलीक प्रतिनिधि लोकनि के कहने रहथि जे एहि निमित्त संस्थाक नहि, संसदीय समिति (Parliamentary Committee) क प्रयोजन छैक, आ हुनकें निर्देशानुसार एगो संवितिक निर्माणो मेल छल जकर संयोजक छलाह श्री यमुना प्रसाद मंडल आ प्रायः मैथिलीक निमित्त यदा-कदा वननिहार समस्त साविद लोकनि सदस्य छलाह। छेदक संग लिख्य पत्रेक जे ई समिति तेहन अक्षमण मेल के एकर चर्चा नदार्द। पता नै शिष्टमंडल सं केंद्रीय बाबूक तात्पर्य कोन तरहक शिष्टमंडल सं छनि। पञ्चव जे बहने विष्टमंडल सं होनि त आगा प्रयास केनाह बर्ष। कश्वाक प्रयोजन नहि जे मिथिलाक साविद संग 'चीटछ' थिक, नसक हयाम थिक। ओ खायत त मिथिलाक भञ्ज पहरा करत दिखी पटनाक। दोख ओकरो सभक नहि छैक। ओ सभ हमरा सभ के, मिथिलावासी के बडोइ बराबरि नहि बुझैत। लाठी-कटैत' बीन्दावाद! करिया टाका बीन्दावाद !!

जं केंद्रीय बाबूक तात्पर्य आन तरहक शिष्ट मंडल सं होनि, जकरा सभक प्रयासि आइपरि थोड़-बहुत काब मेलथ, त ताहु संकथ मे हम फेर १९७० क कथा दोहराथव। १९७० क दिसबर मे एहि तरहक शिष्टमंडल प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी सं भेट केने छल आ ओरो सहस्रसुतिपूर्वक विचार करवाक आश्वासन देने छलीह। पञ्चव १९८१ नीति सुकल। आइपरि श्रीमती जी के एहि समस्या पर विचार करवाक पलखति नहि भेलनि वा जानि नै सहस्रसुतिक स्त्रोत्र सुला गेलनि। तें जं फेर जुनू शिष्टमंडल भेट करै करनि आ भ सकैत फेर आइने आस्था सनो भेटि जाइन तथापि संभावित फलक संभावना नहिजे खुभना जाइछ। स्पष्ट छैक जे आजुक राजनीति में, आजुक नेता लोकनिक लेल स्मार-पत्र वा अस्वास्तक कोनों महत्व नहि। आश्वासन ठकवाक लेल होइत छैक आ स्मार-पत्रक भाषा ओ लोकनि बुझैत नहि छथि। ओलोकनि एकेटा भाषा बुझैत छथि कान्तिक, रक्षकनी कान्तिक। प्रमाण अह आवागमक आन्दोलन।

केंद्रीय बाबू के हुनक सद्भावनाक लेल जन्यवाद पञ्चव हुनका बुझि लेवाक चाहि-यनि जे हुनको वक्तव्य सं मिथिलावासीक साविदपर कोनो प्रभाव पड़निहार नहि। खान प्रवृत्तिक संग विवेकक प्रश्न नै उठि सकैछ। तें मिथिलाक रौद्री-दाही महामारीपर पटना-दिखी दरबार मे वक्ष नहि होइ छह। तें किछु लाख सिन्वीक भाषा के संविधान मे स्थान भेटि जाइत छैक मुदा चारि कोटि लोकक मातृभाषा ओहि सं बारल रहैद। अक्षयचल-सेवालय सन राज्यक निर्माण भ जाइ छह मुदा मिथिला के लिचही राज्यक संग राशि देल जाइछ। इहए करण छैक जे मिथिला मे रेल-चर नहि बाटो-घाटक स्थिति होचनीय छैक। कलभरखानाक चर्च की हो—एगो अशोक पेपर मिल बनले त सेहो उठि के आवाग-चलि गेले आ कोशी समस्या त 'एवर लास्टिंग खरी' अहिह।

मिथिलावासी के भीख नहि, अधिकार चाहिछैक। मैथिला के संविधान मे स्थान हो—से हमर व्योयोचित मांग थिक। हमर अधिकार थिक आ तकर पूर्ति केनाह सरकारक कर्तव्य। एहि निमित्त शिष्टमंडलक प्रयोजन नहि देवाक चाही। पञ्चव

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला घाल
डाहि जारि सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

जनकपुरक विद्यापति-स्मृति पर्व :

स्थिति आ अपेक्षा

बलन कलसो हमरा लोकनि मिथिला-मैथिलीक चर्च करैत छी त निश्चिते भारत वा नेपाल ताइ जोच मे नञि अनेए। एवो केना करत बलन कि मिथिला-मैथिली-मैथिली अपने-आप मे संपूर्ण अह अनेक नञि-एक अह। ओतवे किश्क, विवाह-दानहुँक समय हमरा लोक-निक मन मे एहि तरहक भावना नञि बनैत जे वोच गे एगो आदि छह जे एके बनीन के बनीनक फविल के पू भाग मे विभाजित करै छह, एक दिसुक पानि के दोसर दिस जेवा मे बाघक होइ छह। आ इहए भावनाक नञि जनमनाह एह आदि क कतिमता के प्रमाणित करैत। पञ्चव आइ इहए कतिमता सत्य छह कारण एकरा पाछा राजनीति छह आ आजुक युग मे राजनीतिह सभ सं पूव सत्य थिक। ओना याचना सं राजनीतिके बन्य लेवाक घटना कुनू नव नञि, किनु मिथिला-मैथिल-मैथिलीक संदर्भ मे एहि तरहक बात केनाह नम्र अवसरक बात केनाह सन इहए।

जे जे हो, किनु ई चरि सत्य छह जे आइ आदि क दुनू कातक मैथिल पञ्चायल अह, ओकर भाषा-संस्कृति आ आन-समस्या सभ सरकार द्वारा अनदेखित छह। एहि संदर्भ मे एहि परक तथा कथित गण-तांत्रिक आ ओह पारक राजतंत्री सरकार मे बड़ बेसी फर्क नञि छह। फर्क नञि छह दुनू कातक मैथिल मे जे अपन दीन-हीन अवस्था लेल सरकार सं बेसी दोषी अपने अह कारण ओकरा मे त्याग वांछनक भावनाक, जकर बड़ दीर्घ आ गौरवशाली परम्परा मिथिलाक रहलैत—एखनो पूर्ण अभाव छैक। अभाव छैक संवर्ष चेतनाक। किनु, जे थोड़ बहुत चेतन लोक अह से अपन मान-मर्यादा छैक, अपन अधिकार पैवालेल सुगबुगा रहल-ए, आवाज बुलन्द क रहलह।

एहि सभक अतिरिक्त नेपालक स्थिति भारत सं भिन्न छैह। ओहठाम राजतंत्र अखलिथत त ई अछि जे सरकार कांयही सरकार—बकर बचैल सभदिन मिथिलावासी मे रहलैत, नामचात मिथिला-मैथिली निरोधी अछि।

आइ समय आवि गेलह जे मिथिलावासी के सखुसरी एहि सरकारी राजन के चीन्हा पड़नि। चीन्हा पड़नि एकरा द्वारा बनाओल। पठाओल वस्तुमक स्वर्णमृग के जे वर्णमंडलक नीज थीक आ भाइ-भाइ मे कपर फोड़ौअलि करैत आ सामूहिक समर्थक समाधान छैक, जातीय उत्थान लेल हमरा लोकनि के एक संग नहि होमय देश। हमरा लोकनि के अपने बाहुबल आ बुद्धिबल पर भरोस राखि अग्रगण्यक चाही। प्रश्न अस्तित्व क छैक। अधिकार भील माझने नहि भेटैत छैक। एहि लेल चाही संवर्ष—रक्त संवर्ष।

अखलिथत त ई अछि जे सरकार कांयही सरकार—बकर बचैल सभदिन मिथिलावासी मे रहलैत, नामचात मिथिला-मैथिली निरोधी अछि।

आइ समय आवि गेलह जे मिथिलावासी के सखुसरी एहि सरकारी राजन के चीन्हा पड़नि। चीन्हा पड़नि एकरा द्वारा बनाओल। पठाओल वस्तुमक स्वर्णमृग के जे वर्णमंडलक नीज थीक आ भाइ-भाइ मे कपर फोड़ौअलि करैत आ सामूहिक समर्थक समाधान छैक, जातीय उत्थान लेल हमरा लोकनि के एक संग नहि होमय देश। हमरा लोकनि के अपने बाहुबल आ बुद्धिबल पर भरोस राखि अग्रगण्यक चाही। प्रश्न अस्तित्व क छैक। अधिकार भील माझने नहि भेटैत छैक। एहि लेल चाही संवर्ष—रक्त संवर्ष।

—जय मैथिली

छह पञ्चव भारत मे तथाकथित गणतंत्र। इतिहास प्रमाण अह जे नेपालक राजवंश मैथिलीक प्रबल पक्षधर आ पोषक रहलह बलन कि भारतीय गणतंत्र बनबात मैथिली निरोधी। नेपाल मे मैथिली भाषीक संख्या भारतीय मैथिली भाषीक संख्याक एक चौथाइ सं बेसी नञि छह। राष्ट्रीय जुगलनाक, अनुसार अठारह जिला मे तिरफत लाख मैथिली भाषी छथि। ओना भारतीय बनगणना बलन चारि कोटि मैथिली भाषी के एको कोटि नञि लिखैत ताठाम निश्चिते नेपालक बनगणनाक, सखता पर प्रश्न चिन्ह नञि लगैवाक चाही, तथापि हमरा हिसावे ई संख्या किछु पेघ अवलसे देवाक चाही। जं बनगणनेक संख्या के सत्य मानि ली तयो नेपाल मे एकर दोसर स्थान छह। किनु खेदक विषय जे नेपाल सरकार एखनोचरि एकरा दोसर राष्ट्रभाषा नञि घोषित केलकए आ मैथिली भाषी क्षेत्र मे राजकाज एहि भाषा मे कर-चाक व्यवस्था नञि केलकए। ई निर्विवाद नेपाल राजवंशक आदर्श परम्पराक विपरीत थिक आ श्री ५ को सरकारक उदारता-सहसा आ विवेकबुद्धि पर प्रश्न चिन्ह लग-वेद। एहठाम हम० ए० वरि मैथिली पठन-पाठनक व्यवस्था छह मुदा शिक्षाक माध्यमक रूप मे मैथिली के स्वीकृति नञि देल गेलैत। बुझना जाइत जेना ई सभ भारतक देखादेखी चल रहल हो, जे निश्चिते एगो स्वाधीन देशक मर्यादाक प्रतिकूल थिक।

५-५ दिसम्बर के अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषद द्वारा बनकपुर मे आयोजित विद्यापति स्मृति पर्व के एही परिप्रेक्ष्य मे देखल जा सकैत। समारोहक उद्घाटन केलनि नेपालक भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री सातुका प्रसाद कोइराला-मातृका बाबू गणतंत्रिक विचारक सुप्रसिद्ध आ अनु-पत्री राजनेता छथि, मैथिलीक प्रबल पक्ष-धर छथि। एगो स्वाधीनता-यैतीक रेव

हड़ताल आ तकर मुकाबला : बिहारी रताड़ल

बिहार सरकारक छ लाख नन गेजेटेड कर्मचारी आ त्वाल सिलक गत ११ दिवस-मर त हड़ताल पर छथि। एहि हड़तालक चरिते के केहन भयावह स्थिति छैक से ओहीठामक लोक जनैत अर। अहर मे त रीवाक पानियो मेटनाइ परामत्र भ गेल छैक। बिजुलीक तेजने स्थिति छैक चलन कि सामान्यो स्थिति मे बिजुलीक के ओर-ठाम स्थिति रहैत छैक से अदुलनीए। ठाम घरक त चर्चे नै हो। प्रति बर्ल किछु गाम मे बिजुली खरहा गाड़ितार लगा देल जाएए—अखबार मे प्रचारित क देल जाएए जे एते गामक बिजुलीकरण भ गेल। ई भिन्न बात जे मांस मे दुइयो दिन 'काहन' नहि रहैत छैक। अस्पताल समक स्थिति सम सं सोचनीय छैक—पानि, बती र-1 लोकक अमावे। ओरेशन शय्या पर पड़ल रोगी कुहरि रहल अइ—देखनिहारक पता नहि।

विचारणीय चिक जे एहन स्थितिक छिट बिमेवार के अइ ? हड़ताली कर्मचारी, नै सरकार ? उपर-उपर देखने त जुमैवे कृत जे दोली सरकारी कर्मचारी अइ सज्ज बिखिया के देखला-सोचलाक बादे अठ्ठी बात फरिजा सकेछ—अठ्ठी बिस्मे-वार के चीन्हक का सकेछ।

रसर बिस्वास अइ जे कर्मचारी लोकनि सेहने हड़ताल नहि करैत छथि। हड़ताल फेसन किन्हनु नहि थिक। बखन हुनका लग अजन दावी अदा कवाक जुन दोसर बात नहि रहैत छनि तखने ओ हड़ताल पर बाइ छथि। दोसर शब्द मे कहने ओ बखन हड़तालक लेल बाध्य कइल जाइत थिय—सखने हड़ताल करैत छथि। आव देखवाक ई अइ कि सरिपहुँ एहन स्थिति आवि मुकायल छलक ?

हड़ताली कर्मचारी लोकनिक ओना त छोट-पेघ कइकटा माल छनि पञ्च जे प्रधान माल छनि आ बाइपर कर्मचारी आ सरकार मे बीच सल्ल रहल-अ ओ थिक चारिम तनखा संशोधन समिति (4th

इएत ? हम व्यर्थक विद्वान हेवाक दंभ पोखने छी.....। एहि तरहे सोचेत विचारैत ओ याम घुरि एलाइ।

परत मेने संगी-साथी सम, सकरा सम के हिनक गाम छोड़वाक विषय जुमल रहैक भेंट होइतहि घुरि एवाक कारण पुछनि। ठठपाल सम के ईके जनाव देथिन। ओ सवाव छलनि—वनपति देह पर लताफता नहि अखकीं टोथि पोआर अमर साहु के मरिते देखल भनहि नाम टठपाल।

प्रखति—अमरदूत

Pay Revision Committee) क सलाह के १९७८ फरवरी सं लागू कइल जाय। कहवाक प्रयोजन नहि जे एहि तर-इक समितिक गठन सरकार करैत रहल-अ आ त ओकर नैतिक दायित्व म बाइ छइ समितिक जुभाव के मानतार। विगत अमील मे बखन कि समिति अपने रिपोर्ट बमा केने छल तखन संवदक रायी—नेतक मे स्वयं मुख्य मंत्री ला० जगन्नाथ मिश्र नाबल छलाह जे सरकार समितिक सुभाव के मानेए आ तकरा कार्य रूप देत। ओ आरो कहने रहथिन जे एहि लेल अर्थ जुनू समस्या नहि छैक। पञ्च कनिजे दिनक बाद सितम्बर मे केबिनेट निर्णय छलक जे एकरा अवदूर सं कार्य रूप देल जायत आ फेर नवम्बर मे तीन आदमीक समिति बनल—एकर आर्थिक स्थितिक अध्ययन करैक। आइ मुख्य मंत्री कहि रहल छथि समितिक जुभाव लागू कैला सं २८० करोड़ क आर्थिक चाप सरकार पर पड़ैत आ बिहार जे भारतक गरीबतम प्रान्त मे सं अछि—एकरा वहन नहि क सकेछ।

एहि तरहे स्पष्ट जुमना जाइए जे सरकार आइपरि एहि सम्बन्ध मे जुनू निर्णय नहि ल सकलए। संगहि दिन-पर-दिन गिरगिट संन रंग बदलैत रहल-अ आ एहना स्थिति मे कर्मचारी लोकनिक लेल हड़ताल छोड़ि दोसर बात नहि रहि गेल छलैक। बहावरि बिहारक गरीब हेवाक प्रश्न अइ, मुख्य मंत्री महोदयक बुद्धि पर लोक हंतिटा सकेए। बिहार भारतक सम सं धनी प्रान्त अइ, अकर प्राकृतिक सम्पदा जुनू प्रान्तक हेतु शर्माक विषय छैक। जं गरीब अइ त एहि सिचवही प्रान्तक लोक—बिहार ! आ तकरा गरीब बना कए राखैक उद्देश सं एहि सिचवही प्रान्तक निर्माण भेल छल। के नहि जनेए जे एहिठामक सम्पति सं बाहर कलकरखाना चलेत छैक आ लोक बीबिका अर्जन करैए। एहिठामक लोक अनका दुआपर चिकरीक मौल मखैत फीरे। दोसर बात—जं सरकार के अर्थ संकटक चिन्ता सते छैक त किएक नै मंत्री लोकनिक खर्च मे कटीती कइल जाएए ? किएक नै ओ लोकनि अजन जीवन पद्धति बदले छथि, योग-विलास के कमवेत छथि ? एतो साधारणो मंत्रीक जीवन पद्धति अतीतक राजा महाराजा सं घाटि अइ की ?

तै स्पष्टतः कहल जा सकैछ जे एहि स्थितिक लेल पूर्णतः सरकार बिस्मेवार अइ। ई मानितो जे लाख के बिहारक सरकारी कर्मचारीक जे चरित्र छैक से अति निन्दनीय रहलए आ त ओकरा प्रति लोकक सहायभूति मिलियो भरि नहि छैक।

एखनो बलम कि स्थिति खतरनाक रूप ल चुकल-अ, सरकार तसफीया करवा लेल उद्युक्त नहि जुमना बाइछ। ओ सम-भौताक गप त करैत अइ पञ्च दोसर दिस लठी-गोलीक नल पर हड़ताल के देवेवाक पूर्ण प्रयास मे लागल अइ आ तकरे प्रमाण थिक जे समस्त प्रान्त मे सीमा सुरक्षा दल आ केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस के भरि देल गेल अइ। एहि सं स्थिति आर विस्फोटक भ चुकलए कारण जुनू आंदोलनक प्रतिरोध सं चिकि भेटैत छैक। दोसर दिस सरकार समस्त अस्थायी कर्मचारीक चाकरी समाप्त करवाक आ बहुलांश स्थायी कर्मचारीक चाकरी स्थापनक आदेश द चुकल अइ। १७ दिसम्बर के जे मुख्य मंत्रीक नाथा पर वैचार भेल आ पाँच आदमीक समिति एहि स्थितिक निपटारा लेल गठित भेल-अ, ताइ मे एकोठा मंत्री नहि छथि 'ब्यूरोक्रेट' छथि, बनिकर सलाह सं ई स्थिति धन्य लेलकए। एहि सं इहो पता चलैछ जे मुख्य मंत्री के अपन सहयोगी लोकनि पर भरोसा नहि छनि, बिस्वास नहि छनि आ ओ पूर्णतः 'ब्यूरोक्रेट' पर निर्भर छथि। एहना स्थिति मे समस्याक छिप्र समाधानक संभावना त नहिए छैक देखा चाही एहि प्रतिष्ठाक लड़ाइ मे उंट कून मुँहे वेसैए।

—अमरदूत

(दस दितक बाद उपरोक्त हड़ताल समाप्त भ गेल। समझौताक अनुसार चारिम PRC क सलाह के विगत अमील सं लागू कइल जायत। मुख्य मंत्रीक अनुसार बिहार सरकार के सलाहा सचरि कोटि टाका एहि मे खालेक आ तीस कोटि लगतेक एवम ग्रेसिया सुगतान मे जे पाँच सय प्रति कर्मचारी के देल जेतैक।

—सम्पादक)

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

‘देसिल वयना’ मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाइ। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क कर
विज्ञापन व्यवस्थापक
अखणीदय प्रकाशन,

देसक/पाठक लोकनि सं निवेदन—

- १—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना ‘देसिल वयना’ मे प्रकाशनार्थ पठाइ।
- २—‘देसिल वयना’ मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना के अप्राधिकार देल जायत।
- ३—मिथिला मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाइ।
- ४—‘देसिल वयना’ स्वस्थ विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।

चारि गोट मिनी कविता

< ५/५/७७ ६/७२

(१) सूर्योदय

● माइक आंचतर सं

बहार कक मुँह अपन

बिहुँसि देलक

शिशु अबोध।

(२) राति

● दुरगमनिया कनिया बनि

बन्त सान्त मइया मे

थेटी प्रत्येक दिन

चलि जाइछ

देने बिछोड़ व्यथा

पसारि मन विरथी पर

कारी धन धन्यकार।

(३) चन्द्रमा

● परदेशी पाहुन केर

जोहैत होथि बाट जेना

खिड़की लग ठाढ़ि

कुनू राधिका।

(४) बखान्त

● इहो बख

ओहिना चीति गेल

कुड़ अथबल सूर्य

बस गैरेजक

पहुँआर में दूबि गेल।

लाल बुभुक्करक चिट्ठी

पडटा ज्ञान नीति

ओमनबी, संनरक बी, न्होदवनी।
कव मैथिली।

आगा हाल-सुरति ई जे पूर्ण तामसक संग लिखय पड़ि रहइ-अ जे हमर यना केबाक उपरान्तो अहाँ हमर पत्र के छापि देल आ मात्रा छापिष्टा नहि देल-तकर प्रति हमरो नामे सरकारी डाक सं पठा देल। बाबा वेदनाथ अहाँ के ततवोपर संतोष दिताथि। किन्तु ताइपर सँ अहाँ देबाक नेवार अइ आ तँ हम निलमिल रूपे एकरे ने कहैत अइ 'घाव पर दून छिट-नाइ।' चिट्ठी पढ़ि मन त मेळ जे अहाँक मूँइ नोचि ली परञ्च अहाँ त छी-असिया कोसर आ तँ अमने केय नोचि संतोष करय पड़ल।

हेयो सम्पादक प्रवर! मिथिला मे एगो कहवी छइ—नाम की ज्ञानय प्रसव के पीढ़ा? से तकरे परि। अहाँ त परदेश मे छी। दोसर राज, दोसर राजा। तँ अपने किबानय गेलिऐ जे एहिठाम लोक केना खेपै। अहाँ सम सोचित होएव जे मिथिला मे रहनिहार सब भरिसक मुख-मुदाँ थिक—जे मैथिलीपर ओहन पेश वज्रवात होइतहुँ करोट नहि फेरलक। किन्तु असलियत से नहि छेक। असल मे कचोट आ तामस करारा ने मेले? किछु सरकारी कौरा पर पालित लोक केँ छोटि सभ भीतरे-भीतर महुरावल अइ। परञ्च डर होइ छइ ज्ञान-मालक, बीविकाक। जँ अहाँ के विदवात नहि हो त हमर हकार रहल, अपने ओमान् मुखमनीषीक क्षेत्र मे भावि बाड। एष्ट म बायत जे किछु उनरा पीताबना अफसर छोटि सभ तामसे विषम मेल अइ। परञ्च अहाँ कनियो केओ चूँ केळक कि उपरोक्त लोकक गिद-दहि ओकरापर पड़ि बाइत छेक। सरकारी बेसरकारी गुंडा ओकरा पाछा लागि जाइत छेक आ नाके सूते पानि पिया देत छेक। नहि किछु मेले त अने-मुल्लिस करा देलक आ दू-चारि केव सुआ देलक। आ जेना कि कहवी छइ किने जे 'चोर न्याये नष्ट' से विरोधी अन्याये नष्ट भ जाइ। सर्वत्र आतंकक मेघ पसरल छइ।

ओना अहाँ कहि सकेछी जे एक बादमी के ने तंग कएल जाइ छइ, जँ लोक संगठित भय आवाज उठावय तखन। त हमर उत्तर रहत—ओमान बुझियार बी महराज, अते पोन पर हाथ चले छइ तते दोसर चले तखन ने? जानिय दिनकर दिनानाथ जे मिलियोभरि फुलि कहैत होइ, समाज ने काब आवय एहिठाम वर्णवादक तेहन ने किख छिहिया देल गेल

छइ—जे लोक के संगठित केनार सँ सहज भरिसक डूमरीक मूल अतनाइ होएत। एहिठाम त तथाकथित पेश आ छोट वर्ग मे भेड़ा-महिवाक काहि चलेत छेक आ दुगु वर्णक मुँइ पुरखसभ सकड़ीरी सुइ-केए। ने त आइ मिथिला-मैथिलीक कतौ ई हालत रहिते? सभसँ भवरबक बात त ई जे जे सर्वहारा वर्ग मैथिली के अपन हिरदेक मणि आ कंठहार बना के रखलक—से आइ अपना केँ मैथिल कहितो ने अइ। मैथिल माने मेल बाजत। आ बाजत सभ त हुन्ते अइ—कनहा कुन्हर माँके तिरपीत। बाजने ने मुखमनी छइ। ओना खुशीक बात जे बाजने ने मख-कर्णिय आ निम्नवर्गीय समुदाय मे जेतना एलेपर परञ्च गोलगाला समठाम जगजाबी मैथिलेक छइ। अहाँ के त हुन्ते हित जे एहि अंचल मे नोट अथवा लोट सँ भोट लेल बाइ छइ। आ तँ हमरा किटल भरि विस्वास अइ जे अगिलो जुनाब मे अहाँक मिथिलाक मिलापर विपुल मत सँ विजयी हेताइ आ अहाँक सपना-सपने रहि जायत।

तँ कहनाक आशय जे तालयक मतलब ई जे रामबीक इच्छा सँ आ गुरु रंगाक परताप सँ—विद्रोहक आगि नीक जकाँ पसरल छेक—मुदा उक्त लेखनाहर त चाही। से जँ साइत हो त हमर नोट-इकार रहल। आ नहि हो त सभसँ दुरिष्क दीनानाथ—माने लाले बुभुकर केँ नहि बुझियनि। हमर पत्र ने छापी आ ने जुनू तरइक समक राखी—से अनुरोध। ओना त हम पहिनिह सँ बदनाम छी। कहलके किने जे नामी चोर महेदा—से तकरे परि। जानिय नावा वेदनाथ कहिया सँ अहाँ हमर पत्र छापि देखए तहिया सँ हम निवाल भगवानक पूजा छोटि मलानक पूजा मे लागल छी जे कोनहुना एहि खेप नाचि पाइ। गत अन्हरियाक एकादशी सँ चमचा रहस्य नामक रोचना पाठ सेहो आरंभ क देने छी। एही क्रम मे जगनाथ चालीसा लिखनाइ जे आरंभ कइल से त आव लगविण्टल सन अइ। विश्वास त अछिइ जे जँ कहियो आक्रमण भेल त ई कुतिसभ हमर कवक कान करत। आगा त उगिलेले जानियि।

अपने सँ फेर हमर आपाद-पसक प्रार्थना जे एइ पत्र केँ जुनि छापि दी। दोहाइ ओइपारक छी।

पत्रोत्तर नहि पेनाक प्रवल आकांक्षी
श्रीमान लाल बुभुकर
बुभुक्कर भ्राम चाखी

*

देश-दशा

की भेलै किय भेलै, 'मैया ई केना भेलै तीनु सुवनक परसिद्ध मिथिला, आइ किय एना भेलै आइ किय एना भेलै, आइ किय एना भेलै बल-बुद्धि-विद्या किछु ने रहलै, सब कत' हेरा गेलै अकर माटि सँ जनमलि सीता, अहिलाक शाप भेटा गेलै वैह अजैत विदेह कहेउके, से परताप कहाँ गेलै से परताप कहाँ गेलै, से परताप कहाँ गेलै सुगौ शास्त्रक तप करै छल, से परताप कहाँ गेलै

ओ रिबासिह सलहेस कहाँ छइ, विद्यापति कहाँ गेलै नइया हुकुर तीन कोटि छइ, सिहक नाम भेटा गेलै सिहक नाम भेटा गेलै, सिहक नाम भेटा गेलै ठोहि पारि क कनै मैथिली, की छलै आ की भेलै

—राम लोचन ठाकुर

१. मिथिलाक छी : मैथिछ छी ॥
२. मैथिली बचाव : हिन्दी इटाव ॥
३. मैथिली बाजू, पढ़ू, लिखू ॥
४. मिथिला मे यातायातक सुव्यवस्था छेक,
रौंदी-हादी सँ मुक्ति छेक, कल-कारखानक विकास छेल—जनमत तैयार करू।
मैथिली आन्दोलन केँ सफल बनाव ॥
५. मिथिला-मैथिल विरोधी जयचंद-मिरजापर के चीन्दि क राखू।

निवेदक

मैथिलो मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता

मैथिली पोथी आ पत्रिका अपनो कीनु पढ़ू
आ अतको कीनवा पढ़वा छेल प्रोत्साहित करू।
किछु बहु चर्चित पोथी—

१. अर्द्धनारीश्वर (उपन्यास) / मणिप्रदस दाम—१५ टाका
२. इतिहासहंता (कविता संग्रह) / रामलोचन ठाकुर दाम—४ टाका
३. वेताल कथा (हास्य-व्यंग्य) / कुमारेश काश्यप दाम—४ टाका
४. जुआचल कनकनी (नाटक) / महेन्द्र मलंगिया दाम—२ टाका
५. निष्कलंक (नाटक) / जगदीन झा दाम—२ टाका

देसिल वचना' कार्यालय सँ भेटि सकैछ

आइ भिक्षापान नांज, चाहौं महाकालीक खपर

अधुगण !

युगों तं हमरा लोकनि विधापति स्मृति पर्व मनवत आ प्रस्ताव पास करैत आवि रहल छी परज्व मिथिला-मैथिलीक समस्या बने छल तते पढ़ल अछि । कहनाक प्रयोग बन नहि, जे प्रस्ताव-परित केनाइ तथा मंच तं न्हका-बढ़का भाषण देनाइ, संगहि नेता लोकनिक आस्वाशन देनाइ कोनो अर्थ नहि रहैत अछि । इ कटु सत्य हमरा लोकनि भरिसक छलनोहरि नहि बुझलौह आ जापरि नहि हुमन तापरि 'समस्याक समाधान असंभव । तै, कोनो विधुतिक स्मृति-पर्व मनओनाइ बेकाय नहि, परज्व प्रस्ताव पास केनाइक बढ़ला अधिकार प्राप्ति छल संघर्षक शपथ लेब परमावश्यक । मोन राखू जे हाथ पसारै भिल मनहि भेटि जाय मुदा अधिकार नहि । अधिकार किमय पड़ैत छैक आ ताइ छेल त्याग, बलिदान आवश्यक । जे जाति मरनाइ नहि जनैथ ओ ने त बीवाक महत्व बुझेथ अथवा ने बीवाक अधिकार रखैथ । आ अपन भाषा-भूमिक उद्धार हेतु जे मोरैत अछि, तकरा जं मरैथे मानि लेल जाइ त अमरता भेलैक की ?

निब भू-भाषा हित मरथ,
मरथ ने अमर बनेत अछि ।

तकरे गाथा विश्व ई,

गाओत, सदा गवैत अछि ॥

मैथिली मुक्ति मोर्चा एही सिद्धान्त से विस्वास करैछ आ तें सर्वथ पथ निर्माण मे लागल अछि । परज्व कोनो जातीय संघर्ष, जातीय मुक्ति-संघर्ष-बन समर्थन आ जनबलक सहयोग सं सफल भ सकैछ । उदाहरणक लेल आसामक आन्दोलन के छे जा सकैछ—बकर आरंभ निश्चित छान वर्ग द्वारा भेल छेलैक । परज्व बं ओकरा विपुल बनसमर्थन नहि भेटितैक, ओहि संघर्ष पथ पर आवाज-बुद्ध-बनिता एक संग नहि उत्तरि अवेत त कि ओ एतेक प्रभावशाली भ पवत ? तें हमरा लोकनि समस्त मिथिलावासी सं आ विशेष के छान युवा वर्ग सं अनुरोध करैत छी जे ओ लोकनि एहि निर्मित अपना के, अपन समाज के जागरूक करथि, तैयार राखथि । आन्दोलन दिनतका के नहि होइत छैक । आन्दोलनक आगि सुतगि रहल-ए ओ फखनो दावानलक रूप ले सकैछ ।

—जय मैथिली

निवेदक :

रामाधार मिश्र

बास्ते—मैथिली मुक्तिमोर्चा,

कलकत्ता

चिट्ठी पुर्जो

'देखिल कवना'क अंक-२ प्राप्त भेल । आभारी छी । मुक्तिमोर्चाक ई प्रयास अति स्वागतनीय—हमर हार्दिक शुभेच्छा स्वीकारी । यथा-योग्य सेवा छिली ।

—धनचक्र

'देखिल कवना'क तीनटा अंक देखबाक-पढ़बाक अवसर प्राप्त भेल । मैथिली मे बाहिर तरहक पत्रक आवश्यकता छलैक—तकर ई पूर्ति करैत अछि । ओना तऽ एकर सम रचना उपरा-उपरी रहैत छैक परज्व ग्राम सं दूर मिथिलाक मकदूर हमरा विचार सं सब सं महत्वपूर्ण सामयिक । जं अन्य रचना के छोटियो देल जाइ तऽ एकमात्र एही सम्पन्न कारणे देखिल कवना अमर रहत । 'कह लोचन कविराय' (महापि दोसर अंकक पूर्ण प्रभावित नहि कऽ सकल) बाज-गीत तथा पहिल आ दोसर अंक से प्रकाशित श्री रामजीचन ठाकुर जीक कविता तथा तेसर अंकक 'जीनिहारक गीत', दोसर अंकक 'संस्कृतिक सारापर सत्ताक चक्कर' तथा 'बुढ़ारी-भसा बनाम सत्ताक राजनीति' एवं तेसर अंकक समस्त रचना एकर उपलब्धि थिक । श्री कुणालक कथा 'डकैत' यद्यपि पत्रिका मे बेसी जगह छैने अछि—तथापि प्रशंसनीय अछि । बहुत दिनक बाद एहन नीक आ सजसक कथा पढ़बाक मौका भेल । और अन्त से एकर सम्पादक के एहन सम्मो-पयोगी सुन्दर-सजाऊ संपादकीय लिखबाक हेतु अशेष धन्यवाद । ई पत्र विरबीवी हो से हमर कामना । —राजेन्द्र कुमार सिद्ध

अरुणोदय प्रकाशन, ३२/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३

कलकत्ता-७०० ०३३

बेधाख स्टीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित । सम्पादक : श्री जनार्दन भा

बालगोव

क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलावासी रे

सीता कानि कौ छथि मिथिलावासी रे
मायक बोल बचा छे मिथिलावासी रे
जे समदिन समसं आगू छल
(सेह बसल छथि मिथिला सिथिला
विद्या - बुद्धि - कला वा हो बल
चारि कोटि सुत के मां अबला
नवतुरिया बठ जगै मिथिलावासी रे
मायक लाज बचा छे मिथिलावासी रे
समसं मधुर मैथिली भाषा
चारि कोटि मैथिल के आशा
मिथिलाक्षर सन लिपि पुरातन
करय अपेक्षा शासक राबण
बठ युवागण बनें राम अविनाशी रे
मैथिलीक मान बचा छे मिथिलावासी रे
समय भारती सीता लखिया
गोतम विद्यापतिक भूमि ई
जे कहियो समठा पूजित छल
आइ किए समठा अवहेलित
आबहुं चेत, बनें छुनि सत्यानाशी रे
क्रान्तिक पथ अपनाछे मिथिलावासी रे

—सुभाष चन्द्र मा

विशेष सूचना

मिथिलाक सर्वांगिण विकासक हेतु अनेकित जनजागरण आ जनान्दोलन पर विचार-विमर्शक सही मार्ग तालकाक हेतु आगामी १० जनवरी के हस्तप्रबन्ध भेदान (दक्षिणंगा) से प्रातः ६ बजे सं सां.क.७ बजे करि मिथिलाक विकास मे अभिरुचि राखयवला प्रत्येक संगठन आ राजनीतिक दलक एक-द्वितीय प्रतिनिधि सम्मेलन, मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा मायोजित करत । एहि सम्मेलन मे भाग लेबाक हेतु मिथिलाक प्रत्येक प्रगतिशील बुद्धिजीवी आ भ्रमजीवी के बाहर आमन्त्रण ।

—धर्मेश्वर कुमार
संयोजक, मि० ब० मोर्चा, दरभंगा

'देखिल कवना' बन्दाक दर :-

१ प्रति ५० पहरा
१ बर्लक ५) टाका
५ बर्लक २०) टाका

पाइ पढेबाक पता—

श्री जनार्दन मा,
१७/६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

कह लोचन कविराय

बारिक पढ़ुआ तीत आ, हो बाजारक सीठ
कुहरि रहल तें मैथिली, छनियां टेरय गीत
छनियां टेरय गीत, नचै पश्चिम गामक
चाम-दाम सं मोहि, पुत सम मिथिला धामक
कत लोचन कविराय, कलकत्ता लेपल कारिस
मैथिल युवजन मानि, मैथिली पढ़ुआ बारिक ॥

अरुणोदय प्रकाशन, ३२/५, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३

कलकत्ता-७०० ०३३

बेधाख स्टीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित । सम्पादक : श्री जनार्दन भा

रश्मि रेशना

वर्ष-२ अंक-५ फरवरी, १९८२ मूल्य-पचास पाइ

सम्पादकीय

खगता मिथिलाक्षरक

लिपि आ भाषा से उपर सम्बन्ध छैक जे देह आर मन मे । सुगठित अवस्थ्य शरीर मात्र सुन्दर आ आकर्षक नहि होइत छैक अपितु प्रबल मन आ स्वस्थ-सही चिन्तनक आधार सेहो होइत छैक । तहिना सुन्दर-सुगठित लिपि सेहो कोनो भाषाक विकासक आधार होइत छैक । इहए कारण छैक जे लिपिक निर्माण मे विद्वान लोकनि के अकथ परीअन कार्य पड़ैत छनि आ एहि क्रम मे सुगठु लागि जाइत छैक । इहए कारण छैक जे कोनो जोदित जाति अपन लिपि के तेजि दोसर लिपि अपनेबाक छैक तैयार नहि होइत अछि ।

लिपि जे हेतु भाषाक देह थिक ते ओकर पहिल परिचान थिक । ई लिपिअक विशेषता छैक जे पहिले नजरि मे दर्शक के अपन अस्तिवक, अपन विशेष परिचितक मान करा देल अछि । कहबाक प्रयोजन नहि जे ई परिचित गमा देने कोनो भाषाक भविष्य संदिवस भ जाइत छैक, ओकरा चालकात संकेतक देव सदिलखन महराइत रहैत छैक ।

उत्तर-पूर्वी चलीय नव्य-भारतीय भाषा सभ मे सभ सं प्राचीन आ समृद्ध भाषा होइतहु मैथिलीक स्थिति आर सभ सं दयनीय आ सोचनीय छैक आ तकर जवर्द्धत कारण छैक मिथिलाक्षरक अवहेलना ओ देवनागरीक अभ्यर्थना । हिन्दीक कारा पर पालित तथा-कथित विद्वान लोकनि द्वारा यदा-कदा मैथिली के हिन्दीक बोली कहि देवाक दुस्साहसक आचार निमित्त रूपे ई लिपिअ थिक । जाइ विद्यापति के ल क हमरा लोकनि एतेक नचेत छी, जं हुनको मैथिलीय देवनागरी मे प्राप्त भेल रहैत तं निश्चित हुनका मैथिलीक कवि सान्य करोओनाइ ओतेक सहज नहि भ पवैत । ओना मिथिलाक्षर मे रहितहुं प्राचीन मैथिली नाटक सभ के हिन्दीक नाटकक रूप मे अवस्ते लिखल गेल ए परञ्च ताहु मे मैथिलीक पाइपर पालित विश-नालङ्घि बला मैथिले प्रोफेसरक पड़यंत्र छैक जे समस्त पोथीक सूची आ परिचय उपलब्ध करा देलथिन । आ से होइतहुं सान्य नहिजे भ सकैलेक ।

ओइ बहुत इष्ट कारण छैक जे बहुत दिन परि विद्यापति गंगालक कवि मानल जाइत रहलाह । ओना ई मैथिलीक हित मे रहलैक नै त कविपतिक मायः समस्त पदक सकलन-प्रकाशन जे कि निच-मनुष्यदरः महोदय हयक प्रयासे भेल से अक्षमण्य मैथिल जाति सं किनहुं संभव नहि भ पवैत । आइयो सयौद तथा मैथिलीक प्राचीन नाटक खास के भल्लालीन नाटक के बंगाली लोकनि अपन पोथी मानत छथि आ ताइ पर बढ-बेटी कल भ रहल छैक ।

स्पष्ट छैक जे मैथिलीक विकास मे सभ सं पेघ वावक भेलथ आ भ रहल देवनागरी लिपिक प्रचलन आ मिथिलाक्षरक विरस्कार । एहि सं ई मात्र अपन विशेष परिचिति ए टा नहि गमओलक-ए अपन जाति सं (पूर्वांचली भाषा-समूह सं) सेहो कटि गेलथ । आ जाइ विजातीय भाषाक संग जुटल वा बोड़ि देल गेल-से सुरला सन एकर वाट मे वेतल अवसर पकिते भीदि चेबाक ताक मे अछि । ई विजातीय भाषाक सामिप्य एकर स्वरूप के धूमिल त करबै केलेक संगहि मिथिलाक संकटित तथा मैथिलक लचि के सेहो विकृत केलेक आ ओकर जातीय चेतना एकता के, जातीय संस्कार के पूर्ण तरहे नष्ट क देलकथ ।

ते आइ जं सपहुं हमरा लोकनि अपन जातिक, भाषा संस्कृतिक अस्तित्व रक्षा करय चाहैत छी, ओकर विकास चाहैत छी त ई अनिवार्य छैक जे अपन लिपिक रखा करी, ओकरा प्रयोग मे आनो । प्रबल उठि सकैच जे एते दिवजा बाद पुनः मिथिलाक्षरक प्रयोग मे बाधा-व्यवधान अवेत छैक—पाञ्च शै स्थायी नहि, क्षणिक होइत छैक । एते हजार बाधा-व्यवधान अवेत छैक—पाञ्च शै स्थायी नहि, क्षणिक होइत छैक । एते दिन हमरा लोकनि पातर मे पथ विहीन बौआइत रहलौह आ भाव जलन पक वाट भेटि गेलथ त जेतक थाकल-ठेहिआएल किष्टक मे होइ—धरसुं हा चक्काक थकि-गति अप्रतिम होइत छैक । निश्चित समय सं पहिने हमरा लोकनि पहुं चि सूक्त छी ।

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
ढाहि-जारि सुछह कख हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

मैथिली आन्दोलन

मिथिलाक जन-आन्दोलनक सन्दर्भ मे

जीवित रहबाक लेल मनुष्य के ने मात्र प्राकृतिक प्रतिबलताक विरुद्ध सतत संघर्ष करऽ पड़ैत छैक अपितु ओकरा समाजक ओहि प्रतिक्रियावादी शक्तिक विरुद्ध सेहो संघर्ष करऽ पड़ैत छैक जे अपन राजनैतिक एवं आर्थिक वर्चस्व बनोने रहबाक लेल वर्गीय एवं जातीय शोषण उत्पीड़नक वल-पर समाज के खर्बर, कंगाल, मूक ओ खिबर बना, ओकर अस्मि विकास के 'शील' कऽ देत छैक । वर्गभेद बला समाज मे वर्गीय शोषण-उत्पीड़न, जातीय वा राष्ट्रीय शोषण-उत्पीड़नक माध्यम सं अभिव्यक्ति पवैत छैक । मिथिलासत पिछड़ल क्षेत्रक जनता ने मात्र वर्गीय बल् जातीय वा राष्ट्रीय शोषण-उत्पीड़नक शिकार होइत रहल अछि । जतऽ किछु अर्थ लोखर व्यापारी, पदस्ता लोखण राजनीतिज्ञ आर किछु सामंतवादी विचारधाराक पोषक सभ एकजुट भऽ मिथिलाक अधिष्ठित एवं अविधित जनताक शोषण करैछ आर तें आइ वर्तमान मे ई आकस्मिक नहि अनिवार्य भऽ गेलैक अछि जे एहि राष्ट्रीय शोषणक विरुद्ध चलाएल जा रहल संघर्ष के अविलम्ब गति देल जाय—'मिथिलाक संस्कृति; भाषा-साहित्य; कला-कोशाल; वाणिज्य-व्यापार; उद्योग-वंशा आदि के उचित संरक्षण दऽ मिथिला क्षेत्रक विकसित चलाओल जा रहल घटयन्त्र के विफल कऽ देल जाय ।

आबादी प्रातिक प्रसत्ता अपना देश मे जे प्रगति भेल अछि ओकरा नकारल नहि जा सकैछ सुदा जाहिरपर 'मिथिला-सन अविकसित क्षेत्र उपेक्षित राखल गेल अछि ओ वस्तुतः विचारणीय अछि । ओना सरकारी खापर कागजी उन्नति आर विकासक अभ्यार लामल छैक सुदा वस्तुस्थिति ई जे मिथिला के माध्यम बना, केन्द्रीय एवं राज्य सरकारक टहल सभ मात्र

भारत मे एखनो साक्षरक संख्या पचीस प्रतिशत तं नेवी नहि छैक । मिथिला मे त भारी कमे इष्ट । एहि मे शिक्षितक संख्याक अनुमान सहजहि ब्याओल जा सकैछ । शिक्षितक लेल एक घंटाक समय जं रोज देचि त सात दिन सं बेटी मिथिलाक्षर सिखवा मे किनहुं नहि लगतनि । जे नेना सभ अक्षरारंभ करत तकरा छेल बेहने रोमन वा देवनागरी तेहने अपन लिपि । बल अपन देवाक कारणे धार सहज हेतैक । सहातक पोथी प्रकाशनक गप्य छैक ताहु मे विदेश अस्तिवक संभावना नहि । बंगाला आ असमियाक लिपिक संयोग सं सहजहि मैथिली अक्षर भेटि सकैछ । खगतासुसार एकरा किछु नव-सहज रूप देल जा सकैछ, जेना बंगला मे कश्क गेल छलैक । बास के 'उ' कारक मात्रा मे एकलपता आवश्यक छैक कारण प्राचीन वर्तनीक अनुसार किछु आखर मे ई माना लगने ओकर रूपे बदलि जाइत छैक आ सहजे चीन्हा मे नहि अवेछ ।

आशाए नहि किबसो भ छै जे मैथिली प्रेमी विद्वान लोकनिक तथा आन्दोलनकर्ता लोकनिक एहि पर ध्यान देलाह आ गंभीरता पूर्वक सोचता । समय जते बीतेत अछि—अबबोह होइत अछि तं श्रमता आवश्यक ।

● जय मैथिली

अपन-अपन आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति के मसबूत आ स्थायी बनेबाक बन्दोबस्त कएलनि अछि आर किछु नहि । हापि विकासक नामपर जे सोइ-बहुत खाद आ बीज उपलब्ध कराओल जाइछ तं पानि निपत्ता यऽ जाइछ; सिंचाइक नाम पर जं पौव-दस गोठ "भोरिंग" आदिक व्यवस्था कराओल जाइछ तं बिबलो बिला जाइछ भने जनता के मात्र आस्वास्तक नोक सं ताहि रूपे देवाक प्रयास कएल जाइत रहल अछि आइ आबादीक ३४-३५ सरसक परचातो मिथिला ओतहि अछि जतऽ आइ तं ३४-३५ सरसक पूर्व इष्ट—शिक्षाक अव्यवस्था; कृषिक ह्रास; साम-गाम मडल टूटली मड़ेय; चाकरीक लोष मे बौआइत—मिथिलाक शिक्षित युवा वर्ग; आवागमनक अभ्यवस्था; सांस्क सोभ पेट मे जुहा केपेटने रीरय नरक यातना भोगेत सावन्हीन समाज; जीवित रहबाक अभिलाषा नेने गाम गाम सं पंजाब-हरियाणा, बंगाल-आसाम—पड़इत बुड़, जवान—'मिथिलाक वर्तमान चित्र इष्ट रहि गेल अछि । आ रहबो करत एहिना यावतपरि भारतक मानचित्र मे मिथिलाक रेखांकन नहि भ जाइछ—'बाघरि सरकारी रेकाई मे मिथिलाक अधून खेसरा-खाता नभर नहि लिखा जात छैक ।

भौगोलिक दृष्टिकोण सं, भारतक सुरक्षा एवं अखंडताक लेल जनता महत्व मिथिलाक छैक ओतेक महत्व ने दिखी के देल जा सकैछ आ ने पटना के । भारतक सीमान्त प्रदेश इष्टबाक कारणे मिथिलाक अपन अलग महत्व छैक । सामरिक सुरक्षा के दृष्टि मे राखि सरकार एतहु विराट 'घरेडूय'क निर्माण रातो-राति करा सकैछ—जिबीबन डिबीबन 'मलेटरी' एस्टेटा कऽ सकैछ सुदा मिथिलाक विकास

सक नामपर सरकारी तंत्र गुमही किएक लाचि लेत अछि ई एकटा अति विचार-पीय प्रश्न ! एहि परिप्रेक्ष्य मे जं गोपीरता तं विचार कएल जाए तं ई स्पष्ट भऽ जाएत के मिथिलाक विरुद्ध राजनीतिन लोकनि द्वारा एक गोट भयंकर घटपत्य कइल गेल अछि के मिथिलाक जनता के निबध्नि कऽ जागत मे बनल रही—खारे ओ राजनेता लोकनि कोनो पार्टी तं सम्बन्ध होय । की लोक सङ्घर्षन करीक मैथिल के ई यथार्थता के ब्लैक रेडिओ चाली ? लोक जनन, इन सन एहि जिज्ञा के अपन प्रारम्भ दृष्टि हाथ पर रख बहने चेतन रही ? केओ लोकनिनो मैथिल एहि दमनीय स्थिति के अपना मोन सँ स्वीकार नहि कऽ सकैछ—आर एतहि यक्ष-प्रश्न उपन होइछ—“कऽ पन्था ? यद्यपि एहि प्रश्नक उत्तर दुबिडि द्वापर-युग मे वऽ चुकैछ छथि मुदा हुनकर उत्तर (महाजनन) आधुनिक काळ मे अप्रासंगिक भऽ वऽ रहि जाइछ कारण महापुरुष बला—निर्धारित पथक अवेषण सँ पूर्व ‘महापुरुष’क अन्वेषण करऽ पड़त आर अपना मिथिला मे एहन महापुरुषक अभाव प्रायः सब के छटकत मिथिला मे ‘कुर्छी पुरुष’ अगणित भेटि सकैछ मुदा ‘महापुरुष’ कतऽ पावी ? जं से रहैत तं मिथिला सन पुण भूमि ई दर्दना ! मैथिलीक एहन अवहेलना ! मैथिलक ई अपमान !!

अतएव, हम सन के संवर्षपथ निर्धारित कएने छी ओकरा आर सुध्वस्थित त्वे आर्षा बह्मवऽ पड़त, अपन संवर्ष मे तीव्रता आनऽ पड़त आ तखनहि हम सभ कोनो फलक आशा कऽ सकैछ छी । ई प्रायः सभ के आभास हैत के एखनवरि मिथिलाक जगलक प्रहरी सभ भाषाबला भान्ड पर अपन मोर्चा बमौने छथि इन्हरे बिछु दिन सँ मिथिलाक लेख “सम्पूर्ण-क्रान्तिक” परिभाषा प्रचारित ओ पारिभाषित कएल जा रहल अछि । एहिदाम ई कथम प्रावर्गिक हैत के पात सन विद्यालय जनताधिक देश से केन्द्र सरकारक समक्ष ततेक ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्या सभ प्रस्तुत रहैत छैक जे मिथिला सन उपेक्षित मूलखण्डक भाषाक समस्या पर ओकर ध्यान आकृष्ट कराएव जं अवभव नहि तं कठिनाई अवलक्ष-कइल जा सकैछ । ते हुमा सभक ध्येय ई इष्टवाक चाही जे येन-केन प्रकारेण केन्द्र सरकारक ध्यान आकृष्ट करा सकी । एहि सन्दर्भ मे मात्र भाषाक सरकारी मान्यताक समस्या के पर्याप्त नहि कहल जा सकैछ । जं एकबेर केन्द्र सरकार के ई बात स्पष्ट रूपे मान करा देल जाए जे मिथिला मे ओ सभ ताव वर्तमान छैक—ओ समझा साधन उपलब्ध छैक जे एक गोट स्वतंत्र प्रांतक लेल आवश्यक कइल गेलैक अछि मने एक गोट पुष्पक राज्य बनवाक समझा योग्यता मिथिला रहैत अछि तं एकदिन केन्द्र सरकारक भूक खुलि बढैत आर अनेरे मिथिलाक ककटा समस्याक समाधान स्वयं भऽ सकैतैक (एहि संदर्भ मे श्री दितराज यादव जे द्वारा कएल गेल कार्य के नबर अर्पण नहि कएल जा सकैछ) ।

मिथिलाक लैटिन्क वर्ग लगभग दू दसक सँ जनताधिक माधम के अना, केन्द्र सरकार सँ आग्रह करैत रहल अछि जे ‘मैथिली’ के सरकारी मान्यता प्रदान कऽ (संविधानक अष्टम अनुसूची मे सम्मिलित कऽ एकर प्राचीन प्रतिष्ठा के संरक्षण देल जाओ—प्रांतीय सरकार सँ सेहो आग्रह करैत रहल अछि जे ओ एहि संदर्भ मे उचित देण उठावऽ मुदा ओकरा सँ पर कुत्ता मारैत विहारक सुयोग्य मैथिल सुख मंडी जनाव जगलक मिथिल साहेब अनायास भविष्य मासत बापक रेकार्ड बना रहिना उठाव—“अन्ततम बाजेकुन !” यटनाक गोल घर पर चढ़ि अबात देवऽ लाजाइ “ओ मैथिली भाषी लोकनि, कण्ठस्थ कऽ लिखऽ” या लिखाइ रख-लिखाइ “!!” एकर कि अर्थ ? मने हम सभ स्वोण छी ? बायब मर्म छल मैथिलीक लेल सरकारी मान्यता आ नाबायब रूप सँ लक्ष्य गेल माथ पर उड़ू !! आब रेटैत रहू आखि बे-पेटे “आर अदा करैत रहू नमान !! एहि सँ बढि कऽ आर की दुर्भाग्य भऽ सकैछ हमर समक ! मुदा एकरा मात्र दुर्भाग्य कहल सँ काब नहि चलत । जं समयानुसार एकर प्रतिकार नहि कैल गेल तं अतन्मव नहि के काहिर विहार सरकारक नवका अध्यादेश जारी होइक जे मिथिलाक जनता मे जे एखन बरि ‘टीक’ नहि कउनो होइ आर ‘कट्टा’ नहि करवने होइ से अतिलम्ब ‘टीक’ कटना देखु आर ‘कट्टा’ करना देखु “आ पञ्च तं जगज्जाय चावू गामेनामे घोषणा करने फिस्ता जे एहि काब मे बिलम्ब नहि एष्टवाक चाही—ई विछो दवायक आदेश छियैक ! हमर कश्चाक ई तात्पर्य नहि जे उर्दू भाषाक विरोध एष्टवाक चाही उर्दू अपना देशक एक गोट अति समृद्ध आर विकसित भाषा थिक । उर्दूक क्षमता पर कोनो प्रकारक प्रश्न चिह्न नहि लगाओल जा सकैछ आ उर्दू कि विश्वक कोनो भाषाक अनावर नहि हएवाक चाही कारण कोनो देशक भाषा-साहित्य, ओहि मूलख विरोधक सम्प्रदा आर संस्कृतिक प्रतीक होइत छैक । ई इतिहास सिद्ध तथ्य छियैक जे जं कोनो मूलख विशेषक तथ्यता ओ संस्कृति के नष्ट करव जमीद हो तं ओकर भाषा-साहित्य पर प्रहार करू । जतऽ बरि मैथिलिक प्रश्न अछि, एखनवरि एकरा कोनो भाषा सँ बिराज नहि रहलैक अछि आने रहतैक मुदा एकर अर्थ ई नहि जे समरक्षिताक दर्शनक कारणे एकर सरदनिर्भर मरोद्धि देल जाए मिथिलाक प्राचीन

With the best compliment from :-

Technodying & Bleaching Works

195/1, M. G. Road, Calcutta-71 0007

मिथिला विभूति महाकवि डाक

मिथिलाक माटि जेने उपजाउ अर तहिना एहि ठामक लोकक मस्तिष्क सेहो आ विशेष के एकरे बलगर मिथिला कहियो तीन लोक मे विश्वास छल । एहिदाम एक सँ एक किस्सेक जाम मिल अर जे सरिपटु दोसर देशक हरे रण्योकि विभूति रहल । तँ आश्चर्य नहि जे कतेको विभूति के काळजमे बिचरा देल गेल अर महाकवि डाक सेहो एहेने विभूति मे तं छथि । ओना एही निर्दिष्ट जे के कुन बाति अपन विभूति के बिचरि बाहर ओकर अन्तः प्रान्त अनिवार्य छैक आ वेतमान मिथिला एकरा वकैत प्रमाण थिक ।

ओना त महाकवि डाकक सम्बन्ध अरबि कुनू प्रामाणिक शोध नहि भ सकल परउव दिनक अगनहि रचना जे युगो सँ एक कंठ सँ दोसर कंठ मे प्रवाहित होइत आबि रहल ए दिनक व्यक्तित्व आ कुतिलक नीक परिचय उपस्थित करैछ ।

हितक बमध्यान तथा समर्थक सम्बन्ध एखनो घरि निवृत्ती नहि भ पमोळक ए परउव कहल जाइत जे वर्ण सँ ई यादव छलाइ । एहि तथ्यक पूर्ति हिनक अपनहु पद सँ होइए—जं ओकरा हिनक सही रचना मानि छैक बाय—जेनाकि—कहि गेल डाक गोआर । एकर सस्ताक आचार सम्प्रदा ओ संस्कृति के नष्ट कऽ देल जाए ।

मैथिलीक संग अग्राम कऽ विहार सरकार अपन बाहि अदूरदायिताक प्रमाण देलक अछि, ओहि छेक कम सँ कम जगलबाब बाबू के मैथिली भाषी कहियो माफ नहि करतनि ।

एहि सभ शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध, वैचारिक क्रान्तिक पदाव हम सभ पार कऽ चुकल छी—आप आवश्यकता अछि अपन संवर्ष के सही वरातदार, सही योद्धाक माधम मे गति दी—तीव्र करो । मुदा ई हमर सभक दुर्भाग्य कहल जा सकैछ जे सही योद्धाक निर्माण पूर्णरूपे एतावधि नहि भऽ सकल अछि तं संवर्षत मैथिल योद्धा लोकनिक ई प्रश्न कसँव आ दाखिब भऽ जाइत छनि जे एहि संवर्ष छेक सेनिकक चयन कऽ ओकरा युद्ध-स्तर पर प्रस्थित करय । प्रस्थित सेनिकक युद्ध नियमबद्ध आ कौशलपूर्ण होइत छैक तथा खिलपत्रीक संभावना शत-प्रतिशत बढि बाइत छैक ।

एखनवरि सरकार संग हमरा सभक जे संवर्ष होइत आबि रहल अछि ओकर सभ सँ कमजोर पक्ष अछि सफल नेतृत्व एवं मिथिलाक जनसाधारणक सहानुभूतिक अभाव । अपन लक्ष्य के प्राप्त करवाक लेल हमरा सभक लेल ई आवश्यक नहि अनि-

एखनवरि सरकार संग हमरा सभक जे संवर्ष होइत आबि रहल अछि ओकर सभ सँ कमजोर पक्ष अछि सफल नेतृत्व एवं मिथिलाक जनसाधारणक सहानुभूतिक अभाव । अपन लक्ष्य के प्राप्त करवाक लेल हमरा सभक लेल ई आवश्यक नहि अनि-

—धनचक्र

मिथिला विभूति महाकवि डाक

मिथिलाक माटि जेने उपजाउ अर तहिना एहि ठामक लोकक मस्तिष्क सेहो आ विशेष के एकरे बलगर मिथिला कहियो तीन लोक मे विश्वास छल । एहिदाम एक सँ एक किस्सेक जाम मिल अर जे सरिपटु दोसर देशक हरे रण्योकि विभूति रहल । तँ आश्चर्य नहि जे कतेको विभूति के काळजमे बिचरा देल गेल अर महाकवि डाक सेहो एहेने विभूति मे तं छथि । ओना एही निर्दिष्ट जे के कुन बाति अपन विभूति के बिचरि बाहर ओकर अन्तः प्रान्त अनिवार्य छैक आ वेतमान मिथिला एकरा वकैत प्रमाण थिक ।

ओना त महाकवि डाकक सम्बन्ध अरबि कुनू प्रामाणिक शोध नहि भ सकल परउव दिनक अगनहि रचना जे युगो सँ एक कंठ सँ दोसर कंठ मे प्रवाहित होइत आबि रहल ए दिनक व्यक्तित्व आ कुतिलक नीक परिचय उपस्थित करैछ ।

हितक बमध्यान तथा समर्थक सम्बन्ध एखनो घरि निवृत्ती नहि भ पमोळक ए परउव कहल जाइत जे वर्ण सँ ई यादव छलाइ । एहि तथ्यक पूर्ति हिनक अपनहु पद सँ होइए—जं ओकरा हिनक सही रचना मानि छैक बाय—जेनाकि—कहि गेल डाक गोआर । एकर सस्ताक आचार सम्प्रदा ओ संस्कृति के नष्ट कऽ देल जाए ।

मैथिलीक संग अग्राम कऽ विहार सरकार अपन बाहि अदूरदायिताक प्रमाण देलक अछि, ओहि छेक कम सँ कम जगलबाब बाबू के मैथिली भाषी कहियो माफ नहि करतनि ।

एहि सभ शोषण-उत्पीड़नक विरुद्ध, वैचारिक क्रान्तिक पदाव हम सभ पार कऽ चुकल छी—आप आवश्यकता अछि अपन संवर्ष के सही वरातदार, सही योद्धाक माधम मे गति दी—तीव्र करो । मुदा ई हमर सभक दुर्भाग्य कहल जा सकैछ जे सही योद्धाक निर्माण पूर्णरूपे एतावधि नहि भऽ सकल अछि तं संवर्षत मैथिल योद्धा लोकनिक ई प्रश्न कसँव आ दाखिब भऽ जाइत छनि जे एहि संवर्ष छेक सेनिकक चयन कऽ ओकरा युद्ध-स्तर पर प्रस्थित करय । प्रस्थित सेनिकक युद्ध नियमबद्ध आ कौशलपूर्ण होइत छैक तथा खिलपत्रीक संभावना शत-प्रतिशत बढि बाइत छैक ।

एखनवरि सरकार संग हमरा सभक जे संवर्ष होइत आबि रहल अछि ओकर सभ सँ कमजोर पक्ष अछि सफल नेतृत्व एवं मिथिलाक जनसाधारणक सहानुभूतिक अभाव । अपन लक्ष्य के प्राप्त करवाक लेल हमरा सभक लेल ई आवश्यक नहि अनि-

एखनवरि सरकार संग हमरा सभक जे संवर्ष होइत आबि रहल अछि ओकर सभ सँ कमजोर पक्ष अछि सफल नेतृत्व एवं मिथिलाक जनसाधारणक सहानुभूतिक अभाव । अपन लक्ष्य के प्राप्त करवाक लेल हमरा सभक लेल ई आवश्यक नहि अनि-

—धनचक्र

Technodying & Bleaching Works

195/1, M. G. Road, Calcutta-71 0007

पाकिस्तानी कथा

इफ्तारी

की निश्चित गीढ़ गेली। देखी, लग आ।

'नजि-नजि, हम नजि खेलेह'—

नसीबन करत रहल आ बेगम साहिबाक ओखि रंजन रसिम जका नसीबनक मुँह भीतर गुंजाएल एक दुकड़ी मधुर पर पड़ू बि गेल। बेगमक पंखा तैयार छल, तरातर लगायी ओकरा डंगावय। 'चोरनियां, चुहेल। एहर रोजा होइ छह।'

'खोदातछा दुआ करता। बुढ़, आनहर अफाइन के कने इफ्तारी भेटैक।' वाट पर सं ई स्वर लगातार आबय लागल।

'ओ...बाप रे। आर नजि मलिकान इन। अहाँक पहर पकड़े छी बेगम साहिबा के कहियो ने खेन। एह बेर छोड़ि दिब हम खोदा कसम करै छी।

'अम्ह ने तोरा हम कसम खोअये छी। आइ तोही ने की हमरी ने।'

'अछाह अहाँक बाल-बच्चा के भला करताह।' फेर उइह करगवर।

एकदम इधमि गेलाक बाद बेगम साहिबा नसीबन के पहर सं ठेलेत बगळी जो मुँहभरि की। मधुर सभ भीखमंगा के देने आ। कखन सं ते बेचारा कंड फाड़ि क चिचिया रहल छ। आ इहो द दिअरी।

चौगरी सं कने रुकल मुँहक दाबि देत कहूथिन। अँचरी सं अपन नोर पोछेत नसीबन बहाना दिस अगुआएल।

नजि-नजि, हम नजि खेलेह—

नसीबन करत रहल आ बेगम साहिबाक ओखि रंजन रसिम जका नसीबनक मुँह भीतर गुंजाएल एक दुकड़ी मधुर पर पड़ू बि गेल। बेगमक पंखा तैयार छल, तरातर लगायी ओकरा डंगावय। 'चोरनियां, चुहेल। एहर रोजा होइ छह।'

'खोदातछा दुआ करता। बुढ़, आनहर अफाइन के कने इफ्तारी भेटैक।' वाट पर सं ई स्वर लगातार आबय लागल।

'ओ...बाप रे। आर नजि मलिकान इन। अहाँक पहर पकड़े छी बेगम साहिबा के कहियो ने खेन। एह बेर छोड़ि दिब हम खोदा कसम करै छी।

'अम्ह ने तोरा हम कसम खोअये छी। आइ तोही ने की हमरी ने।'

'अछाह अहाँक बाल-बच्चा के भला करताह।' फेर उइह करगवर।

एकदम इधमि गेलाक बाद बेगम साहिबा नसीबन के पहर सं ठेलेत बगळी जो मुँहभरि की। मधुर सभ भीखमंगा के देने आ। कखन सं ते बेचारा कंड फाड़ि क चिचिया रहल छ। आ इहो द दिअरी।

चौगरी सं कने रुकल मुँहक दाबि देत कहूथिन। अँचरी सं अपन नोर पोछेत नसीबन बहाना दिस अगुआएल।

नजि-नजि, हम नजि खेलेह—

नसीबन करत रहल आ बेगम साहिबाक ओखि रंजन रसिम जका नसीबनक मुँह भीतर गुंजाएल एक दुकड़ी मधुर पर पड़ू बि गेल। बेगमक पंखा तैयार छल, तरातर लगायी ओकरा डंगावय। 'चोरनियां, चुहेल। एहर रोजा होइ छह।'

'खोदातछा दुआ करता। बुढ़, आनहर अफाइन के कने इफ्तारी भेटैक।' वाट पर सं ई स्वर लगातार आबय लागल।

'ओ...बाप रे। आर नजि मलिकान इन। अहाँक पहर पकड़े छी बेगम साहिबा के कहियो ने खेन। एह बेर छोड़ि दिब हम खोदा कसम करै छी।

'अम्ह ने तोरा हम कसम खोअये छी। आइ तोही ने की हमरी ने।'

'अछाह अहाँक बाल-बच्चा के भला करताह।' फेर उइह करगवर।

एकदम इधमि गेलाक बाद बेगम साहिबा नसीबन के पहर सं ठेलेत बगळी जो मुँहभरि की। मधुर सभ भीखमंगा के देने आ। कखन सं ते बेचारा कंड फाड़ि क चिचिया रहल छ। आ इहो द दिअरी।

चौगरी सं कने रुकल मुँहक दाबि देत कहूथिन। अँचरी सं अपन नोर पोछेत नसीबन बहाना दिस अगुआएल।

नजि-नजि, हम नजि खेलेह—

नसीबन करत रहल आ बेगम साहिबाक ओखि रंजन रसिम जका नसीबनक मुँह भीतर गुंजाएल एक दुकड़ी मधुर पर पड़ू बि गेल। बेगमक पंखा तैयार छल, तरातर लगायी ओकरा डंगावय। 'चोरनियां, चुहेल। एहर रोजा होइ छह।'

'खोदातछा दुआ करता। बुढ़, आनहर अफाइन के कने इफ्तारी भेटैक।' वाट पर सं ई स्वर लगातार आबय लागल।

'ओ...बाप रे। आर नजि मलिकान इन। अहाँक पहर पकड़े छी बेगम साहिबा के कहियो ने खेन। एह बेर छोड़ि दिब हम खोदा कसम करै छी।

'अम्ह ने तोरा हम कसम खोअये छी। आइ तोही ने की हमरी ने।'

मकानक छत पर कचराक बीच ओ सभ रहर। उत्तर पश्चिम सीमान्त सं आबल एहि कनेया दलक सभ इधमि। कोक एकरा सभ सं डेराएर। कुनू एकरा आ लबी ओकर सभक लग द क नहि आ सकेल। एहि हलाकाक प्रायः सभ लोक एकरा सभक नियं अइ आ मोटाउ छि सवेवा मे सभक स्थिति प्रजातक।

दिनभरि एकरा लोकनिक घरक केदार बल रहतेक आ ई सभ द्विज बागवत बकी मरि शहर रहलाम मात। सोसलन रोटी माउस लेने कीर। कैटलीए एकर सभक शरीक काब करतक। सभ बकेटाम खात इहो चुबेत-चुबेत अखन उबर म केते व बाटपर फेकि देत। ओइ इहोइपर हमला लेल बाटपर कुहर सभ बेना तैयार रहै। रोष रातिभरि कुहरक कटाउक सनल जाइछ।

खान सभ खेनाइ - पीनाइ शेष क हिस्साक खाता ल बेति जायत। एक-एक पाइड दिसाव करत। फेर केओ-केओ हुका ल क मैल डुबेल कमबगर पड़ि रहत। जे कने कुर्तौवाच रहल शहरक एक चकरा मोरिलेक बहरा जायत।

सुदि खेनाइ मुतलमानक लेइ धर्म-शास्त्रक नियं लेक। किन्तु निर्दयतापूर्वक सुदि अमुलेतो ई सभ नमाज पढ़ा आ रोबा खकाकाल बड़ निष्ठावान बेना खोदा ताल्ला के चर द क मसन राखत चारैत हो। स्वभावतः रसवानक सभ सुले कारिल मेले सभ पड़ैत पड़ेत पीरि अवेत। सूर्यालक टोक घटा भरि पड़िछा सभ बेना बीते ने चाहय। केओ-केओ मानवो मे आगि बाइत आ बाकी बरंडापर रहलान दीत। लग ले कुनू अखगर जनानी के जाइत देखि आर घंट नमरा दीत आ अखल शब्दक बाण छोड़ैत। मुदा कान सदिखन सतक रहित के कखन मस्बद मे अखान पढ़ैतक-मानैमरि दिनक उपास सभ-तिक बोवणा हतेक।

एकरे सभक हंगामाक कारणे दोसर कातक मकान खाली पड़ल छेलक। एइव बजारक एते लग आ एते पंच मकान मात्र बीस टाका भाड़ा मे पावि एह टोळक नभ बासिदा अखगर अली सोचने छल बेना ओ कुनू नव वस्तुक आविष्कार केने हो। ते बेसी खोज-खवरि नजि ल अपन माय बीबी आ च्चा के ल क सोक्ते एइ मकान मे आवि गेल। बीबी नसीमा के सेहो बड़ पछिन पड़ैले। ओ वस्तु जात सरियावय मे लागि गेल। परंच पड़िछे दिनक सभ मे कने सुलेवाक हेतु ओ उपरतलाक खिड़की लग टाढ़ि भय नौवा नेना-मुटकाक खेल देखैत छल कि हठात ओकर आगि ओकरा भीतर ल जाय चाहलक। ओइ मस्बद खान सभ के त देखे। केना ताकि रहलए जेना आखिक डिग्रा बहार म बेतक।

बीबीमा घरकर मे देखलक जे बरंडापर भीड़ केने खान सभ ओकरे दिस ताकि

रहल छेक आ हंसि-हंसि श्वाशरा क रहल छेक। बखन खान सभ देखलक जे नहीमो ओकरा सभ दित देखेछह व आर ओर सं विविधाय लागल। नसीमा निलित भाव इक्वाम देखैत छल-आ ओकर श्वाशुक श्वर काम मे पड़ैलक—ब मोतीए के कनियो खान-खाख न ज होइ त मनसाक नून दोल ?

कए बरल सं नसीमा आ अखगर बीच एगो दुबीय दूरी बनल छह। दुनू पिलिओते भाइ बहिन छलआ ने ने मे बागदान सेल रहै। परंच रेवाज एहन जे मेट-वांट प्रायः नहि जे बर्का होइ। ओना कहियो कोक बुढ़का-बुढ़ियाक ओखि मे छाउर ओकि हुनू भेंट क लेत छल। काइलाम बनानी के अमतपुरक बासी बना राखल जाइ छह ताइतामल लेल छह शहरक घटना साधारण बात भेले। धार मे ओकरा दुनूक बीच प्रेम बढैले आ चिह्नी पुरबी सेहो चलय लगेलेक आ तकर बाद अखगर नसीमा के लुइ मे भती करोवेलेक ओर करद लगैलेक।

जवानीक शक्ति, अल्लाह-उमंग कोलेब खीवनक आरम्भ मे अखगर ओहन छान सभ मे सं छल जे सभ देशक स्वाधीनताक बात छोड़ि आर किछु सोचि ने सकेत छल। किसानक गरीबी, बसोन्दारक शोषण नोनिहार सभक दुर्दशास्य अवस्था आ पूबी पति सभक सर्वशायी बिलखा आदि सभ विषय पर राम-राम भाषण देवाक लेल ओ देश जनिय छल। जेहने सुक्का, तेहने अखयन छल सभ ओकरा उदीयमान नेता दिवावे देखैतेक। नसीमा लग सेहो नाय-कोचित, चर्मटुक मामिला मे कनियो कम नथि। नसीमा लग ओ सभ रंगीन कार्यावलीक रूप उपस्थित करैत। अख-बार मे ओकर नाम देखि नसीमाक छाती सरसन म जाइतक। ओकर सखी-मेहली, परबिन-पुरबन मे केओ एहन नजि छले बकरा मे अखगर सं बेसी देश प्रेमक भावना होइक। नसीमा सेहो ओकरा संग नव जीवन आरम्भ करवाक हेतु अपना के तैयार करय लागल। अखत सेवेदनखील, बुद्धिमती एहि वालिकाक किता चारा के एहि पथपर अवसरित करै लेल मात्र कने इ गितक खगता छले। धिअ ओ भारत वर्षक समस्या सभ सं परिचित होमय कामलि आ सम्भाव्य समाधान सोचि ओकर मन आनन्द विभोर म बाइ। भारतक स्वाधीनता क्रमशः ओकरामन मे स्थान बनवेत गेल आ देशक लेल प्राणो देवाक हेतु ओ तैयार म गेल।

अखगर कोलेब जीवन शेष होइतहि बिवाह केलक आ तकर बाद आइव पढ़नाइ आरम्भ। नसीमा ई देखि अवाक रहि गेल जे अखगर ओकरा अपन कएक-टा राबनेतिक संगी सं परिचय करौनाइ आ गम-राम भाषण तक लीमावद अइ। फेर सोचेत जे म सकेब पढ़नाइक कारणे होअय आ पढ़नाइ शेष होइतहि ओ रूपण राबनीति मे भाग छेत।

बसुतः नसीमाक राबनेतिक उत्साह जेना दिन-दिन बढैत गेल, अखरक उमंग ठंडा पड़ेत, गेल। नसीमाक प्रयत्नक उत्तर से ओ नाना तरह बहना बतिआय लागल। कहियो 'कहिते' शिप हमरा लोकनि के संतान हएत। फेर कहिते कच्चा बखनो ते छोट अर के हथरा छोड़ि बरत नैहार उचित नहि। बखन कच्चा बहै किन के मेले आ हतर नसीमा सेहो अन्ना के राबनेतिक अर्थक्य तैयार क लेखक अन्न हकतिन अन्नकर अन्नके के अन्नक लोक केले ओकरा नीक कर्क नन्नक कर नुहते। आ पात केलाक बाद लोकनीक अन्नक ले लागि गेल।

हे के होइ, समय बाद, कम व कम पत्नी चं, बेटी दिनबदि नहि नुकाओल बा सकैर। ओना दोन-महिम सं ओ इष्ट कहिते के पारिवारिक काम मे तेना ने बाकि गेलथ के पलखतिथ ने होइ छइ। दोस-महिम सोचैत—वरिण्डु देवारा विथाह क फंसि गेल।

किन्तु तकर बाद ? नसीमा अन्ततः बुझि गेल के पेव-पेव लेखर छोड़ि अखर सं आर किछु पार नहि लगौते, से चारल ओकरा ने नहि छइ।

होइ-होइ अन्ततः कन्तु-कन्तु नसीमा किछु ओकेल आ लखौ कने-कनी बदि होइ-होइ न लेवे, के समय दिन-दिन टक्क किछा ने भएत रौत छइ। नसीमा के व के अन्न ओकरा नेव अन्ततः लेब होइक कारण हुन्ता ने भावक नहि रहै के नसीमा ओकरा दख्यारी डनेत छइ आ नन्तरि मन धृनाओ करे छइ। नसीमाक दुप्री सं ओ तलेक विरक्त भ बाइत के कलनो-कलनो ओकर सुन्वर भाइत धपर मारेक इच्छा होइतक। कल नसीमाक उपहार, मगदा केनाइ बहि दुप्री सं नीक ओ सोचैत।

इपतारीक समय भ गेल। खानसम जमा मेळ। इष्ट गोटे बरहा पर आ शोकी बाह कनावे मे व्यस्त। नसीमा खिडकी का बाहि नीचा बाट पर देखि रहल छल। मरितक नाच छ इष्ट मेळ हेत ओकरा सम के इष्ट नकान मे हता। खान सम सेहो ओकर मुह निहारैत कम्पत्तवन भ गेल छल। ताइ पर इकर उदासीनता देखि ओहो सभ आय वैसी रुचि नहि लेत। आ डीक एहि समय ओकरा समक ध्यान केन्द्रित रहैक लगक मसजिद पर, बतय सं जे कुनू समय अजानक फेर सुनाइ पड़ि सके छल।

कुनू गली सं एगो बूढ़ भीखमंगा येहैत-येहैत आवि हाबि मेळ। हाक लोटी पर भार देबाक बादो ओ अपन देह के सोझ नहि क पावि रहल छल। ओकर सर्वांग कपे छल। नसीमाक मकानक सामनेक बाट पार करैत ओ जेना इज्जि मेळ हो आ ते धरगो देवाल मे पीठ भरा ठाढ़ भ गेल।

नसीमाक नाहिदा कच्चा अखलाम सेहो ता खिडकी का आवि गेल। ओकर नबदि सभने भीखमंगा पर पड़ेले। ओ पुछलके— मां देखही त, ओइ नीखमंगाक हाथ मे की छइ ?

'ओ कल्प लेखिने डेटा, मरितक लेखक इष्ट हएत !'

—अन्न कर किछ ने छइ ?

—म सकैर के रोबा रखने हो आ ते अन्नक बाद लेखै हो।

—हो लेख नहि करै हो ना ?

नसीमा अन्नक सेहो बित देखि अने किछु देवेत वन नकालक दहो तिजा देखैके।

—अन्न अन्नकान के हन्तकान के कहियत ! ओ सुते बाबक रहियत !

नसीमा किछु रोचि बाबलि—से नात तो अपन अन्वेधान सं पूछि लिअहुत।

—किछु मां, तो किछ ने रोबा करै छै ?

नसीमा सिनेह सं डेटा के हुलारेत बाबलि—तो नहि करै छै ने—ते।

—रम सं क्वा छी। दाइ करै छइ के से रोजा नहि करै, तकरा ने कि नक मे बाय पड़े छइ। अन्ना—नल बैहन होइ छइ मां !

—नक ! इष्ट त हमरा लोकनिक हन्तकान अर—नीचा ने। डीक वृणाक लेब नसीमा कहैके।

अखलाम अन्नक चारु मर लेखैत पुछल के—अन्नक !

—नीचा ने—उद्धर बतय ओ मोख-मंगा ठाढ़ अर, बतय लोहार, जुगार, तांती, बोनहार सम रौष्ट।

—मुदा दाइ त कहै छथि ज नक मे आगि होइ छइ ?

—हं सोना, डीके।

—आ स्वर्ग केहन होइ छइ ?

—इष्ट छइ स्वर्ग—बतय तो, हम आ तोहर दाइ रहै छथुन। बाइ ठाम पेघ-पेघ, वाक दुधरा भक्तकक करैत बर उभै छइ। मारितेराव नीक-नीकल खेबाक, नीक-नीक परिबाक छैक, नाना तरह खेबओना सम छइ।

—दाइ ने तखन किछक ने सम स्वर्ग मे रहैर ?

—कारण स्वर्गक लोक अन्तका स्वर्ग मे नहि आवय दे छइ। ओकरा सम सं काज करा ले छइ आ फेर बजिया क नक मे ठेलि दे छइ ?

—आ ओ सम आन्तरी भ जाइ छइ ?

—हं सोना, नक आन्तर लोक सं भरल छइ।

आ डीक एही समय अजानक फेर सुनाइ पड़ेले। मरितुका उपायक समान-मिक घोषणाक संग प्रबलित मेल रंग-विरंगक आतिशबाबी। खान सम घरकर करय लागल।

ओ बूढ़ अन्नक भूमखीगा अपन हाकक बस्तु मुह मे देवाक प्रयास केलेक परजव उचेबना सं ओकर हाथ कापय लागलक आ

इटात मधुर खवि पड़ेले। ठेहुन पर मर इ क ओ मधुर उठेवाक प्रयास करय लागल। ओकर आंगुर मधुर बरि जाइ-जाइ ता केरहो सं एगो कुहर आवि रुचि लेलेके। शिवे भार कथकटा कुहर जूमि गेल आ कटाउक करय लगल। दुर्वल कठे कुहर सभ के दबारेक प्रयास केलेक परजव कुहर सभक आवाज भार तेज भ गेल। मूल आ व्यर्थता त अस्तुत्त ओर बूढ़ माटि पर खति बड़क आ क्वा क्वा हिचुकय लागल। सौरि रुजि दू हो खान मरदिन नमरा क्वा देखलक आ कुयो सं हंसय लागल। 'मां ! मारक पाछा इष्ट तुझने देगएक अखलाम किमहिना क अन्वेधान बनओलक। आ इष्ट प्रथम ओकर अन्वेष मन नक शब्दक प्रकृत अन्नकाना उपलब्धि केलेक।

'अयतान' ! खान सम दिख देखि नसीमा धृणा भरल खरै आले सं जाबलि।

'मां ! भरल कठे फेर अखलाम करैके। नसीमा ओकरा डोरा से उठा लोटी सं ताटि केलेक आ ओखि मिलवैत भाइर कठे बाबलि—सोना, पय भ क तो सभ सं मरिने इष्ट क्वा करिहै, बाइ सं आर ककरो नक ने नात नहि करय पड़े !

—आर तो मां ! ठोहूँ पड़े किने ?

—हम ! हम की करव कर ! हम सं एही जल मे बन मेळ दूहि भ बायव....

—तो त कनिचो दूद नहि छे। दाइ क्वा नहि। आ तो नकि रहने जे हम इष्ट दन सं अन्नक भ बाबन !

—नहि सोना ! हम किन्तु ने अपन सोना डेटा के अन्नक रोमब देव। रमिहूँ रम-अन्तसे रहव।

—रखीद जहाने मैथिली—अमइत

दू गोष्ट गीत

महा जागरण गीत / एकटा किसानक लेख

छट हो किसान भइया फटलह किरिमा !

पूख सं बढल जण दुनियाँ अमनमा !

ताम्बीबीक राज बंटय सुनुते जनेरा

सुहुप विमान बहि मन्तरीक फेरा

दूधे पूते न्हइ 'सोम' मान यान भतमा ! छटऽ

रातिप सं डेरा देने कौती मछेरिया

भोरे पधारल घर मे पाहुन समरिया

भोट मॉगअथला सतराख्या सजतमा ! छटऽ

रहऽ ने बहाना कयने

भूखेर धडत थयने

अपना करम सं मरिहऽ भूखेर बहतमा ! छटऽ

—सोमदेव

मिथिलाक वसन्त

तीन कात मे तदिया रे तदिया उतर दिस पहाड़े हो

विराजे सोमे

रामा हमरो मिथिला देश हो बिराजे सोमे ॥

तीन लोक मे सुन्नर मिथिला पावन ओ मनभावत हो

लोभाओलु लगो

रामा थले मास फगुनमे हो लोभाओलु लगो ॥

तीथी जे फुलेले रामा सरिसो जे फुलेले हो

फुलाइए गेले

रामा बन के बनफुलबा फुलाइए गेले ॥

सजल धजल विरधी लागे नव कनिये हो

अबैया भेले

रामा पहुता राज बसन्तक जनु अबैया भेले ॥

छीटै अतर बसात हुलसि के वेनिया जनु डोलावे हो

अलापे लगले

रामा कोइली कनिया पखित गीत अलापे लगले ॥

—राम लोचन ठाकुर

सभा-सभित

ड्यूट १० जनवरी, ८२। आइ एतय डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक अध्यक्षता में विद्यापति पूर्व समारोह मनायोल गेल।

वर्माजी कहलनि जे लोहरनाक पूव ई पहिल विशिष्ट आयोजन थिक। उद्घाटन भाषण करैत डा० कांचीनाथ झा किण जनोंलनि जे मैथिली भाषी क्षेत्र भाषाई उपनिवेशवादक शिकार अछि। ओ संस्कृत आ हिन्दी सं ओषित अछि। बाबरि घर, मन्दिर आ गजशाकाक भाषा एक नहि होयत, ताबनि ई न्याय पिडबले रहत।

ओ चन्द्रनाथ मिश्र अमर जनौलनि जे मातृभाषाक माध्यम सं शिक्षा नहि देवाक कारणे एतऽ एतेक दिवक सादो शिक्षाक प्रतिशत—साठसाठ प्रतिशत पचीस सं आगां नहि घुसकल अछि।

आचार्य नाजिम रिजवी कहलथि जे अपन अबिकार लेब सुखिया, बी० डी० को०, विद्यापक आ सांसद लोकनिक धेएओ करू जाहि सं सकारो कार्यअय मे मैथिली भाषा मे काब भऽ सकय।

श्री कुमारचन्द्र यादव जनौलनि जे मिथिलाक लोक मे संवर्ष चेतना बगयवा लेब विद्यापति पर्वक उपयोग करवाक चाही। एहि समारोह मे मंच संचालन कऽ रहल छलाह श्री जीवकान्त।

कवि सम्मेलनक संचालन कयलनि श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर। एहि मे भाग लेउनि मणिपद्म, किण, चन्द्रभाउ सिंह अमर, प्रवासी साहित्यालंकार, जीवकान्त, उदयचन्द्र झा बिमोद, शोचिवर्द्धन, नाजिम रिजवी, पवन कुमार, विमलेश किशोर प्रो० डा० ख्यामन्द झा, प्रो० देवकान्त मिश्र, प्रदीप मैथिली पुत्र हत्यादि।

सांस्कृतिक कार्यक्रम मे अपन व्यक्तिक गीत रम सुनैलनि शशिकान्त सुबकान्त, चन्द्रमणि, सुमन माया कान्त, रागत सुवन आ गंगाधर झा। एहि कार्य-क्रमक संचालन क रहल छलाह जीवकान्त झा शानन्द।

विद्यालयक छात्रा लोकनि उषा, शर्दु, गितनी कार्यक्रमक आरंभ विद्यापतिक गोसाउनिक गीत सं कयलनि।

आचार्य नाजिम रिजवी राववाचार्य शास्त्री आ दामोदर लाड दासक मुख पर शोक प्रस्ताव अयलनि।

किण जीक प्रस्तावक अनुमोदन करैत जीवकान्त बिहार सरकार सं माउ कयलनि जे मैट्रिक परीक्षा मे निर्धारित मैथिली गद्य पद्य संग्रह अनुपयुक्त आ छात्र लोकनिक स्तर सं बाहर अछि, त अनुभवी शिक्षक लोकनिक नव सम्पादक मण्डल नव गद्य-पद्य संग्रह सम्पादन करय।

भोजा उच्च विद्यालय ड्यूटक प्रधानाध्यापक श्री बिबट झा स्वागत भाषण कयलनि आ कार्यक्रमक अन्त मे वन्देवात शोषन कयलनि विद्यालयक वरिष्ठ शिक्षक श्री लोचन झा।

जेग कि वर्माजी कहलनिह जे ई आयोजन एहि अंचलक पहिल विशिष्ट

कवमोदक प्रकाशन, ३०/५, डा० देवदर रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेब ओ महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनिपर अर्ध पिटर्स, ३२-बी, बुन्दारवन चेनाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

आयोजन निक से सं संघ त करय पड़त जे एकर श्रेय ओ जीवकान्त के छनि जे हालहि मे खबौली छौडि ड्यूट मे खेमा खसबौलनिह। किन्तु घट्ट यात के खेमी-कारण नहि जा सकैछ जे हुनका लोकक सहयोग भेटलनिह जकरा वल पर आयोजन सफल भ सकलथ। एहिठाम ई स्पष्ट आइ जे मैथिल चेतना मुदर नञि अइ अपितु सुसुतावस्था मे पड़ल अइ बकरा भक्तमोहि के छोवा लेल नेताक प्रयोगन छर अयुधक प्रयोजन छइ बकर नितान्त अभाव रहल-थ। एहि अवसर पर किण जी कहव जे मैथिली भाषी क्षेत्र भाषाई उपनिवेशवादक शिकार अइ सतप्रतिशत सत्य अइ। शतप्रतिशत सत्य अइ जे निर्बलांचल संस्कृत हिन्दी द्वारा ओषित होइत आनि रहल-थ आ आब एहि मे निश्चित उदक सहयोग सेहो रहतेक। तें आइ आर बेसी प्रयोजन छेक जे मन्दिर-मस्जिद, स्कूल आ बाक भाषा एक मात्र मैथिली हो आ एहि लेल भनहि जे कुनू सत्य चुकावय पड़य-हमरा लोकनि के तयार रहक चाही।

बहाँवरि मैथिली गद्य-पद्य संग्रहवा निर्धारित मैथिली गद्य-पद्य संग्रहवा प्रस्तावक पन्न अइ प्रायः समस्त मैथिली भाषी एहि सं सहमत होइत वं हुनका विषय बोध होतनि। परंच प्रश्न त ई अइ प्रस्ताव पारित केनहि टा सं की समस्थाक समाधान भ सकैछ ? सरकार मैथिलीक दित चाहैथ नञि ओतें ओकरा पर एहि प्रस्तावक कुनू प्रभाव पड़वाक संभावना कइल नञि जा सकैछ। की आधा करी जे एकर सम्पादक लोकनि जे निश्चित मैथिली भाषी विद्यालय छथि हुनका लोकनिक आलिखि खुबतनि आ ओषम एहि काज सं अपना के पराक राखि उपयुक्त लोकक लेल स्थान खाली करताह ? थोदेक कालक निमित्त मानिली जे इहो लोकनि से नहि क बिहारक मुख्यमंत्री बगवान मिश्र सन मातृभक्त सूजी मे अयन नाम छिलेनाह मे नडपत भूमिति त की छात्र शिक्षक लोकनिक एहि संदर्भ मे कुनू कर्तव्य नञि ?

बहाँवरि हमरा लोकनिक विश्वास अइ जे एकर समाधान छात्र-शिक्षक लोकनिक हाथ मे छनि। ओ लोकनि निश्चिते एहि निमित्त प्रयोजन सेने पेष सं पेष आन्दोलन इहोतल क सकैत छथि। छात्र आ शिक्षक लोकनिक संगठन सरिपहु सशक्त अइ जे सरकार के नमरा सकेथ आ अपन/अपन जेनाक भविष्यक बाट परिकार क सकैथ, मातृभाषा मातृभूमिक मर्यादा बढा सकैथ।

कलकत्ता, २७-१२-८१। स्थानीय निरामय पालि विडनिक मे नवगठित नव बागमण मैथिल संघ'क पहिल सभा भेल जकर अध्यक्षता कइलनि मैथिलीक वयोवृद्ध सेनानी श्री हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु'। एहि अवसर पर मिथिलेन्दु जीक अतिरिक्त सर्वश्री नाबू साहेब चौधरी, रामलोचन ठाकुर योगेन्द्र ठाकुर प्रधानाध्यापक झा, चन्द्र किशोर मिश्र ओहि वक्ता लोकनि संस्थाक प्रति अपन-अपन सुझावमना प्रकट कइलनि

देसिल वयना

तथा सहयोग सुभावक आश्वासित देलनि। मिथिला मैथिलीक सर्वांगिण विकास लेल एकजुट भ जाले कसोतक आवश्यकता पर जोर देल गेल। संस्था दिस-सं संयोगक ओ वैधानाथ मिश्र आगत यतिथि लोकनिक प्रति आभार प्रकट करैत संस्थाक उद्देश पर प्रकाश देलनि तथा अनुभवी मैथिली सेनानी लोकनिक १५निर्देशक आबेदन कइलनि।

तत्काल ओ वैधानाथ मिश्रक संयोजकत्व से एगो एडि्टर कमिटीक निर्माण कइल गेलथ जाइ मे सर्व ओ राजवली ठाकुर, रामनारायण कुमार, डोरा झा, चन्द्र कुमार झा, लखन मिश्र सदस्य रहलाह-थ।

मैथिली मे प्रायः संस्था नतेत रहल अइ संस्थाक निर्माण नीके नञि आवश्यकता छेक खासक मिथिलाक मैथिलीक वर्तमान स्थिति मे। परंच संस्थाक निर्माण अपना अपा से कुनू प्रबल नञि रलेछ महत्वपूर्ण होइछ ओकर काब' इइथ कारण छेक जे केतको संस्था आयल पानि गेल पानि बाटे, विभाजल' पानि बल कहबी के चरितार्थ करैत रहलथ। नव बागमण मैथिल संघ' एहि कहबीक विपरीत अपन कार्य सं अपन अस्तित्वक भान मैथिल समुदाय के करा-ओत तथा मैथिली आन्दोलनक आगामी

देसिल वयना चन्द्रक दर :-

एक प्रति—

सलियाना 'बारह प्रति

पांच सालक (साइड प्रति)

पचास पाइ

पांच टाका

बीस टाका

विज्ञापनदाता लोकनि सं—

'देसिल वयना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ रता। कम खर्च मे सुखर देग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू

विज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन

अरुणोदय प्रकाशनक पहिल पुस्तकालि :-

प्रतिध्वनि

माओ रसे बुझ, हो चि मिन्ह, लखुन, नैरुदा, नेखत, लसुम्बा, गुंटर प्रास, महमुद दारफिस, छेइत हिइव, हिराओ दोतेव जोस केभिरिन्दा, डेविड डियोप, रोख अवाज, आदि विश्वक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कवि लोकनिक चुनल कविता समक मैथिली रूपान्तर।

दाम—चारि टाका मात्र

चंवलन, सम्राटन ओ रूपान्तर

राम लोचन ठाकुर

कह लोचन कविराय

तेल इजोतक उत्स थिक तेल शक्ति केर सान तेलक बल छिविया जरय तेलहि उड़य विमान तेलहि उड़य विमान तेलबल मंत्रीक आसन तें जनसेवक राज तेल पर कएलक रासन कह लोचन कविराय रस सं कएल गेल-ए मेल बदला से द चाउर गरीबक तेल अबैए तेल

देसिल वयना

पाठकीय परिवारक सलियाना सदस्य

१ श्री अमर नाथ झा, कलकत्ता

२ श्री उदय कान्त मिश्र, कलकत्ता

३ श्री वैद्यनाथ मिश्र, कलकत्ता

४ श्री राम नारायण कुमार, कलकत्ता

५ श्री लखन चौधरी, कलकत्ता

६ श्री रामानन्द मिश्र, कलकत्ता

७ श्री ब्रजनारायण झा, कलकत्ता

८ श्री हरे प्रसाद, कलकत्ता

९ श्री विद्यापति झा, करोली

१० श्री दास किण, राउरकेडा

११ श्री नागेन्द्र झा, "

१२ श्री के० मिश्र, "

१३ श्री बी० झा, "

१४ श्री सत्यरंजन, "

१५ कुमारी व्योमि झा, दिल्ली

देसिल वयनाक संवाद प्रतिनिधि श्री सूर्यनारायण मंडल—नबको दिल्ली, अनिल सुधा—बिरोल मिथिला

समिति राशना

वर्ष—२ अंक—६
सम्पादकीय

मार्च, १९८२

मूल्य—पचास

फगुआ

मैथिली ने हगो वेव प्रचलित करवी छह—जे बीवह से खेव फगु। कहवाक प्रयोजन नहि जे फगुआ खींचतताक प्रतीक दिह आ खींचतताक छवण होइछ आनन्द उमंग उछास। तें फगुआ आनन्द-उछासक पावन निधि। परञ्च आनन्द उछास कहरो हक नहि।

मनुष्य सामाजिक प्राणी थिक। ओ माय अग्रे दुख सं छुली आ दुख सं छुली नहि हारए नहि भ सकैए। अथवादक राग करक छह। अथवाद से बताह भ सकैए, पण प्रवृत्तिक वा दानवीय प्रवृत्तिक मनुष्यक सेवकारी अन्तु भ सकैए। तें फगुआ सामूहिक उछास उमंगक पावन निधि। पारस्परिक सहयोग, सद्भावनाक परिचायक थिक। हकर हम सं प्रत्यक्ष प्रमाण मिथिलावलक गाम-घर में पाओल आ सकैछ—बाइठाम धण, भोम, सम्प्रदायिक मेद-भाव विवरि लोक—एक संग—आनन्दोत्सव मनवैए—रंग-अबीर खेवाइए—माटि केँ छाल क देख।

फगुआ समृद्ध परिपूर्णताक पावन निधि थिक। अमावी मन मे आनन्द उमंगक लहरिक बहना केनाई मूखन छोटि आर किछु नहि भ सकैछ। पेट मे अन्न आ देह पर वस्त्र नहि रहितो बताह चढिखन हँसेत रौए। तें बताह हरि निरमल संगहि प्रत्येक सामाजिक नियमक अपवाद थिक।

फगुआ सामाजिक पावन निधि। जातीय पार्थन थिक, राष्ट्रीय पावन निधि। युगो सं हमरा लोकनि हकरा हरि रूप से मनवैत आवि रहल छी। परञ्च भरिसक कहियो होवनाक स्वता नहि कुमल जे वास्तव मे वर्तमान संदर्भ मे हमरा मिथिलावासीक छेक एहि जातीय आनन्द उमंगक पावन निधि कि सरिपहुँ कुन अर्थ शेष रहि गेल अह ? जे सरिपहुँ सोचिबहुँ त निश्चिते आइ—मिथिला-मैथिल-मैथिलीक दोसर रूप रैत।

हमरा जनवै मैथिल जाति मरि चुकल अह आ मृत जाति मे हकता, सहयोग सहभाविता केँ ताकव 'बोवटिया पर रतौनी तकनाइ' सं बेसी आर किछु नहि भ सकैछ। ओकरा मे उछास उमंग केँ ताकव 'दूधक वाटी मे अन्नत भगवान केँ ताकव' छोटि आर किछु नहि। ओना मधुर केँ नाम महामा गाँबी होइते छह आ तें लोक केँ रतौनी छुटि बाइ छह आ अन्नतो भगवान सेटिह बाइ छथिन। परछ छह—आत्मघाती प्रक्रिया थिक। लोक अन्नका भनहि ठाँक लोक—अपना आप केँ ठकनाइ—संभव नहि भ सकैछ।

आइ मिथिला विश्व मानविश्व पर नहि अह, मैथिली भारतीय संविधान सं चारल अह मैथिल आनहि बर-आनन में हुइतरल अह। कहियोक प्रियुवर विरुदात मिथिलाक नाम आइ ओकर अपनो स्वतन्त्र ने भने छह। आइ मिथिला मे रौदो-दाही सुखपरी महामारीक सखी वाइ छेक। आर्थिक विभक्तता हका रीढ़ केँ तोरी देवे छेक आ सरकारी अखेलेना प्रतारना-चेमनपनाक सम वा भगवन सन नालादि हिलवत अपने स्वतन्त्रक अथ-भूतन हकर माथ लवै गुरा देने छेक। तेहना स्थिति मे आनन्द उछास उमंग कतय पावो। ई मिल कथा जे अंचिवापर बहल अंचलक छरीर संकोचक कारणे हिलनाइ-डोलनाइ केँ ओष भौवतताक छवण मानि लिअय।

कहल बाइछ जे हदी तिथि केँ ओरामचन्द्र राजन केँ मारि छेक विजय केलनि आ मैथिलीक संग अयोध्या घुरला। सीता सभक आगमनक उपलक्ष्ये मे ई उत्सवक आयो-कन मेक छेक आ तहिया सं प्रतिवर्ष होइत चलि आवि रहल-ह। सीता-रामक शिरवाक पाछा अपन आत्मीय केँ पैवाक आनन्द त छेक संगहि हुनक विजय गाथा स्वजातीयक विजातीय पर विजय, मानवीय चरित्रक दानवीच चरित्रापर विजयक महान गाथा केँ अपना मे समेटने अह। आइयो भारतक कएक क्षेत्र मे राजनक प्रतिभा बराबोल बाइछ आ तकर बादक दिन रंग अतीरक संग आनन्द उत्सव मनाओल बाइछ। मिथिला मे पहिल दिन रातिमे 'समस्त' बराबोल बाइछ, दोसर दिन फगुआक उत्सव होइए।

सं आलोक संदर्भ मे नीक कंठा बिचार करी त स्पष्ट रैत जे मैथिली एखनो लोकक अछोक वाटिका मे मरणांतन छैथि। राम सभ्य छुरका राजनक आल मे फंसा देने छथिन आ लव-कुशक बाग मेवे नहि कहल फेर आनन्द कथिक ?

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला घाम
छाहि-जारि सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

श्री मार्कण्डेय प्रवासी पुरस्कृत

मैथिलीक सुपरिचित कवि आ लेखक चौल्टी हे' तथा 'शंखध्वनि' सभ काव्य श्री मार्कण्डेय प्रवासीक सभा प्रकाशित संग्रह एवं छायाविक रचना क माध्यम सं हकटा सम्मानित स्थान प्राप्त कयते छथि। रचनाकारक अबावा श्री प्रवासी हकटा नौक समाज सेवीक रूप से हिन्दी आ मैथिलीक एक दर्शन सं अधिक संस्था सं सम्बद्ध छथि।

श्री प्रवासी सन छह-छह-दम-रहित भाविपु, प्रमविष्णु, प्रतिभाशाली, विनम्र आ विपरीत, साहित्यकारक पुरस्कृत क साहित्य अकादमी पहिल बेर मैथिलीक तरुण पीढ़ीकेँ सम्मानित कयलक अछि। ई हकटा नौक प्रवृत्ति अछि, बकरा हमरा लोकनि स्वागत करैत छी। 'देखि-कयना' परिवार प्रवासी जो केँ पुरस्कृत भेला सं अत्यधिक हर्ष आ गौरवक अनुभव क रहल अछि। एहि वालन्ती परिवेष्ट मे भव वसंत क अग्रदूत क रूप से परिवार श्री प्रवासी अभिनंदन करैत अछि आ कामना करैत अछि जे ओ अपन विविध सर्वनशील प्रतिभा सं अहिना मैथिली भाषा आ साहित्य केँ समलंकृत करैत रहथि।

'देखि-कयना'क अगिला अंक मे पुरस्कृत महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' पर श्री बुद्धिनाथ मिश्र क समीक्षामक लेख प्रकाशित भइ रहल अछि।

वसंत केहन होइथ !

घर क वैवाङ्ग क बड़ल पठर
खार्क क खार्क आगिक मुँह
नहि देखडवला बूढि
खाली धारी-वासनक छटपट्टी
पेबंद लागल साढ़ी
अनिया-चेताल क तगादा
धीया-पुवाक पाकल पात-सन
पीयर हबडव आँखि
हम तें नहि बूकेँ छी
की होइछ फागुन,
की होइछ वसंत।
सँ अहाँ बुनैत होइ तें
कने हमरो बटा दियड
बसंत कोन बाध मे
अटक गेल अछि।

—बुद्धिनाथ मिश्र

तें ई समक माह थिक जे हम मिथिलावासी हरि पर्वक अवसर पर अपनावीच एकता-सहयोग-सद्भावनाक वीधारोपण करी—जातीय भ्रुतिक मैथिलीक भ्रुतिक, मिथि-आक भ्रुतिक शपथ ग्रहण करी। आर्थिक विपन्नता, कुशिक्षा-कुवैका-वैगनशता आ हरि सभक छेक दामी मिथिला-मैथिल विरोधी तथा कथिक गणतांत्रिक सरकार सं बड़ना, छिटि केँ अन्न त्यागोचित अधिकार प्राप्त करवाक प्रतिज्ञा करी। तेखन वास्तविक उत्सव, आनन्द-उमंगक साधकता।

छुड़ एवं अन्यान्य पाद लोकनि

मैथिलीक प्राचीन पोथी सभ जे आइ-परि उपलब्ध भ सकल-ए ताइ से 'चर्यापद' वा 'त्रिगीत' सभ सँ प्राचीन मानल जाइत। एहि में कुछ पचास टा गीत छल बाइत। एहि में २४, २५ आ ४८ म गीत पला हेरा केवाक कारणे प्राप्त नहि भ सकल। उपरजब संवत्ताखिटा गीतक रचयिता चौबिस गोट पाद लोकनि छथि, जे कान्हू ओ कान्हु पाद एकै अछि होथि, कृष्ण-चाय पाद ओ कृष्णपाद अभिन्न होथि। जं भिन्न होथि त निश्चितै ई संख्या चौबिसक बदला छविस होइत। पाद लोकनिक नाम ओ पद संख्या निम्न प्रकारे अछि :-

नाम	कुल पद
१. छुड़ पाद	२
२. सरह पाद	४
३. कुकरी पाद	१
४. चिब्र पाद	१
५. गुणहरी पाद	१
६. चौदिल पाद	८
७. भुतुक (कु) पाद	५
८. कान्हु पाद	१
९. कान्हू पाद	१
१०. कम्बलासर पाद	२
११. कृष्णचाय पाद	१
१२. कृष्ण पाद	१
१३. कोन्ही पाद	१
१४. भान्ति पाद	१
१५. मरीचर पाद	१
१६. बीणा पाद	१
१७. कृष्ण बू पाद	१
१८. रावर पद	१
१९. आर्यदेव पाद	१
२०. टण-टण पाद	१
२१. दोरिक पाद	१
२२. भादे पाद	१
२३. तारक पाद	१
२४. कौकण पाद	१
२५. जयनन्दी पाद	१
२६. चाम पाद	१

स्वर्चापदक रचनाकालक सम्बन्ध से एखनोबनि निश्चयी नहि भ पाबोल-ए परन्तु विभिन्न विद्वान लोकनि के एहिपर खोज-खोज केलनिहै हुनका लोकनिक अनुसार दसम् शताब्दीक अग्रभाग एकर रचना मेल होइत। स्वभावतः रचनाकार लोकनिक काल सेहो ताइ सँ निश्चयित होइए। एहि समस्त पाद लोकनिक से छुड़ पाद सभ सँ पहिने भेलाह छे शोधकर्ता लोकनिक मत छनि।

एहि से संभावित समस्त पद मे नौद भर्म ओ दसनक स्रष्ट चित्र अछि। कइनाक प्रयोजन नहि छे सभ पाद लोकनि वीर धर्मोदलम्बी छलाह। परन्तु तंत्रिक प्रभाव सेहो स्पष्ट परिलक्षित होइछ छे तत्कालीन मिथिला मे तंत्रिक प्रभाव क संगहि वीर धर्म पर सेहो तंत्रिक प्रभाव के रेखांकित होइछ।

चर्चागीत पर एखनोबनि विवाद अछिह जे वास्तव मे एकर उत्तराधिकारी केचिक ? चंगाली लोकनि एकरा अपन आदि ग्रंथ मानैत छथि आ एहिपर चढ़ बेटी कार्य मेल्छ। डा० हर प्रसाद शास्त्री आ डा० सुनीति कुमार चटर्जी सन उद्भट विद्वान लोकनि एहिपर चढ़ बेटी भ्रम केने छथि आ एहि ग्रंथ के बंगला प्रमाणित करवाक आधार तर्क लुटखोने छथि। एकर दुकना मे मैथिल विद्वान लोकनि लक्ष्मणपद भावें पछुमाइल रहबाइए। आ निर्निवांदा एकोटा स्वरीय प्रामाणिक पोथी आइबनि प्रकाशित नहि भ सकल-ए। परन्तु से होइतहुं एहि गीत सभक भाषा, वर्ण विन्यासओ शब्द छिल विषय वस्तु तथा एकर दीर्घ परम्परा जे पदावली कालपरि अधूण रहल बकरा मैथिलीक आदि ग्रंथ होइवाक अकारण्य प्रमाण थिक।

एहि पोथीक महत्ताए एकर रचनाकार लोकनिक महत्ताक परिचायक थिक / जाइ समय मे संस्कृत भाषाक एक छत्र राज छलेक भन्नाहि ई लोक भाषा कहियो ने रहल हो विद्वानक भाषा छल, राजकीय भाषा छल, ताइ युग मे लोक भाषा से काव्य रचनाक उहि वा चेतना साधारण बात किन्हु' ने कहल जा सकल। तँ एहि चेतनाक अभ्युदय छुड़ पाद मैथिलक छेद प्राता स्पर्णीय छथि, मैथिली साहित्य मे अमर छथि आ नव्य भारतीय भाषाक आदि पुरुष छथि। ई हिनकै कृतित्व छनि जे हिनक फवती अखान्य पाद लोकनि लोकभाषा मैथिली मे काव्य सजलतक प्रेरणा प्रभोलनि तथा आगा चलि के विभिन्न भारतीय भाषाक रचनाकार लोकनि के अपन मातृभाषा मे रचनाक प्रेरणा ओ दिशानिर्देश भेटकनि।

ताहि युग मे लोकभाषा मे रचना करन सहज नहि रहैक। रचनाकार के प्रकृत व्यंग-वाचक सामता करब पड़नि। हमरा लोकनि जनैत छी जे स्वयं कविपति रियापति के—जे हिनका लोकनि सँ अग्र भा चारि-पांच सय वर्ष पश्चात भेलाह-ए लोकभाषा मे रचना करवाक कारणे विद्वत मंडली द्वारा सबोल उड़ाबोल जाइत। तेहनां स्थिति मे पाद लोकनिक संग जे एहन बात नहि मेल होइत से मानेना किन्हु नहि। परन्तु एकक बाद एक बादक आविर्भाव आ तदुपरान्त अविच्छिन्न मैथिली साहित्यक परम्परा के देखैत हिनका लोकनिक आत्मवलक, लोक चेतना आ वास्तव दुनिक परिचय सहजहि प्राप्त होइए।

ओना त ई काज बहुत परिशिष्टि हेवाक चाहैत छले, परन्तु से जे हेतु नहि मेलैक तँ आइ एकर चढ़ बेटी प्रयोजन छइ जे हिनका लोकनिक कृति के प्रकाशित क मैथिली पाठक के सहज उपलब्ध करा-ओल जाइक। ऊँच जातिक, ओकर भाषा

संस्कृतिक विकासक छिल ई परम आत्मिक नहि परन्तु अनुनादन ओ एहि सँ कटल जकां अछि। सम्पर्क कये की बखन कि ओ एहि सँ नीक जकां परिचितो नहि अछि। तँ हमरा लोकनि के आर पिलम्ब नहि क छिन्न एकरा सँ परिचित हेवाक अछि आ इकरा आर सयक करवा लेक जागि केवाक अछि अन्वशा अस्तित्वो पर संकट भावि संकेत—विकास के बाते की ? —मुजतबा अली

आबह हे शोणितक बुमकार

लेव-मूनि कड कतेकछ रहलै कयो
ज्वालासुखीक सुँह के ?
सुरुज के कतेकाल सपने रहलै
वादलक भूण्ड ?
के भोड़ि सकत गंगाक प्रवाह के ?
सनसनाइत बयार क रोकवाक सामर्थ्य करवा छैक ?
के भुंका सकत हिमालयक माथ ?
के देलाओत सूर्य क आङुर ?

आगिक चिनगोला सँ
के खेलायत गोटरस ? / आगि !
इह दह करैव चितगोठा !!

रसैबनाक जनक !!

चिताइल खड़ के खड़ा रहलैए
आस्ते-आस्ते।

कर देत सुझाइ

तेनू लोक, चौदही भुवन के
परिधीप सड वडैत —

लाखकलाख कजा-पत्तांग

मको भन्न क देत दुनिया के

चौरी यौत कड देत —

आखमानक चादरि के।

सनसता रहलैए

हैबक-हैब कराराहा

धमतीक जहल सँ मुक देवा छय

आफन तोड़ि रहलैए,

शोणितक बुमकार।

जे वही ने कुसियार अछी

दू दालिक फटलैए धमती,

शोणितक पेसाळ बहलैए / —जे पड़ी ने।

कमला-बलान मे जे क्षण मे / निर्मल बलक बदला

लाल-दुह-दुह शोणितक धार बहलैए।

बजरङ्गेक गदा रावणक पीठ पर

“गद्ग रे गोई गोई” खेलाइ छय

सन सन करैत छनि। / दुर्गाक भाला महिषासुर सँ

घाड़ा-जोरी अरबल्य —

तन-तन करैत छनि।

आबह हे शोणितक बुमकार !

निश्चिन्त भऽ कऽ बहऽ तौ।

कालीक कत्ताक कंठ

तरासे सुखा रहल छनि,

खप्पर मे एक लुग्न रफ बिना

चट्ट पडैत छनि,

जोइ पर गद्ग बड़ियाइत छनि,

घोरि दहक तरवारि के

खप्पर कं भरि दहक कम-डाम कए

जुरा एहुन काली के,

भरि छाक टटका लेहक पोठ स

बन्मल भ, करती काली—

साण्डब नृत्य।

आबह !

आबह हे शोणितक बुमकार !!

बलदी आबह !!!

—रमेश

फगुआक उपाधि

कवि चूड़ामणि श्री कारीकान्त मिश्र नहुप—नयन न तिरविन भेल ।

श्री० सुरेन्द्र ना 'सुमन'—बुढ़ारी में विहारी ।

महाकवि यात्री—पैर में बुरबुरा बान्हल अई ।

कविबर किरण—हम पारसे छेब ।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर—हम पंखी एक डाल के ।

डा० ब्रजकिशोर बर्मा मणि पदम—आब अगिला साल ।

श्री० राधा कुशुण चौधरी—खावि खूनबाक सुख ।

श्री जोष कान्त—कय बंढल पठाइ ?

॥ सोमदैव—छकवा पर टैकस लगाय ।

॥ कीर्ति नारायण मिश्र—किद्वन तं कहै छई, तकरे परि ।

॥ हंवरज—मानसरोवर कहिया जायव ?

॥ तमोश गुंजत—भागलपुर कइलड गुलजार ।

॥ घन चक्र—वश अरन ।

॥ ज्येन्द्र दोषा—असकरे हमही दोषी नहि ।

॥ महा पकाश—भोर भेलै दे पिया ।

॥ सुभाष चन्द्र वादव—लिखि के की होयत ?

डा० बीरेन्द्र (अनकपुर बाबो)—बिचि ककरो न सक ।

श्री महेन्द्र मलंगिया—कमलाकांतक रसिया ।

॥ रामभरोस कोपड़िअमर—गोनू माक बिलाडि ।

॥ धूमकेतु—नव प्लाटक तैयारी मे ।

॥ प्रदीप मैथिली पुत्र—बागड बाजड दिथो ।

॥ श्वष चन्द्र मा बिनोद—सभ सं कोट कबिता तीन हाथक ।

॥ रमानन्द रेणु—एखन भइबा छै ।

॥ ललित—कापर करब सिंगार ।

डा० गोरी मिश्र—द्विविधा लेखत छी ।

श्री मायानन्द मिश्र—माझक मझा ।

श्रीमती लीलो रे—आब फुराहत अछि ।

श्रीमती शैफालिका बर्मा—निहुरि फूट अंगि ।

श्रीमती शान्ति सुमन—वितरत्यन्ताम ।

श्रीमती स्वाकिरण खान—नकबैर कागा ठे भागा ।

श्रीमती पद्मशशा—हूँलो । मंत्री जो के यहाँ से बोल रही हूँ ।

डा० सुभद्र मा—किरिब करिअ मन लाइ ।

डा० जयकान्त मिश्र—मैथिली हमरे चारक कदीमा छी ।

डा० सुधाकान्त मिश्र—आब ककरा चून लगाबी ?

डा० शैलेन्द्र मोहन मा—वरिसाहत कहिया छई ?

डा० रामदैव मा—हम्का कोह कोड ।

डा० अनन्द मिश्र—भतहि विद्यापति ।

डा० आनन्द ना० शर्मा—सुगौरी मंजक 'सर' ।

डा० खोताराम मा श्याम—सुतराकस पं डेत ।

डा० जयसन्त मिश्र—हमरा लं ख्वाटन कराइ ।

श्री हमन कान्त मा—एखन टोकर जुनि ।

॥ श्रीकान्त ठाकुर (विद्यालंकार)—आर केओ बांचल छी ?

॥ हीरानन्द शास्त्री—एक पक्का भार ।

श्री० श्री हरिमोहन मा—बनै तां शारदा मिति खटार ।

श्री आरसो प्रसाद सिंह—अहुना कतौ भेलैय ?

॥ सुधांशु शेखर चौधरी—एकदन्त ।

॥ भोपनाथ मा—हमर अभाग हुनक कोन दोष ?

॥ मोकुलनाथ मा—चिक्कापार ।

॥ प्रभासी जो—एक त दाइ गोरे बहि-दोसर नदेखी हे ।

॥ राजमोहन मा—हम गुमसुम तक छी ।

॥ ज्येन्द्र नाथ मा ब्यास—हमरा लेखे घन सन ।

॥ गोविन्द मा—केसब केसन अस करी ।

॥ गोरी कान्त चौधरी कान्त—चौपाक अछि ।

॥ छत्रानन्द सिंह मा—हम को सय दिन नटुके रहब ?

॥ प्रभास कुमार चौधरी—कने सुस्ता लिखड ।

॥ मंजेश्वर मा—भारत-भारती एकप्रेम ।

॥ मोहन भारद्वाज—तनी पहरो पैली, एओ ।

॥ कुलानन्द मिश्र—ऐ पंचलका राज मे ।

॥ रामभन्द रमण—सुकर जे लखनव तहि गेलौं ।

॥ पद्म नारायण मा—'विरचि'—बुरपो सं समोक्षा गढ़ छी ।

डा० इन्द्रकान्त मा—विद्यापतिक केश : एकटा सूक्ष्म विवेचन ।

डा० बासुकी नाथ मा—साहू पुरक गोसाइ ।

श्री अमिषुष—अतमतेक ओक ब्यापारी ।

॥ पूर्णन्द चौधरी—तेहन मुहुहुंवर नहि छी हम ।

॥ विमृति आनन्द—छठा रहल घोव तिलक ।

॥ क्षियाराम मा सरख—शिव मठ पर ।

श्री विहंगम—पांवी आठर वो मे ।

॥ शम्भुनाथ मिश्र—आत न पूछो साधु की ।

॥ रबीन्द्र नाथ ठाकुर—सिलेमा से काज करध दाइ ?

॥ महेन्द्र मा—गावि सुनाओल हे ।

॥ फजलुर रहमान हासमी—हम मिथिले मे रहबै ।

॥ प्रभावती + गोपेश—आव कहू मन कैहत लगेप ?

॥ देवनारायण मा—भोसेपेकदस छइ ।

डा० दिनराज शाण्डिल्य—खरातो प्रमाणपत्र बितरण केन्द्र

श्री बाबू साहेब चौधरी—डोड रोडिंग ।

आचार्य रिखबी—हम मैथिल, हँ हम मैथिल ।

डा० प्रबोध ना० सिंह—अन्तर-मन्तरक नामो दोकान

डा० बीरेन्द्र मखिक—छाह सोचय दिअ ।

श्री सुकान्त सोम—राष्ट्रसर्व बिलिङ्गोर इरुर (मूव) ।

॥ बुद्धिनाथ मिश्र—बलम कलकत्ता पहुँच गये ।

॥ राम लोचन ठाकुर—हम की की करव ?

॥ अनिल ठाकुर—हम आत्म समर्पण नहि करब ।

॥ कुणाल—कहू के कोई न करै यही ध्यार ...

॥ राजनन्दन डाल हाथ—संतो, करमन की गतिनयारी ।

॥ निरसुन लाभ—माई पसोखनि बीरा ।

॥ अनादन मा—'पैसिल बयता' दांत करय खटा ।

॥ सुरील—बराही चल गेल—खेतक चिन्ता ।

॥ रामाचार मिश्र—ब्राह्म छी गाछी ओगारय ।

॥ महेश्वर मा—समय आबय दियो ।

॥ ब्रह्म नारायण मा—मोड़ा खाली अइ ।

॥ श्रीकान्त मंडल—लडका पाग ।

॥ शरद चन्द्र मिश्र—गइयो हँ बरदो हँ ।

॥ भोगेन्द्र मा—पबित्र पापी ।

॥ शिवचन्द्र मा—इमहँ छी ।

॥ हुकुमदैव नारायण यादव—याजोगनीक इजोत ।

॥ राजेन्द्र प्रसाद यादव—हम किसी से कम नहीं ।

॥ भागवत मा—'आजाय'—ताला कहिया खुबत ?

॥ बाळेश्वर राम—खेत चढ़ने किसान ।

॥ लक्ष्मी कान्त मा—निबंल के बल राम ।

॥ श्री हरिनाथ मिश्र—काशी से के के मतह जा के पटकी ।

श्री जगन्नाथ मिश्र—कुहूइ, हँ S S S ।

॥ राधानन्दन मा—जय सन्तोषी मां ।

॥ कुमुद रंजन मा—कनही कहय हमह ।

श्री० नागेन्द्र मा—हम ओठंगर नहि फूटब ।

श्री० रामकान्त मा—बसे सं चेषस छी ।

श्री कमलनाथ सिंह ठाकुर—होरिक चूकल ।

॥ कपूरी ठाकुर—कनटा अस्तुरा ।

॥ राज कुमार पूर्ण—आगते रहो ।

॥ दिगम्बर ठाकुर—सभ गुन गोबर भेल ।

॥ रघुनाथ मा—छरी खेलाएल छी ?

॥ विशाकर कवि—छह-पैलकीक अभ्यास ।

नोट : महलुभाष लोकनि एं आप्रह जे ओ लोकनि अपन उपाधि पत्र श्रीमान फगुआनन्द श्री महाराजक रंग-अचोर कार्यालय से यथा रिात्र प्राप्त क छैथि । जाइ साहित्यकार, नेता लोकनि के एहि खेप उपाधि नहि भेटलनि-हुनका लोकनि सं आप्रह जे नवका बजट के ब्यान से खलैत हमरा लोकनिक असुविधा के दूरमाथि आ व्यर्थ श्रान नहि गता अगिला सालक प्रतीक्षा करथि ।

दिखी सं सुयनारायण सङ्गल

नवकी दिखी, १४ फरवरी २२।
अ० भारतीय मिथिला संघ द्वारा इन्डियन मेडिकल एजोवियेशन संभागा में प्रातः १० बजे सं 'सैनितार तथा मिथिला विभूति स्मृति समारोह'क आयोजन कइल गेल। समारोहक उद्घाटन करैत उपराष्ट्र-पति श्री मु० हिदायतुल्लाह फरजानि जे भार-तक अनेकता में एकताक र्ज कोनों बीवित उदाहरण अइ त ओ मिथिला बिबि। प्राचीनकाल में मिथिले में रहन एकटा राजा मेबाई सर्वप्रथम परिश्रमक नहिमा के स्वीकृति देलनि आ तें राजा जन-कक राज्यताका में (मिथिलाक भंडा में) हरक छाप छै।

उपराष्ट्रपति मिथिलाक गौरवशाली अतीतक चर्चा करैत आगा कहलनि जे वस्तुतः मिथिला अवतार आ विद्वानक भूमि बिबि। मिथिले महाकवि बिद्यापति केँ ब्रह्म देलक जिनकर अनमोल बोल आइयो सभठाम गुंजित भ रहल अ। ओ आशा इरक केलनि जे मिथिलाक लोक अपन गौरवशाली परम्परा केँ अक्षुण्ण रखैत वर्तमानक विविध समस्याक समाधान हेतु कइरा सं कइरा मिला केँ अग्रसर रहत।

उपराष्ट्रपतिक स्वागत करैत केन्द्रीय ह्रासि राज्यमंत्री श्री वल्लभराम मिथिला-सलक विद्युत आर्थिक समस्या पर प्रकाश देलनि। केन्द्रीय पटौती मंत्री श्री कैदार पाण्डेय मिथिला-विभूति जोशनि केँ श्रद्धा-बलि देत ख० ललित ना० मिश्र द्वारा मिथि-लाचलक विकास लेल, बराबोल सोना तथा काग पर प्रकाश देलनि एवं ओह अर्पण काल केँ पूरा करैक बात कहलनि। विचार गोष्ठीक उद्घाटन करैत आर्थिक प्रशासन सुधार आयोगक अध्यक्ष श्री लक्ष्मीकान्त झा जी कहलनि जे एह केवक औद्योगिकरणक दिशा में केवक प्रवृद्ध बनता केँ आगा आनक चाही।

एहि अवसर पर श्री भोगेन्द्र झा, श्री राजेन्द्र प्र० यादव, श्री रमानन्द रेणु, श्री समेन्द्र कुमार आदि वक्ता लोकनि सेहो अपन मत प्रकाश कइलनि। 'धर्म केँ सम प्रायः मिथिलाचलक दशमैय याता-यातक व्यपस्था, कृषीक अवस्था एवं उद्योग-धंधा नहि रहबा पर चिन्ता व्यक्त केलनि आ एहि में सुधारक लेल जोर देलनि। नादिक सं सुदृढ संगर्षहि विनु-लीक आपूर्ति तथा सिंचाई लेल कोसी नहरिक संगर्ष कलाल-नागमती बान्हक विभिन्न सगता पर प्रकाश देल गेल।

अखिलभारतीय मिथिला संघ, नवकी दिखी, एमरर किछु दिन सं पूर्ण सक्रिय अइ—जे सुन लखन कइबाक चाही। मोना हरी निर्विवाद अइ जे एहि महल सन्निधता कें शरर ओहि गाम में देखाबौल जाय त किछु आगाओ फेक जा सकेछ। उपराष्ट्रपतिक वक्तव्य उत्साह-वर्द्धक थिक अक्लै आ हुनका सं बेसी

अवगोच्य प्रकाशन, ३३/४, हा० देवद्वार रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेख श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पारमपर आर्ट मित्र, ३२-बी, इन्डियन

नेपाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ में मुद्रित। सम्पादक : श्री अनारद झा

स्वर्गलोक में मजदूर

'ब्रह्मा' जिनका हम देवता कहिछिमनि, वालव में एकटा मजदूर छलाह, जे विभिन्न उपकरणक सहायता स प्राणी एवं एहि संसारक निर्माण कयलनि। तकरा बाद हुनक सहायक विद्वकर्मो नेउरिह। एहि प्रकार हम देखैत छी जे मजदूर आइये नहि कहिक सतयुग में सेहो छलाह। ओहू युग में एक कात पूँजीपति विष्णु अपन सहायिणी लक्ष्मी के साथ छुंकार छोड़ैत शेवनामक श्रद्धा पर आवन जनोने रहैत छलाह, दोसर तरफ ब्रह्माजी एहनू किस्म-कर्मो जी पाटझ-पुरान कइबा परिने अर्थात् केवल एकटा घोती पहिने खड्डक निर्माण करैत रहथि। ब्रह्माजी विभिन्न प्रकार क ज्योब कोलनि बाहि में एकटा सेकरीजेतो छइ जेही त विष्णु जी दाढ़ी के के केहे पूरा मोछो गुप्ता छैथ किन्तु ओही ठाम ब्रह्मा जी वहका-वहका अर्धरि हाथ तक दाढ़ी केने अपन कार्य करैत रहथि। आइकाहि एहि मयलोक में मार्क्स तथा लेनिनक कानिना फलस्वरूप मजदूर के सेहो रह'परि क किछु गुविदा मेट रहल छइ, विभिन्न Unions ले Trade unions क द्वारा ओकरा सब के किछु सुविधा देल बाइ छइ किन्तु एहिक निमीता ब्रह्मा जी के फतद्व जगह नहि मेउछछि। बलन पूँजीपति विष्णु हुनका कतहु थाह नहि देलकन्हि त ओ स्वतंत्र विनिज से लटकल रहि गेलाह।

मजदूर के त अहोभाग्य मानक चाही जिनकर श्रद्धेय अर्थात् पूर्वज ब्रह्माजी छथिन अर्थात् ब्रह्माजी सब मजदूर के नकला माह मेलाह। आइ कालिक मजदूर पूँजीपति वर्ग अथवा शोषक वर्गक विरुद्ध हड़तालो करै छइ किन्तु ब्रह्माजी त किछु नहि क सकै छथि। आखिर बेचारे ब्रह्माजी केवल विद्वकर्मो के साथ पूँजीपति विष्णु क कौन विरोध कर सकै छथि? कने अपने धन विचार क क देखियत, जेहि प्रकार स वहका-वहका पूँजीपति वर्गक सामंतवादी वर्गक सहायक अर्थात् चमचा सब विभिन्न विभाजन द्वारा धन मालिकक गुणगान करैत रहैत छइ चाहे ओ कतनो जनसत्ताक शोषक होथि, ओकर सभक निश्चित यथा भिन्न क संकेत छथि आ से सेले उत्तर हुनक प्रति लोकक हेराइल विस्वास फिर संकेत छै।

मिथिलाचलक बहु बेसी समस्या छै। एगो अवहेलित भूमि थिक ई। एकर नेता लोकनि संप्रतिन स एहिठामक लोक केँ उकैत रहलथिन ह। किन्तु हुनू वस्तुतः एगो सीमा होइत छै। जनतोक देव सीमा छै। तें ओको ब ई लोकनि, जेना कि जेते छथि, कार्य करथि त ने मात्र मिथिलाचलक अर्पित समस्त देशक कल्याण ताही ने छै।

× × ×
कलता, २३-१-२२। आइ
स्थानीय मित्र संक विष सं विदाबी

पतिमा स्थापित करैत रहैत छइ आर ओहि सेटवमक मिल केँकी सब चलावय बला मजदूर के नामो नहि छइ छइ, ओहि प्रकार स स्वर्गलोकक पूँजीपति विष्णु के साथी एजेन्ट पंडित जी प्राचीनकाल स लव क अखन तक छ'म-धूमि क एहि मयलोक में विष्णु क गाथा गवैत छथि और कोमती सदा स निर्मित मन्दिर में हुनक मूर्ति स्थापित करैत रहैत छथि किन्तु एहि पंडित सबके तथा पूँजीपति वर्गक निमीता मजदूर ब्रह्मा जी के कतो शरण नहि नेउरिह। ई गण मजदूर सबक लेल कतेक अवमानजनक छइ? अहि लेल आइकाहि के मजदूर सब के अवन वहका माह ब्रह्माजी तथा विद्वकर्मो जी के सबा-पूर्वक सहायता करक चाही। मजदूर सब के ब्रह्माजी तथा विद्वकर्मो जी के नेतृत्व में एक बहुत नइका समुदिक शुद्ध के साथ स्वर्गलोक में निश्चितता पूर्वक वेलेह पूँजीपति विष्णु केँ दरवार में 'धर्म'लोकक तथा मयलोकक मजदूर एक होथि के नारा दैक खर स बुझै क क हमका कर क चाही। भ सकैत मयलोक स दुमी, 'टेडु', सुता, चमल हलादि विरोध प्रदर्शित करवाक लेल ल जेवाक चाही कारण जे स्वर्गलोक में ई सब चीज कहाँ स अमोद? एहि प्रकार स विरोध प्रदर्शित करक ब्रह्माजी के अवन अविकार मोगक चाही बाइ स विवश भ कय विष्णु जी ब्रह्माजी केँ रस्ताक लेल एकटा हटलो ओपही बार किछु वक्त्र देवा लेल बाध्य होथि—
—सुधा की
दसम वय

फगुआ समाचार

● सुनधा में आयल-ए जे प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी संसद में एगो नव विधेयक आनय बा रहल छथि। एहि विधेयकक अनुसार एहि बेर फगुआ में लोक लेल रंग नहि सानि सकै। मोना केन्द्रीय मंत्रीक संगहि प्रदेशीय मंत्री तथा भविष्य में मंत्री बनवाक सनना पावनिहार कोमेसी नेता लोकनि एकर परिधि सं बाहर राखल गेल छथि। किन्तु हुनको लोकनिक संग शर्त ई राखल गेल्ल जे जे ओ लोकनि लेल से रंग सनवो भरथि त तकर उपयोग मात्र प्रबानसंवीकक सीमित हो।

सदस्य श्री लखन राय लोक सम्मान में सभा मेल तथा हुनका सभ सदस्य भाव-भीनी विदाइ देलनि। एहि अवसर पर सचक अध्यक्ष श्री सधनारायण राय लोक पदोन्नति उपलक्ष्य में मास्य प्रदान कइल गेल। श्री राय अवन परीश्रम आ बुद्धि-बल पर एगो सकारण स्टाफ सं पंच आभिरुचक पदपरि पडुं वि बुद्धिबल-ए से निश्चित संक लेल गवैक विषय थिक तथा सदस्य लोकनिक लेल शिक्षाप्रद। सर्व आशा करै छै एहिना आनो सदस्य लोकनि आगू बढ़ताह आ अपन संक संगहि समाजक गौरव बढ़ोताह।

—सामाचार मित्र
सचिव
मित्र संघ

समिति रोजना

वर्ष—२ अंक—७

अपील, १९८२

मूल्य—पचास

सम्पादकीय

भीख नहि अधिकार चाही

संसद में फेर एक लेप मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद में सम्मिलित करवाक प्रश्न आयल। श्री योगेन्द्र भा बतवै सहजता से ई प्रश्न रखलनि सरकारी पक्ष ततवे सहजता से एकरा अस्वीकारि देलक आ फेर ततवे सरकारी तंग योगेन्द्र बाबूक संगहि समस्त मिथिलांचलक संसद लोकनि मुनि लेलनि। बिना खसम पैरा हकम।

योगेन्द्र बाबूक एहि तरहक प्रश्न-प्रस्ताव एहि से पूर्व राखि चुकल छथि। प्रस्ताव आनो सदस्य (इन्दिरा भोसले छोड़ि) राखि चुकल छथि। किन्तु एहि दिशा में योगेन्द्र बाबू आ हुनक दल सभ से आगू अछि—से बरि निर्विवाद।

योगेन्द्र बाबूक अतिरिक्त आर के सदस्य मैथिलीक चर्च संसद में करिबोकाळ करै छथि तार में सर्वश्री राजेन्द्र प्रसाद यादव आ शिवचन्द्र झाक नाम लेल जा सकैल। ओना अप्रथ ग्रहणक समय मातृभाषा मैथिली में वापस लेवाक लेल दृढ़पतिव्र श्री दुर्गमदेव नारायण यादवक बात चिखल नहि जा सकैल जे अन्ततः संसद में अप्रथ लेलनि भइल हिन्दी में नहि। यादव जी एहि लेल सम्भावक भाव छनि। शिवचन्द्र भा अप्रथ तत्काल मैथिली में नहि राखि सकवाक विरोध में अवन स्थागि कए एगो उदाहरण प्रस्तुत कैंते छथि। पांडव दुलह संग लिखय पड़ि रहल अछि जे बखन मैथिलीक संवैधानिक मान्यताक प्रश्न उठैत छैक त ई लोकनि एकबद्ध नहि भ प्रवैत छथि—जेना पंजाब, तामिलनाडु वा बंगालक संसद लोकनि में देखल जाएछ। उता-चण्डल आ कुर्सी फेकनाइक कथा संसदक इतिहास में पुरान अर पांडव हिनका लोकनिक न्यायोचित माह बजल ललितना देल जाएत छनि तखन ई सभ चिन्तिभाव्यो ने पवैत छथि से अस्वभाविक बात अवसे थिइ। एहि संक्रम संक्रम एतेवर त अवसे होइतैक जे किछु काळ लेल संसदक कार्यवाही ठग रहितैक आ प्रेसबलाक ध्यान एहि दिश परैतैक। पांडव जे रेपु ई लोकनि प्रस्तावना राखि चुर भ जाएत छथि तें हिनका लोकनिक नेत पर संदेह स्वाभाविकै।

जहाँवरि सरकारक प्रश्न अछि, हमरा लोकनि कतेको बेर लिखि चुकल छी जे कतिबेरी सरकार जगजगत मिथिला-मैथिली विरोधी अछि, ओ एकर कस्याण नहि देखय चाहैछ। ओकर एहि बात में कनिबो दम नहि छैक जे संविधान में नहि रहनो सभ भाषा के समान विकासक सुयोग सुबिधा देल जेतैक। ई मिथिल सुथि थिअ—चालाकी थिअ, ठगपनी थिअ। हमरा लोकनि बनेत छी जे सरकार ओही भाषाक विकासक हेतु खर्च करैल जे संविधान में छैक। संविधान में नहि रहवाक कारणे मैथिली केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा सं बरल अछि। केर सरकारक मोभा चिह्न सरकार बखन उर्दू के दोसर राजभाषा घोषित केने छल त ओ एत कहने छल जे मैथिली के राजभाषा एहि लेल नहि बनाओल जा सकैछ जे ओ संविधान में नहि अछि। ओना हमरा लोकनि बनेत छी जे मैथिली संविधान में नहि रहितो बंगालक दोसर राजभाषा थिअ। हमरा लोकनि बनेत छी जे संविधानक सहजना बना के बखौ पड़िने विधान सभाक सदस्य श्री नर्मदेश्वर सिंह आबाद के मैथिली में अप्रथ ग्रहण करवा सं रोकल गेल छथनि आ हाल में श्री दुर्गमदेव नारायण यादवक संग संसद में सेहो एहने घटना भेअर। संविधान में नहि रहवाक कारणे सं सरकारी कोनो विधायि मैथिली में नहि छपैत अछि आ एहि राशि सं मैथिली पत्र-पत्रिका के वंचित राखल जाएछ। संविधानक कारणे आकाशवाणी वा दूरदर्शन सं मैथिली प्रोग्रामक प्रसारण नहि कएल जाएछ आ एहि तरहे मिथिलाक प्रतिभा के सुयोग सं तथा सहयोग सं वंचित कएल जाएछ। जे सरिपहुँ एहि सं फर्क नहि पड़ितैक, जेना कि बेर-बेर सरकारी पक्ष दखौड पैग करैत रहल-थ, त संविधानक एहि अनुच्छेदक प्रयोजन की छैक? कि एकर ने एकरा फाड़ि फेकल जाएछ?

भोड़ैकाळ लेल जे मानियो ली जे सरकार अप्रथ वचनक पालन करैत आ संविधान नहिभूत भाषाओ के ओ समस्त सुबिधा देतैक जे संविधान सभत भाषा के देल जाएछ त कि ई भीख देवाइ नहि भैक? सरकार के ई जानि लेवाक चाहियेक जे मैथिली जाति

अपना देश में कहियो सत्यक जीत होइत छैक। ई ओ समय छल बखन भारत चीन-विद्रोहक रूप में जानल जाएत छल आ एडमाम दूधक नदी बहैत छलैक। तहिना हमर नेता लोकनि में खरहीनता अवसे छलनि, काविलोकी अभाव छलनि, परज्व ओ लोकनि वरमान नहि छल। जे वरमाना की बुझाओ पड़ैत छल त से मूल्यहीनताक कारणे नहि अपितु दूरदर्शिताक अभाव। तें हुनका लोकनिक मन में सत्यक एकगोट आस छल आओर ओ लोकनि सत्यमेव जयतेक नारा लगावैत छल। किन्तु आइ सत्य हारि के एत कोन में अपन सुइ चुकओने वेसल अछि आ भूतक तिरंगा फहरा रहल छैक। हमरा सभके तत्कालीन नेतागणक मोन में ई प्रश्न उठलनि जे बखन सत्यक विजय होइते ने छैक तखन सत्यमेव जयते कहवाक अर्थ की।

'सत्यमेव जयते'क आनंदगुण अवस्थान भ गेल छैक। कार भारत सरकार द्वारा चलाओल गेल टाका पर अशोक स्तंभक नीचा सत्यमेव जयते लिखल रहैछ ओकर अधिकान्ध भाग (मेहनति के छोड़ि क) भूत चाबाकी सं कमाएल जाएछ। चोरी-चलाकी सं कमाएल टाकापर 'सत्यमेव जयते' ओहने सबैल बिक जेना कच्ची से भाराक आइ द्वारा गोतापर हाथ राखिक कमाइ—जे बाबल सत्य वाचक... इन्दिरा गांधी एहि बातक असहिधत के जनताक नाडीए बका पकड़ि लेलनि आ ओ एक गोठ नव नारा देलनि—अम

मे आन कोनो वस्तु भले नहि होइत परज्व आसामिमान अवसे छैक। अयाचीक संतान भील कसमपि नहि ग्रहण क सकैछ। जगन्नाथ मिश्र तथा अन्य कांग्रेसी नेता बका व ओ चारि कोटे मैथिल सन्तान के खान प्रवृत्तिक मानैत हो त ई ओकर सत्यक मूल थिकैक।

मिथिलावासी के अपन अधिकार चाहियेक। जे सरकार ओकरा भारतीय नागरिक मानैत अछि त अग्रगण्य नागरिक बका ओकरो समस्त अधिकार सेंटक चाहियेक। आ व से नहि भेटैत छैक त नागरिकोचित कर्तव्यो ओकर लेल ओ बाध्य नहि अछि। जाइ संविधान में मैथिलीक चर्च नहि, जाइ मानचित्र पर मिथिलाक नाम नहि तकरा सम्मान देवाक लेल ओ बाध्य नहि अछि आ ओ दिन दूर नहि जे मिथिलाक शान-शान में सार्वजनिक स्थान पर एहि संविधान आ मानचित्रक होलिहा दाह कएल जायत। जाइ भेला पर ओकर अधिकार नहि छैक तकरा उतारि अपन स्वतंत्र भेला फइवाक केर ओ सतत तैवार रहत—जे सरकारक इहए रण्य रहैतैक।

कोनो वस्तुक सीमा होइत छैक। सदन-सकियोक सीमा छैक। पैतीव बल सं मिथिलावासी सदैव आयल-थ पांडव ई बाह्य जहिया दूटे जेतैक भारत सरकारक खेमाता नहि छैक जे ओकरा चाहैत। मिथिलाक औद्योगिक-प्रेतिसाधिक अवस्था के सरकार एक बेर नीक बका मन पादि छिए आ समय रहिते सभरि बाय ताही में सरकारक संग राष्ट्रीयक कल्याण छैक। संगहि मिथिलाक नेता लोकनि के सेहो सचेत भ जेवाक चाहि-यनि। ओ हिंदवा छवि मैथिल के आर अधिक दिन अग्र में नहि राखि सकैत छथि। समय ककरो लेल बेसल नहि रहैछ। क्रांतिक आयि दिन वका के नहि पबरेछ।

जय मैथिली

अमएव जयते

एव जयते। अर्थात् अमक जीत हो। हुनका मेथन जे एहि सं भारतक अमकीबी खुशो सं नवैत-नवैत कहत—देश के नेता इन्दिरा गांधी। आओर इहो जे हुनकर पहिलक पुरिसे बका इहो छुइ आयत।

अमक जीत होइ एहि में भला ककरा आर्षति भ सकैत छैक। परंवे इन्दिरा गांधी ई नहि कहलनि जे ओ कोन अम थिक बकर विजय में हुनका दिखवसे छनि? ओ इहो नहि कहलनि जे हुनका केरोबगर लोकक अम में हुनका दिखवसे छनि वा नहि। हुनका कम व कम एतवो त खुनका कहक चारैत छलनि जे 'रोबगार दफतर' खाता में नामांकित बेरोजगार सभक अमक जीत होइतैक वा नहि। हाथ-पद दुल्ले रहितो जे खुशान सभ बखौ सं देशलग हाथ पसारैत अम करवाक अवसरक याचना क रहल आ ओकरा सभके से नहि देल जा रहल छैक—ओकरा सभक अम के की होइतैक? भरिखक इन्दिरा गांधी एहि पर सोचवाक अम नहि केलनि अन्यथा कि दोसर परिणाम हुनका सामने होइत।

पहिल परिणाम त ई पहराइत कि अमक परिभाषा ओ जानि बसलथि। हुनका एकरो अन्दाज लगितनि कि इगो रियासतवाला आ टेअबलाक दूध वंटा अमक दाम पांचो टाका नहि होइत छैक बखन कि बिडवाक एक वंटा अमक दाम पांचो लाल सं बेहो होइत छैक। भारतक एगो मिळ मालिक लाखों-करोड़ों सं खेलाइए बखन कि ओही मिलक मजदूर 'ओवर

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धान
डाहि जारि सुझाह करब हम
बिहारी मिथिलाक जवान

श्रमएव जयते...

टाइम'क श्रम देनाक बादो अपन स्त्री-सच्चाक आवश्यक्क व्यवस्थिताओके पूर्ति नहि क पवेछ। पता नै इन्दिराजी एहि दुनू श्रम मे सँ कइर विजय चाहैत छथि।

जाइ देश मे श्रमक आदर होइ छर ताइ ठाम लोक बेरोजगार नहि होइए। किन्तु महान भारत वर्ष मे इन्जीनियरो हजारोंक संख्या मे बेरोजगार अछि। स्वयं अछि जे अरब देश मे पाठ विज्ञानक शोषणा नहि अछि। अगर योजना रहित त कोनो इन्जीनियर के बेरोजगार देनाक प्रश्न नै उठैत। आओर अपना देशक इन्जीनियर औद्योगिक छेन घनातेनक सामने पंक्तिरद पाचक बनि गइ नहि होइत।

आर त आर, पूरा देश मे रोग आओर रोगीक संख्या मे रोजीना वृद्धि भ रहल छैक, किन्तु अपना देशक डाक्टर बेरोजगार अछि। एहि सभक बाबजूदो जे इन्दिरा गाँधी श्रमक विजय चाहैत छथि त एहि मे हुनकर कोन दोष ?

इन्दिरा गाँधी रहल बाद भोलापनक संग श्रमक विजय चाहलनिहै, ताही भोलापनक संग चीन सूची केर विजय सेहो चाहैत छथि। ओही भोलापनक संग ओ पछिला दिन इहो कहलनि जे 'अमीर चाहे आर बेसी अमीर किएक नै भ रहल हो किन्तु गरीब आओर गरीब नहि भ रहल अछि।' बुझि पड़ेछ जेना अपना देशक गरीबक हुनका प्रतिफल सूचना सेटैत होनि। ओना हमर दीर्घ दिन सँ ओ एहि बात के दोहरा रहल छथि जे चीन वल्लुक दाम घटि रहल-ए। परन्तु मन्त्रालय बात त ई बिक के सरकारी-बैरकारी आफिस मे प्रत्येक आदमीक मरगाइ भत्ता घटि रहल छैक। अगर चीन-बस्तु ६ दाम घटि रहल छैक तखन मरगाइ भत्ताक बटुनाइक गणित त केयो ग्योतिरीक क संकेत छथि।

ओना भ संकेत जे कोनो दिन भोरे नीक टुटिते इन्दिराजी के मन मे ई बात आयल होनि जे पहिलका समस्त नारा पुरान भ गेब, ते बीमार देश के एक नव औषधक खगता छैक। हुनका मरियक इहो भेल होनि जे भाइ संस्थान मे पहिने लोक श्रम करे सँ बिचकियारत नहि छल, तते भाइ-काठि ताश खेलाएत देखाइ पड़ि रहल-ए। जेना कि बँक कर्मचारी, कोयला उद्योगक बरिष्ठ कर्मचारी। हुनका एहनो दुष्प्राण होनि जे रेल के देरी सँ चकनाइ श्रमक प्रति लज्जाभावक कारण बिक। ते ओ नारा देखनि कि हे रष्ट्रीय-कुल संस्थानक कर्मचारी लोकनि आनो अहाँ सब केँ श्रम करे से लजेनाक नहि चाही। किएक त अतताः जीत अमे के होइत छैक।

अर्थात् आन सत्य नहि बिसयी भ सकत। सत्य सँ पेश चीन श्रम बिक। हुनकर एहि बात के यदि सभ लोक गंभीरता सँ ग्रहण करब त नेता भट्ट बाबबा मे आर बेसी परीश्रम श्रुल करताह। बेरोजगार नभौहुमान जे अर्जानिब आ कुण्डक कारणे गदत दरिया ने डेग उठा चुकल-ए

कविपति विद्यापति के जे मैथिली भाषा-साहित्यक पिता मानल जाय त कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर के विपु संकोचक बनकछ स्थान पर प्रतिष्ठित कइल जा सकैए। दुर्भाग्यक बात जे एहन अग्रणीम पदक अविकारी, मिथिला-विभूति-श्वर ज्योतिरीश्वरक परिचय हमरा लोकनि के बड़ विचित्र सँ भेटल, आ आश्चर्यचरि पूर्ण परिचय न हो जे प्राप्त भ सकल। एक दिन जे ई 'मिथिला-मैथिलीक' हेतु दुर्भाग्य

ओ ओइ दिशा मे आर बेसी सक्रिय भ जायत। किएक त आन ओकर अमक विजय हेतैक।

एहि सभक संग ई प्रश्न अहाँक मन मे जठि सकेछ जे आन अमक जीत हेतैक त कि पहिने अमक जीत नहि होइतल छैक ? त आइ, हमर एक किम्वदन्त सबाइ मानू जे एहि विषय पर आर अपन माथ जुनि समाज। किएक त हमरा लोकनिक प्रधान मंत्री के कहियो काल एहन 'नारातुमा' मन्त्रालय करवाक आदति रहलनिहै।

ओनहुना अपना ओतय नाराक पुरान परंपरा रहल-ए। सुभाष बोस कहने छबाइ —'तो हमरा एक दे, हम तोरा आबादो देवीक'। एक निर्दोष तरहेक अम ओहु मे छल। लोक एक देवाक छेब तयोरो भेल। अतताः आबादो भेटलैक। किन्तु एक देवा मे ओदेक कसरि रहि गेलैक आ हमरा लोकनि केँ जे आबादो भेटल से असह्य आबादो नहि, कारण ओ लड़ाई सँ नहि समझौता सँ भेटल छल। एही कारणे बिछु सबाइ तहिया नहि हल भ सकल आ हमरा लोकनि केँ भाउन्त बेटन क बदला नेहल भेटि गेलाह। आओर जे हेतु भाउन्त बेटन अपना संग खुशी आ अपन व्यवस्था नहि ल गेलाह आ तकरा उपहार मे भारत केँ देने गेलाह, तेँ उबह अवस्था एहिठाम कुबारात करैत रहत आ ओहि मे बखन फल भेलैक त ओकरा संघर्ष के रूप मे एहिठामक जनता देखलक। ओही अपन पाँच सूची लएक हमरा लोकनि संघर्ष आयल छल।

आबादीक बाइ लड़ाई मे तिलक 'आबादी हमर जन्मस्थिद अविचार अछि' कहने छलाह, तकर अर्थ ओलुक नेतागण गलत व्यवहोलनि। तेँ इन्दिरा गाँधी हड़ताल आओर उचित मार्गक छेड़ आवाज उठओनाइ पर पावदो लगा देलनि। लाल बहादुर कर्जन—'जय जवान जय किसान' 'जय जवान' पर लिखनाक छूट नहि कारण प्रतिरक्षाक मामिला छैक, परन्तु 'जय किसान'क बारे मे त एते कहिए सकैत छी जे ओकर सिद्धि ककरो सँ तुकाएल नहि छैक। अलत उपजा क भरि देखक पेट भरनिहार किसान अपने भूले भरि रहल-ए। एहना शब्द नै जे इन्दिरा गाँधी श्रमक विजय चाहैत छथि त एहि से हुनकर कोनो दोष नहि।

—अनिल ठाकुर

कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर

सक विषय विहृत दोसर दिग मैथिली जातिक निमित्त जोर लगवाएइ एवं पत्तो-नुखी प्रवृत्तिक परिचायक। एहिठाम ई कहनाइ अगल नहि हइत जे प्रसिद्ध मैथिली मे दर्जनो 'विज्ञान' पी०एच०डी०, डि० डिग प्राप्त करैत छथि परन्तु किनको अपन एहि बाइहने कतेको विभूति—जनिक परिचय एखनो अछात अइ दिस नहि भेलनि। अबका इना कही जे विद्वता नहि मात्र उपाधिक भूखक, मिथिला-मैथिलीक नहि मात्र आन स्वार्थ पूर्ति लेल ओलुक तथाकथित विद्वान लोकनि एहि मे अपन व्यर्थ सम्य बेरबाद केनाइ उचित नहि बुझि—विद्यापति, जयिका पर बड़ बेसी काल भेलए—भनहि ओ सभ फालतए किएक नहि हो—तिनका पर ओब केनाइ श्रेयकर जुमेत छथि, कारण विभिन्न पोथी सँ दस-बीस लाखन नकल क लेने सबाइ पेश पोषा तयार भ जाइत छनि आ उपाधि छेल ताइ सँ बेसी चाहैवे की करी !

'धूर्त समागम', पंचसायक तथा रंग-शेखरक रचयिता कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर संस्कृत साहित्य मे पूर्ण प्रतिष्ठित आ परिचित रहितहुँ मैथिली जगत मे अपरिचित छलाह। १९४० मे बल्लभ म० म० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा नेपाळ राज लाइब्रेरी सँ प्राप्त हिनक मैथिलीक आदि गद्य ग्रंथ वर्ण रत्नाकरक प्रकाशन भाषाचार्य सुनीति बाबूक प्रयासे हुनकहि सम्पादन मे एडिटिङ सोबाहटी सँ भेल—तकर बाद अपन विभूति केँ हमरा लोकनि चीन्हि सकौँ।

'धूर्त समागम'क अनुसार हिनक समय तेरहम शताब्दी लल तथा ई रामेश्वरक पीन ओ बीरेश्वरक पुत्र छलाह। स्व० ईशनाथ बाबूक अनुसार ई बाबू पाली (पाली मोहन) ग्रामक छकार। संभवतः ईशनाथ बाबूक एहि मान्यताक आधार सेहो उक्त पोथीए हो बाइ मे भीमवर्द्धन जन्मभूमिना.....' क चर्च कवि शेखर स्वयं केने छथि। ओना नगेन्द्र नाथ गुप्त महाशयक अनुसार ज्योतिरीश्वर ठाकुर जयपति विद्यापतिक पितामहक पितृमौत छलाह। वास्तविकता जे हो, परन्तु ईपर सत्य जे एहि संदर्भ मे अपेक्षित अनुसन्धानक त कये की—वर्ण रत्नाकरक जुरो नीक संस्करणो आइवरि मैथिली मे प्रकाशित नहि भ सकल।

कविशेखराचार्यक विद्वता कुनू एक दिशा मे सीमित नहि छल। दर्शन, साहित्य, संगीत मे हिनक समान अविचार छलनि तथा कतेको भाषाक प्रकांड पंडित छलाह। पंचसायक मे ई अपना सभग्रंथ मे कहैत छथि—

अति प्रसहमयिताप्रहरणः

ल्लुत्तेक दीक्षा गुणः

श्रीकण्ठान्वनतपरो भुवि

चतुःपट्टेः कलाना निधिः।

संगीतागमसत्प्रमेय रचना

चातुर्य चूडामणिः (स्व०) सदातः श्रीकविशेखराचितवरः श्री शोतिरीश्वरः कविः ॥ एहिपोथीक शेष ओ निम्न श्लोक सँ हेतै छथि—

यावच्च कृष्ण किरीट इदमे शेखरमभा तिष्ठति

यावद् इच्छति नावस्य सकला सानन्दमादिशति।

यावद् कामकला विवर्त चटुका क्षोणोदले सञ्चदा

तावत् श्री कविशेखरस्य हृदिना तवत्यदे दीव्यताम् ॥

धूर्त समागम मे ओ लिखैत छथि— तल्लोदण्ड-सुन्नगताप दहन

आला निरस्तायदो

राजाः सर्वगुणानुरूपं पदवी

विद्योतनाचार्यकः।

यो बीरेश्वर वंश भौलितिलको

दातावदाताशयम्,

तस्य श्री कविशेखरस्य कविता

सच्चिन्मालम्बते ॥

तदनेन सकल संगीत विशेष विद्योत-नामिनव भरतेन पुरमभन-पदारविन्द इन्द-वन्दारकपण्डवेन निश्चित भाषोपभाषाभूष-भाषुक सरस्वती कण्ठामागेन अनवरतभोजन रसास्वादकथायुक्कष्ट कन्दलीनरी-द्वयमान मीमांसा महोदयेन रामेश्वरस्य पोषेण तत्र भवता पवित्र कीर्ते बीरेश्वरस्यामकेन महा-शासन श्रेणीश्वर आत्मवर्द्धि (भीमवर्द्धि-Modul N.S.) जन्मभूमिना कविशेखरा-चार्य ज्योतिरीश्वरेण निकुलुल्ल विरचितं धूर्त समागम नाम नाटकम्; महसन्निभभि-नेहुमाभिष्टोऽस्मि।

एवंप्रकारे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक व्यक्तित्व आकृतिक परिचय हमरा लोकनि केँ हुनके लेखन द्वारा प्राप्त होइछ। वर्णरत्नाकर मैथिलीक आदि गद्य-ग्रंथ देवाक गौरव बाद पोथी केँ प्राप्त छैक से थिक वर्ण-रत्नाकर—कविशेखरक एकमात्र मैथिली कृति जे आइवरि हमरा लोकनि केँ प्राप्त भ सकल-ए। ओना बहुतो विद्वान हिनक 'धूर्त समागम' केँ सेहो मैथिलीक मानि बकरा मैथिलीक प्रथम नाटिका कहैत छथि, परन्तु एहि पर मतभेद नहि भ सकल-ए।

वर्ण-रत्नाकर मात्र मैथिलिक अदि गद्य-ग्रन्थ नहि, अपितु समस्त नव्य भार-तीय भाषाक आदि गद्य ग्रन्थ बिक कारण आइवरि कुनू भाषा मे एहि सँ पहिलक वा बकर सभ सामयिक गद्य-ग्रन्थ नहि प्राप्त भ सकल-ए।

म० म० हरप्रसाद शास्त्री तथा सुनीति बाबू बकरा 'वर्णन रत्नाकर' कहने छथि आ एही सँ बकर महत्ता ओ विषय वस्तुक परिचय प्राप्त होइछ। हिनका लोकनिक मतानुसार एहि पोथीक उद्देश-भावी कवि ओ कतबक लोकनिक निमित्त बकरा पञ्च-प्रदर्शक ग्रन्थ बनाएव छलनि, यथा, यदि (देशीय पृष्ठ पाँच पर)

अज्ञात-अनघातल

कुचिन्ना स पौद्धि नरि छल, ताह्या बार

प्रचलित शिक्षा सं लोक वन-छोड़ मेल

चाउर, गाछ या मुट्ठरी-एकटकही बर्को
दान देवा योग्य हुन्छ बल्लु यो कहि । खवसा
बेनु' बर्को एक गोठ बल्लु, एक गोठ
“कमोटी बौक ।

● जीमकान्त

लालबुभुकरक चिट्ठी

श्रीमान् सभादक जी महोदय

अथ मैथिली ।

आगा हालसुरति ई जे अपनैक प्रथि-
काक फगुआ कंक मे अपना लेल कुनू
उपाधि घोषित नहि देखि कबहुँभरि कह
लाल बुभुकर के मेळनि । परजव करवे की
करिवाक, बहन कपाड़े बरल छनि त अहाँक
देवे की ? सभादक जी जं सत्त पुछी त
कम सं कम एहि सन्दर्भ मे लाल बुभुकर
यात प्रतिगत मैथिल छथि । तें जं कुनू
भाय के दोष द्य संतुष्ट भ जाइत छथि ।
ओना ई गप्प त अहू के हुस्ले हएत जे
कलन लोक के काज पड़ेत छैक त हुँको
सं देबक लोगार कए लाल बुभुकर लग
देइए किनु जहाँ कि काब भ गेल त फेर
केसी ठेरी रंगा । तें ने आइबरि केहनो
काज उदेम कतौ होइक, लालबुभुकर के
लोक नोटो हकार देबाक खगता नहि
हुओए । आ एए छथि लाल बुभुकर, जे
निनु हकारहि सभठाम उपस्थित । से कहै
छी सभादक जी, भनहि मन पड़ि गेल,
मत फरजरी मे पुर्णिया मे बाबा विद्यापतिक
नकी बदे धूप-चाम सं मनाओल गेल छू ।
भरि ज्वार मे बरबता नोट छलक ।
बारल छबाइ त लालबुभुकर । मुदा लाल
बुभुकरो त तेरे, भनकी पबिते उपस्थित ।
ओना गाम सं जेवा मे कने बिलब भ
गेलनि आ तें ओ दोसर दिन पहुँचि
सकल । परजव जेना कि कहूँ छैक—
बाएव नैगल कपार संगहि, तेह परि
हुनको संग सेलनि । जाइते देखेत छथि
जे मंत्रपर मैथिल कुलपूण—मुख मंत्री
झा० श्री जगन्नाथ मिश्र गरबि रहल छथि ।
से कहैत छी देखिते देरी त लाल बुभुकर
के तुरबाक इहदि टिकासन चढ़ि गेलनि ।
परजव करता की ? छलारो त बिलु
नोतेले ।

सभादक जी, अहाँ एक पत्र मे
लिखिते रही जे वाइकयक कारणे स्मरण
अकि कमजोर पड़ि गेलए । एहि निमित्त
हम नियमित औपचन करैक सबाइ देने
रही । जं अपने से करैत हेब त निश्चिते
स्मरण शक्ति बढ़ल होएत आ तें अक्सरे
स्मरण होएत जे पटनाक चेतनारीन समि-
तिक मंच सं जगन्नाथ बाबू बाबल छलाइ
जे ओ मैथिलीक हेतु किछुभोटा सहि
करताइ । परजव एहिठाम ओ फेर स्पष्ट
भावा मे कहलनि जे मैथिलीक संवैधानिक
मान्यता दिहवा लेल बिहार सरकार बचन-
बद्ध अइ । ओ आरो कहलनि जे प्रचन
मंत्री आ एह मंत्री ने कि आश्वासन देने
छथिन जे संविधान संशोधनक समय एहि
पर सम्भीरता पूर्वक विचार कएल
जायत ।

सभादक जी अहाँ के भनहि जनाव
जगन्नाथ झाँक वोली परिवर्तनपर अचरब
लागय परजव जानथि दिनकर दिनानाथ

जे लाल बुभुकर के फनियो छगुता लाल
होइन । असल मे लाल बुभुकर के नीक
बकी बुभुकर छनि जे भारतीय नेता लोकनि
के बात बदले मे ओतबो सयल नहि जगत
छनि जते बसेया विनेमा कनायिका के
ऊपड़ा बदले मे । तें जं मुख्यमंत्री महोदय
कथनी मे परिवर्तन सेवे केरुनि त एहि मे
अचरबक गुंजाइस कतय छैक ? आब
गप्प रहल प्रचन मंत्री आ एह मंत्रीक
आश्वासनक । जं अपने झलवार इहेत
हएव त नीक बकी बुभुकर हएत जे बिछुए
दिन पहिने साम्यवादी इलक नेता श्री
भोगेन्द्र झा जीक प्रसन्न कवाच मे एहमंजी
सफे कहने रहथिन जे मैथिली के संविधान
मे ल्भान नहि देल जेतैक । कहवा ई जे
संविधानक संशोधन कह भनकिया होइ
छ । ओना अहू के बुझल हएत जे
अपना नेगरे सरकार—उदेत-चहेत एहि
मे संशोधन करैत रहब-ए । आ भाषा
किहक छोट-छोट राबयोक निर्माण करिते
रहब-ए ।

बहारि प्रचन मंत्रीक बात आइ त
तिनका त हमरा सं नीक बकी अहाँ
चिनैत होइबनि, कारण १९७० मे जे
प्रतिनिधि मंडल हुनका सं भेट केने छल
तार मे अपनो रहबे करी । ई एक एते-
बरि अवसरे आइ जे तबन प्रतिनिधि दलक
संग अखेर बलित बाबू जेनाइ आ प्रचन
मंत्री 'छातुभुति पूर्वक' विचार करवाक
आश्वासन देते छलथिन । एहि खेप ललित
बाबूक अनुग्रहमे स्थात धृत्वाकारी जगन्नाथ
बाबूक एकान्ती मे ओ 'सम्भीरता पूर्वक'
विचार करवाक बात बनलौह-ए ।

त से कहै छी सम्मानक जी, स्थिति
त अहू सं भाव तुकाएल नहिने रहल
हएत । परजव बाबू बुभुकर के दुख एहि
बातक सेलनि जे जनाव जगन्नाथ झाँक
उपरोक्त घोषणा पर ओहिना अपदी गढ़-
गढ़ा उठल जेना सुकराती मे सूप गढ़ग-
डाइए आ बिहरे-तिहरे सं खाली ओकरे
आवाज सुनाइ पड़ेत छैक । मुदा अहाँ के
हरो बुफक जे ओह सं दबिदा नहिजेटा
पढ़ाइत छैक । ते त कहू भला, पुर्णिया
जे कि मिथिलाक एक महत्वपूर्ण स्थान
अइ, मैथिलक गढ़ अइ तार ठामक कालेब
मे मैथिली-प्रतिष्ठाक पढ़ाइ एखन बरि
नहि छैक । हमरा त सरियो बुझल जे छल
ई बात । आ एहू लेल मैथिली भाषी के
माउ फाय पढ़लनिह । आरो हरीक बात
त ई मेर जे खा सदैव पुर्णिया मे विद्या-
पतिक मंदिरक निर्माण लेल एक लाख
ठाका देबाक आश्वासन देलनिह । अहाँ के
बुझल हएत जे विद्यापतिक दीहपर विस्की
मे सोमैराति सं नदिया कानव आरम्भ क
देख । सभादक जी बलिहारी कही
मैथिलक विवेक के जे मात्र एहन मातृघातो
सम के आर्माभिते नहि करैछ, तकर पूजा-
चर्चाओ करैछ आ ओकर वक्तव्य पर

कविता

मीताक नाम

लिखबा ले बैसे छी

गंगा अवतरण-कथा

लिखने चलि जाइत छी

कौशी-प्राराणक वधा

स्वामाविक

छन्द-भ्रम

अभिशापित क्रौशिको

आर्तनाद कोलाहल

भैरवीक नृत्यक क्षंग

क्रन्दन चिरकालिक थिक

संभव शमशान मे

किन्तु नहि स्तोत्र-पाठ

घंटा ध्वनि

शंखनाद

रस्फहीन, मांसहीन

कंकालक देश

हमर मातृभूमि मिथिला

'ब्रिश्चाता सुवन्तत्रयम्'

सिद्धिमा ई-

विसरल कि जाइत अछि

मानै छी सीत

सत्य सप्रिहु आश्रप तोहर

ब्रौति गेल हमर, असुर

लिखि नहि सकै छी आब

व्यर्थ करै छी प्रलाप

संकुचित विचार बोध गहने चलि जाइत अछि

किन्तु

हम वाध्य छी

जखय त चाहै छी

आशक आलोक नव

निराशाक बिहरो

सिफओने चलि जाइत अछि

लिखबा ले बैसे छी

कथा आजादी के

व्यथा बैरवादी के

लिखबा ले बैसे छी

—राम लोचन ठाकुर

बपदीयो पीटछ । अखल मे मिथिला मे
एक कह प्रचलित कहरी नहि छैक—
वकांडक प्रयाशा बला—से भरिसक मैथि-
लाग ताही प्रयाशा मे छथि । आ फल
जे भी हएत से त अहाँ सन बुभुकर लोक
सं तुकाएल नहिने हेवाक चाही ।
हं त कहैत जे छलहुं, ओहीठाम सं
फिरलाक परचात लाल बुभुकर भाव-
रजानि व्याधि सं प्रसन्न भय ओछावन घेने
छथि आ तें अहाँक आदेशानुसार रचना
पठेवा मे असमर्थ छथि । भरोस राखू जे
स्वस्थ सेवा पर रचना अवसरे पठओताइ ।

अपनैक पत्रोत्तर नहि पठेवाक प्रवृत्त
आकांक्षी

श्रीमान् लाल बुभुकर
बुभुकर भ्रमवासी

✽

अजगुत अनटोटल...

दिखा जे हेतु एहि बहवने मे सम्मिलित अह—ते ओ सम किछु करत से आयाए केनाइ धर्य—

०० पश्चिम बंगालक सरकार एमहर बाट बामक बहावा बनाके 'दाना-रिक्षा' बन करे लेल उनाहुअ अह। ओना लोक जनैर जे नहुवाचार सन ब्यस्त हलाका के टूट आ टेगू बाम केने रहैत छैक ते कि रिक्षा। पञ्च गरीबक रिमायती हेवाक दावी केनिहार मानववादी सरकार टूट-टेगू पर कुनू काबज करवा मे पूर्ण अस-मर्ज अह, सबल कि भरिदिक बी-नोड परिभ्रमक बाद ५-१० टाका उपार्जन केनिहार श्रमिकक मुद्दक आधार ओ छीनि रहलए।

सरकारक कहब जे एहि ठाम लाइसेंस प्राप्त रिक्षा स' देसी बिनु लाइसेंसक रिक्षा छैक आ मात्र तकरे पर रोक लगा-बए चारैछ। किन्तु ब' सवाल मात्र बाह-सेचक रहितक त लाइसेंस देनाइ सरकारक लेल पेश बात नहि छैलेक। जे ओकर मालिक वशयोग नहि करैत छैक त रिक्षा चालक नामे किछु पाहयो ल के लाइसेंस देल जा सकैत छैलेक। एहि स' सरकारी के किछु आमदनी होइतेक आ गरीबक आधारो नहि छिनैतेक। मुदा बात से रोकैत तखन ने। जेना कि पता लागलए, सरकार लाइसेंस प्राप्त रिक्षाओ के आठ बजे सकाळ स' आठ बजे राति बरि मुख्य पथपर चलनाइपर प्रतीबिम्ब लगेवाक सोचि रहलए। स्पष्ट छैक जे आठ बजे रातिक बाद स' आठ बजे सकाळ बरि रिक्षाक चलनाइ नहि चलनाइ एक करावर बीक—कारण जे एही समय मे सवारी मेटवे कते करैतेक।

एहि स' जे मात्र रिक्सेवाक अति हेतुक से बात नहि। साधारण लोक, जेकरा ने त यवन गाड़ी छैक आ ने टेक्सी पर चढ़वाक छैल जेनी मे पाइ, तकरा छैल त इहए सुलभ साबन छैक। गरीबहाक सोपा-पुता के स्कूल पठेवाक छैल एहि स' सत आ विवशता दोसर साबन की मेटेतक ?

एखन जहाँ तहाँ पुलिस सभ रिक्षा जमा करे मे बेश सक्रिय देखल जाइछ। जे पहिने चौअडी-अठडी ओमुल्लत छल एखन रिक्षा के पुलिस मेन पर लदि भाना मे जमा क रहल-ए। सुनल जाइछ जे सभ के तोड़ि वो जरा देल जायत। बाट-बाट खाली पड़ल छैक आ रिक्षावाहक सभ हताश भेल अह। ओकरा सभक ने कुनू संगठन छैक आ ने कुनू नेता—ओकरा लेल सोचनिहार।

जेना कि पता लागल-ए आ लोकसभ नस-टाम मे बनेए, जे हेतु रिक्षा खिच-निहार प्राया सभ के सभ अवंगाडी बिक ते ओकरा देखवाक छैल ई सरकारी चालि बिके। जई बात सत्य हो त एहि क्षेत्रीय दृष्टिकोणक जते निम्दा कएल जाए बाहु इष्ट। एहि विषय पर माननीय दृष्टिकोण स' सोचल जेवाक चाही। ब' सरिपहुं

रिक्षा अवरोधक ठाव थिक त सरकार ओकरा हटा शोक, परज्व ताइ स' पहिने लगाभग दस हजार लोकक रोजी-रोटीक व्यवस्था त ओकरा करक चाहिकि।

खोजी स' रामचन्द्र विद्योयी लिखैत छथि—दक्षिणा आकाशवाणी केन्द्र बिहार राज्यक सभ स' घटिया केन्द्र अछि। एकर बतेक प्रचार सनता छैक ताइ स' वेडी गुटबाबी, भाइ-पतीबाबाद, बातिबाद आ आयाबादी इतय व्याप्त अछि। ओतेवे नहि कार्य-क्रमक स्तर आओर वेडी घटिया रहैत छैक। कतेको नाचाकार, कबाकार आ अन्य रचनाकारक रचना एहन लगेछ जेना हुनका पढ़नाइ-लिखनाइ स' कोनो मतलब नहि होइत। मुदा केन्द्र मे जे हेतु हुनक समझी छनि ते हुनका रोकव असंभव।

आकाशवाणी दक्षिणा केन्द्र मे सुब-बाबी आ जातिवादक बोल्बाब अछि। असली रचनाकार त पाबनि-तिहार अपन रचना द प्लेट छथि, परज्व जे रचनाकार नहि छथि तिनका बेर-बेर सुनल जा सकैत अछि। कार्य-क्रमक संयोजक एकटा विशेष वर्ग के कार्यक्रम दय बत आ यश देवाक निस्चयसन क छेने छथि। एक दोसर के लाम पढ़िजेवाक व्यवसाय खुब जोड़ पकड़ने अछि।

प्रतिष्ठित रचनाकारक मामिला मे आकाशवाणी प्रायः ई करैत अछि जे स्वतः रचनाकार के हुनक पता स' अनुबन्ध पठा देछ। मुदा एहिठाम ठीक त कर उनटा होइछ। रचनाकार द्वारा प्रेषित रचनाओ गुना देख जाइछ अथवा हेरा जेवाक चला कएल जाइछ। अनुबन्ध पत्र त हुनके पठा-ओल जाइछ जे संयोजक खजानातिक छविन, समर्थित छविन, पीयवे छविन वा कमि-शन देत छविन।

एहि केन्द्र स' जे कार्यक्रम प्रसारित होइछ ताइ मे एकलपता नहि रहैछ। मिथिलाक भाषा मैथिली थिक आ ते एहि केन्द्रक मुख्य भाषा मैथिली हेवाक चाही। परज्व मैथिली के सुन्निकल स' घंटा भरि समय देल जाइछ आ जे कार्यक्रम प्रसारित होइछ से जातिबाद, भाइ-अतीबाबाद मे फंसल रहैत अछि।

एहि केन्द्रक कर्मचारी लोकनि आने-बला निदेशक के अपना बाळ मे फंता लेत छ'थि बकरा ओ तोड़ि नहि पवेछ आ ते कोनो समावाज-सुचार नहि क पवेछ। ओ कर्मचारी सभक हाबक लेलओना मात्र बनि के रहि जाइछ।

उचित त छैलेक जे केन्द्रीय सूचना ओ प्रसारण मन्त्रालय एहि दिश ध्यान दित आ एहि पोटाबाक जांच करयैत। जाति-बाद, गुटबाद के तोड़ि सांस्कृतिक भ्रष्टाचार के रोकव परम आवश्यक तखन सही रचनाकार के अवसर मेटेतक, लोक के नीक रचना स' परिचय होएतक आ एहि केन्द्रक सार्थकता बिद्व होइत। की सरकार एकरा आवश्यक नहि बुझेछ ? की ओकरा एते पलकति छैक जे एहि दिश ध्यान देत।

✽

कवि शेखराचार्य...

नाथकक वर्णन करवाक हो त कोन-कोन विषयक उल्लेख करव उचित, यदि नाथि-काक वर्णन करवाक हो त की सभ निरूपण करव आवश्यक।

वर्ण-रत्नाकर सात कल्लोठ मे विमान-जित अह। यथा—(१) नगर वर्णन (२) नायिका वर्णन (३) आस्थान वर्णन (४) शत्रु वर्णन (५) प्रधानक वर्णन (६) भट्टादि वर्णन (७) हमथान वर्णन। एह सात कल्लो-लक प्रधान वर्णनक संगहि कतेको अप्रधान वर्णन अह। एवम् प्रकारे ई वर्णनक हेतु हरिपट्टु रखाकरे थिक।

वर्ण-रत्नाकर पढ़बा सन्ता दू गोठ बात स्पष्ट परिलखित होइछ। भइल त ई जे एकर भाषा शिखर तथा विषय वस्तु एहि बातक अक्राव्य प्रमाण थिक जे मैथिली भाषा साहित्यक शुभारंभ एहि स' कम स' कम ५६ सष्ट वर्ष पहिनहि भेल होइत।

मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय

मिथिला राक्षसवन, संकटमोचन नाम, दरभंगा, द्वारा आयोजित निम्न परीक्षा यथा :—मध्यमा विद्यार्थ कला विद्यार्थ आयुर्वेद विद्यार्थ तंत्र विद्यार्थ एह विज्ञान विज्ञान विद्यार्थ कला विद्यार्थ कृषि विद्यार्थ पशुविज्ञान विद्यार्थ पाक विज्ञान विद्यार्थ शिक्षा विद्यार्थ विधि विद्यार्थ पत्रकारिता विद्यार्थ पुस्तकालय विज्ञान विद्यार्थ कौटिल्य विद्यार्थ-विकलांग शिक्षा विद्यार्थ आरोग्य विज्ञान विद्यार्थ (मानव आरक्षी सेवाधी) नाण्य विद्यार्थ चिकित्सा विद्यार्थ शास्त्री शास्त्री प्रतिष्ठा शिक्षा शास्त्री अभियन्त्रणा शास्त्री विधि शास्त्री शास्त्री वाणिज्य शास्त्री प्रतिष्ठा मुद्रण प्रकाशन सम्पादन कला शास्त्री समाज शास्त्री विज्ञान शास्त्री कौटिल्य शास्त्री अंगराज विज्ञान शास्त्री (मानव आरक्षी सेवाधी हेतु) विज्ञान शास्त्री प्रतिष्ठा पुस्तकालय विज्ञान शास्त्री कर्मकाण्ड शास्त्री विकलांग शिक्षा शास्त्री वेद शास्त्री क्रीड़ा शास्त्री तन्त्र शास्त्री एह विज्ञान शास्त्री कृषि शास्त्री आयुर्वेद शास्त्री योग विज्ञान शास्त्री प्राणी विज्ञान शास्त्री कर्म शास्त्री कला शास्त्री आचार्य शिक्षाचार्य विज्ञानाचार्य अभियन्त्रणाचार्य प्रशासनाचार्य महालेखाचार्य साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य दर्शनीय प्रज्ञाचार्य कौटिल्याचार्य श्रोतिपाचार्य विकलांग शिक्षाचार्य वेदाचार्य तंत्राचार्य प्राणाचार्य आयुर्वेदाचार्य योगाचार्य वीराचार्य धर्माचार्य आगमाचार्य निगमाचार्य संगीताचार्य विधानाचार्य विधानागर आयुर्वेद रत्न प्राणल विद्या भास्कर विद्यारत्न वाणिज्य रत्न पत्रकार रत्न समाज रत्न देशरत्न मिथिला रत्न मैथिली रत्न विधि रत्न शिक्षारत्न वेदरत्न विद्या वारिधि विद्यावाचस्पति महामहोपाध्याय तांत्रिक चिकित्सा रत्न मौक्तिक चिकित्सा रत्न यांत्रिक चिकित्सा रत्न चिकित्सा विज्ञान रत्न प्राणी विज्ञान रत्न प्राकृतिक चिकित्सा रत्न यूनानी चिकित्सा रत्न वनौषिक चिकित्सा विज्ञान रत्न पशु चिकित्सा रत्न यौगिक चिकित्सा विज्ञान रत्न परीक्षा मे सम्मिलित हेवाक हेते २५॥—अनुमति शुल्क क संग आवेदन पत्र परीक्षा संचालक क नाम स' प्रस्तुत कएल जाय।

डा० दिनराज शाण्डिक
कुलपति

डा० हरिनारायण ठाकुर
कुल सचिव

सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैथिली विश्व विद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय संकटमोचनवाम दरभंगा स' जे शैक्षणिक संस्था सम्बन्धन परीक्षा केन्द्र स्थापना अथवा मान्यता चारैत छ'थि ओ कया चारि सो टाका निरीक्षण शुल्क संग अपन विवणी अविलम्ब प्रस्तुत करबि।

डा० श्रीमपकाश शाण्डिक कुलमित्र

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड, संकटमोचनवाम, दरभंगा द्वारा आर० एम० पी० ए० पी०, आर० एम० एम० तथा आर० एम० ए० क प्रमाण पत्र अनुपप एवं मौखिक परीक्षाक आधार पर प्राप्ति करवाक छैक १५/- टाका मे नियमावली एवं प्रश्न प्राप्त कएल जा सकैछ।

डा० अयनारायण शर्मा सचिव

(विलापन)

देसिल बयना

पाठकीय परिवारक (सलियना) सदस्य

१६. श्री करैयालाल झा,	कलिकाता	२७. " स्वाम नारायण झा	बर्णपुर
१७. " मोहित मिश्र	"	२८. " कुण्ड बिहारी झा	लिछाब
१८. " राजचन्द्र झा	"	२९. " तारा नन्द झा	नरुआर
१९. " विष्णुकान्त झा	"	३०. " दुर्गानन्द राय	"
२०. " देव कुमार झा	"	३१. " सुमकान्त झा	हवड़ा
२१. " कुण्ड कान्त चौबरी	"	३२. " गीतानन्द चौबरी	उधानगर, कल०
२२. " गोपी कुण्ड झा	"	३३. " हेम झा	"
२३. " चिन्नाब राय	"	३४. " रामाश्रय सहनी	नवकी दिछी
२४. " आदिल नाथ झा	"	३५. " भीमती अंबनी झा	"
२५. " रामानाथ राय	"	३६. " श्री देव झा	हिन्द मोटर
२६. " वंशीधर झा	"	३७. " श्यामा भगवतो	'पुस्तकालय, मछेता, दक्षिणेंगा

विशेष सूचना

मैबिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ताक एक आवश्यक बेरार आगामी १८ अप्रील १९८२ के बेरिया ४-३० सं उधानगर स्कूल मे होइत। मोर्चाक प्रत्येक सदस्य तथा सहयोगी लोकनि सं यदि बेरार मे उपस्थित होवाक अनुरोध कइल जाइत।

एहि बेरार मे आमद-खर्चक हिसाब सेहो प्रस्तुत कइल जाइत। प्रत्येक सदस्य सं निवेदन ले हुनका पास ले खीद वही व्यवहृत/अव्यवहृत होनि तथा चन्दाक पार होनि से ३१ मार्च १९८२ बरि संयोजक लग (देसिल बयना कार्यालय मे) भबवा भी बनार्दन झा, उधानगर लग बमा के देखि। एहि संदर्भ मे प्रत्येक सदस्य के १५ मार्च १९८२ क पोस्ट कार्ड सेहो लिखल जा चुकल छनि। कुनू कारणवस जिनका पत्र नहि सेटल होनि से ११ अप्रील १९८२ बरि खीद वही तथा चन्दाक पार बमा के संकेत छनि।

कुनू कारण वश जं किनको उक्त तिथिबरि खीद वही वा पार बमा करवा मे अनुविवा होनि आओर। भबवा बेरार मे उपस्थित होइवा मे अनुविवा होनि तं ओ तकर पूर्व सूचना 'देसिल बयना' कार्यालय मे लिखित रूप मे पठावनि से अनुरोध। बेरार मे विचारणीय विषय रहत —

१. आमद-खर्चक हिसाब
२. अगिला कार्य-क्रम निर्धारण तथा
३. अन्य

बिनीत :
रामलोचन ठाकुर
संयोजक

'देसिल बयना' चण्डाक दर :-

१ प्रति	५०) पइसा
१ बर्षक	५) टाका
५ बर्षक	२०) टाका

पार पठेवाक पता —

श्री बनार्दन झा,
१७/६, उपा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सं :-

'देसिल बयना' मे अपन विज्ञापन दव लाभ उठाव। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचार एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू
विज्ञापन व्यवस्थापक
अरुणोदय प्रकाशन,

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेब श्री महेश्वर भां द्वारा प्रकाशित तथा पाबनियर आर्ट प्रिंट, ३२-बी, बुन्दारद
बेहाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री बनार्दन झा

बाल गीत

झिझिर कोना

झिझिर क'ना झिझिर कोना कान काना जाउ
मिथिला के आउन मे समतार खेलाउ -
उत्तर हिमालय आ दक्षिण मे गंगा छइ
कोशी आ गंडक मे हेलू नहाउ।
उत्तर आ दक्षिण के मेद बिसराउ
मिथिला के सन्तति छी मैथिल कहाउ
कहा स कहू जोड़ि जाति-पाति आड़ि तोड़ि
मिथिला के नाटि उठा साथ सं लगाउ ॥
माय, मातृभूमि, मातृभाषा महान
कखनो ने होमय एकर अपमान
मायक जे बोल छुनि बाजै से लाज करी
अपनो बाजू आ अनको सिखाउ ॥
राखू नमस्कार कोठी के कान्ह
चौन्हल ने जाएत के अप्पन बा आन
मेंट जखन होइ वा जाइए लगै छी
'जय मैथिली' केर आदति लगाउ ॥

—रामलोचन ठाकुर

• ई गीत एहि सं पहिनुहु एकठाम प्रकाशित भेल छल। 'देसिल बयना' क पाठक लेल पुनः प्रकाशित कएल जाइछ।

देसिल बयना' क पाठक लेल विशेष उपहार

राम लोचन ठाकुरक तीन गीत बहुवर्चित पोथी—

१. इतिहासहंसा (कविता संग्रह)
२. चेताल कथा (वाच्य-व्यंग्य रचना)
३. प्रतिध्वनि (विदेशी कविताक मैथिली रूपान्तर)

बारह टाकाक पोथी मात्र आठ टाका से।
सलियाना सदस्यक हेतु मात्र सात टाका से।
बी० पी० खर्च अतिरिक्त।

इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करयि—

अरुणोदय प्रकाशन

३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,

कलकत्ता-७०००३३

कह लोचन कबिराय

सरकारी फरमान थिक श्रमिक मजूरक नाम
ई उत्पादन वर्ष थिक सुनू खोलि सम कान
सुनू खोलि सम कान न बिसरू एसमा नासा
मूह जाबि करू काज, न हो अधिकार-तमासा
कह लोचन कबिराय श्रमिक काजक सरकारी
लाभक मालिक मात्र घोषणा थिक अधिकारी

समिति

वर्ष-२ अङ्क-८ मई, १९८२ मुख्य-पचास पाइ

सम्पादकीय

मैथिली आन्दोलन आ माटि-पानि प्रश्न

मैथिलीक नाम पर अइ धरि के किछु मेल्-ए से प्रवृत्ति संकेत। यद्यपि एहि आन्दोलनक उत्पत्ति के तकाद नहि बा सकैछ, तथापि इतबाधरि मानहि पड़त जे जाइ मूल तमालक समाधानार्थ एहि आन्दोलनक श्रीगणेश भेल छल, से एखनहुँ ओहिना पड़ल अइ। चारि कोटि मिथिलावासी मैथिलक संग स्वाधीनता प्राप्ति पत्तीस वर्ष परचातो भारत सरकार दोसर सारकें नागरिक सन व्यवहार कए रहल अइ। ओकर भाषा-संस्कृति मात्र अवहेलिय गइ छैक, अपितु ओकर विनाशक लेल नाना तरहें पदचरित्रक बाइत रहल-ए, आइतकानून बनाओल जाइत रहल-ए। ओकर आर्थिक विकासक कथा त कात रहल, उमटे रहि गेलीत बल मे क्रमे-क्रमे ओकर रीढ़ तोड़ि अंग बना देल गेल-ए। अइ मिथिला देशक स्थिति इन्टर-साम्राज्यवादी-पूजीवादी देशक उपनिवेशों सं अपेक्षित छैक। ब्रह्मवाक प्रयोजन नहि के एहि स्थिति सं उपरवाक एक मात्र पथ छैक संघर्ष, जनसंघर्ष, रक्त-धवी संघर्ष।

आज प्रश्न उठैल जे ई संघर्ष करत के ? लोक उत्तर छैक—मिथिलाक जनता। कुनू वाति क्षेत्रक अंगन पराक विरोधता होइत छैक, पराक समस्या होइत छैक आ तकर सभ सं नीक आ सटीक जानकारी ओही वाति क्षेत्रक लोक होइत अइ। तहिना समालोकक समाधान सं क्षेत्रक विकास सं लाभान्वित ओहीगणक लोक होइत अइ। नहरिया शोषक-शासक के त एही मे लाभ छैक जे ओ क्षेत्र विरोध पिछड़ल रहै, ओइ ठामक लोक पिछड़ल रहै आ एकरा लोकनिक शोषण अवाध रूपे चलेत रहैक। आ एही ठाम सन्म लेख संघर्ष—शोषक आ शोषितक बीच संघर्ष, मुक्ति संघर्ष। मैथिली आन्दोलन उअइ मुक्ति संघर्ष छैक। मिथिला-मैथिल-मैथिलीक जीवाक अनिवार्य शर्त थिक।

अज के प्रश्न उठैल जे एहन अनिवार्य शर्त होइतहुँ एहि दीर्घ अवधि मे मैथिली आन्दोलन कयबटा के के ब्रह्म चामताओ के किष्क ने प्राप्त क सकल ? विद्वान लोकनिक ब्रह्म छनि जे इकर प्रयोजन कारण थिक जे प्रवास मे एकर जन्म भेलैक आ ओत पसरल कएल। मिथिलाक माटि-पानि सं ई नहि छुड़ि सकल। एहि बात के हमरो लोकनि मानित नहि छी, पूर्ण विश्वासक संग मानत छी। हमरा लोकनि मानैत छी जे अपन देसकोट, परिवर्जन-पुरजन के छोड़ि परदेश केओ सेहने नहि, खगते जाइछ आ इएइ खगता ओकर शक्ति-सामर्थ्य के सीमित करैत छैक। तँ आइधरि जे मैथिली आन्दोलन सफल नहि भेल त सेहो स्वाभाविक थिक। तहिना स्वाभाविक थिक मैथिली आन्दोलन के प्रवास मे जन्म लेनाइ—कारण प्रवास मे लोक चेतना विकसित होइत छैक, अपन माटि-पानिक प्रति समत्व बढ़ैत छैक। इतिहास सक्षी अइ जे कतेको आन्दोलनक जन्म एहिना प्रवास मे भेलैक आ परचात ओ क्षेत्र मे पहुँचल-ए। कतेको एहन आन्दोलन मे सुकलए बकर पूर्णता-सफलता धरि संचालन प्रवासे सं होइत रहल छैक आ लड़ाइ क्षेत्र मे खड़ल गेल अइ।

इएह तन लोचि के 'मैथिली मुक्ति मोर्चा' गत वर्ष २१, २४ आ २५ मई के दक्षिणक नगर भवन मे तीन दिन सम्मेलनक आयोजन केने छल। एहि आयोजनक एकत्र उद्देश्य छैक मैथिली आन्दोलन के माटि-पानि सं जोड़नाइ, मिथिलाक माटि आ मैथिली आन्दोलनक गठ लेनाइ।

एहि अवसर मे मिथिलाक केन्द्रिक मैथिली सेवा संस्थाक प्रतिनिधि, शिक्षक संकाय नेता, छात्र नेता, एकरेलेखक प्रतियोगिता एवं साहित्यकार लोकनि उपस्थिति छल। तनक केन्द्रगत 'मोर्चा'क प्रधान कार्यलय दक्षिणक मे कनइबाक बोधना कएल गेल अइ एकरे उपरि कर्त्तव्य एगो कमिटीक गठन भेल। बर्ष दिनक प्रोग्राम लेल गेल। अइबा मे संकोच नहि के कमिटी मे विभिन्न अंचल आ व्यसक प्रतिनिधि सभ छल। बनिना लोकनिक मैथिली आन्दोलनक क्षेत्र मे पर्याप्त नाम-बना छनि। परजब खेदक संग लिखय पड़ि रहल-ए जे सभ श्रम आ अर्थ व्यर्थ मे चल गेल। प्रोग्रामक कथा त कात काओ, कमिटीक एकांटा बँसरो नहि भेलैक। आ एहि तरहेँ मैथिली आन्दोलन के माटि-पानि सं जोड़बाक असम पहिल प्रयास मे मैथिली मुक्ति मोर्चा पूर्णतः असफल रहल।

मैथिली मुक्ति मोर्चाक पहिल काज १९८० के पटनाक प्रदर्शन छलैक जाइ मे पटनाक निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ एकर सदस्योनी छलैक। ६

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानाचित्र बिनु मिथिला धाम
जाहि जारि सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

मिथिलाक विभूति-४

कवि विद्यापति

आइ सं लगभग साढ़े छठो सण वर्ष पूर्व मधुबनी जिलाक बिसफी ग्राम मे विद्यापति ठाकुरक जन्म भेल छलनि। हिनक पिताक नाम गणपति ठाकुर ओ पितामहक नाम जयदत्त ठाकुर रहनि। हिनका नेना मे दुखार सं लेखन कइल बाइत, बकर कतेको ठाम चर्च अइ।

विद्यापति नेते सं संस्कारी छलाह आ कनिजे अस्तित्व मे पूर्ण पाण्डित्य के प्राप्त केलनि। काव्य रचनाक मृदुति सेहो हिनका नेनहि सं छल जे व्यसक संगहि बढ़ैत आ सशक्त होइत गेल। हिनक प्रतिभा बहुमुली छल—बकर प्रत्यक्ष प्रमाण हिनक उपलब्ध पोथी सभ अइ। हिनक रचित पोथी जे आइधरि उपलब्ध न सकल-ए निम्न अइ:

- (१) कीर्तिलता
- (२) सूर पुरिका
- (३) कीर्ति पताका
- (४) पुरुष परीक्षा
- (५) शैव सर्वस्वसार
- (६) गंगा दासयावली
- (७) विभागसार
- (८) दान दासयावली
- (९) दुर्गाभक्ति तरंगिणी
- (१०) व्यालि भक्ति तरंगिणी
- (११) विद्यापति परावली

मिथिला संस्कृत पंडितक गढ़ रहलए आ विद्यापति से हो संस्कृतक विद्वान छलाह।

दिलम्बक प्रदर्शन पूर्ण सफल रहलैक तथा प्रमाणित क लेल जे मिथिलावासी सेहो अपन अधिकार लेल संघर्ष क सकैए रत कहा सकैए। हमरा जेतत एहि मे दू मत नहि भ सकैछ। अपन दोसर काज मे असफल होइतहुँ मोर्चा बैसि नहि रहल। तेसर डेग भेलैक 'देविल बगना'क प्रकाशन। मैथिली आन्दोलनक निमित्त आन्दोलन प्रक खगता के बहिना अस्वीकार नहि जा सकैछ तहिना देविल बगनाक भूमिकाओ के पूर्वाग्रह मुक्त व्यक्ति अस्वीकार नहि जा क सकैछ छथि। देविल बगना के ई आठम अंक थिक परजब जाइ रूपे एकर स्वागत मिथिलांचल सं प्रवाधरि भेल छैक आ जेना सहयोग भेटि रहल छैक खास के दिखी राउड़केला आदि प्रवासक मैथिल बन्धु लोकनि सं तकरा देखैत एकर दीर्घजीवनक प्रति निश्चित हमरो लोकनि विश्वस्त छी आ आशा करैत छी जे निकट भविष्य मे एकरा पाक्षिक बनेबा मे सफल भ सकब।

एतबा होइतहुँ ई मानवा ने आपत्ति नहि जे पत्रिकाए सभ किछु नहि थिक आ एही सं मोर्चाक दायित्वक निर्वाह भ जेतैक। पत्रिका आन्दोलनक वातावरण तयार क सकैछ, आन्दोलन के गति प्रदान क सकैछ परजब मैथिलीक मुक्ति लेल जाइ लेल 'मोर्चा' क जन्म भेल छैक—चाही तार्किक आन्दोलन जे मिथिलाक माटि-पानि पर होएत। दक्षिणक अस्तित्व सं हमरा लोकनि के एते शिक्षा अवस्ते भेटल जे संचीय नेता सं, विद्यापति एवं मात्र के आन्दोलन कुम्भिनहार नेता सं वास्तविक आन्दोलन संभव नहि। एहि लेल जगज्ज पड़लैक गामक लोक के, छात्र-युवा वर्ग के आ तार लेल सीधा-समर बाहि गामे-गाम धूम पड़ैत रहल कालेज मे बोझाय पड़ैत। मैथिली मुक्ति मोर्चाक अगिला मोर्चाम उअइ होएत बकर विस्तृत विवरण दिने प्रकाशित इएत।

अन्त मे लिखि देनाइ आजकल जे दक्षिणक आयोजनक समय सं मोर्चाक बहुते सदस्योनी उदासीन बा पराक भ गेल छथि। हुनका लोकनि सं पुनः पुनः निवेदन जे 'तेरह पाक' बला बहरी चरितार्थ नहि करथि ओ। जं सरिहुँ मैथिली-मिथिलाक मुक्ति चाहैत छथि त पहिनिह जकां संग मीलि काज करथि। हुनका लोकनिक स्वागत लेल सतत हमरा लोकनिक बाहि पसारल अइ। संगहि नवीनो संस्था। व्यक्ति विशेष जे मोर्चाक संग काज करावक इच्छुक होथि त हुनको स्वागत छनि। मोर्चाक तारा छैक पूर्ण स्वाधीनता अथवा मृत्यु।

—जय मैथिली